विज्ञान कथा-साहित्य क्या है ? ह्यूगो गर्न्सबैक ने इसका बड़े सटीक शब्दों में इस प्रकार वर्णन किया है, " 'साइंटीफिक्शन' से मेरा अभिप्राय जूल्स वर्न, एच. जी. वेल्स और एडगर एलन पो द्वारा लिखी गयी ऐसी कहानियों से है जिनमें आकर्षक रोमांस के साथ वैज्ञानिक तथ्य और युगदृष्टा की दूरदर्शिता का सम्मिश्रण हो। साथ ही, आज चित्रित किये गये किसी आविष्कार के कल सत्य हो जाने में असंभव जैसा कुछ नहीं है।" पश्चिमी देशों में लिखी जा रही अधिकांश विज्ञान कथाओं के बारे में यह परिभाषा बिल्कुल सही उतरती है, लेकिन भारत में किसी भी भाषा में लिखी जा रही विज्ञान कथाओं की मूल विषय-वस्तु, प्रमुखतया मानव-केंद्रित है जो वैज्ञानिक प्रगति तथा मानवीय संवेदनाओं अथवा सामाजिक सिद्धांतों के पारस्परिक प्रभाव को दर्शाती हैं।

माना जाता है कि बांग्ला में पहली विज्ञान कथा जगदीशचंद्र बोस द्वारा लिखी गयी। इसी के आसपास मराठी में एस. बी. रानाडे ने विज्ञान कथा की रचना की। इन वर्षों में विज्ञान कथा-साहित्य का तमिल जैसी अन्य भाषाओं में भी विकास हुआ, लेकिन मराठी में इसने अपनी मजबूत जड़ें बना ली हैं, और यह इस संकलन से भी स्पष्ट होता है। लेखक-संपादक बाल फोंडके द्वारा संकलित विभिन्न भारतीय भाषाओं की चुनिंदा विज्ञान कथाओं को पढ़कर भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य की प्रवृत्तियों के बारे में एक निश्चित धारणा बनाई जा सकती है। बाल फोंडके प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, नयी दिल्ली के निदेशक हैं।

# बीता हुआ भविष्य

*लोकोपयोगी विज्ञान*

# बीता हुआ भविष्य

संपादन : **बाल फोंडके**

चित्र : **सुबीर राय**

**सहयोगी लेखक**

जयंत विष्णु नार्लीकर,
बाल फोंडके, लक्ष्मण लोंढे,
सुबोध जावडेकर, निरंजन एस. घाटे,
अरुण मांडे, शुभदा गोगाटे, अनीष देब,
शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय,
निरंजन सिन्हा, 'सुजाता',
राजशेखर भूसनूरमट, संजय हवनूर,
देवव्रत दाश, मुकुल शर्मा,
आर. एन. शर्मा, कैनेथ डायल
देवेंद्र मेवाड़ी, अरविन्द मिश्र

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

# क्रम

# आभार

विभिन्न भारतीय भाषाओं की चुनी हुई विज्ञान कथाओं के संकलन इससे पहले भी प्रकाशित हुए हैं। फिर भी, ऐसा कोई संकलन अभी तक नहीं छपा जिसमें क्षेत्रीयता की सीमाओं को लांघकर भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य का प्रतिनिधित्व करने वाली रचनाएं संकलित की गयी हों। लेकिन विज्ञान कथा-साहित्य के विश्व के मानचित्र पर भारत का नाम अंकित करने की दिशा में अंततः नेशनल बुक ट्रस्ट ने पहल की, तथा इस पहल के लिए पुस्तक की रचनाओं के चुनाव और संपादन की जिम्मेदारी मुझे सौंपने पर मैं नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं। लेकिन जिम्मेदारी स्वीकार करते समय मैंने यह नहीं सोचा था कि यह कितना कठिन काम है, विशेष रूप से इसलिए भी कि मैं सभी भाषाओं से परिचित नहीं हूं। लेकिन तभी कई मित्रों ने अपना सहयोग दिया। इनमें से विट्ठल नादकर्णी, आर. एस. भूसनूरमठ, सैबल कुमार नाग, सुकन्या दत्ता का मैं विशेष रूप से आभारी हूं।

**—बाल फोंडके**

# भूमिका

विज्ञान कथा-साहित्य या साइंस फिक्शन ने जब से साहित्य की अनेक विधाओं की श्रेणी में अपनी पहचान एक नयी विधा के रूप में बनानी शुरू की है, तभी से 'विज्ञान कथा क्या है ?' जैसे प्रश्नों ने समालोचकों और संपादकों का ध्यान बरबस अपनी ओर आकृष्ट किया है। एडगर एलन पो, विलियम विल्सन और एडगर फॉसेट जैसे आरंभिक दौर के प्रख्यात बुद्धिजीवियों एवं साहित्यिक प्रतिभाओं तक ने विज्ञान कथा-साहित्य की परिकल्पना को स्पष्ट करने के कुछ प्रयास किये। 'साइंस फिक्शन' नाम का अपना एक रोचक एवं विकासपूर्ण इतिहास है जिसमें ह्यूगो गर्न्सबैक को श्रीगणेश करने का श्रेय दिया जाता है। यह वही प्रसिद्ध हस्ती है जिसके नाम पर इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए अत्यंत सम्मानीय 'ह्यूगो पुरस्कार' प्रदान किया जाता है। गर्न्सबैक के प्रयासों को विज्ञान कथा-साहित्य की रोचक ऐतिहासिक यात्रा में एक मील का पत्थर माना जाता है क्योंकि विज्ञान कथा-साहित्य को उन्होंने एक अलग विधा के रूप में प्रस्तुत किया था और उसे 'साइंटीफिक्शन' का नाम दिया था। विज्ञान कथा-साहित्य के क्षेत्र में नयी क्रांति की पत्रिका 'अमेजिंग स्टोरीज़' के प्रवेशांक के संपादकीय में ह्यूगो गर्न्सबैक ने इस विधा की परिभाषा दी थी।

इस विधा की तीव्र गति से बढ़ती लोकप्रियता से गर्न्सबैक को विज्ञान कथा-साहित्य की सीमाएं निर्धारित करने की प्रेरणा मिली होगी। उन्होंने कहा था, " 'साइंटीफिक्शन' से मेरा अभिप्राय जूल्स वर्न, एच. जी. वेल्स और एडगर एलन पो द्वारा लिखी गयी ऐसी कहानियों से है जिसमें आकर्षक रोमांस के साथ वैज्ञानिक तथ्य और युगदृष्टा की दूरदर्शिता का सम्मिश्रण हो। ये आश्चर्यजनक कहानियां न केवल पढ़ने में अति रोचक वरन् शिक्षाप्रद भी होती हैं। यह ज्ञान को बहुत ही सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करती हैं। आज विज्ञान कथा-साहित्य में चित्रित किये गये किसी आविष्कार के कल सत्य हो जाने में असंभव जैसा कुछ नहीं है।"

जिस प्रकार धान से चावल को पृथक कर सारतत्व को निकाल लिया जाता है उसी प्रकार गर्न्सबैक ने सदैव ही यह चेष्टा की कि वास्तविक सार को किसी भी विषय से निकालकर प्रस्तुत किया जाये। ऐसा करना अत्यंत आवश्यक एवं

औचित्यपूर्ण भी था क्योंकि छद्म विज्ञान के नाम पर कल्पना की किसी भी उड़ान को विज्ञान कथा-साहित्य के रूप में स्वीकार किये जाने की पूरी आशंका थी। गर्न्सबैक के बाद विज्ञान कथा-साहित्य को परिभाषित और परिमार्जित करने की दिशा में पर्याप्त प्रगति हुई फिर भी उक्त आशंका को पूरी तरह टाला नहीं जा सका। इसी आशंका के कारण गर्न्सबैक ने विज्ञान कथा-साहित्य की परिभाषा को नपे तुले शब्दों में तैयार करने में जो तत्परता बरती वह आवश्यक थी।

इस सबके बावजूद गर्न्सबैक द्वारा विज्ञान कथा-साहित्य को दी गयी परिभाषा को अग्नि परीक्षा की व्यथा से गुजरना पड़ा। इस कारण विज्ञान कथा-साहित्य की विधा को न केवल 'अनुमानात्मक कथा-साहित्य' का नाम दिया गया जो ठीक था, वरन् उसे 'भविष्यदृष्टा कथा-साहित्य' भी कहा जाने लगा। इसलिए साहित्य की इस विधा में लिखनेवालों से यह अपेक्षा की जाने लगी कि उनके लेखन में न केवल विलक्षणता, दूरदर्शिता हो, बल्कि अद्‌भुत कल्पनाशक्ति भी हो।

आरंभिक काल के वेल्स और वर्न जैसे चोटी के लेखकों के भावी घटनाक्रमों के पूर्वानुमानों के पर्याप्त ठीक निकलने की सफलता ने गर्न्सबैक जैसे व्यक्तित्व को प्रभावित किया होगा, भले ही उन लेखकों ने घटनाओं की ओर संकेत किया हो या रूपरेखा मात्र ही दी हो। वेल्स और वर्न के प्रयास चाहें कितने भी असाधारण रहे हों पर वे नियम नहीं वरन् अपवाद ही हो सकते थे। यह ठीक वैसे ही था जैसे कहीं ऊंची चोटी पर बैठकर नीचे की भूमि की पूरी जानकारी लिए बिना उसके लिए योजना और कानून बनाना, जो संभव नहीं हो सकता।

यह अवांछित भार विज्ञान कथा-साहित्य की तेजी से उभर रही नये लेखकों की पीढ़ी के लिए वास्तव में बहुत अधिक था। इस शताब्दी के दूसरे दशक में जान कैम्पबैल ने आइसाक आसिमोव और राबर्ट हेनलीन सहित तत्कालीन स्वर्णयुगीन नये लेखकों के लिए दाई मां की कठिन भूमिका निभाई और साथ ही उन्होंने संघर्ष का सामना भी किया। इस विधा के संबंध में उन्होंने अपना एक नीति-पत्र भी प्रस्तुत किया। उनके इस उपक्रम ने विज्ञान कथा-साहित्य की टेढ़ी नींव को सुस्थापित करने हेतु उसे संतुलित सशक्तता भी प्रदान की।

कैम्पबैल का प्रस्ताव था—"विज्ञान कथा-साहित्य को विज्ञान परिवार का साहित्यिक माध्यम माना जाना चाहिए। वैज्ञानिक कार्यपद्धति एक ऐसी संभाव्यता है, जो न केवल भली प्रकार समझ-बूझकर सिद्धांत की व्याख्या करती है, वरन् नयी और अनखोजी वस्तुओं के बारे में भी अपना मत व्यक्त करती है। विज्ञान कथा-साहित्य भी बहुत कुछ ऐसा ही है और वह कहानी के रूप में लिखा जाता है, जिसके परिणाम ऐसे आकार ग्रहण करते हैं जो न केवल मशीनों पर बल्कि मानव समाज पर भी लागू होते हैं।" विज्ञान कथा-साहित्य को साइंटीफिक्शन की बजाय वर्तमान 'साइंस फिक्शन' नाम देने का श्रेय भी जान कैम्पबैल को ही है।

कैम्पबैल की इन परिभाषाओं में यह संभावना स्पष्ट रूप से अंतर्निहित थी कि कथा-साहित्य की यह विधा अपनी समकालीन विधाओं की अपेक्षा विषय-वस्तु, रूप और क्षेत्र में कहीं अधिक गतिमान होगी। वह अपेक्षा से कहीं अधिक सफल रही, किंतु साथ ही इसकी मूल संकल्पना में उदारीकरण भी होता गया। इसके फलस्वरूप नये लेखकों को नये क्षेत्रों को खोजने का साहस हुआ और जो सत्कार योग्य लगा उसे उन्होंने विज्ञान कथा-साहित्य की मुख्य धारा में जोड़ा। विज्ञान कथा-साहित्य के इन्हीं अर्धविकसित व परिवर्तित रूपांतरों ने अपने क्षेत्र के दिग्गज कथाकारों को जन्म दिया।

यह तो हमें ईमानदारी से मानना ही पड़ेगा कि विज्ञान कथा-साहित्य के इन नये मसीहाओं और उनके अनुयायियों ने इस माध्यम को समृद्ध बनाने में अपना योगदान दिया है। हर नयी सफलता ने दूसरों को उस दिशा में आगे साहसिक पग उठाने, नये प्रयोग कर नये मार्ग खोजने तथा नयी पद्धतियों को प्रसारित करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि साहित्य की बहुत सी अन्य विधाओं की तरह विज्ञान कथा-साहित्य की प्रगति को कभी भी अवरुद्धता और गतिहीनता का भय नहीं हुआ।

फिर भी, इस दौरान कुछ खोज यात्राएं इतनी दूरी तक की गयीं जिनसे मूल विधा से जुड़े सूत्रों में बहुत अधिक तनाव का आभास हुआ। थियोडोर स्टर्जीऑन ने इस अभियान का शुभारंभ अपनी स्वयं की विज्ञान कथा-साहित्य की परिभाषा की घोषणा से किया कि "विज्ञान कथा-साहित्य एक ऐसी कहानी है जो मानव के चारों ओर किसी मानवीय समस्या और उसके समाधान के ऐसे ताने-बाने से गढ़ी जाती है जो वैज्ञानिक विषय-वस्तु के बिना घटित नहीं हो सकती है।" विज्ञान और कथा-साहित्य के एकीकरण का यह एक प्रशंसनीय प्रयास था क्योंकि विज्ञान किसी तर्कहीनता को सहन नहीं करता और कथा-साहित्य में भावावेश और कल्पना जैसी उन मानवीय शक्तियों की ओर झुकाव अधिक होता है जो कारण और तर्क पर प्रायः कटाक्ष करती हैं।

स्टर्जीऑन की इस परिभाषा ने गर्न्सबेक और कैम्पबैल के वर्षों के अथक प्रयासों द्वारा निर्मित मर्यादा पर एक ऐसी चोट की जिससे वर्षों से बंधा बांध टूट गया और लेखनी का उन्माद बह निकला। जिन लेखकों ने स्टर्जीऑन का अनुसरण किया उन्होंने सदैव कल्पना को विज्ञान की लगाम से शासित करना आवश्यक नहीं समझा। इसी कारण एक नयी परिभाषा को लोकप्रियता प्राप्त हुई–"विज्ञान कथा-साहित्य वर्णनात्मक गद्य का वह स्वरूप है जिसकी पृष्ठभूमि उस विश्व की नहीं है जिसे हम जानते हैं वरन् उस काल्पनिक जगत की है जो विज्ञान के कुछ आविष्कारों या प्रौद्योगिकी या छद्म विज्ञान या छद्म प्रौद्योगिकी या मानव या पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य स्थान की है।"

यह ऐसी शुरुआत थी जिससे एक अजीब स्थिति पैदा हुई। परिणामस्वरूप अंग्रेजी भाषी पश्चिमी दुनिया में मौलिक रूप में ऐसा नया विज्ञान कथा-साहित्य बड़ी मात्रा में लिखा जा रहा है जिसमें वास्तविक विज्ञान का पुट बहुत कम है। वर्तमान के इस विज्ञान कथा-साहित्य में जिस रफ्तार और मात्रा में छद्म विज्ञान और छद्म प्रौद्योगिकी का समावेश किया जा रहा है उससे तो यह स्पष्ट है कि यह विधा अपना मूल स्वरूप खो बैठेगी। वास्तव में, ऐसा होने से विज्ञान कथा-साहित्य का रूप न सिर्फ अपने अनुरागी एवं पारखीजनों वरन् इस विधा को समर्थन और प्रेरणा देने वाले लेखकों और प्रतिभाओं में भी भ्रांतियां उत्पन्न करता दिखाई देता है।

पश्चिमी देशों की अन्य भाषाओं में उक्त विधा की स्थिति क्या और कैसी है, यह स्पष्ट नहीं है क्योंकि उनका अंग्रेजी में अनुवाद न के बराबर उपलब्ध है। हां, अंग्रेजी में उपलब्ध अनूदित रूसी और पोलिश विज्ञान कथा-साहित्य की संख्या काफी अधिक है। इन भाषाओं के लेखकों की गर्न्सबैक, कैम्पबैल और स्टर्जीऑन की विचारधारा में पूरी निष्ठा पायी जाती है और वे स्टेनीसला लैम द्वारा दिये उदाहरण से पूरी तरह प्रभावित लगते हैं। हालांकि रूसी कथा-साहित्य में भाषा का गठाव कुछ इस प्रकार का है कि कथा-साहित्य का रोचक पक्ष लुप्त होता दिखाई देता है।

भारत के अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के कई विज्ञान कथा-साहित्य लेखक अमेरिका-ब्रिटेन के समकालीन विज्ञान कथा-साहित्य में प्रतिनिधित्व करनेवाले लेखकों से प्रभावित हैं। परिणामस्वरूप वे भी छद्म विज्ञान का सहारा लेते हैं और कृतियों में उन मुहावरों का प्रयोग करते हैं जो भारतीय लोकाचार से मेल नहीं खाते। इस प्रकार के साहित्य को भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य माना भी जाये या नहीं, यह प्रश्न अपने आपमें कम महत्वपूर्ण नहीं है। परंतु वास्तविकता मात्र यही है कि इसमें न तो भारतीयता है और न ही विज्ञान कथा-साहित्य का अंश, सिवा इसके कि ये लेखक भारत के हैं। अंग्रेजी साहित्य के भारतीय पाठकों का नाता शायद थोड़ा बहुत पश्चिमी जगत की संस्कृति से जुड़ा हुआ है, इसलिए संभवतः ये लेखक इस तरह की कहानियां लिखते हैं। यदि वे विज्ञान कथा-साहित्य के प्रतिष्ठित स्वरूप से जुड़े रहते तो उनका मूल विज्ञान और कल्पना की उन्मुक्त उड़ान के मध्य रखी सामन्जस्य की तलवार पर चलना आवश्यक हो जाता। कल्पना की उन्मुक्त उड़ान को उन्हें अपने विज्ञान के ज्ञात और मान्य तथ्यों तक सीमित रखना आवश्यक होता जिसे कर पाना आसान नहीं। छद्म विज्ञान की बैसाखी से उन्हें तुरंत इस बंधन से मुक्ति मिल जाती है। इस कारण इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि यह स्थिति उनके आकर्षण का बल रही होगी।

वैसे, इस प्रकार के लेखकों की संख्या, विशेषकर भारतीय भाषाओं में, अधिक

नहीं है। अधिकांश उपलब्ध भारतीय भाषाओं का विज्ञान कथा-साहित्य स्टर्जीऑन के विचारों से प्रभावित दिखाई देता है। इसलिए, विज्ञान के किसी भी विकास को परिशुद्धता से प्रस्तुत करने को नहीं भूलना चाहिए तथा यह भी कि वह प्रस्तुतीकरण कहानी के रूप में हो। इसी तरह, कहानी का ताना-बाना सामान्यतया मानव के आसपास ही बुना जाना चाहिए।

भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य की इसी प्रबल अंतर्धारा ने प्रस्तुत संग्रह के लिए कहानियों का चयन करते हुए महत्वपूर्ण एवं बुनियादी नियमों का काम किया। इस मुख्य आधार की उपेक्षा करना न तो उचित था और न ही प्रातिनिधिक।

ऐसा माना जाता है कि विज्ञान कथा-साहित्य का विकास चार विभिन्न चरणों में हुआ है। इस विधा के उद्भव के ठीक समय के बारे में पर्याप्त विवाद रहा है। कुछ विद्वान इस विधा के उद्भव को संभव है कि गिल्गामेश के बेबिलोनियाई महाकाव्य में खोजें। सभ्यता के उषाकाल की कहानियों में विज्ञान कथा-साहित्य का उद्भव खोजने का प्रलोभन भली प्रकार समझ में आता है। इसी तरह के विचारों एवं तर्कों को भारतीय समीकरणों में उतरते देखा गया है जहां आज के आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को वेदों से जोड़ा जाता है।

निष्पक्ष एवं तर्कपूर्ण विश्लेषणों के आधार पर सभी इस बात से सहमत हैं कि मेरी शैली कृत प्राचीन उत्कृष्ट ग्रंथ 'फ्रैंक्स्टीन' ही प्रथम विज्ञान कथा है। यह विडंबना ही है कि फ्रैंक्स्टीन वास्तव में उस वैज्ञानिक का नाम था जिसके अजीबोगरीब परीक्षणों की परिणति है वह दैत्याकार राक्षस, जिसे आज फ्रैंकस्टीन समझा जाता है। संभवतया यह परिणाम भी उस मानवीय भूल का हो सकता है जो राक्षस की छाया में विज्ञान के छिपे काले पक्ष की आशंका से जन्मा हो और जो प्रयासकर्ताओं को भुगतना पड़ता है।

यह चाहे कितनी भी भयावह प्रतीत हो, मेरी शैली की कृति से उभरी अंतर्धारा में एक ऐसी पृष्ठभूमि थी जो साहसिक व रोमांचकारी थी और जिसने विज्ञान कथा-साहित्य के आरंभिक एवं मुख्य काल में अपना वर्चस्व बनाये रखा। यह स्थिति शताब्दी के तीसरे और चौथे दशक तक रही। जान कैम्पबैल द्वारा आसिमोव, हेनलीन और ऑर्थर क्लार्क जैसे लेखकों की सहायता से जब इस विधा में आमूल परिवर्तन किया गया तो सदियों से चले आ रहे इसके प्रभाव के पाश को तोड़ा जा सका।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस विधा के विकास का दूसरा चरण गर्न्सबेक और कैम्पबैल द्वारा रची गयी विज्ञान कथा-साहित्य की परिभाषा से प्रभावित था। इसलिए उस समय के स्पंदनशील विज्ञान कथा-साहित्य को आगे बढ़ाने के पीछे विज्ञान का बल लगा था। विज्ञान और कथा-साहित्य के बीच सामन्जस्य बनाये रखना तलवार की धार पर चलने के बराबर था। इस काल के कृतिकारों ने तटस्थ,

अवैयक्तिक एवं पूर्णतः तार्किक विज्ञान का काल्पनिक, संवेदनशील और प्रायः तर्कहीन कथा-साहित्य से संगम कराया। चूंकि उस समय विज्ञान कथा-साहित्य लेखन का मूल उद्देश्य विज्ञान के मान्य सिद्धांतों की व्याख्या करना, उनका प्रचार करना और उनके संभावित भविष्य के मार्ग का वर्णन करना था, अतः यह संबंध कठिन सिद्ध नहीं हुआ। इस युग के विज्ञान कथा-साहित्य को परीक्षित एवं सर्वमान्य वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित सीमित तर्क और भविष्य की कल्पना की उन्मुक्त उड़ान के समरूप और सामंजस्यपूर्ण समावेश से गढ़ा गया। परिणामस्वरूप, इस दौरान जो भी कृतियां सामने आयीं उन्हें आज भी विज्ञान कथा-साहित्य के स्वर्णयुगीन काल की भेंट माना जाता है, क्योंकि इस काल में विज्ञान कथा-साहित्य के कुछ ऐसे गौरव ग्रंथों की रचना हुई जिनका महत्व किसी समय कम नहीं होता।

इस विधा की इस धारा का आकर्षण इतना प्रबल रहा कि शायद आज तक भी बिना रुके वह जारी रहता। पर फिर आया द्वितीय विश्वयुद्ध, जिसने ब्रह्मांड के बारे में मानव की परिकल्पना को सदा के लिए बदल दिया। नागासाकी और हिरोशिमा पर गिराये गये परमाणु बमों से उठे मानवता को ध्वस्त करते बादलों ने जिस नृशसता का परिचय दिया उससे मानव को यह विश्वास हो आया कि विज्ञान किस हद तक हिंसक होकर सामाजिक ढांचे और मानवीय मूल्यों को बदल सकता है। अब विज्ञान केवल ज्ञान की खोज और प्रकृति पर विजय पाने का अहिंसक मार्ग नहीं रह गया था। और इसके साथ जुड़ी विज्ञान प्रदत्त एक ऐसी संभावना, जिसमें मानव तो क्या मशीन तक, जीते जागते फ्रैंकस्टीन की भांति बेकाबू दौड़ती दिखाई दी। जो भी हो, इसने मानव की कल्पनाशक्ति को व्यापकता अवश्य प्रदान की। समाज को भौगोलिक और नस्ल की संकीर्णताओं में बांटने वाली सीमा रेखाएं अब काल्पनिक दिखाई देने लगीं। मानव विश्व के परिप्रेक्ष्य में गंभीर चिंतन के लिए बाध्य हो गया था।

दृष्टिकोण के इस वैचारिक परिवर्तन को, तीसरे चरण में प्रवेश करते विज्ञान कथा-साहित्य में, प्रतिबिंबित होते देखा गया, जहां विज्ञान के उस गूढ़ क्षेत्र में अभी भी लिखा जाना बाकी था। परंतु आगे चलकर ज्ञात से अज्ञात की कल्पना और अनुभूति पर सामाजिक संदर्भों का वर्चस्व रहा। विज्ञान कथा-साहित्य में जो प्रमुखता विज्ञान की व्याख्या को दी जाती थी, अब वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास और उसके सम्पूर्ण मानव समाज पर पड़ने वाले प्रभाव के परिणामों के खोजने को दी जाने लगी।

तीसरे चरण की इस परिपक्वता से विज्ञान कथा-साहित्य के आकर्षण को बढ़ावा मिला। यह वही समय था जब विश्व भर में समाजवाद और उदारवादी विचारों ने राजनैतिक और आर्थिक अखाड़ों में अपना प्रभुत्व स्थापित किया था। अब पाठक इस काल के विज्ञान कथा-साहित्य को न केवल कल्पना की उन्मुक्त

उड़ान वरन् संभाव्य या वास्तविक सचाई से जोड़ सकते थे। दूरी और एकांत कम होने की वजह से पाठक में कथा-साहित्य के प्रति चाह उत्पन्न हुई जो उसके आराम और मनोरंजन तक पहुंची है। इस प्रगति से विज्ञानवादियों को भी संतोष हुआ क्योंकि इससे जन सामान्य की परोक्ष रूप में विज्ञान संबंधी मामलों में दिलचस्पी पैदा हुई।

कुछ लोगों का विचार था कि इस आकर्षण से जो कथा-साहित्यप्रेम उत्पन्न हुआ, वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उस नयी और निराली व्यवस्था के कारण हुआ है, जबकि कुछ अन्य को यह आशंका थी कि कहीं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास का क्रम गलत हाथों में न चला जाये और पुनः उन दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

विज्ञान कथा-साहित्य के स्वरूप और उसकी मर्यादाओं के बारे में अभिव्यक्तियों की अग्नि-परीक्षा के फलस्वरूप विज्ञान कथा-साहित्य का एक स्थायी एवं अपूर्व रूप निखरकर सामने आया और वह नयी-नयी शाखाओं में विकसित होने लगा। यहीं से उसे अगले, यानी चौथे तथा निर्णायक चरण में पदार्पण करना था, परंतु उसमें अभी कुछ समय और वांछित था। किसी भी साहित्यिक विधा के विकास क्रम में, आगे या पीछे एक वार ऐसा पड़ाव अवश्य आता है जब उसके लेखक, आलोचक और पाठक सभी उसकी विषय-वस्तु की अपेक्षा उसकी शैली और स्वरूप पर अधिक ध्यान देने लगते हैं। छठे दशक में उभरा चौथे चरण का शैली-प्रधान विज्ञान कथा-साहित्य उसे उन नयी ऊंचाइयों पर ले गया जो कट्टरवादी विविधता वाले विज्ञान कथा-साहित्य से दूर था। उस समय से अमेरिका और यूरोप के विज्ञान कथा-साहित्य में इस काल की विशेषताओं का प्रबल प्रभाव रहा है। हालांकि सर्वसम्मत विज्ञान से इस कथा-साहित्यधारा का सूक्ष्म संबंध रहा है। इस कारण इसे नरम दल की धारा माना जाता है।

भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य भी इसी तरह विभिन्न अवस्थाओं में से गुजरकर विकसित हुआ है। पिछली शताब्दी के संधिकाल में इस साहित्यिक विधा का कई भाषाओं में आविर्भाव हुआ। बंगला में पहली विज्ञान कथा लिखने का श्रेय प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु को दिया जाता है। उनकी यह रचना वर्ष 1897 में प्रकाशित हुई। इसमें बताया गया था कि कैसे सिर पर लगाने वाले तेल की एक शीशी डालने से सन्निकट समुद्री तूफान टल गया। समुद्र पर विजय विज्ञान कथा-साहित्य की सर्वोत्कृष्ट विशेषताओं में से एक है अर्थात् कहानी का ताना-बाना वैज्ञानिक आधार पर एक दुर्बोध्य तथ्य का उद्घाटन है। मराठी में भी लगभग इसी समय, इस विधा में पहली कहानी लिखी गयी। एस. बी. रानाडे की कहानी 'तरेचे हास्य', और नाथ माधव रचित उपन्यास 'श्रीनिवास राव' लगभग एक साथ ही प्रकाशित हुए। उधर जूल्स वर्न की प्रसिद्ध विज्ञान कृति 'जर्नी टू द मून' का

भी अनुवाद 'केरल कोकिल' में प्रकाशित हुआ।

इस अनूदित विज्ञान कथा-साहित्य में अधिकांशतः वर्न, वेल्स और उनके समकालीन लेखकों की कहानियां थीं जो इस विधा की उस प्रथम अवस्था से संबंधित थीं, जिसमें साहसिक कार्यों की प्रधानता थी। चूंकि इस शताब्दी के छठे दशक के अंत और सातवें दशक के आरंभ तक कथा-साहित्य की अन्य धाराओं का अलग-अलग शैलीगत विधाओं में वर्गीकरण हो चुका था, इसलिए विज्ञान कथा-साहित्य को परियों की कहानियों के साथ बाल साहित्य से जोड़कर छोड़ दिया गया। संभवतया यही कारण था कि बंगला में सत्यजीत रे और मराठी में डी. पी. खाम्बेटे और नारायण धारप जैसे नियमित रूप से लिखने वाले भारतीय लेखक भी विज्ञान कथा-साहित्य को निष्क्रियता से मुक्ति नहीं दिला सके।

यह स्थिति शताब्दी के सातवें दशक तक रही जब तक कि भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य का पुनर्जन्म नहीं हुआ। इसके बाद उसने सीधे दूसरे सोपान पर छलांग लगायी और तेजी से तीसरे सोपान पर पहुंच गयी। इस पुनर्जन्म के कई कारण हो सकते हैं।

उधर वैज्ञानिक संचार कला में अभूतपूर्व परिवर्तन आया था। परिणामस्वरूप सभी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथ्यों को सरल करके एक आम आदमी को समझाने की दृष्टि से लेख लिखे जाने लगे और ये एक साहित्यिक विधा का रूप ग्रहण करते गये जो विगत वर्षों में लिखे गये कथा-साहित्य की धरोहर मात्र थी। इस प्रकार, विज्ञान के लोकप्रिय लेखों को कहानी, लघुनाटिका या फिर साहित्यिक निबंधों के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। इसी तरह वैज्ञानिक खोज की घटनाओं को लघुकथाओं के रूप में लिखा जाने लगा और उनमें वैज्ञानिकों को पात्र के रूप में प्रस्तुत भी किया जाने लगा। इन अनेक प्रयासों को गलती से प्रायः विज्ञान कथा-साहित्य माना जाने लगा। ऐसा साहित्य सभी भाषाओं में खूब लिखा गया और आज भी लिखा जा रहा है। हालांकि इसे न केवल लेखकों वरन् समीक्षकों और पाठकों द्वारा विज्ञान कथा-साहित्य नहीं माना जा सका और न ही विज्ञान कथा-साहित्य के किसी प्रतिनिधि संग्रह में उनको स्थान मिल सका। इसलिए उन्हें इस संग्रह में स्थान न मिलना स्वाभाविक था।

इधर, विज्ञान शिक्षा के नये पाठ्यक्रमों की 10+2+3 की प्रणाली में विज्ञान और गणित को प्रमुखता दी गयी। इस कारण अपने उज्ज्वल भविष्य की बलि चढ़ाये बिना विज्ञान और गणित से पीछा छुड़ाना संभव नहीं रहा। इसके परिणामस्वरूप आगे नहीं तो कम से कम दसवीं कक्षा तक तो विज्ञान का अध्ययन अनिवार्य हो गया। इलैक्ट्रानिक मीडिया, विशेषकर टेलिविजन के माध्यम ने आम आदमी में व्यापक वैज्ञानिक जागृति का अद्वितीय कार्य किया और विज्ञान कथा-साहित्य की पुनः शानदार वापसी के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

वास्तव में, यह वही समय था जब मूर्धन्य वैज्ञानिकों अथवा प्रसिद्ध लेखकों ने विज्ञान कथा-साहित्य लिखने का प्रयास करना आरंभ किया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सुविख्यात खगोलशास्त्री, जो विज्ञान कथा-साहित्य के प्रतिभाशाली लेखक भी हैं, सर फ्रेड हॉयल के शिष्य जयंत नार्लीकर ने मराठी में विज्ञान कथा-लेखन में अग्रणी होकर मार्गदर्शक के रूप में शुरुआत की। यह शुरुआत अति लोकप्रिय हुई और परिणामस्वरूप जो प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाएं पहले इस तरह के कथा साहित्य को छापने में स्पष्ट इन्कार करते थे, वे अब उन्हें प्रकाशित करने के लिए निश्चित स्थान का प्रावधान करने लगे। इस तरह से विज्ञान कथा-साहित्य के प्रति आये बदलाव से इस विधा के सम्मान में वृद्धि हुई, जिससे मराठी में विज्ञान कथा-साहित्य की जड़ें मजबूत हुईं और धीरे-धीरे समस्त विधा एक विशाल वृक्ष के रूप में पल्लवित होती दिखाई दी। इसी प्रकार के एक घटनाक्रम का तूफान बंगला साहित्य जगत में भी आया और उसने बंगला में विज्ञान कथा-साहित्य को सुस्थापित किया। अन्य भारतीय भाषाओं की स्थिति व विकास यात्रा भी इसी प्रकार की रही है।

इस तरह के आधुनिक भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य पर अधिकांशतया विज्ञान कथा-साहित्य यात्रा के द्वितीय व तृतीय चरणों का प्रभाव दिखाई देता है। बाद में, विज्ञान कथा-साहित्य तृतीय चरण से प्रभावित पाया गया। यह तो सत्य है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति से आज मानव के क्रियाकलापों, व्यवहार और संबंधों में जो परिवर्तन आया है, उससे बदलते सामाजिक परिवेश और आचार-विचार दोनों में वास्तविकता और संभव हो सकने की सार्थकता प्रकाश में आयी। जीवन में विज्ञान के पदार्पण के परिणामस्वरूप हुई क्रांति को विज्ञान कथा-साहित्य में सत्य होते देखा गया। विज्ञान कथा-साहित्य के अतिरिक्त साहित्य की किसी अन्य विधा में इस प्रकार की कल्पना को सम्पूर्ण और इतने व्यापक ढंग से प्रस्तुत करने की सुविधा नहीं है।

सामाजिक संदर्भ में प्रासंगिक विज्ञान कथा-साहित्य के आज भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य पर छाये होने का एक कारण दूसरा भी है। जीवविज्ञान के विकास ने विशेषकर आण्विक जीवविज्ञान और उसकी सहोदर जैवप्रौद्योगिकी जैसी अत्यंत शक्तिशाली नयी उपशाखाओं को जन्म दिया है। इन शाखाओं के विज्ञान ने मानव में जीवन का सृजन करने, उसे अपने अनुसार ढालने और बदलने की ऐसी क्षमता उत्पन्न करने की वचनबद्धता पूरी की है जिसके परिणामस्वरूप समाज के ढांचे और कार्यप्रणाली के साथ-साथ आचारिक और नैतिक सिद्धांतों में आमूल परिवर्तन संभव हो सका है। मानव का ईश्वर को खिलौना समझकर खेलने के प्रयास ने हमारे आपसी संबंधों की प्रकृति को इस हद तक बदलने की धमकी दी है जिससे वे अपनी पहचान तक खो दें। आज तक अत्यंत व्यक्तिगत समझी जाने वाली बातें और स्थितियां उस अवस्था में पहुंच रही हैं कि स्वयं व्यक्ति का ही उनमें

दखल शायद समाप्त हो जाये। ऐसे में यह स्वाभाविक था कि एक बड़ी संख्या में आज भारतीय विज्ञान कथाओं का विषय इस परिवर्तन से जुड़ा हो। आज के विज्ञान कथा-साहित्य में वैज्ञानिक प्रगति और मानवीय भावनाओं अथवा सामाजिक सिद्धांतों के आपसी प्रभाव को आज भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य की प्रतिनिधि रचना-संग्रह की आधारशिला माना जाये।

यह सिर्फ इसलिए है कि अधिकाशंतया भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य इस विकास यात्रा के उस द्वितीय और तृतीय चरणों से संबंधित है जिसकी वजह से इसने एक ऐसा विशिष्ट गुण प्राप्त किया है जो इसे यूरोपीय और अमेरिकी विज्ञान कथा-साहित्य से भिन्न भारतीय नाम देता है। दूसरे शब्दों में, इस कथा-साहित्य की भारतीयता उसके भौगोलिक मूल पर नहीं वरन् सांस्कृतिक और सामाजिक अवधारणाओं पर आधारित है जो इसकी अंतर्आत्मा है।

साहसिक प्रवृत्ति का होने के कारण विज्ञान कथा-साहित्य का पहला चरण वास्तव में उन परिस्थितियों और जातिगत परिवेशों पर निर्भर नहीं करता जिनसे वह उत्पन्न हुआ है। मानव के साहसिक कार्यों के प्रति लगाव उसकी जाति से परे, उसके स्वयं के होते हैं। ऐसी कहानियां आम जीवन की गुणवत्ता और सामाजिक ढांचे से उत्पन्न आकांक्षाओं से बिल्कुल संबंधित नहीं होतीं जिन्हें लेखक और पाठक समान रूप से जीते हैं।

ऐसा द्वितीय एवं विशेषकर तृतीय चरण के विज्ञान कथा-साहित्य में नहीं है। यद्यपि दूसरे चरण में विज्ञान को समझाने की दृष्टि से लिखे गये कथा-साहित्य का वर्चस्व रहा, फिर भी रचनाकार इस बात को नजरअंदाज नहीं कर सकता है कि पाठक की सांस्कृतिक और भावात्मक पृष्ठभूमि क्या है। वैसे, चाहे कहानी और उसके विषय की कथा-साहित्य में कितनी भी महत्वपूर्ण भूमिका क्यों न हो, वह पाठक को अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल नहीं है, जब तक कि वह कहानी के पात्रों के साथ एकाकार नहीं कर लेता।

विज्ञान क्यों नहीं सार्वभौमिक हो सकता ? प्रकृति के नियम ब्रह्मांड में हर जगह समान हैं। वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक विकास की उपादेयता केवल तब तक ही रहती है जब तक भौतिक पदार्थ के संसार के संदर्भ में बात होती है। वैसे एक बार जब कोई इन विकास के कार्यक्रमों का मानवीय गुणों विशेषकर भावनाओं पर पड़े प्रभावों का खाका खींचने की चेष्टा करता है तो वह अपने आपको सांस्कृतिक ताने-बाने में बंधा पाता है। उदाहरण के तौर पर प्रतिनियुक्त मातृत्व को संभवतया कल तक काल्पनिक माना जाता था। आज इस वास्तविकता के बारे में अर्थात् इस अत्यन्त महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धि को अलग-अलग नजरिए से देखा जाता है। नजरिया भी उसी तरह बदलता है जैसे कि हर बीस किलोमीटर के बाद बोली। उसी प्रकार हिमयुग या नाभिकीय शरद को भी लोग अपनी अलग-अलग सांस्कृतिक

दृष्टि से देखेंगे। संभवतया इसी दृष्टिकोण के कारण ही भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य को भारत की राजनैतिक या भौगोलिक सीमा मात्र के अंदर लिखा गया साहित्य नहीं माना जा सकता।

यह बात इस कसौटी पर स्पष्ट तौर पर खरी उतरती है कि भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य में जो कुछ भी मराठी में लिखा गया, वह कदाचित भी बंगला से, और जो कुछ भी बंगला में लिखा गया, वह तमिल में लिखे गये विज्ञान कथा-साहित्य से मेल नहीं खाता है। इसका कारण यह है कि विभिन्न भाषाओं में विज्ञान कथा-साहित्य का विकास अलग-अलग ढंग से हुआ है और विज्ञान कथा-साहित्य को इन भाषाओं के साहित्य में जो स्थान मिला वह भी एक दूसरे से भिन्न है।

मात्रा और गुणवत्ता, दोनों की दृष्टि से मराठी में विज्ञान कथा-साहित्य का बाहुल्य पाया गया। इस भाषा में विज्ञान कथा-साहित्य ने न केवल अपनी जड़ें सुदृढ़ कीं वरन् एक सशक्त विधा के रूप लेने की राह पर अग्रसर है। 1950 के दशक से ही मराठी में नियमित रूप से विज्ञान कथा-साहित्य का प्रकाशन आरंभ हो गया था। अपरिहार्यतः इस दिशा में प्रथम प्रयासों के रूप में वर्न और वेल्स की प्रसिद्ध कृतियों, जैसे कि 'दी इनविजिबल मैन' और 'अराउंड द वर्ल्ड इन एटी डेज़', के प्रामाणिक रूपांतर प्रमुख थे। पाठकों ने इन प्रयासों को बेहद सराहा क्योंकि इनमें स्थानीय परिप्रेक्ष्य के साथ मुहावरों और विचारों का समावेश करके इन्हें अत्यंत रोचक बनाने की भरपूर चेष्टा की गयी थी।

चूंकि इन प्राचीन ग्रंथों में विज्ञान कथा-साहित्य जगत के प्रथम चरण के साहसिक रोमांच का वर्णन था, इनकी बच्चों का साहित्य मान कर उपेक्षा की गयी। हालांकि इसे हर वर्ग और हर आयु के पाठकों ने पसंद किया था। किंतु आलोचकों और इस विधा के दिग्दर्शकों के दुर्भाग्यपूर्ण रवैये से मराठी साहित्य के दूसरे चरण का स्वरूप अपेक्षित लोकप्रियता के पथ पर नहीं चल सका। ऐसा छठे और सातवें दशक तक चलता रहा और संभवतया आगे भी चलता यदि अनंत अन्तरकर, जिन्हें भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य का जान कैम्पबैल मान सकते हैं, ने लीक से हटकर एक नयी 'नवल' नामक पत्रिका का संपादन कर और अपनी विद्वता का प्रमाण दे, इस विधा को गलत रास्ते पर जाने से न बचाया होता।

सातवें दशक के अंतिम वर्षों तक स्थिति बहुत कुछ वही रही, परंतु इसी दौरान जयंत नार्लीकर जैसे मूर्धन्य वैज्ञानिकों के पदार्पण ने इस विधा की प्रतिष्ठा बढ़ाई। उधर, इस दिशा में मराठी विज्ञान परिषद् द्वारा प्रतिवर्ष प्रतियोगिता आयोजित आरंभ किये जाने से पूरी की पूरी एक विज्ञान कथा-साहित्य लेखकों की पीढ़ी तैयार हो सामने आयी। आज के बहुत से विज्ञान कथाकार बीते हुए कल की उक्त प्रतियोगिता के विजेता रह चुके हैं।

विकास का दौर जो आरंभ हुआ, वह फिर रुका नहीं, अर्थात् मराठी विज्ञान

कथा-साहित्य ने फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा। पत्र-पत्रिकाओं में इस कथा-साहित्य के लिए स्थान निर्धारित हुए, नियमित रूप से लिखने वाले आगे आये। प्रसिद्ध और लोकप्रिय पत्रिकाओं के दीपावली के अवसर पर प्रकाशित होने वाले विशेषांकों में हर वर्ष औसतन पचास कहानियों प्रकाशित होती हैं। काफी संख्या में उपन्यास और कहानी-संकलन प्रकाशित हो रहे हैं। इनमें से कई रचनाओं के अन्य भाषाओं में अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं। निस्संदेह मराठी विज्ञान कथा-साहित्य अन्य भारतीय भाषाओं के विज्ञान कथा-साहित्य की अपेक्षा सबल और सशक्त है।

यद्यपि अन्य भारतीय भाषाओं में इस विधा की शुरुआत कुछ भिन्न नहीं है, फिर भी मराठी में इस विधा का जिस प्रकार और जिस तीव्रता से विकास हुआ वह अन्यत्र कहीं नहीं हुआ। बंगला में सत्यजीत रे जैसे लेखकों के होते हुए भी यह विधा पर्याप्त रूप से फल-फूल नहीं पायी। अरुणा सिन्हा जैसे सुप्रसिद्ध आलोचकों के अनुसार 'यह विधा अनुवाद और व्यंग्य की दलदल में धंसकर रह गयी। स्थिति वास्तव में ऐसी न होती यदि सत्यजीत रे ने अपने प्रारंभिक प्रयासों को आगे बढ़ाया होता। दुर्भाग्यवश उनके बाद के प्रयास विज्ञान कथा-साहित्य को प्रथम चरण की तरफ पीछे खींचते रहे। वास्तव में, इनमें विज्ञान को पीछे रखकर साहसिक घटनाओं को प्रमुखता दी गयी थी।

कुछ अन्य प्रतिभाशाली लेखकों ने मूल वैज्ञानिक सिद्धांतों के विपरीत कृत्रिम और भ्रामक विज्ञान कथा-साहित्य की रचना आरंभ की। दूसरी ओर, जहां विज्ञान पक्ष नयी चेतना जागृत करता प्रतीत होता, वहां कथा-साहित्य का स्वरूप ढीला और अव्यवस्थित था। बंगला विज्ञान कथा-साहित्य को ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थति से काफी कुछ बाहर निकालने का श्रेय अदरीश बर्धन को जाता है, जो स्वयं भी एक विज्ञान कथा-साहित्य लेखक हैं। इस दिशा में उनके द्वारा सम्पादित 'फैन्टास्टिक' नामक पत्रिका उल्लेखनीय है जो पूरी तरह से विज्ञान कथा-साहित्य को समर्पित है। बंगला विज्ञान कथा-साहित्य की यह स्वागत योग्य विशेषता है कि मुख्य साहित्यिक धारा के अग्रणी लेखकों ने भी इस विधा को अपनी कृतियों से यदा कदा अलंकृत किया है। नियमित रूप से विज्ञान कथा-साहित्य लिखने वाले कुछ लेखकों और इस विशेषता ने बंगला में विज्ञान कथा-साहित्य की धारा को जीवित रखा है, परंतु वह मराठी के समान सशक्त नहीं हो सकी।

हालांकि विज्ञान के लोकप्रियता संबंधी प्रयत्न और समृद्ध अभियान भारत के बहुत से राज्यों में पर्याप्त सशक्त सिद्ध हुए हैं और उन्होंने विज्ञान के संदेश का व्यापक प्रसार भी किया, फिर भी उनका विज्ञान कथा-साहित्य के विकास पर प्रभाव नहीं पड़ा। उदाहरण के लिए केरल शास्त्र साहित्य परिषद् को सबसे अधिक लोकप्रिय एवं प्रभावशाली माना जाता है, फिर भी मलयालम में मूल रूप से लिखा कोई भी विज्ञान कथा-साहित्य उपलब्ध नहीं है। सी. राधाकृष्णन के इस विचार से यह

स्पष्ट है। उनका मानना है कि 'केरल में लेखकों के सहकारी संगठन से प्रति दिन करीब डेढ़ पुस्तक प्रकाशित होती है और प्रदेश के अन्य प्रकाशकों के सामूहिक प्रयासों से भी इतना ही साहित्य प्रकाशित होता है। इन प्रकाशनों का दो-तिहाई भाग कथा-साहित्य होता है, फिर भी इसमें से 0.1 प्रतिशत भी विज्ञान कथा-साहित्य नहीं होता।'

अधिकांश भाषाओं में विज्ञान कथा-साहित्य की यही स्थिति है, फिर भी वह इतनी खराब नहीं जितनी कि मलयालम में है। पिछले कुछ वर्षों से स्थिति बदल रही है। अन्य भाषाओं के छिटपुट प्रयास मराठी विज्ञान कथा-साहित्य के अनुकरण की कोशिश कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप विज्ञान कथा-साहित्य की जो धारा बहेगी, वह वास्तव में बहुत प्रभावशाली एवं सशक्त होगी।

आज इस बात की आवश्यकता है कि आपसी संतुलित तालमेल से ऐसा विज्ञान कथा-साहित्य लिखा जाये जिसे भारत की ओर से विश्व के विज्ञान कथा-साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान समझा जा सके। इस भागीरथ प्रयास के लिए यह नितांत आवश्यक है कि हम भारतीय विज्ञान कथा-साहित्य के समग्र स्वरूप को सूक्ष्म दृष्टि से देखें, विश्लेषण कर विवेक से अपनी सामर्थ्य को समझें और अपनी कमजोरियों को पहचानें। प्रस्तुत संग्रह इस प्रकार के अत्यंत आवश्यक पारस्परिक विचार-विनिमय में एक सकारात्मक उत्प्रेरक का काम करेगा—ऐसी मेरी अपेक्षा है।

**—बाल फोंडके**

नयी दिल्ली
मार्च 1993

# हिमप्रलय

जयंत विष्णु नार्लीकर

"पिताजी ! पिताजी ! देखिए तो कितनी मजेदार बात है। बाहर चारों तरफ बर्फ ही बर्फ फैली है। उठिये न !"

बच्चों के शोरगुल ने राजीव शाह को हड़बड़ाकर जगा दिया। प्रातःकाल की गहरी नींद से उठा था, सो कविता और प्रमोद की उत्तेजना भांप नहीं पाया।

"पिताजी ! हम नीचे जाकर बर्फ से खेलें ?" कविता ने पूछा।

बर्फ ? और वह भी बंबई में ? असंभव ! वह फौरन उठा और खिड़की से बाहर झांकने लगा। अविश्वास से उसकी आंखें खुली की खुली रह गयीं। हां, बर्फ पड़ी थी...। बाहर बर्फ की सफेद चादर बिछी थी। कमरे में भी जबदस्त ठंड महसूस कर रहा था। बच्चों ने तो दो-दो स्वेटर चढ़ा लिये थे। इससे ज्यादा गर्म कपड़े उनके पास नहीं थे ही नहीं। वैसे भी, बंबई वालों के पास गर्म कपड़े कम ही होते हैं। पिछले साल जब ऊटी में उन्होंने ये गर्म .कपड़े खरीदे थे तो उन्होंने सोचा भी नहीं था कि उनकी यहां जरूरत आ पड़ेगी।

"नहीं, नीचे मत जाओ।" राजीव ने ठंड से कांपते हुए उत्तर दिया। फिर कसकर चादर लपेटते हुए बोला, "हम छत पर चलते हैं। लेकिन पहले तुम जूते-जुराबें पहन लो।"

बच्चों के निकल भागते ही राजीव ने भी मोटी चादर ओढ़ ली। बर्फ की तरह ठंडे कमरे में वह बिजली या कोयले की अंगीठी की कमी बार-बार महसूस कर रहा था।

पिछले सप्ताह से बंबई के बदले तापमान की पराकाष्ठा यह हिमपात था। बंबई वाले तो अगर जनवरी में तापमान 15° सेल्सियस हो जाये तो "शीत लहर आ गयी", ऐसा मानते हैं। कल दिन में ही तापमान गिरकर 5° सेल्सियस हो गया था, जो रात को शून्य तक पहुंच गया था। ऐसी शीत लहर इससे पहले कभी नहीं आयी थी। मौसम विभाग ने भी कोई जानकारी नहीं दी थी। ऐसे में बंबई वालों का क्या होगा ?

बिल्डिंग में वे सबसे ऊपरी मंजिल में रहते हैं, इसीलिए छत का कब्जा

भी उन्हीं के पास था। ऊपर, आखिरी सीढ़ी पर खड़े प्रमोद ने कहा, "आइये न, पिताजी !"

"आ रहा हूं। पर जरा संभल के जाना। फिसल पड़ोगे।" राजीव ने सीढ़ियां चढ़ते हुए कहा। ऊफ ! छत पर कितनी ठंड होगी !

छत पर पहुंच कर उसका डर थोड़ा कम हुआ। यकीन नहीं हो रहा था कि यह बंबई है। लग रहा था, जैसे क्रिसमस के बधाई कार्ड में यूरोप के किसी कस्बे का कोई दृश्य हो। हिंदू कालोनी के पेड़ बिल्कुल सफेद नजर आ रहे थे। फुटपाथ तो सफेद चादर तले ढंक गया था। गाड़ियों बगैरा के आने-जाने से सफेद-काले रंग का कीचड़ जरूर हो गया था। दादर के पार रेलमार्ग भी बिल्कुल शांत था।

"वैसे भी ज़रा-ज़रा-सी बात पर मध्य रेलवे बंद हो जाता है, फिर आज की तो बात ही और है", राजीव बड़बड़ाया। "पश्चिम रेलवे का क्या हुआ होगा ?" तभी उसके विचारों के मध्य ही एक लोकल-ट्रेन माहिम की तरफ बढ़ गयी।

किंतु राजीव का विचार-चक्र बड़ी तेजी से घूम रहा था। "क्या बंबई में बर्फ पड़ेगी ?" यह शर्त आज वह हार गया था, क्योंकि उसने कहा था, "ऐसा हरगिज नहीं हो सकता।"

लेकिन विश्वास के साथ वसंत ने कहा था, "आने वाले दस सालों में ऐसा ही होगा।"

और यह सब पांच साल के अंदर ही हो गया।

* * *

भारत के जाने-माने वैज्ञानिक डा. वसंत चिटणीस उन दिनों अमरीका गये थे। उनके सम्मान में भारतीय राजदूत ने एक दावत दी थी। वाशिंग्टन डी. सी., मैरीलैंड तथा वर्जिनिया के कुछ अमरीकी वैज्ञानिकों को भी आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के प्रचार के लिए भारतीय समाचारपत्रों तथा समाचार-संस्थानों के चुनिंदा पत्रकारों को भी बुलाया गया था। उनमें राजीव शामिल था। उसी पार्टी में उसकी मुलाकात वसंत चिटणीस से हुई थी।

वैज्ञानिक और राजनीतिक गपशप के दौरान वसंत चिटणीस बिल्कुल शांत थे। शायद उन हल्की-फुल्की बातों में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

तभी एक पत्रकार ने आकर टेलीप्रिंटर पर आया संदेश पढ़ा, "वेसुविअस ज्वालामुखी फिर भभक उठा है।"

"बाप रे ! पिछले तीन महीनों में यह चौथा ज्वालामुखी फटा है। धरती मां की कोख में यह कैसी उथल-पुथल है ? राजीव ने वसंत से कहा।

"धरती की कोख में क्या हो रहा है, यह सोचने की बजाय उसकी पीठ पर

क्या होने वाला है, यह सोचिए।" वसंत चिटणीस एकदम बोल पड़े थे।

राजीव ने कहा, "क्या मतलब ?"

"साफ-साफ कहिए न, आप क्या कहना चाहते हैं वसंत ?" मैरीलैंड यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर ने कहा।

वसंतजी ने नपे-तुले शब्दों में कहा, "ज्वालामुखी बहुत कुछ उगलता है। कुछ पदार्थ जमीन पर गिरते हैं और कुछ वायुमंडल में मिल जाते हैं। वायुमंडल में फैले इन पदार्थों के कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ सकता है। मुझे तो लगता है कि हम अगर उस सीमा को पार नहीं कर चुके तो उसके पास जरूर पहुंच गये हैं।"

"लेकिन प्राकृतिक असंतुलन किस प्रकार का होगा ? उसके क्या परिणाम हो सकते हैं ?" अपनी कलम उठाते हुए अमरीकी पत्रकार ने पूछा कि शायद कोई बढ़िया समाचार बन जाये।

"यदि मैं कहूं कि आपको अपनी राजधानी वाशिंग्टन की बजाय होनोलुलू बनानी पड़ेगी, तो ?" वसंत ने उसकी ओर देखते हुए सवाल किया।

उस अमरीकी पत्रकार ने डा. वसंत से प्रश्न किया, "लेकिन ऐसा किस वजह से होगा ?"

"इसीलिए, क्योंकि पृथ्वी पर एक लघु हिमप्रलय आने वाला है। और तुम्हारे वाशिंग्टन, न्यूयार्क, शिकागो, आदि शहरों का तो नामोनिशान भी नहीं रहेगा। आप पत्रकारों को पहेलियां बुझाने वाली भाषा पसंद नहीं आती। इसीलिए आपको हर बात स्पष्ट शब्दों में मैंने बता दी है।" वसंत ने मुस्कराते हुए कहा।

इससे पहले कि वसंत इस पर खुलकर बात करता, स्टेट डिपार्टमेंट के एक अति विशिष्ट व्यक्ति का आगमन हुआ। अब चर्चा सामान्य बातों पर आकर टिक गयी, लेकिन राजीव इस विषय में वसंत को टटोलना चाहता था। अवसर मिलते ही एक तरह से उसने वसंत को धर दबोचा और सीधा मुख्य मुद्दे पर आ गया, "आप तो अपनी हर बात साबित करते हैं। किंतु मुझे लगता है, हिमयुग की बात अभी काफी दूर की बात है। मैं आपके क्षेत्र में नहीं हूं, लेकिन मैं सोचता था कि हिमयुग अभी हजारों वर्ष दूर है.."

"यह सोचना गलत है।" पापड़ खाते-खाते डा. वसंत ने कहा, "मैं अपनी बात सिद्ध कर सकता हूं। इन दिनों हालात बहुत नाजुक हैं। वायुमंडल का संतुलन निरंतर बिगड़ रहा है। ऐसी स्थिति में हिमयुग के लिए दस साल भी बहुत हैं। घबराइए नहीं, शाह साहब, आप बंबई में सुरक्षित होंगे, क्योंकि भूमध्यरेखा के 20° उत्तर तथा 20° दक्षिण का क्षेत्र सुरक्षित रहेगा, ऐसा लगता है।"

"अगर स्कूल में सीखे भूगोल को मैं पूरी तरह भूला नहीं हूं तो बंबई का अक्षांश 19° उत्तर है, जो आपके द्वारा बताई गयी सीमा के काफी करीब है।"

"इसीलिए हम बंबई वालों को शीत लहर और हिमपात का ही सामना करना पड़ेगा।" हंसकर डा. वसंत ने कहा। "हमारा संकट थोड़े में ही टल जायेगा।"

"क्या कह रहे हैं आप ? अगले दस वर्षों में बंबई में हिमपात होगा ? असंभव !" राजीव ने अपनी जेब से दस डालर का नोट निकाला और डा. वसंत से कहा, "आप दस सेंट निकालिए। यदि हिमपात हुआ तो दस डालर आपके, और न हुआ तो दस सेंट मेरे।"

"आप बड़ी दरियादिली दिखा रहे हैं। जनाब, अपने डालर अपने पास ही रखिए। अटल बातों पर मैं शर्त नहीं लगाता। दस वर्षों में हिमपात हुआ तो अपनी शर्त हार जाने की सूचना देना न भूलना—यह कार्ड लौटाकर। यह रहा मेरा कार्ड। इस पर मैं आज की तारीख लिख देता हूं।" अपना कार्ड निकालते हुए डा. वसंत ने कहा, "शाह साहब, आप भी अपना कार्ड दीजिए...ताकि यदि बंबई में हिमपात नहीं हुआ तो मैं अपनी गलती मान लेने की सूचना आपको दे सकूं।"

कार्डों का आदान-प्रदान हुआ। मेजबान महिला ने घोषणा की, "आइए, इस स्वादिष्ट चीज का आनंद लीजिए।" काफी बड़े आकार का बर्फीला केक सामने आया। डा. वसंत और राजीव ने पढ़ा कि मेनू-कार्ड में उसका नाम 'दि आर्कटिक सरप्राइज' लिखा था।

"असल सरप्राइज तो अगले दस वर्षों में आने वाला है," डा. वसंत ने कहा। "बस इतना जरूर है कि वह सरप्राइज इतना सुखद नहीं होगा।"

*　　　　*　　　　*

कविता ने पिताजी की ओर बर्फ का गोला फेंका। राजीव को गोला लगा। वह चौंक उठा और उसका विचार-चक्र रुक गया। वह शर्त हार चुका था। डा. चिटणीस को कार्ड भेज कर सूचना देनी चाहिए। वह सीढ़ियां उतर आया।

लेकिन जब उसने मेज की दराज से डा. चिटणीस का कार्ड निकाला तो उस पर लिखे फोन नंबर से उसे और भी बढ़िया बात सूझी। शर्त के अनुसार वह इस कार्ड को तो भेजेगा ही, लेकिन अभी उनसे फोन पर बात भी कर ली जाये तो कैसा रहे। उसने नंबर डायल किया।

"डाक्टर चिटणीस ?" उधर से किसी आदमी की आवाज सुनाई देते ही उसने कहा।

"जी हां, मैं वसंत चिटणीस बोल रहा हूं। आप कौन ?"

"मैं राजीव शाह ! आपको याद है... ?"

"हमारी शर्त ! मैं आपके बारे में ही सोच रहा था। शर्त तो आप हार गये।" राजीव सोच रहा था कि इस समय डा. चिटणीस जरूर मुस्करा रहा होगा।

"जी हां। लेकिन मैं आज आप का इंटरव्यू लेना चाहता हूं। मुझे आधा घंटा दे सकेंगे ?"

"किसलिए ?"

"मैं उस वैज्ञानिक सिद्धांत को समझना और छापना चाहता हूं जिनके आधार पर आपने इतनी निश्चित भविष्यवाणी की थी।"

थोड़ा हंसते हुए डा. वसंत चिटणीस ने कहा, "आपकी तो रग-रग में पत्रकारिता भरी है। किंतु मेरे विचारों को प्रचारित करने का कोई फायदा नहीं। फिर भी आपको आज सुबह ग्यारह बजे समय हो तो इंस्टिट्यूट में आ जाइये। आपका स्वागत है।"

और राजीव जाने की तैयारी करने लगा। दाढ़ी बनाते-बनाते उसने रेडियो चला दिया। एक विशेष समाचार बुलेटिन प्रसारित हो रहा था : 'पूरे भारत में मौसम की वजह से भारी कोहराम मचा है। स्थिति बहुत विकट होती जा रही है। पश्चिमी राजस्थान से लेकर बंगाल की खाड़ी तक और हिमालय से लेकर सह्याद्रि तक समूचे देश में बहुत भारी हिमपात हुआ है। मृत लोगों और पशुओं की कोई निश्चित संख्या बताना असंभव है। प्रवासी पक्षियों को भी शीत लहर की कोई पूर्वकल्पना नहीं थी, इसलिए उनके सैकड़ों झुंड जगह-जगह मृत पड़े पाये गये हैं। फसलों की भी असीमित हानि हुई है। सड़कें और रेल मार्ग रुके पड़े हैं। प्रधानमंत्री और राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने हवाई सर्वेक्षण किये हैं। प्रधानमंत्री ने विशेष राहत कोष हिम-आपदग्रस्तों के लिए खोल दिया है। सभी से अनुरोध है कि इस राहत कोष में दिल खोलकर दान दें...'।

राजीव ने दूसरा स्टेशन लगाकर देखा। वहां भी स्पेशल बुलेटिन चल रहा था।

कविता ने आवाज दी, "पिताजी, आकर देखिये न, टी. वी. पर हर तरफ बर्फ ही बर्फ दिखा रहे हैं।

दूरदर्शन पर भी विशेष बुलेटिन आ रहा था। हिमाच्छादित उत्तर भारत के दृश्य दिखाये जा रहे थे। ऐसे में, कम से कम तकनालोजी तो सूचना इकट्ठी करने और उसे प्रसारित करने में सफल रही है। उन दृश्यों को देखकर 'डाक्टर ज़िवागो' फिल्म में दिखाये गये हिमाच्छादित रूस के दृश्य याद हो आये। दूरदर्शन ने विभिन्न शहरों के वर्तमान तापमान की जानकारी भी दी थी। श्रीनगर −20°, चंडीगढ़ −15°, दिल्ली −12°, बनारस −10°, कलकत्ता −3° सेल्सियस। केवल बंबई के दक्षिण में ठंड की तीव्रता कम थी। इनकी तुलना में मद्रास 5° तथा त्रिवेंद्रम 7° सेल्सियस के तापमान मन को गर्माहट दे रहे थे।

इतने में एक विशेष खबर आयी–'राष्ट्रपति ने एक आपातकालीन बैठक बुलाई है जिसमें उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों, सेनाध्यक्षों, सर्वोच्च

न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा विपक्षी दलों के नेताओं को आमंत्रित किया गया है। बैठक में बंबई को भारत की अस्थायी राजधानी बनाए जाने पर विचार-विमर्श होगा।'

"आपको अपनी राजधानी वांशिग्टन की बजाय होनोलुलू बनानी पड़ेगी।" डा. वसंत चिटणीस की वह भविष्यवाणी राजीव को याद आ गयी। भारत में यह दुर्दशा है तो यूरोप तथा रूस का क्या हाल होगा ? स्थिति जानने के लिए राजीव ने बी.बी.सी. वर्ल्ड सर्विस का स्टेशन लगाया।

पता लगा कि दुनिया में अनेक स्थानों पर शीत लहर का भारी प्रकोप जारी था। तापमान भी सामान्य से 20° से 30° कम था। किंतु, कनाडा, रूस जैसे देशों में, जो ठंड के अभ्यस्त थे, जन-जीवन में भारत जितनी गड़बड़ी नहीं हुई थी।

तभी राजीव को अपनी मुलाकात की याद हो आयी। घड़ी देखी। नौ बजकर पांच मिनट हो रहे थे। सूरज निकला हुआ था, लेकिन वह ग्रह या चांद की तरह पीला नजर आ रहा था। कविता और प्रमोद को उम्मीद थी कि स्कूल आज बंद ही होंगे। वे आराम से बैठे टी. वी. देख रहे थे। वे आज निश्चिंत थे कि होम-वर्क और बाकी सारे काम समय से निपटाने के लिए बार-बार कहने वाली मां अपनी एक परिचिता की बेटी की शादी में पूना गयी हुई थीं।

जल्दी से नाश्ता करके राजीव ने गैरेज से अपनी गाड़ी निकाली। ठंड के मारे गाड़ी के इंजन ने भी चलने में पहले तो काफी आनाकानी की, बाद में कार स्टार्ट हो गयी। लेकिन असल मुसीबत सड़क पर आयी। राजीन ने महसूस किया कि बर्फ पर गाड़ी इधर-उधर फिसल रही थी। चूंकि राजीव ऐसे वातावरण में विदेशों में गाड़ी चला चुका था, इसलिए वह कार को नियंत्रित कर सका। आंबेडकर रोड पर कई गाड़ियां और बसें फिसलन के कारण एक-दूसरे से टकराकर बंद पड़ी थीं।

"हम भारतीय चालकों की कुशलता गति और ब्रेकों के इस्तेमाल तक ही सीमित है। इन चालकों ने सावधानी से काम लिया होता तो यह हाल न होता।" कीचड़ और बिखरी पड़ी बर्फ के बीच ध्यान से मारुति चलाते हुए राजीव ने अपने आप से कहा।

उसने महसूस किया कि कोलाबा पहुंचने में आज आध-पौन घंटे से कहीं ज्यादा समय लगने वाला है।

*    *    *

"आइये, पत्रकार साहब ! बड़ी देर कर दी। या रास्ते में किसी और से भेंटवार्ता करने रुक गये थे ?" वसंत ने उसका स्वागत करते हुए कहा।

"माफ कीजिये, प्रोफेसर चिटणीस ! दरअसल में खुद गाड़ी चला रहा था। बंबई में ट्रैफिक की इतनी खराब हालत होगी, सोचा भी न था। मैं पैदल आता तो शायद जल्दी पहुंच गया होता।" राजीव एक कुर्सी पर बैठ गया। ठीक उसके सामने वाली कुर्सी पर वसंत बैठ गया।

"सबसे पहले आप मेरी बधाई स्वीकार कीजिये। आपकी भविष्यवाणी सही साबित हुई। शर्त तो आप जीत गये हैं। लेकिन हम पत्रकार और कुछ हों न हों, जिज्ञासु बहुत होते हैं। अब बताइये कि आपने इतनी सही भविष्यवाणी कैसे की थी। और हां, ऐसा क्यों कहा था कि विचारों को प्रचारित करने का कोई फ़ायदा नहीं ?"

"इन सब प्रश्नों के उत्तर इस पुलिंदे में हैं," वसंत चिटणीस ने राजीव के सामने एक फाइल रखते हुए कहा। उस फाइल में वैज्ञानिक निबंध थे। कुछ दुनिया की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित थे, कुछ केवल टाइप किये हुए और कुछ हाथ के लिखे हुए थे। राजीव को आम आदमी होने की वजह से उन कागजों से कुछ समझ नहीं आया, सिवाय कुछ प्रकाशित लेखों के शीर्षकों के।

"मैंने जिन वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर हिमयुग की भविष्यवाणी की थी, वे सारे सिद्धांत इन लेखों में हैं। और यदि आप गौर से देखें, तो पता चलेगा कि प्रकाशित लेखों की तुलना में अप्रकाशित लेखों में अधिक जानकारी है।" डा. वसंत ने कहा।

"ऐसा क्यों ?"

"वैज्ञानिकों की तथाकथित वस्तुपरकता, अभिजात समीक्षा पद्धति और न्यायबुद्धि इसके लिए सर्वाधिक जिम्मेदार हैं, जिन पर हम वैज्ञानिक बड़ा गर्व करते हैं।" डा. वसंत के चेहरे पर व्यंग्य और नैराश्य का भाव था। बाद में जैसे ही उसने फिर से कहना शुरू किया, चेहरा पुनः भावशून्य हो गया, "आप सोचते होंगे कि हम लोग स्थितप्रज्ञों जैसा व्यवहार करते हैं। हम आपसी अदावत से परे होंगे और ज्ञानार्जन को ही अपना लक्ष्य मानते हैं...सब दिखावा है। हम भी आप ही के जैसे मनुष्य हैं। आपके गुण-दोष हममें भी हैं। यदि कोई निबंध या नया शोध-कार्य प्रकाशन संस्थानों को पसंद न आए तो वे पूरा प्रयत्न करेंगे कि वह प्रकाशित न हो। मेरे प्रकाशित लेख ऐसी वैज्ञानिक परीक्षाओं में सफल हो गये। किंतु बाकी लेखों पर किसी ने गौर नहीं किया, क्योंकि उनमें दिये गये निष्कर्ष प्रचलित विचारधाराओं के प्रतिकूल थे।"

"क्षमा कीजिये," प्रोफेसर चिटणीस !"

"मुझे वसंत कहो।" प्रोफेसर ने टोका।

"थैंक यू, वसंत। जो कुछ आप कह रहे हैं, वह सब कोपर्निकस और गैलिलियो के समय की याद दिलाता है। अगर मुझे ठीक से याद है तो उन दिनों प्रकाशक

ने कोपर्निकस की एक पुस्तक की भूमिका को बदल डाला था ताकि धर्म के ठेकेदार पुस्तक का विरोध न करें।" राजीव ने बातचीत को रिकार्ड करने के लिए टेप-रिकार्डर चालू कर दिया।

वसंत ने जवाब देने से पहले अपने विचारों को क्रमबद्ध किया, "उन दिनों धर्म के ठेकेदार थे और अब विज्ञान के ठेकेदारों ने उनकी जगह ले ली है। ये ऊंचे पदों पर बैठे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक ही तय करते हैं कि क्या छपना चाहिए, क्या विज्ञान है और किसे छपने की बजाय अंधेरे में ही रहना चाहिए। पांच सदियों पहले के धर्म के ठेकेदारों की भूमिका अब ये आधुनिक वैज्ञानिक निभा रहे हैं। अगर मैं बहुत कड़वा बोल गया हूं तो क्षमा चाहूंगा।"

"वसंत, यह आपका अनुभव बोल रहा है। किंतु प्रचलित विचारधाराओं की यह मान्यता रही है कि हजारों अधकचरी कल्पनाओं में कहीं कोई एकाध सही साबित होती है। बाकी की अधकचरी कल्पनाओं में कोई दम नहीं होता। किसी एक अनुसंधान की सत्यता या असत्यता परखने के लिए किसके पास समय है ? गेहूं के साथ घुन भी पिसता ही है।" राजीव ने अपनी बात स्पष्ट की।

"हां, मैं मानता हूं। लेकिन वैज्ञानिक सिद्धांत हमेशा सबूतों और प्रमाणों सहित पेश किये जाते हैं। इसके बावजूद उनकी ओर ध्यान न देना कहां तक उचित है ? निस्संदेह, सैकड़ों बेकार और अधकचरी कल्पनाओं में से एक सुदृढ़ विचार को पहचानना कठिन नहीं होता। विशेष रूप से उस स्थिति में तो जरूर ही, जब वैज्ञानिक ने सम्बद्ध क्षेत्र में कुछ कर दिखाया हो। लेकिन जाने दीजिये इन बातों को। मैं अपने सिद्धांत की बात करता हूं।"

"हां, वसंत ! आपका सिद्धांत और उसकी भविष्यवाणी क्या है ?" प्रमुख मुद्दे पर लौटते हुए राजीव ने कहा। वसंत ने एक नक्शा खोलकर सामने टेबल पर फैला दिया।

"यहां देखिये ! हमारी भूमि को देखेंगे, तो पायेंगे कि पृथ्वी का एक तिहाई हिस्सा भूमि है ओर दो-तिहाई हिस्से पर सागर-महासागर फैलें हैं। सागर हमारे वातावरण को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गर्म हवाएं ऊपर उठती हैं और पृथ्वी के वातावरण में मिलकर फैल जाती हैं। उसके बाद ये नीचे धरातल पर आती हैं। ठीक ?"

"यह बात तो स्कूली किताबों में भी होती है", राजीव ने कहा।

"लेकिन यह मानना कि समुद्र गर्म हैं और हमेशा गर्म रहेंगे, कहां तक उचित होगा ? कुछ साल पहले समुद्र-तापमान की मैंने गहराई तक जांच की थी। और परिणाम देखकर काफी अचरज में पड़ गया था। सामान्यतया समुद्र में ठंडा पानी नीचे और गर्म पानी ऊपर होता है। समुद्र में गर्म पानी की परतें, जिनसे पृथ्वी को उष्णता मिलती है, बहुत पतली हो गयी हैं। यकीन मानिए, इससे पहले मुझे

भी उसकी कोई कल्पना नहीं थी। समुद्र की निचली परतें जमावबिंदु तक ठंडी होती हैं। ये ऊपर की परतें दिनों-दिन पतली होती जा रही हैं।"

"क्या सूर्य पानी गर्म नहीं करता ?" राजीव ने पूछा।

"सूर्य प्रत्यक्ष रूप से इतना सक्षम नहीं है। गर्मियों में ध्रुवीय प्रदेशों में उसका प्रकाश तीव्र होने के बावजूद वह बर्फ को पिघला नहीं सकता। बल्कि बर्फ पर उसका प्रकाश परावर्तित हो जाता है और वह अंदर तक जा ही नहीं पाता। लेकिन परोक्ष रूप से वह कैसे काम आता है, मैं एक प्रयोग द्वारा आपको बताता हूं। आइये, लैबोरेटरी में चलते हैं।" वसंत उठा और आगे-आगे चलता हुआ राजीव के साथ लैबोरटरी में घुस गया।

वहां टेबल पर कांच का एक बहुत बड़ा बर्तन रखा था। प्रयोग को प्रारंभ करते हुए वसंत ने कहा, "इस बर्तन के अंदर जो हवा है वह नमी वाली है। इस हवा को मैं धीरे-धीरे ठंडा करूंगा। लेकिन आप देखेंगे कि पूरी सावधानी बरतने पर, तापमान शून्य सेल्सियस से कम होने पर भी, हवा में मौजूद पानी बर्फ का रूप नही लेगा।"

तापमान मापक यंत्र की सूई नीचे जा रही थी और थोड़ी देर में वह शून्य के अंक को पार कर गयी–बर्तन में बर्फ नहीं जमी थी। वसंत ने बर्तन के अंदर रोशनी छोड़ी। एक विशेष कोण से देखने पर, बर्तन में केवल अंधेरा ही नजर आ रहा था।

"इसका अर्थ यह कि रोशनी नमीयुक्त हवा को चीरती हुई दूसरी ओर जा रही है। तापमान और कम करके देखते हैं कि क्या होता है।"

तापमान धीरे-धीरे कम होता गया। लगभग–40° नीचे आते ही बर्तन अचानक चमकने लगा। बदलाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

"जब तक हवा में द्रवांश था तब तक रोशनी दूसरी ओर जा रही थी। किंतु जैसे ही तापमान–40° तक आया, बर्फ़ जमने लगी। इस तरह बर्फ के कण रोशनी को इधर-उधर फैला देते हैं। यह महत्वपूर्ण बात है।" वसंत ने कहा।

अपने आफिस में लौटते हुए वसंत ने कहा, "ध्रुवीय प्रदेशों में ठीक यही प्रक्रिया होती है। वहां तापमान जब–40° तक गिर जाता है तो हवा में बर्फ के कण तैयार होने लगते हैं। इन बर्फ-कणों को 'हीरे की धूल' कहते हैं। वही जो अभी आपने बर्तन में देखी। इन्हीं के कारण सूर्य-प्रकाश बिखर जाता है। चूंकि कहीं पर तापमान में इतनी गिरावट नजर नहीं आती, इसलिए ऐसी घटनाएं भी नहीं दिखतीं।"

राजीव शाह की कलम तेजी से चल रही थी। साथ ही वंसत की आवाज भी रिकार्ड हो रही थी। लेकिन अभी तक वंसत ने उस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया था, जिसका उत्तर राजीव चाहता था। वसंत ने राजीव के चेहरे से कुछ जानने

की परेशानी को ताड़ लिया और मुस्कराते हुए कहा, "कल्पना कीजिए, समुद्र से मिलने वाली उष्णता कम हो जाये तो न केवल ध्रुवीय प्रदेशों में बल्कि अन्य स्थानों पर भी तापमान कम होने की वजह से हवा में, 'हीरे की धूल' तैयार होने लगेगी। यह धूल क्या करेगी ? पृथ्वी के इर्द-गिर्द धूल का पर्दा तैयार हो गया तो सूर्य का प्रकाश सतह पर न आकर इधर-उधर बिखरने लगेगा। कल्पना कीजिए कि सूर्य के प्रकाश और पृथ्वी के बीच 'हीरे की धूल' की परत आ गयी तो क्या होगा ?"

बात साफ हो चुकी थी। उत्तेजना में बाकी बात राजीव ने पूरी की, "मैं समझ गया। आप कहना चाहते हैं कि सूर्य की अपर्याप्त उष्णता के कारण समुद्र की ठंडक बढ़ेगी, फिर पृथ्वी पर ठंड बढ़ेगी, इसलिए 'हीरे की धूल' और भी बढ़ती जायेगी...और यह चक्र हमें हिमयुग की ओर ले जायेगा...ठीक। किंतु यह चक्र तभी शुरू होगा जब समुद्र की उष्णता कम हो जायेगी।"

हाथ हिलाकर डा. वसंत ने राजीव से रुकने का इशारा किया, "रुको ! आमतौर पर वातावरण गर्म रखने और 'हीरे की धूल' से बचाव के लिए समुद्र की उष्णता पर्याप्त होती है। यदि वातावरण में हस्तक्षेप करने वाली कोई भी घटना होती है तो समुद्र का तापमान कम हो जायेगा, और हिमयुग की शुरुआत हो जायेगी। विशेषतया यदि कभी ज्वालामुखी फूटे तो उसके कण वातावरण में मिल जायेंगे। वे सूर्य के प्रकाश को अपने में समा लेने या छितरा देने में मदद करते हैं। इसलिए अगर ज्वालामुखी फूटने की घटनाएं काफी संख्या में होने लगें तो धूल की परत बनने से सूर्य का प्रकाश सागरों को गर्म नहीं कर पायेगा...जैसा कि मैंने कई वर्ष पहले अनुभव किया था कि प्रकृति द्वारा तैयार सुरक्षा कवच पतला, और पतला होता जा रहा है।"

पांच साल पहले वाशिंग्टन की पार्टी में 'ज्वालामुखी का आतंक' विषय पर हुई चर्चा राजीव पूरी तरह अब समझ पाया। यह भी कि वसंत उस समाचार से अचानक परेशान क्यों हो उठा था।

बाकी देखने को अब क्या बचा था। वसंत का भय सचाई बनकर सामने आ खड़ा हुआ था।

*　　　*　　　*

"हिमयुग का आगमन–भारतीय वैज्ञानिक की भविष्यवाणी !" राजीव शाह ने अपने लेख को यह शीर्षक दिया था। लेख का खूब प्रचार हुआ। बाद में जल्दी ही विदेशी समाचार-एजेंसियों ने भी लेख को विश्व भर में वितरित कर दिया। शीघ्र ही यह लेख विश्व-विख्यात हो गया। सभी ने एक बात मान ली कि शीत लहर

की पूर्व सूचना इस वैज्ञानिक ने दी थी। सामान्य आदमी भी उनकी बातों का महत्व समझ रहा था। परिणामतया अब भविष्य संबंधी वसंत के हर वक्तव्य, हर टिप्पणी का महत्व बढ़ गया।

लेकिन कुछ ऐसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक भी थे जो यह मानते थे कि यह हिमयुग का प्रारंभ नहीं है। वसंत का सिद्धांत उन्हें मान्य नहीं था। उनकी यह धारणा थी कि शीत लहर जैसे आयी, वैसे चली जायेगी और तापमान सामान्य हो जायेगा। बेशक शीत लहर का प्रभाव इस बार ज्यादा है। इसलिए फिर से गरम दिनों के लौटने में कोई संदेह नहीं है। कुछ वर्ष जरूर लग सकते हैं, जब तक कि सागरों को उष्णता मिलने का संतुलन दुबारा सामान्य नहीं हो जाता। किंतु ठंड की चपेट में आए देशों के गले यह बात उतरनी कठिन थी।

विदेशी पत्रकारों से भेंटवार्ता में वसंत ने एक चेतावनी दी, "अब की गर्मियों में थोड़ी राहत जरूर मिल सकती है, लेकिन वह हिमयुग का अंत नहीं होगा, क्योंकि अगली सर्दियां अत्यधिक भयंकर होंगी। हिमयुग प्रतिबंधक उपाय हैं, लेकिन उन पर देर हो जाने से पहले अभी से अमल करना होगा। हिमयुग को बदलना अभी भी संभव है, किंतु यह प्रक्रिया महंगी बहुत है। कृपया यह खर्च जरूर करें।"

किंतु डा. वसंत की यह चेतावनी लोगों को खोखली प्रतीत हुई। अप्रैल में वसंत ऋतु का आगमन होते ही तापमान बढ़ने लगा। गर्मियों की तपन बढ़ाने के लिए सूर्य-प्रकाश अपनी चरम सीमा पर था। उत्तर क्षेत्र में तो मौसम की गर्मी बढ़ ही रही थी, साथ में दक्षिण में भी अब उत्तर जैसी सर्दी नहीं रही थी। मौसम विभाग तथा अन्य लोगों ने भविष्यवाणी कर दी थी कि हिम-गलन प्रक्रिया शुरू हो गयी है। सभी लोग मान कर चले रहे थे कि पिछली सर्दियां भले ही भयानक रही हों, लेकिन इस बार वही हाल नहीं होगा।

विंबल्डन मुकाबले भी हमेशा की तरह रोमांचक रहे। खिलाड़ियों को स्वेटर पहनने पड़े। लेकिन हर एक खुश था कि बारिश नहीं हुई। आस्ट्रेलिया ने पुनः एशिया कप हासिल कर लिया। यहां भी किसी को मौसम की शिकायत करने का मौका नहीं मिला। खूबसूरत मौसम ने अमरीका में हुई ओपन गोल्फ प्रतियोगिता में तो चार चांद ही लगा दिये थे। विशेषज्ञों का कहना था कि इतना सुहावना मौसम हमें प्रतियोगिता में पहले कभी नसीब नहीं हुआ था। उष्ण-कटिबंधी क्षेत्रों के देशों में इस बार भयानक गर्मी नहीं पड़ी। भारत में मानसून समय पर आया और पूरे जोरों पर था।

"हमें घबरा नहीं जाना चाहिए था।" छोटे-बड़े सभी देशों ने सोचा। भारतीयों ने भी लालफीताशाही का धन्यवाद किया, जो अभी तक राजधानी को दिल्ली से बंबई स्थानांतरित करने के बारे में फाइलों में कार्यवाई कर रही थी। उन्होंने फाइलें समेटीं और कहा, "अगले आदेश तक निर्णय स्थगित।"

किंतु डा. वसंत चिटणीस की चिंता बढ़ती जा रही थी। इस बार की गर्मियां उस दीपक की भांति थीं जो बुझने से पहले एक बार अधिक रोशनी देता है। यही बात वह गला फाड़-फाड़कर कह रहे थे, पर कोई सुनता, तब न !

ले-देकर एक राजीव शाह ही सहानुभूति दर्शा रहा था। डा. वसंत के विश्लेषण से वह सहमत था। एक दिन अचानक वसंत को अपने आफिस में देखकर वह हैरान हो गया। वह डा. वसंत की गंभीर मुद्रा से जान गया कि वह किसी अप्रिय घटना की सूचना देने वाला है।

"लो, पढ़ो यह टेलेक्स !" उस छोटे से टेलेक्स संदेश को राजीव ने पढ़ना शुरू किया—"आपके कथनानुसार मापने के बाद हमने पाया है कि अंटार्कटिका में बर्फ के फैलाव में बृद्धि हुई है और वहां के पानी का तापमान भी पिछले वर्ष की अपेक्षा दो डिग्री कम पाया गया है।"

वसंत ने कहा, "यह जानकारी मैंने अंटार्कटिक के अंतर्राष्ट्रीय संस्थान से मंगवाई थी। मेरी शंकाओं की इससे पुष्टि होती है।"

"इस बार आने वाली सर्दियां पिछले साल के मुकाबले कहीं ज्यादा भयंकर होंगी, यही कहना है, न तुम्हारा ?"

"हां, राजीव ! लेकिन मुझे क्या लेना-देना। हमारी सबकी तकदीर ठंड में जमकर मरना लिखा है तो मरेंगे ही।"

"सच बताओ वसंत, क्या अगला साल वास्तव में इतना भयंकर होगा ? इस दुष्चक्र को रोकने का कोई उपाय तो होगा तुम्हारे पास ?"

"है, लेकिन मैं बताने वाला नहीं हूं। आने दो इन वैज्ञानिकों को मेरे पास दामन फैलाए। जब नाक रगड़ेंगे न, तब बताऊंगा उपाय। किंतु सुनो राजीव, मेरी सलाह मानो और अगले कुछ महीनों के लिए इंडोनेशिया चले जाओ। भूमध्य रेखा के पास ही बचने की कुछ गुंजाइश है। मैं भी बांडंग की टिकट खरीद रहा हूं।" और वसंत कह ही गया।

* * *

मानव पृथ्वी का स्वामी होने का दावा कर सकता है, लेकिन अभी उसकी श्रेष्ठतम प्रौद्योगिकी भी प्रकृति का मुकाबला नहीं कर सकती।

बंबई वालों ने 2 नवंबर को एक बड़ा अपूर्व दृश्य देखा। आकाश में पूरा दिन लाखों पक्षियों का तांता लगा रहा। वायुसेना की किसी कवायद की भांति ये पक्षी अत्यंत अनुशासन में उड़ रहे थे। पक्षी-विज्ञानी भी बाहर निकल आश्चर्य से देखने लगे क्योंकि उन्होंने इतने पक्षियों को इससे पहले कभी इस ढंग से उड़ते नहीं देखा था।

थोड़ी ही देर में बंबई की चिड़िया-कौवे और कबूतर भी बाकी पक्षियों के साथ हो लिए।

उन सभी पक्षियों को दक्षिण की ओर जाते देख राजीव को वसंत के अंतिम शब्द याद हो आये। इन पक्षियों को वह मालूम हो चुका था, जिसे मानव अपनी श्रेष्ठतम तकनीकी के बावजूद जानने में असफल रहा था। उनमें सामान्य ज्ञान था तथा उन्होंने पिछले वर्ष के अनुभव से बहुत कुछ सीखा था।

अंतरिक्ष में स्थित सभी उपग्रहों को दो दिन बाद इस बात का पता चला। 4 नवंबर को चेतावनी दी गयी : 'वातावरण में बहुत तीव्रता से परिवर्तन हो रहे हैं और अगले 24 घंटे में पृथ्वी के कई भागों में भारी हिमपात का संकेत देते हैं।'

"विकसित प्रौद्योगिकी के बिना यह पूर्वसूचना देना अत्यंत कठिन था।" मौसम-विज्ञानियों ने गर्व से घोषणा की। लेकिन तब तक पक्षी दूर, भूमध्य रेखा क्षेत्र की सुरक्षित स्थली पर पहुंच चुके थे।

मुकाबला करने में असमर्थ लोगों में भगदड़ मच गयी। विकसित प्रौद्योगिकी वाले जापान, अमरीका, कनाडा व यूरोप के कुछ देश निश्चिंत थे कि जैसे उन्होंने पिछले वर्ष की हिमप्रलय झेली, इस बार भी झेल लेंगे। लेकिन वे इस बात के लिए तैयार नहीं थे कि उनके बड़े शहर पांच-पांच मीटर मोटी बर्फ की परत के नीचे दबकर रह जायेंगे। सिर्फ कुछ ही लोग इस तबाही से अपने आपको बचा सके थे। ये सभी लोग उन शेल्टरों में थे जो अणु-युद्ध से बचने के लिए बनाये गये थे। परम्परागत गरम देशों में ठंड का प्रकोप कम था। लेकिन चूंकि उनके पास बचाव का कोई जरिया नहीं था, इसलिए वहां भी जान-माल की भारी क्षति हुई थी।

राजीव शाह अपने चचेरे भाई के पास मद्रास जा बसा था। वहां हिमपात का प्रभाव कम तो था लेकिन आगे का कोई भरोसा नहीं था। प्रमोद और कविता को अब बर्फ गिरने में मजा नहीं आ रहा था और बाकी सब लोगों की तरह वे भी गरम दिनों के इंतजार में थे। विशेषज्ञों सहित कोई भी विश्वास के साथ कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं था। भारी हिमपात ने बहुतों को हमेशा के लिए मौत की गोद में सुला दिया था। अमरीकी ऊर्जा समिति के सदस्य रिचर्ड होम्स ऐसी ही विचारधारा के एक विशेषज्ञ थे। वह वाशिंग्टन से मियामी चले गये थे।

एक दिन राजीव अपने आफिस में बैठा था कि अचानक फोन की घंटी बजी...।

"कौन ? शाह ? अच्छा अच्छा, राजीव शाह...। कहिए वहां बर्फ का क्या हाल है ? भाग्यशाली हैं आप, यहां मियामी में तो...," रिचर्ड मजाक करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन राजीव ने उसके स्वर में दहशत को जान लिया।

"छोड़िये भी मि. रिचर्ड। आप तो वहां एयर-कंडिशंड घर में मजे ले रहे होंगे।" राजीव ने मजाक में कहा।

"एयर-कंडिशंड घर, और वह भी मियामी में ? तुम मुझे खींच रहे हो। लेकिन राजीव, वह फोन मैंने वसंत का अता-पता मालूम करने के लिए किया है... वसंत चिटणीस, समझ गये न ! वह कहां गायब हो गये हैं ? बंबई... दिल्ली... कहीं भी फोन टीक से काम नहीं कर रहे।"

"जैसे पहले कभी इन्होंने ढंग से काम किया है", राजीव मन ही मन बड़बड़ाया। फिर ऊंचे स्वर में बांडंग में वसंत का पता और फोन नंबर रिचर्ड को बता दिये।

"में जानना चाहता हूं कि वह इस सब के बारे में क्या सोचते हैं। हो सकता है, उनके पास बचाव का कोई रास्ता हो।" रिचर्ड ने कहा और फिर सूचना के लिए राजीव को धन्यवाद किया।

अब तैयार हुए हैं ये तथाकथित विद्वान लोग बात करने के लिए, राजीव सोचने लगा। कुछ मांह पहले इन्हीं होम्स ने वसंत की हिमप्रलय की पूर्व-सूचना को अनसुना कर दिया था। अब भी देरी नहीं हुई है। वसंत इन सबकी बात मान ले, फिर सब संभव है, राजीव सोचने लगा।

*  *  *

"कहिये, रिचर्ड ! क्या हाल है तुम्हारे वाशिंग्टन का ?" हाथ मिलाते हुए वसंत ने एयर-पोर्ट पर कहा।

"इंसान तो क्या, पंछी भी वहां नजर नहीं आते...सच पूछिए तो वे हमसे कहीं अधिक समझदार निकले। वे तो पहले ही उस जगह को छोड़ गये थे।" मुंह लटकाए होम्स ने कहा। पिछली मुलाकात के मुकाबले इस वक्त होम्स दबे-दबे से लग रहे थे। क्या पता वसंत की कैसी प्रतिक्रिया हो, यह सोच होम्स राजीव को भी अपने साथ लाये थे। कार वसंत के घर की ओर बढ़ रही थी। वे सभी चुप थे।

"अरे भई वसंत, तुम तो इस शांत जगह आराम से बैठे हो। लेकिन दुनिया में कितना तहलका मचा है, कोई खयाल है तुम्हें ? यह रहे कुछ फैक्स, टेलेक्स संदेश।" राजीव शाह ने कुछ कागज वसंत को थमाये।

वसंत ने उन्हें शांत भाव से पढ़ा, क्योंकि अब ये रोजमर्रा की बातें हो गयी थीं, अन्यथा सामान्य स्थिति में उन्हें पढ़कर वसंत उछल पड़ा होता : 'ब्रिटिश सरकार ने अपनी बची हुई जनता के 40 प्रतिशत लोग केनिया में स्थानांतरित किये जाने की घोषणा की है। यह कार्यक्रम दो महीने में पूरा हो सका है'। 'मास्को तथा सें. पीटर्सबर्ग खाली किये जा चुके हैं, रूस के प्रधानमंत्री की घोषणा'। 'जमीन

के नीचे बनाई बस्तियों में हम एक साल तक जिंदा रह सकते हैं–इज्राइली राष्ट्रपति'। 'उत्तर भारत की सभी नदियां पूरी तरह जम चुकी है, यू. एन. आई. की रिपोर्ट'।

वसंत ने शांति से सारे फैक्स और टेलेक्स पढ़े और राजीव को लौटा दिये। उसका चेहरा भावशून्य था। फिर उसने संक्षिप्त सा उत्तर दिया, "पिछले वर्ष सिर्फ इसकी झलक मिली थी। इस साल हिमप्रलय पूरे जोरों पर है, किंतु अगले साल पृथ्वी मनुष्यवहीन हो जायेगी और यह देखने के लिए हम शायद ही बचें।"

"क्या स्थिति इतनी नाजुक है ?" राजीव ने परेशानी में पूछा।

"क्या अब इससे बचाव को कोई उपाय नहीं ?" होम्स ने पूछा।

"वैसे तो अब बहुत देर हो चुकी है। इसलिए कुछ कहा नहीं जा सकता। हां पिछले साल बहुत कुछ किया जा सकता था। लेकिन फिर भी एक प्रयत्न किया जा सकता है।" कहकर वसंत ने दराज से एक टाइप किया लेख निकाला। उसका शीर्षक था–'अभियान : इन्द्र पर आक्रमण'।

"इन्द्र स्वर्ग के राजा हैं। वहीं से सारी मुसीबतें जन्म ले रही हैं।" वसंत ने अपनी उंगली आकाश की ओर उठायी। होम्स ने चुपचाप पांडुलिपि थाम ली। यह वही पांडुलिपि थी जिसे उन्होंने एक साल पहले देखने से भी इंकार कर दिया था।

* * *

चिटणीस और होम्स की मुलाकात को छह महीने बीत गये। हिमयुग अपने पांव पसार रहा था। किंतु भूमध्य रेखा के उत्तर दक्षिण में दोनों ओर 10° अक्षांश की एक ऐसी पट्टी थी जहां अभी भी पृथ्वी ग्रह पर हरियाली नजर आ रही थी। इसी पट्टी पर हिमप्रलय का प्रतिकार करने का अंतिम प्रयास होना था। मानव-जाति का जो भी निशान बचा था वह इसी क्षेत्र में रह गया था।

डूबने से पहले बच निकलने का अंतिम प्रयास !

लेकिन वसंत अब ज्यादा आशावान लग रहा था। राकेट दागने के लिए तैयार था। थुंबा स्थित विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र में राकेट–प्रक्षेपास्त्र के पास खड़े वसंत को एक-एक क्षण भारी लग रहा था।

"हम तैयार हैं," प्रकल्प के प्रमुख ने घोषणा की।

"तो बटन दबाकर दाग दीजिये।" वसंत ने कहा। यह ऐसी किसी योजना की शुरुआत के लिए मुहूर्त आदि का इंतजार नहीं कर सकता था। प्रमुख द्वारा बटन दबाते ही राकेट शान से ऊपर बढ़ने लगा। इन्द्र देवता पर आक्रमण हो चुका था।

पहले यहां से राकेट वातावरण का पूर्वानुमान करने के लिए भेजे जाते थे,

लेकिन यह राकेट उसे नियंत्रित करने वाला था। इसके लिए भूमध्य रेखा पट्टी के अन्य क्षेत्रों से भी राकेट छोड़े जाने थे।

श्रीहरिकोटा, श्रीलंका, सुमात्रा, केनिया, ग्वाटेमाला आदि अनेक स्थानों में वातावरण पर आक्रमण करने वाले राकेट अथवा उपग्रह छोड़ने वाले यंत्र लगे हुए थे। चूंकि यह वसंत की ही योजना थी, इसलिए पहले हमले के अवसर की अध्यक्षता करने का उन्हें सम्मान दिया गया।

इस अभूतपूर्व आक्रमण के समाचार लगातार उनके पास रखे उपकरणों पर झलक रहे थे। उन्हें देख वसंत का चेहरा खिल उठा। लाल फोन पर उन्होंने घोषणा की, "पहला हमला सफल हुआ है।"

राकेट, उपग्रह, विशालकाय गुब्बारे और आकाश में ऊंची उड़ान भरने वाले विमान, सभी से आक्रमण होने लगे। चतुरंगी सेना ने इस प्रकार पूरे वायुमंडल पर धावा बोल दिया। उधर मानव-जाति बेसब्री से उपग्रह द्वारा भेजी गयी सूचनाओं का इंतजार कर रही थी। आज के महाभारत में उपग्रह ही तो संजय की भूमिका निभा रहे थे।

"कुछ पराक्रमी राजाओं ने इन्द्र पर सफल चढ़ाई की थी, ऐसा हमारी पौराणिक कथाओं में लिखा है। लेकिन क्या आज की यह चढ़ाई सफल होगी ?" राजीव ने अपनी डायरी में लिखा।

आखिर यह आक्रमण था कैसा ?

इसके तहत सूर्य की उष्णता को अपने में समाकर पृथ्वी तक पहुंचाने वाले असंख्य धातुकण वायुमंडल में बिखरने वाले थे। वसंत की यही योजना थी। उसे उम्मीद थी कि ज्वालामुखी द्वारा फैले उष्णता-प्रतिबंधक कण नीचे आ जायेंगे और ये धातु कण उनका स्थान ले लेंगे। विश्वास था कि क्षतिपूर्ति अवश्य हो जायेगी।

लेकिन, यह काफी नहीं थी। वातावरण में ऊर्जा निर्मित करना भी आवश्यक था। 'हीरे की धूल' कम करने के लिए वातावरण का तेजी से गर्म होना भी जरूरी था। प्रक्षेपास्त्रों द्वारा किये जाने वाले विस्फोटों का उपयोग किया गया। उनकी घातक शक्ति का स्थान धीमी गति से आग उगलने वाले जीवन देने वाले विस्फोटों ने ले लिया। वैसे तो ये अस्त्र एक-दूसरे का नाश ही करते। समाप्ति की कगार पर खड़े सभी देश आपसी अदावत भुलाकर इस कार्य में मदद के लिए आगे बढ़ आये। इस प्रकार छह महीने तक वातावरण को भयानक विस्फोटों की ऊर्जा द्वारा गर्म करने का प्रयत्न किया गया। फिर भी, इस सामूहिक प्रयास के अंतिम छोर पर पहुंचकर सभी के दिमाग में एक ही प्रश्न था : "क्या यह सब कारगर सिद्ध होगा ?"

सितंबर में इस प्रश्न का सकारात्मक उत्तर मिलने लगा। इसका पहला चिन्ह

गंगा के मैदानी इलाकों में बर्फ का पिघलना था। इसके बाद फ्लोरिडा से कैलिफोर्निया के बीच की जमीन बर्फ के सफेद बुरके से धीरे-धीरे झांकने लगी। आखिर बर्फ पिघलने लगी थी। मियामी से होम्स ने वसंत को फोन किया, "बधाई हो, वसंत ! बधाई ! इन्द्र पर आक्रमण सफल हुआ है। तापमान बढ़ रहा है और 'हीरे की धूल' भी कम हो रही है। तुम महान हो वसंत, सच।"

वसंत का चेहरा संतोष से दमक रहा था। अनेक कठिनाइयों के बाद जब एक वैज्ञानिक के प्रयोग की सफलता को दूसरे वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं, तो चेहरे पर ऐसी ही दमक आ जाती है। लेकिन वसंत अंदर ही अंदर चिंता और घबराहट से भरा हुआ था।

युद्ध में इंसान की जीत तो हुई थी, लेकिन अब उसे अनेक समस्याओं का सामना करना था। जैसा कि प्रायः होता है, भयंकर युद्ध के बाद विजयी भी थककर चूर हो जाता है। मानव अपनी सफलता पर बेशक थोड़ी देर खुश हो ले। एक और संघर्ष सामने खड़ा था। हिमप्रलय के कारण पृथ्वी की जनसंख्या आधी हो चुकी थी। अनेक बहुमूल्य चीजें इस आक्रमण में नष्ट हो गयी थीं। इन्द्र पर किये गये आक्रमण से ऊर्जा के स्रोत और अन्य वस्तुएं समाप्ति की कगार पर पहुंच चुकी थीं। अब बर्फ-पिघलने से हर तरफ भयंकर बाढ़ का तांता लगने लगा था। जिस एकता का परिचय इंसान ने इन्द्र पर आक्रमण के दौरान दिया था, क्या उसी का परिचय वह पुनर्निर्माण के कार्य में भी देगा ? यह सोचकर वसंत का माथा पसीने से भीग गया था।

पिछले दो सालों में पहली बार उसे पसीना आ रहा था।

**अंग्रेजी से सुनीता परांजपे द्वारा अनूदित**

# बहुरुपिया

बाल फोंडके

मुझे आज भी वह दिन अच्छी तरह याद है जब मैं इस मुसीबत में फंसा था। उस दिन को भूलना चाहते हुए भी भूल नहीं पा रहा हूं मैं। मुझे नहीं मालूम, कभी भूल सकूंगा या नहीं। आपने अभिमन्यु के बारे में सुना होगा ! महाभारत का वह कम उम्र का महानायक। हमेशा के लिए वह उस चक्रव्यूह में फंसकर रह गया और एक आदर्श के लिए निर्दयतापूर्वक कत्ल कर दिया गया। कहीं मैं भी आज का अभिमन्यु तो नहीं हूं ? मुझे लगता है, मेरे ये विचार, और मानसिक विषाद मुझे इस विपत्ति की ओर ले जा रहे हैं। मेरा सिर जैसे दर्द से फटा जा रहा है या फिर बदन जैसे टूट रहा है। उफ, मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।

नहीं, मैं कुछ-कुछ समझ रहा हूं। एक बात तो बिल्कुल पक्की है। शायद मेरा अंत निकट है। मैं जीवन के अंतिम छोर पर हूं। अब ज्यादा देर मैं यह सब सह नहीं सकूंगा। और यही कारण है कि मैं आपको परेशान करने जा रहा हूं। हो सकता है कि शायद आप मुझे कोई रास्ता दिखा सकें, मुझे इससे मुक्ति मिल सके।

केवल यही कारण है। भगवान साक्षी है। वरना मैं सांसों को भी छिपा के रखने की कोशिश करता। नहीं,- कभी नहीं क्योंकि मैं आफिशियल सीक्रेट एक्ट के तहत ली गयी प्रतिज्ञा से बंधा हूं। यह तलवार की धार पर चलने से कम खतरनाक नहीं। दैट्स ब्लडी डेंजरस। विस्फोटक। नहीं, नहीं। अच्छा होगा अगर मैं अपने खोल में ही बंद रहूं। बिल्कुल बेआवाज।

नहीं, नहीं। चिंता की कोई बात नहीं। जल्दी में ही कुछ करना भी नहीं है, बिना सोचे-समझे पहाड़ी से छलांग लगाने की तरह। लेकिन यह इतना आसान भी नहीं है। बस लगातार यह लाचार सोच ! कोई समाधान न ढूंढ़ पाने की असमर्थता। ऐसा लग रहा है कि किसी भी क्षण जैसे दिमाग की नसें चटख जायेंगी। लाइक एन ओवरहीटेड फील्ड गन। भाड़ में जाए आफिशियल सीक्रेट एक्ट। किंतु इसे अपने तक ही रखियेगा। किसी से कहियेगा नहीं। मेरी भलाई के लिए। सदाशिव

की भलाई के लिए।

व्हाट्स दैट ? ओह हां। मैंने यह तो बताया ही नहीं कि यह महानुभाव सदाशिव हैं कौन ? देखा, यही तो मैं कह रहा था। हमेशा ऐसा ही होता है। एक मिनट के लिए भी ठीक-ठीक नहीं सोच सकता। लेकिन आपके साथ ऐसा नहीं होगा। आपके लिए मैं शुरू से ही शुरू करूंगा। छोटी से छोटी बात को भी छोड़े बिना। आशा है आप मेरी सारी बातें ध्यान से सुनेंगे। वरना आप भी दूसरों की तरह चकरा जायेंगे, या उनसे भी कहीं ज्यादा।

अब मैं पहले आपसे अपना परिचय कराता हूं। मैं हूं लेफ्टिनेंट कर्नल अरविन्द जामखेडकर ए एम सी। आपकी राय सही है। आर्मी मेडिकल कोर। हां, मैं सेना में शल्यचिकित्सक हूं।

सॉरी ? डिड यू से... ? यू आर राइट। आमतौर पर हम मेडिकोज कैप्टन या मेजर पद से ऊपर नहीं जा पाते। लेकिन बंगलादेश की लड़ाई में मैंने भी हिस्सा लिया था। एंड लॉर्डी व्हाट ए पीस आफ एक्शन दैट वाज। हमारी सर्जिकल यूनिट ने भी प्रभावशाली ढंग से खुलकर काम किया था। बस इसी का कमाल है। और बाद में नासा के मेडिकल विंग में भी डेपुटेशन पर कुछ दिन काम किया। मिलिटरी मेडिसिन का उच्च प्रशिक्षण भी लिया। मुझे हाउस्टन में माइकेल दबेकी के अधीन कुछ समय तक प्रशिक्षण लेने का मौका भी मिला। यू गाट इट। अरे वही माइकेल दबेकी–जगत प्रसिद्ध हृदय प्रत्यारोपण विशेषज्ञ। यहां तक कि वापस आने के बाद भी वही रोजाना के खांसी-जुकाम और चोट-खरोंच के इलाज के साथ-साथ, इस दिशा में मैंने अपनी खोजबीन जारी रखी। इसका नतीजा यह हुआ कि *इंटरनेशनल जरनल आफ मिलिटरी मेडिसिन* में दर्जन भर बेहद शानदार पेपर लिखने का श्रेय मुझे मिला।

व्हाट ? ओह, डोंट गो ओल्ड मैन। आपको लग रहा होगा कि मैं बेकार ही शेखी बघार रहा हूं। नहीं ऐसा नहीं है। मेरा विश्वास कीजिये, मैं तो केवल आपको सब कुछ विस्तार से बताना चाहता हूं, क्योंकि आगे जो कुछ बताऊंगा उसके साथ इसका संबंध है।

बट अबाउट दैट लेटर। मैं आपको बता रहा था कि यह सब शुरू कैसे हुआ। आज भी वह दिन याद है। दिन की तरह साफ और उजला। जीवन की तरह सच्चा। वह खास दिन। उस दिन लाली का जन्मदिन था। लाली यानी ललिता–मेरी अर्धांगिनी।

अरे नहीं, आप नहीं कर सकते। मैं जो कुछ बता रहा हूं, उसकी सचाई जानने के लिए भी आप उससे नहीं पूछ सकते, क्योंकि उसे खुद ही कुछ नहीं मालूम। यह हमने सेना में रहकर सीखा है। जो लोग हमारे बहुत करीब हैं और हमें बहुत प्रिय हैं, उनसे भी हर बात छिपाकर रखना।

अच्छा तो मैं बता रहा था कि उस दिन लाली का जन्मदिन था। मैं उसे कभी भूल नहीं सकता। उस दिन भी हमेशा की तरह छुट्टी ले ली थी। हम बाहर खाना खाने जा रहे थे। उसके बाद मूवी भी जाना था। और कुछ खरीदारी भी करनी थी, जैसे कोई साड़ी या फिर कोई ड्रेस या कुछ चीज। मैं मानता हूं कि प्रोग्राम कोई बहुत खास नहीं था। लेकिन फिर भी रोजमर्रा के रुटीन की एक एकरसता को तोड़ता ही था।

वैल, हम सब चलने के लिए बिल्कुल तैयार ही थे कि फोन की घंटी बजी। कमांडेंट का आदेश था–तुरंत ही मेरे गैरिसन में पहुंचने के लिए।

लाली तो गुस्से से जैसे पागल ही हो गयी ? मैं उससे नजरें नहीं मिला सका। वह ऊपर से शांत थी, लेकिन भीतर जैसे ज्वालामुखी धधक रहा था। काश लाली ! ब्लास्ट दिस आर्मी लाइफ। वैल, अब तो लाली को भी इसकी आदत पड़ गयी है।

मैं लगभग दौड़ता हुआ गया और स्वयं को कमांडेंट के सामने पेश कर दिया। उसे बड़ी चुस्ती से सैल्यूट मारा।

कमांडेंट वास्तव में एक अच्छा आदमी है। एक बहुत ही नेक इन्सान।

"सॉरी, डाक्टर," उसने कहा। "मुझे तुम्हारा प्रोग्राम बिगाड़ने का वाकई बहुत अफसोस है। लेकिन मैं कर भी क्या सकता हूं। इंटेलीजेंस हेड क्वार्टर ने तुम्हें बुलाया है। इट्स अर्जेंट।"

भगवान भला करे। इंटेलीजेंस को मेरी जरूरत क्यों पड़ गयी ?

क्यों ? यह बनावटी मुस्कान किसलिए ? ओह ! कसम से। क्या बात है !

मेरा मतलब था आर्मी इंटेलीजेंस से। खैर, आर्मी इंटेलीजेंस का इंटेलीजेंस से कोई वास्ता नहीं होता। बट दैट्स बिसाइड द प्वाइंट।

मैं तैयार था। होना ही था। ब्रिगेडियर से भी यही कहा था।

"ओ के, शाम को चलते हैं।"

मैंने सोचा, हम लंच लेकर मूवी चले जायेंगे और जहां तक शपिंग का सवाल है वह लाली पर ही छोड़ देंगे। वैसे भी मुझे साड़ियों के ढेर देखकर बोरियत ही होती है। लेकिन ब्रिगेडियर ने जल्दी ही मेरा दिमाग ठिकाने ला दिया।

"सॉरी अगेन, इट्स एन एस ओ एस। बाहर हवाई जहाज में तुम्हारा इंतजार हो रहा है, वह बस उड़ने ही वाला है। सीधे यहीं से जाना होगा। मैं ललिता बेटी को समझा दूंगा। समय मत खराब करो। गेट क्रैकिंग।"

"यस सर !" आदेश तो आदेश है। कोई प्रश्न करने का सवाल ही नहीं। मैंने फिर से सैल्यूट किया और तेजी से उस हेलिकाप्टर की ओर भागा जिसके पंख मिक्सी की तरह तेजी से घूमने लगे थे।

मुझे इंटेलीजेंस हेड क्वार्टर पहुंचने में मुश्किल से सवा घंटा लगा। लेकिन
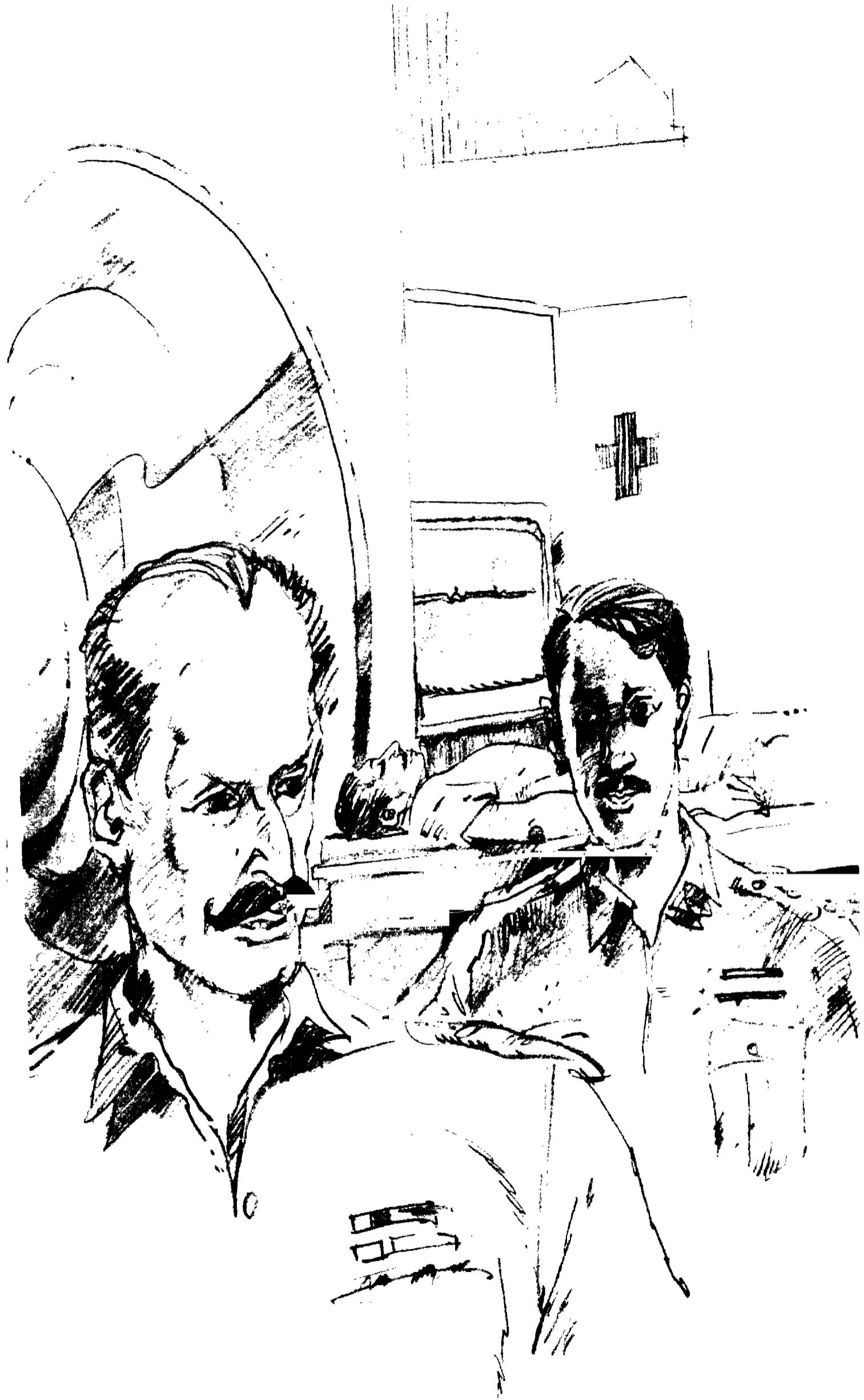
इस थोड़े से समय में भी कम से कम छह बार मुझे जल्दी करने के लिए रेडियो संदेश दे दिये गये। हेलिपैड पर जीप तैयार खड़ी थी, जिसका इंजन हेलिकाप्टर के जमीन छूते ही घरघराने लगा था।

केवल पांच मिनट बाद ही मैं हेड क्वार्टर में था। मैं बता नहीं सकता कि इंटेलीजेंस चीफ कितने बेताब हो रहे थे। उन्होंने सैल्यूट आदि की औपचारिकता की ओर ध्यान दिए बिना मेरी बांह पकड़ी और मुझे आपरेशन थियेटर की ओर ले चले। उन्होंने स्वयं एक शब्द भी नहीं कहा। क्या करना है यह भी नहीं बताया। बस उन्होंने मुझे स्वयं देखने दिया।

मैंने देखा कि यह काम केवल मेरे ही वश का था बल्कि केवल मेरे ही लिए था। मैं ज्यादा विस्तार में नहीं जाऊंगा लेकिन मुझे काफी कुछ समझ में आ गया था...

सामने मेज पर एक मांस पिंड पड़ा था। अच्छा डील-डौल किंतु बहुत बुरी हालत में। उफ, कितने भयानक घाव थे। लगता था जैसे शरीर का सारा रक्त बह गया हो और फ्रैक्चर ! जांघ की हड्डी बहुत ही नाजुक मोड़ पर मुड़ी हुई थी। कार्डिओस्कोप लगा हुआ था। लेकिन उसका चमकदार बिंदु सीधी रेखा में चल रहा था। कोई उतार-चढ़ाव नहीं। जैसे उसे भी सीधे मार्च करने का निर्देश दिया गया हो या जैसे वह किसी दंभी व्यक्ति की तरह सीधा अकड़ कर चल रहा हो। पंछी पिंजरा छोड़कर बहुत दूर जा चुका था। आप समझ गये न मैं क्या कहना चाहता हूं। मेरा मतलब है उसका दिल उसे अलविदा कह चुका था। इइजी भी लगा हुआ था। यहां कुछ अच्छे संकेत मिल रहे थे। यानी कि दिमाग अभी चालू था... लेकिन वह भी क्षीण होता जा रहा था।

कुछ क्षणों के लिए किसी के मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला। सबको जैसे डर था कि हल्की-सी भी आवाज हुई तो यह इइजी संकेत भी रुक जायेगा।

तब चीफ ने खंखारते हुए कहा, "वैल, डाक्टर ! क्या ख्याल है ?" मैंने कुछ जवाब नहीं दिया। मैं कह भी क्या सकता था ? सिवा इसके कि एक स्टेथोस्कोप उठाकर उसके साथ खेल कर अपने आप को व्यस्त दिखाने लगा। मैंने उसकी आंखों में भी टार्च की रोशनी डाली। लगता था कि दिमाग भी अपना काम बस बंद करने ही वाला था।

एक बार फिर चीफ ने ही मौन तोड़ा, "डाक्टर, हमारे फिजीशियन अमरजीत सिंह से मिलिए।" एक लंबे तगड़े सिख ने कड़क सैल्यूट मारा। वह कैप्टन था।

"कैप्टन !" मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"डाक्टर, अमरजीत का कहना है कि हालांकि रोगी का हृदय काम नहीं कर रहा किंतु उसके दिमाग से अब भी सामान्य होने के संकेत मिल रहे हैं। इसलिए मे मरा हुआ नहीं मान सकते। डू यू एग्री ?"

"यस सर, छठे दशक के अंत में जब पहली बार हृदय प्रत्यारोपण हुआ था तब ऐसी ही कुछ कानूनी और नैतिक कठिनाइयां सामने आयी थीं। तब बहुत-सी दलीलें भी दी गयी थीं। और उनसे जो बात उभरकर सामने आयी वह यह थी कि जब तक किसी आदमी के मस्तिष्क के सामान्य होने के संकेत मिलते हैं तब तक उसे मृत नहीं माना जा सकता, कम से कम क्लीनिकली तो नहीं।"

"ओ के, ओ के डाक्टर", चीफ ने अधीर होते हुए मुझे बीच में ही टोका। "हम सब मानते हैं कि यह रोगी अभी मरा नहीं है। वह जीवित है। यह और भी अच्छा है। क्या तुम उसे पूरी तरह जीवित कर सकते हो ? उसका दिमाग अब भी काम कर रहा है, केवल दिल धड़कना बंद हो गया है। क्या तुम दूसरा लगा सकते हो ? मेरा मतलब है इसे बदल सकते हो ? एवरी थिंग शुड बी हंकी डॉरी देन। हमने तुम्हें इसलिए बुलाया है। इसका हृदय बदल दो।"

"प्रत्यारोपण ? उसे ? अब ?" भगवान जानता है, मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। "लेकिन, लेकिन..."

"बट व्हाट, डाक्टर ?"

"लेकिन यह कैसे संभव है।"

"व्हाइ नाट ? इसमें मुश्किल क्या है ?"

"इसकी सर्जरी इतनी आसान नहीं है। इसे करने से पहले बहुत सारी तैयारियां करनी पड़ती हैं जैसे एक हार्ट-लंग मशीन और फिर क्रायोस्टेट की जरूरत होती है। आपरेशन के लिए भी पूरी टीम की जरूरत होती है। मरीज को भी कई तरह से तैयार करना पड़ता है। कुछ इंजेक्शन भी देने होते हैं।"

"यह सब कुछ अमरजीत कर लेगा।"

"लेकिन सबसे खास चीज है दिल। आपको वह कहां से मिलेगा ? और अगर यह मिल भी जाये तो इसकी पूरी तरह जांच करनी पड़ती है। टिशू टाइपिंग करना होता है। ब्लड-ग्रुप की ही तरह हिस्टोकम्पेटेबिलिटी ग्रुप भी मिलाकर देखना पड़ता है। वरना जिस शरीर में इसे लगाया जायेगा वह इसे ग्रहण नहीं करेगा।"

"दैट्स इट। अगर इसका ग्रहण नहीं होता तो वह बाद में ही होगा। है न ? अगर तुम इसे केवल कुछ दिनों के लिए भी जीवन दे सको तो वही काफी है।"

"लेकिन, लेकिन, आपको हृदय मिलेगा कहां से ?"

"मिल जायेगा। हम ढूंढ़ रहे हैं। अगर नहीं मिला तो हमारे पास एक वालंटियर है।"

"आप इतने कठोर नहीं हो सकते ?" मैंने ऊंची आवाज में कहा, "आपका मतलब है, आप...आप भगवान के बनाए किसी इंसान की जान ले लेंगे, किसी जीवित इंसान की ? केवल उसका दिल निकालने के लिए ?"

वैल, आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं कैसा आदमी हूं। इतने सालों तक सेना में रहने के बाद भी मेरी संवेदनाएं मरी नहीं हैं।

"ओह, कट आउट दैट सेंटिमेंटल नानसेंस", चीफ ने उलटी मार की। "आई विल हैव टू आर्डर यू।"

"प्लीज सर, समझने की कोशिश कीजिये। आप चाहे कितनी भी तैयारी कर लें तो भी इसकी आशा नहीं है कि आपरेशन सफल होगा। रोगी की दशा बहुत-बहुत खराब है। मुझे तो शक है कि आपरेशन सफल होने के बाद भी रोगी बच सके।"

"डाक्टर, मैं तुम्हारे साथ सख्ती से पेश आऊंगा। यह मेरा आदेश है कि यह आदमी यहीं ठीक होगा और इसे बोलना भी होगा। हमें केवल एक या दो घंटे का समय चाहिए। बस इतना ही काफी है। तुम्हें इतनी देर के लिए इसे जीवन देना ही होगा।"

"लेकिन क्यों ? ऐसी भी क्या जल्दी है ?"

"नन आफ योर बिजनस !" चीफ चिल्लाये। वह गुस्से से लाल हो रहे थे। उन्होंने अपने आप को संयत किया और पुनः शांत स्वर में बोले, "डाक्टर, यह इंटेलीजेंस यूनिट है। हम यहां नीड-टू-नो के आधार पर काम करते हैं। मैं तुम्हें केवल इतना ही बता सकता हूं कि कुछ बहुत जरूरी भेद, सामरिक महत्व की कुछ सूचनाएं इस आदमी के पास हैं। अब तुम मुझे अपना अंतिम निर्णय सुनाओ।"

मेरा मुंह सूख गया। मैंने होंठों पर जुबान फिरायी। फिर से रोगी के पास गया और सावधानी से उसकी जांच करने लगा। मैंने सोचा कुछ कहने से बेहतर है कुछ करना। एक घंटे पहले लिये गये उसके सभी रिकार्डों को पूरी तरह देखा। कार्डियोग्राम चार्ट पर भी निगाह दौड़ायी। इइजी द्वारा प्रस्तुत रूपरेखाओं को भी ध्यान से देखा। एक बार देखा, बार-बार देखा। ये सब करते-करते मेरी कनपटियां दुखने लगीं। लेकिन सब बेकार। नतीजा वहीं का वहीं। हर पल उम्मीद कम होती जा रही थी। मैंने निराशा से अपना सिर हिलाया, "सॉरी सर, अगर आप मुझे आपरेशन करने को कहेंगे तो मैं कर दूंगा। लेकिन उम्मीद कम है। इतनी कम कि आप इससे वे सूचनाएं शायद नहीं ले पायेंगे, जिनकी आपको बहुत ज्यादा जरूरत है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आपको एक स्वस्थ वालंटियर को भी खोना पड़ेगा। फैसला मैं आपके ऊपर छोड़ता हूं, सर।"

चीफ निराशा से पास रखी कुर्सी पर लुढ़क से गये, "ओह नो, डाक्टर ! प्लीज, मुझे तो बस तुम्हारा ही सहारा था। तुम्हारा सारा अनुभव, तुम्हारा विशेष प्रशिक्षण, तुम्हारा..."

"यस सर। यह सब ठीक है। लेकिन...लेकिन मैं भगवान नहीं हूं।"

"तो फिर कोई रास्ता नहीं है ?"

"एक्सक्यूज मी सर। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मैं आपकी नीड-टू-नो

लिस्ट में नहीं आता। लेकिन यदि आप मुझे पूरी बात बता सकें तो शायद मैं कोई हल निकाल सकूं। आखिरकार मैं भी आर्मी का आदमी हूं। मैं यहां के अनुशासन से परिचित हूं। मैं भी भेद छिपाकर रख सकता हूं। अगर... ?"

स्थिति इतनी बिगड़ चुकी थी कि चीफ के सामने अब कोई और चारा नहीं था। इसलिए उन्होंने सब कुछ मुझे बताने का फैसला कर लिया। काश ! उन्होंने मुझ पर विश्वास न किया होता तो आज हमें इस स्थिति का सामना नहीं करना पड़ता।

चीफ ने कहना शुरू किया, "डाक्टर, यह नौजवान कैप्टन सदाशिव गोखले, मेरा बेहतरीन आपरेटर है...था... ।"

चीफ उलझन में थे कि वर्तमानकाल का प्रयोग करें या भूतकाल का। "मैंने इसे एक बहुत खास लेकिन बहुत खतरनाक मिशन पर भेजा था। शत्रु की सीमा रेखा के पार, उनकी युद्ध संबंधी योजनाओं का पता लगाने के लिए। उनका इरादा जबरदस्त हवाई बमबारी करने का है। लेकिन हमारे सुपरसोनिक फाइटर अभी यहां पहुंचे नहीं हैं, बस पहुंचने ही वाले हैं। हमें कुछ समय चाहिए। जहां तक मुझे लगता है कि युद्ध का नतीजा बहुत कुछ इसी पहली मुठभेड़ पर निर्भर करता है। इसीलिए हमें इन सब सूचनाओं की जरूरत है। हमें युद्ध जीतने के लिए उनकी युद्ध संबंधी योजनाओं की पूरी जानकारी चाहिए। तब हम शायद युद्ध का रुख पूरी तरह बदल सकते हैं। सदाशिव, हमारे लिए उसका कोड नाम भाई साहेब पेशवा था, इसी खतरनाक मिशन पर गया था। वह मिशन पूरा कर लौट रहा था और उसने हमें सफलता का रेडियो संदेश भी दे दिया था। वह वापस आ रहा था और हम बेचैनी से उसका इंतजार कर रहे थे। अंतिम क्षणों में उसकी पोल खुल गयी। उसे इस दशा में सीमा पर फेंक दिया गया। आय एम श्योर, उन्होंने इसे मरा हुआ समझ लिया था। यहां लाते समय हमने भी इसकी आशा छोड़ दी थी। उसका दिल बहुत धीमे धड़क रहा था, जिसे सुनना कठिन था। और अब, अब तो वह बिल्कुल बंद हो गया है। यह बहुत बड़ी क्षति है। मैं इस नौजवान को वास्तव में पसंद करता था। लेकिन उससे भी जरूरी वे भेद हैं जिन्हें वह अपने दिमाग में छिपा कर लाया। अब वे मिल नहीं सकते। सबसे बुरी बात यह है कि शत्रु सावधान हो गया है। वह अपनी योजनाओं को समय से पहले ही पूरा कर सकता है। किसी दूसरे को भेजने का भी समय नहीं है। एक बहुत बड़ी असफलता है यह मिशन। और अगर कहीं इस वजह से युद्ध हार गये तो..."

चीफ बोलते-बोलते रुक गये। वह भावुक हो उठे थे।

कुछ पलों के लिए मौन छा गया। इतना सन्नाटा कि आप सूई गिरने की आवाज भी सुन सकते थे।

यही वह क्षण था। मुझे पूरा विश्वास है। यही वह क्षण था जब पहली बार यह विचार मेरे मन में कौंधा। मुझे ऐसा झटका लगा जैसे मेरे पैरों के नीचे कोई बारूदी सुरंग फट गयी हो। मैंने इस विचार को अपने से दूर धकेलने का प्रयास किया। किंतु इसमें छिपी संभावना, चुनौती और अचानक मिले इस अवसर ने मुझे उत्तेजित कर दिया।

"सर !" मैंने पूछा, "क्या यह संभव है कि सदाशिव ने इस सूचना का कहीं कोई रिकार्ड रखा हो ? कोड के रूप में ही शायद !"

"इमपासिबल। ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता। कोई भी ऐसी गलती नहीं करेगा। सदाशिव तो बिल्कुल नहीं। वह सूचना उसने अपने पास, अपने दिमाग में ही सुरक्षित रखी होगी।"

"अगर ऐसा है तो, सर, मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है। देखते हैं आपको कैसा लगता है। अगर आपको ठीक लगा, तो शायद आपको वह सूचना मिल सकेगी। सदाशिव का बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगा। इसके लिए मुझे एक वालंटियर अवश्य चाहिए जिसका वादा आप भी कर चुके हैं। लेकिन हमें उसकी बलि नहीं देनी होगी।"

"गो अहेड। जल्दी बताओ। क्विक। इधर-उधर की बातें मत करो।"

"लेकिन मैं आपको पहले से ही सावधान किये देता हूं, सर। यह स्कीम इंसानी सोच से परे है। अंधेरे में तीर चलाने की तरह। ये भी गारंटी नहीं है कि यह काम कर जायेगी। फिर भी..."

"ये मुझ पर छोड़ दो। शूट, मैन, शूट।"

"सर, हालांकि मैं एक सर्जन हूं, हृदय प्रत्यारोपण विशेषज्ञ, न्यूरोफिजिओलोजी हमेशा मेरी पहली पसंद रही है। मैंने इस दिशा में बहुत कुछ सीखा है। समय-समय पर कुछ अनुसंधान भी करता रहा हूं।"

"काम की बात करो, माई डियर फैलो...गो ऑन।"

"सर, मैककोनेल नाम के एक वैज्ञानिक ने फीता-कृमियों पर कुछ रोचक प्रयोग किये थे और मूल हंगरी के वैज्ञानिक, उंगार ने इन्हें रोडेंट्स तक आगे बढ़ाया। चूहे और मनुष्य की फिजिओलोजी बहुत कुछ मिलती-जुलती है। इसलिए चूहों पर किये गये परीक्षणों से प्राप्त परिणामों को मनुष्य पर भी आजमाया जा सकता है।

"अब ये तो सभी जानते हैं कि आमतौर पर चूहों को अंधेरा पसंद होता है। रोशनी से वे दूर भागते हैं। आपने घरों में रहने वाले चूहे देखे होंगे। आमतौर पर वे दिन में दिखाई नहीं देते। लेकिन रात होते ही कहानी बदल जाती है। उस समय तो वे मालिक होते हैं। वे आराम से इधर-उधर घूमना शुरू कर देते हैं। दिन में तो वे सबकी नजरों से दूर कोनों में या जमीन के नीचे बिलों में छिपे

रहते हैं। उंगार का प्रयोग उनके इन गुणों पर ही आधारित था।

"उसने एक विशेष पिंजरा बनवाया जो दो भागों में बंटा हुआ था। एक हिस्से में तेज प्रकाश था जबकि दूसरे हिस्से में बिल्कुल अंधेरा। उसने पिंजरे में कुछ चूहों को रखा। खाना और पानी उसने रोशनी वाले भाग में रखे। लेकिन चूहे उस हिस्से में रुकते ही नहीं थे। वे रोशनी वाले भाग में जाते, मुंह में खाना भरते और अंधेरे में भाग जाते। अब उंगार ने पिंजरे के अंधेरे भाग से बिजली का सर्किट जोड़ दिया। इसलिए जैसे ही चूहे इस भाग में आते उन्हें एक झटका लगता था। इतना जोरदार नहीं कि इससे वे अपंग हों या मरें। लेकिन यह उन्हें डराने के लिए काफी था, जिससे वे वापस रोशनी वाले भाग में भागते थे। कुछ देर ऐसे ही चलता रहा। इसका उद्देश्य चूहों को सबक सिखाना था। अब वे अंधेरे से डरने लगे थे। बिजली का सर्किट काट देने के बाद भी उन्होंने रोशनी वाले भाग में ही रहना पसंद किया। पूरी तसल्ली करने के लिए, उंगार ने खाना अब अंधेरे हिस्से में रख दिया। लेकिन चूहे उसे लेकर रोशनी वाले भाग में आने लगे।

"जब एक बार उसने अच्छी तरह देख लिया कि अंधेरे का डर पूरी तरह उनके दिमाग में बैठ चुका है तो उंगार ने प्रयोग का अगला चरण शुरू किया। उस समय वैज्ञानिकों का मत था कि लांग टर्म मेमोरी मस्तिष्क के एक विशेष भाग में होती है और रासायनिक रूप से न्यूक्लिक अम्ल आर एन ए के अणुओं में संग्रहित रहती है। उंगार ने उन चूहों को मार दिया जिन्हें उसने अंधेरे से डरना सिखाया था, उनका मस्तिष्क बाहर निकाला, और उसके जिस भाग में स्मृति भरी होती है, उस भाग का आर एन ए निकालकर, दूसरे नये चूहों में लगा दिया। उसे यह देखकर बहुत संतोष हुआ कि ये नये चूहे भी अंधेरे से डरते थे। इस तरह यह पूरी तरह सिद्ध हो गया कि स्मृति आर एन ए में ही होती है। इसके बाद और प्रयोग करते जाना स्वाभाविक ही था, जिन्होंने इस सिद्धांत को और भी पक्का किया।"

"थैंक यू डाक्टर, फार एजुकेटिंग मी।" चीफ के शब्दों में व्यंग्य साफ झलक रहा था। "लेकिन भगवान के लिए अब बता भी दो कि इस कहानी का इस समस्या से क्या संबंध है ?"

"मैं उसी पर आ रहा हूं, सर। मैंने आपसे थोड़ी देर पहले पूछा था कि क्या कोई ऐसी संभावना है कि सदाशिव ने अपनी सूचनाओं का रिकार्ड कहीं और रखा हो। चूंकि वह कहीं नहीं रखा गया है, इसलिए सदाशिव ने भी जरूर ही चूहों की तरह इसे अपनी स्मृति में सुरक्षित रखा होगा। इसलिए, अब मैं इसके मस्तिष्क के स्मृति वाले हिस्से का आर एन ए निकालकर किसी और में लगा दूं तो वह इसे ज्यों का त्यों बता सकता है और हम उसे समझ सकते हैं। जैसे कि किसी टेप रिकार्डर में संगीत चुम्बकीय लिपि में रिकार्ड हो जाता है और जब

भी हम सुनना चाहते हैं कैसेट उसी रूप में दोहरा देता है। लेकिन आपको इसके लिए एक चुस्त दिमाग चाहिए, एक वालंटियर। अब समझ गये होंगे कि क्यों मैंने..."

"ब्रेवो ! ब्रेवो !" चीफ ने उत्साह से मुझे अपनी फौलादी बांहों में जकड़ लिया।" ब्रिलियेंट, डाक्टर, ब्रिलियेंट !"

"होल्ड आन ! होल्ड आन !" मैंने उनके उत्साह को ठंडा करने का प्रयास किया। "जो कुछ मैंने बताया वह सुनने में बहुत साधारण लगता है। लेकिन यह एक बहुत खतरनाक प्रयोग है। इसकी सफलता की भी कोई गारंटी नहीं है। किसी ने कभी यह किया भी नहीं है। कोई भी समझदार आदमी इसे करेगा भी नहीं। यहां तक कि मैं भी नहीं, क्योंकि इसके मनुष्य पर प्रयोग किये जाने पर अनेक प्रतिबंध हैं और वे होने भी चाहिए। मुझे भी यह प्रयोग करने के लिए अपराधी समझा जा सकता है। लेकिन आप इन नैतिक बातों की ज्यादा परवाह नहीं करते। बल्कि उन्हें साफ ठुकराते ही हैं। और फिर सब कुछ छिपाकर रखते हैं। यही सोचकर मैंने आपसे ये प्रयोग करने के लिए कहा है। लेकिन फिर भी इसके परिणामों के प्रति सचेत करना मेरा फर्ज था।"

"सारी जिम्मेदारी मैं लेता हूं। जस्ट यू गो अहेड। तुम्हें क्या कुछ चाहिए, मुझे तो बस यह बता दो।"

"आई विल। वालंटियर नौजवान होना चाहिए। स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट। अच्छा हो अगर वह अकेला ही हो, जिससे अगर कुछ गड़बड़ हो जाये तो उसकी पत्नी को न झेलना पड़े।"

लाली के जन्मदिन की स्मृति मेरे मन के अंधेरे कोने में अब भी छिपी थी।

इसके बाद हमने जरा भी समय बरबाद नहीं किया। मुझे अपने आप पर पूरा भरोसा था। हालांकि इस केस में आपरेशन का संबंध रोगी के स्वास्थ्य से नहीं था, फिर भी आपरेशन पूरे ध्यान से और पूरी दक्षता से ही करना था।

इसके आगे तो मानो हम किसी उड़नखटोले में सैर कर रहे थे। भगवान जानता है, सदाशिव के मस्तिष्क से आर एन ए निकालने में मुझे जरा भी कठिनाई नहीं हुई। चीफ ने जिस वालंटियर को बुलाया–विश्वनाथ करांदे–वह एक लंबा-तगड़ा नौजवान था, बेहद दिलेर। मैंने यह भी जोर देकर कहा था कि बुलाये गये वालंटियर की मातृभाषा वही हो जो बेचारे स्वर्गवासी सदाशिव की थी। मैं नहीं चाहता था कि बाद में भाषा के चक्कर में कोई गड़बड़ी हो। सदाशिव के मस्तिष्क से निकाला गया आर एन ए उसे लगा दिया गया। एक दिन बाद इसके प्रभाव का हल्का सा संकेत मिला। हमने दो दिन और गुजर जाने दिये और फिर एक टेप रिकार्डर लेकर उसके पास बैठ गये। मैं जब उसके फिजिओलोजिकल क्रियाकलापों की जांच कर ही रहा था, चीफ ने अपनी पूछताछ शुरू कर दी। उन्होंने कुछ सवाल तो

सीधे-सीधे पूछ लिये, कुछ खास तरीके से और कुछ सवाल उसकी सचाई जानने के लिए घुमा फिराकर पूछे। और वे बातें भी पूछीं जिन्हें केवल सदाशिव ही जान सकता था। संक्षेप में, उन्होंने यह निश्चित कर लिया कि विश्वनाथ वही सब बता रहा था जो वह चाहते थे। हम लगातार 26 घंटे तक व्यस्त रहे। जब ये सब खत्म हुआ, हम बहुत थक चुके थे। लेकिन यह एक बहुत बड़ी बात थी।

निस्संदेह, हमारा प्रयोग सफल हुआ था। हमारी सभी अपेक्षाओं को पूरा करने वाला। चीफ को वह सब मिला जो वह चाहते थे। और इससे युद्ध में बहुत लाभ उठाया गया और युद्ध का रुख ही पलट गया। लेकिन ये सब तो आपने अखबार में पढ़ ही लिया होगा।

अगर आप वैज्ञानिक नहीं हैं तो आप मेरे उल्लास को नहीं समझ सकते।

चीफ ने मुझे दिल से बधाई दी। केवल पी वी एस एम के लिए सिफारिश करने का वादा ही नहीं किया बल्कि अगले साल कर्नल के पद के लिए प्रोमोशन का भी वादा किया।

उस बात को पूरा एक हफ्ता हो चुका था जबकि मैंने जल्दी में घर छोड़ा था। लाली तो चिंता कर-करके बीमार ही हो गयी होगी। चीफ को अब मेरे जाने पर कोई आपत्ति नहीं थी। विश्वनाथ भी अब ठीक हो रहा था।

सो, लौट के बुद्धु घर को आये। पूरे हफ्ते लाली के जन्मदिन का जश्न मनाया गया।

इस बीच एक महीना बीत चुका था। समय के जैसे पंख लग गये थे। चीफ ने मुझे फिर बुलवाया। मैंने समझा, शायद विश्वनाथ की दशा बिगड़ गयी होगी। बिगड़ भी सकती है या कोई एलर्जिक प्रतिक्रिया। हेडक्वार्टर पहुंचने में मैंने देर नहीं लगायी। इससे पहले कि चीफ कुछ कहते, मैंने विश्वनाथ का हाल पूछा।

"वैल, ही इज आलराइट", चीफ ने रूखे स्वर में कहा और एक पत्र उठाकर मेरे सामने फेंक दिया।

मैंने उसे खोला। एक गुलाबी कागज पर बारीक-बारीक कुछ लिखा था, शायद किसी स्त्री की लिखाई थी। अंत में किये गये हस्ताक्षर 'पार्वती' से यह स्पष्ट हो गया। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया। इसलिए मैंने प्रश्नसूचक दृष्टि से चीफ की ओर देखा।

"सदाशिव की पत्नी", चीफ ने बताया। लेकिन यह तो मेरे सवाल का जवाब नही था।

पत्र का मजमून भी कुछ उलझा हुआ-सा था। पार्वती ने ढेरों शिकायतें की थीं। हेड क्वार्टर ने उसके पति के साथ क्या किया था ? वह जानना चाहती थी। उसमें जमीन-आसमान का अंतर आ गया था। यह तो ठीक है कि वह उसका पति था। लेकिन पहले से अलग दिखायी देता था। उसका काम करने का ढंग

अलग था। यहां तक कि शारीरिक रचना भी अलग थी। जरूर आर्मी वालों ने उस पर कोई जादू कर दिया था। और वह ये सब कुछ जानना चाहती थी।

इस बात ने मुझे चकित कर दिया। सदाशिव मर चुका था। उसका अंतिम संस्कार मैंने स्वयं देखा था। फिर यह कौन था जो उस दुखी स्त्री को छल रहा था ?

"आपने सदाशिव की मृत्यु की खबर उसे नहीं दी थी ?"

"वी डिड। तभी तो मुझे दाल में कुछ काला लग रहा है। कोई दुश्मन का एजेंट भी हो सकता है।"

"लेकिन मुझे पार्वती की बात ही समझ में नहीं आयी। वह मानती है कि केवल एक बात को छोड़कर वह हर तरह से सदाशिव से भिन्न है। तब उसने कैसे मान लिया कि वह सदाशिव है, कोई बहुरुपिया नहीं ?"

"यही बात मुझे भी खटक रही है। शायद वह मानसिक रूप से इतनी परेशान रही होगी कि अंत में उसने मान लिया होगा। मैंने तुम्हें इसीलिए बुलाया है। हमें उससे मिलना चाहिए। शैल वी ?"

"राइट, सर।"

...वह पार्वती ही थी, जिसने हमारे खटखटाने पर दरवाजा खोला। जैसे ही हमने उसे अपना परिचय दिया उसने ढेर-सी बातें सुना डालीं। दुश्मन का वार भी शायद इतना तेज नहीं होता।

"आप लोगों ने उसे क्या कर दिया है, सर ?" उसने विनती की, "जब वह यहां से गया था, बहुत खुश था, स्वस्थ था, मेरा बहुत ध्यान रखता था। और अब, वह बिल्कुल बदल गया है। केवल उसका चेहरा, या उसका शरीर ही नहीं बदला...मैं नहीं बता सकती। लेकिन वह बदल गया है। बिल्कुल ही बदल गया है।"

"ऐसा है, वह सदाशिव नहीं है, माई डियर।" चीफ ने पूरी सहानुभूति से कहने का प्रयास किया। "सदाशिव ने देश के लिए अपनी जान दे दी। वह तो वीरों की मौत मरा है। मुझे दुख है कि..."

"नहीं। नहीं। वह जीवित है और ठीक है। वहां सो रहा है।"

"लेकिन तुम मानती हो कि वह...जो वहां सो रहा है वह सदाशिव जैसा नहीं दिखायी देता। उसके रंगढंग भी उसकी तरह नहीं है। बेटी, तब फिर वह कोई बहुरुपिया तो नहीं है ?"

"नहीं सर। मैं जानती हूं यह वही है। उसके जीवन, हमारे जीवन और उसके बचपन की सब घटनाएं यह कैसे जानता है। और, और...," वह हिचकिचायी। लेकिन फिर किसी निश्चय के साथ निडर होकर बोली, "...और उन अंतरंग क्षणों को भी वह जानता है जिन्हें हमने एक साथ जिया था और जिन्हें हम दोनों के

सिवा कोई और नहीं जानता।"

वह दुराचारी वास्तव में बहुत बड़ा घाघ है। इसमें कोई शक नहीं। हमने उसे जगाने के लिए कहा। चीफ ने अपनी पिस्तौल तान ली।

उसी पल उसने कमरे में कदम रखा।

आप विश्वास मानिए, हम जैसे आसमान से गिरे। वह विश्वनाथ था।

"यू, यू स्काउंड्रल...।" मैंने चीफ को रोका, क्योंकि मैं समझ चुका था कि क्या हो गया है। किसी तरह मैंने पार्वती को शांत किया।... चीफ को भी और तब उन्हें खींचकर बाहर ले आया। लेकिन मैंने विश्वनाथ को भी अपने साथ आने को कहा। मैं उससे कुछ बात करना चाहता था। मेरा शक सही निकला।

हमने उसे वहीं छोड़ दिया और वापस लौट आये।

जैसे ही जीप चली, मैंने चीफ से पूछा, "जब मैंने आपसे विश्वनाथ के संबंध में पूछा था तो आपने मुझे बताया क्यों नहीं ?"

"कहा तो था कि वह ठीक है, नहीं कहा था ? तुमने खुद भी तो देख लिया है। जैसे ही हमारा मिशन पूरा हुआ, मैंने तुरंत उसकी छुट्टी मंजूर कर दी थी। भला मुझे कैसे मालूम होता कि वह यहां आ जायेगा ? और उस बेचारी को इस तरह धोखा देगा ?"

"इसमें उसका कुसूर नहीं है, सर। क्या आप नहीं समझे कि क्या हुआ है ? सदाशिव के जीवन की सारी स्मृतियां उसके मस्तिष्क में सुरक्षित थीं। जो सूचना हमें चाहिए थी, वह तो उसका केवल एक अंश मात्र थी। लेकिन हमें पूरा आर एन ए निकालना पड़ा था जिसे हमने विश्वनाथ में लगा दिया था। इस प्रकार सदाशिव की सारी की सारी स्मृतियां उसे मिल गयीं। बस, यही कारण है कि वह अपने आप को सदाशिव समझता है। उसकी अपनी स्मृति और प्रत्यारोपित स्मृति आपस में उलझ गयी हैं। उसी से यह सब गड़बड़ हो गयी है। जैसे किसी टेप पर से कोई चीज पूरी तरह मिटाये बिना उस पर दूसरा कुछ रिकार्ड कर दिया जाए। या फिर दो बार एक्सपोज हो गयी फिल्म की तरह।"

मैं चीफ को तो सब कुछ समझा सकता था। लेकिन पार्वती को कैसे बताता ? यह बात उसे पागल कर सकती थी। उसकी भावनाओं से खिलवाड़ करना ठीक होगा क्या ? मैं उसे कैसे बताता कि उसके पति को गिनी पिग की तरह इस्तेमाल किया गया था ? और अब वह अकेली नहीं है। विश्वनाथ भी वहां है...जो पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। क्या यह और भी बुरा नहीं होगा ? अगर मैं उसे सब कुछ बता दूं ? मैं दो जिंदगियों को इस तरह बेतरतीब करने का उत्तरदायित्व लेना नहीं चाहता।

हे भगवान ! इतने साल सेना में रहने के बाद भी मेरी संवेदनाएं मरी नहीं।

आप जानते हैं। उस दिन से ही हम इस चक्रव्यूह में फंसे हुए हैं। मैं और

चीफ, खासतौर पर मैं। बहुत देर तक कुछ भी ठीक-ठीक सोच नहीं पाता हूं। रात-रात भर जागता रहता हूं। सदाशिव का भूत मेरा पीछा कर रहा है। देखिए, शायद आप ही कोई रास्ता सुझा सकें।

जब आपको कोई रास्ता मिल जाये मुझे केवल एक पंक्ति लिख भेजें।

केवल इतना ही पता काफी है : कर्नल जामखेडकर, आर्मी मेडिकल कोर, नयी दिल्ली।

**अंग्रेजी से निशिकान्त मिरज़कर, विनीता सिंपल द्वारा अनूदित**

# दूसरा आइन्स्टाइन

लक्ष्मण लोंढे

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की विशाल बिल्डिंग में तीन इंटेसिव केयर यूनिट थे। ये तीनों यूनिट क्रमशः दूसरी, पांचवीं तथा आठवीं मंजिल पर थे। आठवीं मंजिल का आइ. सी. यू. अति विशिष्ट व्यक्तियों के लिए आरक्षित था। पिछले सप्ताह से यहां बड़ी चहल-पहल नजर आ रही थी।

सात दिन पहले प्रधानमंत्री के निजी सलाहकार डा. श्रीनिवासन को उसी मंजिल के यूनिट में रखा गया था। उन्हें फेफड़ों का कैंसर था। डा. चितले आठवी मंजिल के इस यूनिट का काम देखते थे। एक सप्ताह बीत गया, लेकिन डा. श्रीनिवासन की तबीयत में कोई सुधार नहीं आया। उनके दाएं फेफड़े की कैंसर की गांठ लगातार बढ़ती ही जा रही थी। डा. चितले अच्छी तरह जान गये थे कि यह गांठ इसी तरह बढ़ेगी और वह दिन दूर नहीं जब यह डा. श्रीनिवासन की जान ले लेगी। डा. चितले स्पष्ट रूप से डा. श्रीनिवासन का अंत देख रहे थे—पत्थर की लकीर की तरह अटल।

सुबह के आठ बजे थे। अस्पताल में लोगों का आना-जाना लगातार बढ़ रहा था। शिफ्ट ड्यूटी बदल रही थी। अस्पताल के बाहर फलवालों के पास काफी भीड़ थी।

ठीक आठ बजे डा. चितले की कार ने संस्थान में प्रवेश किया। वे प्रवेश द्वार के पास उतरे और ड्राईवर ने गाड़ी पार्किंग-स्पेस की ओर मोड़ दी।

दरवाजे पर खड़े चौकीदार ने उन्हें सलाम किया।

डा. चितले का उधर ध्यान नहीं था। वे सीधे लिफ्ट की ओर गये। 'बड़े डाक्टर साहब आये हैं'—किसी ने कहा। रोगियों के रिश्तेदारों को एक तरफ हटाते हुए लिफ्टमैन ने डा. चितले के लिए लिफ्ट में जगह बना दी। उसके बाद उसने डा. चितले को नमस्कार कहा और एक कोने में जाकर लिफ्ट शुरू कर दी। लिफ्ट ऊपर चढ़ चली।

एक-दो-तीन एक के बाद एक तल पार करती हुई लिफ्ट तेजी से ऊपर जा रही थी। आठवीं मंजिल पर रुकते ही लिफ्टमैन ने बड़ी शिष्टता से लिफ्ट का

दरवाजा खोला और डाक्टर साहब को निकलने के लिए रास्ता दिया।

आठवीं मंजिल वातानुकूलित थी। वहां मुख्य द्वारपाल ने भी झुककर सलाम किया और डाक्टर साहब को अंदर जाने की जगह दी।

अंदर आते ही डाक्टर चितले ने दो बातें महसूस कीं—एक, वहां की सुहावनी ठंडक और दूसरे, ब्लैक कैट कमांडो की ड्यूटी पर उपस्थिति। हवा की ठंडक मन को प्रसन्नता दे रही थी और उस सुरक्षाकर्मी की उपस्थिति परेशानी। अस्पताल में कमांडो की मौजूदगी उन्हें खटक रही थी, परंतु वे बेबस थे। डा. श्रीनिवासन बहुत बड़ी हस्ती थे—वे न केवल वैज्ञानिक थे बल्कि प्रधानमंत्री के तकनीकी सलाहकार भी थे। उनका इलाज तो संस्थान में हो रहा था, लेकिन ऐसा लगता था मानो उन्हें बचाने की जिम्मेदारी मिलिटरी वालों ने ली हो। मृत्यु अटल थी—बस कुछ ही दिनों की बात थी। मिलिटरी वालों की हरकतें कुछ ऐसी थीं कि लगता जैसे मृत्यु के आते ही वे शरीर और आत्मा को जकड़ने वाले हों। इस कल्पना मात्र से डाक्टर चितले मुस्करा दिये। वे स्वयं डाक्टर थे, इसलिए मृत्यु के बाद शरीर से आत्मा निकल जाती है, ऐसी बेतुकी बातों पर उनका कोई विश्वास नहीं था। लेकिन मिलिटरीवालों की व्यवस्था देखकर लगता था कि सचमुच ऐसा ही कुछ होने वाला है।

डाक्टर अपनी केबिन में आये। परिचारक ने उन्हें सलाम किया और वहां खड़ी नर्स तथा उनकी सेक्रेटरी ने गुड मार्निंग कहा। नर्स ने डा. श्रीनिवासन की तबीयत का पिछले दस घंटों का ब्यौरा उनके सामने रखा और खुद कुछ पीछे हट कर खड़ी हो गयी।

"राऊंड लेने में अभी कुछ देर हैं—जरूरत पड़ी तो आपको बुला लूंगा। अभी आधे घंटे के लिए मुझे अकेला छोड़ दो। मैं कुछ सोचना चाहता हूं।" नर्स और सेक्रेटरी से उन्होंने कहा। शीघ्र ही वे दोनों बाहर चली गयीं।

डा. चितले अब केबिन में अकेले थे। उन्होंने पहले एक नजर डा. श्रीनिवासन के चार्ट पर डाली। फिर टेबल पर रखे फूलदान पर उनकी नजर जा टिकी। उसमें गुलाब के ताजा फूल थे। गुलाब के फूल डाक्टर की कमजोरी थी। कुछ क्षणों के लिए उनका मन उन फूलों की तरह खिल उठा।

"डैम इट," कहते हुए टेबल पर पड़े डा. श्रीनिवासन के केस पेपरों पर डाक्टर चितले ने मुक्का दे मारा।

डा. श्रीनिवासन बूढ़े हो चले थे। उनकी उम्र सड़सठ की थी। उनके कैंसर पर केमोथैरेपी और रेडियोथैरेपी का कोई असर नहीं हो रहा था। और फेफड़ों का आपरेशन इस उम्र में नामुमकिन था। हृदयरोपण की तरह कैंसर वाला फेफड़ा निकालकर दूसरा फेफड़ा लगाने की शल्यक्रिया, भारत ही नहीं, पूरे विश्व में कहीं सफल नहीं हो पायी थी।

"उसे मरना ही है। मैं कुछ नहीं कर सकता," डा. चितले ने अपने आप से कहा–मानो कोई जज फांसी की सजा सुना रहा हो। कुदरत अपना फैसला सुना चुकी थी। और उसे बदलना डा. चितले के हाथ में नहीं था।

"बट ही शुड नाट डाई–ही मस्ट लिव। आपको उन्हें बचाना ही होगा।" ब्रिगेडियर खन्ना के शब्द उनके कानों में गूंज उठे।

कल एक उच्चस्तरीय मीटिंग हुई थी। लेकिन डा. चितले की दृष्टि में उसके कोई मायने नहीं थे, क्योंकि वहां उनके और ब्रिग्रेडियर खन्ना के अलावा मेडिसिन क्षेत्र से संबंधित कोई दूसरा व्यक्ति मौजूद नहीं था। अन्य सभी विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गज, राजनीतिक व्यक्ति या मिलिटरी वाले थे।

वैज्ञानिकों का मत था कि डा. श्रीनिवासन अल्बर्ट आइन्स्टाइन के बाद दूसरे अति महान वैज्ञानिक हैं। वैज्ञानिकों का कहना था डा. अलबर्ट आइन्स्टाइन के अनुसंधान को ही डा. श्रीनिवासन आगे बढ़ा रहे हैं। भौतिकी के क्षेत्र में यदि न्यूटन और आइन्स्टाइन दो बहुत ऊंची चोटियां हैं तो डा. श्रीनिवासन तीसरी चोटी होने जा रहे थे। आइन्स्टाइन ने सापेक्षता का सिद्धांत रखा और वस्तुमान तथा ऊर्जा का अभिन्नत्व सिद्ध किया था। उसकी मूलभूत नींव पर ही मनुष्य ने अणु शक्ति की खोज की। जिंदगी के अंत तक आइन्स्टाइन एक अन्य सिद्धांत की खोज करता रहा था। इस सिद्धांत को यूनिफाईड थ्यूरी अथवा एकात्म सिद्धांत कहा जाता है। इस सिद्धांत के जरिए वह विद्युतशक्ति, चुंबकीय तथा गुरुत्वाकर्षण शक्ति के अभिन्नत्व को सिद्ध करना चाहता था। और यदि यह अभिन्नत्व सिद्ध हो जाता तो प्रायोगिक रूप से गुरुत्वाकर्षण नष्ट किया जा सकता था। अथवा विद्युत तथा चुंबकीय शक्ति के आपसी संबंधों द्वारा गुरुत्वाकर्षण विरोधी शक्ति बनाई जा सकती थी। इस सिद्धांत पर आधारित उपयोजित विज्ञान की सहायता से, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को लांघकर, मनुष्य किसी भी वस्तु को दुनिया में कहीं भी फेंक पाता। सही मायनों में मनुष्य के लिए अंतरिक्ष में घुड़दौड़ के लिए दसों दिशाएं खुल जातीं। दुर्भाग्य से इसी सिद्धांत पर काम करते समय आइन्स्टाइन की मृत्यु हो गयी, और यह खोज अधूरी रह गयी। आइन्स्टाइन के पश्चात इतनी विलक्षण प्रतिभा वाला मूलभूत वैज्ञानिक गणितज्ञ पैदा ही नहीं हुआ। कुछ वैज्ञानिकों ने काम पूरा करने का प्रयत्न किया, किंतु बात अपने बस की न पाकर प्रयत्न छोड़ दिये।

परंतु डा. श्रीनिवासन ने आइन्स्टाइन के अधूरे अनसुंधान को पूरा करने की चुनौती स्वीकारी थी, और उन्हें इस दिशा में काफी सफलता भी मिल रही थी। दुनिया को उनकी बुद्धिमता की झलक, उनके कैरियर के प्रारंभिक प्रकाशित पेपरों से ही मिल चुकी थी–तभी से भारत सरकार ने उनके महत्व को जान लिया था। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की ही भांति डा. श्रीनिवासन को भी उतनी ही कड़ी

सुरक्षा दी गयी थी तथा उनके अनुसंधान को भी पूरी तरह गुप्त रखा गया था। डा. श्रीनिवासन अति अति विशिष्ट व्यक्ति बने गये थे।

इसी वजह से उनके रोग और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में उनके दाखिल होने के समाचार को भी गुप्त रखा गया था। इसलिए मीटिंग में सर्वसम्मति से इस विचार का प्रकट होना कोई आश्चर्य नहीं था कि "कई सदियों में कभी-कभार ही ऐसा प्रज्ञा, ऐसी मूलगामी शोध करने वाली प्रतिभा जन्म लेती है। मानव जाति को ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति की युगों तक राह देखनी पड़ती है। डा. श्रीनिवासन का हमारे देश में जन्म हुआ यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। उन्हें हर कीमत पर बचाना ही होगा।"

केवल डा. चितले ही जानते थे कि फेफडों जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण अंग के कैंसर से बच पाना संभव नहीं है। वास्तव में बिग्रेडियर खन्ना भी इस बात को जानते थे यह काम किसी जादुई करिश्मे से कम नहीं होगा, किंतु डा. श्रीनिवासन को बचाने का दायित्व चूंकि उन पर नहीं था, वे अपने वरिष्ठ मिलिटरी अधिकारियों की हां में हां मिलाते हुए डा. श्रीनिवासन को बचाने के महत्व पर बल देकर उन्हें खुश करने में लगे थे। और इससे डा. चितले बड़ी दुविधा में फंस गये थे।

"हमारी कोशिश जारी है। हमारे प्रयत्नों में एक प्रतिशत की भी कमी नहीं रहेगी," मीटिंग के अंत में उन्होंने यह अनिश्चित सा आश्वासन दिया था। किंतु इस उत्तर से कोई संतुष्ट नहीं था।

डा. चितले भी अपने इस उत्तर से प्रसन्न नहीं थे।

* * *

कुछ देर बाद डा. चितले उठे और डा. श्रीनिवासन से मिलने चल दिये।

कैंसर के रोगियों की एक बात अच्छी होती है—यदि कैंसर अंतिम अवस्था में न पहुंचा हो और शरीर में अन्य समस्याएं पैदा न हों तो रोगी बिल्कुल सामान्य लगता है। वह बातचीत कर सकता है और प्रसन्नचित्त रहता है। डा. श्रीनिवासन का भी यही हाल था—वे स्वस्थ और प्रसन्नचित्त नजर आते थे। उन्हें केवल अति विशिष्ट स्थिति के कारण ही आई. सी. यू. में भर्ती किया गया था, जहां उन्हें ज्यादा से ज्यादा आराम करने की सलाह दी गयी थी।

डा. श्रीनिवासन बड़े ही खुले दिल के और खुशमिजाज इंसान थे। डा. चितले की दृष्टि में यह बहुत महत्वपूर्ण बात थी क्योंकि उनकी बीमारी असाध्य है। अधिकांश रोगी यह जानने के बाद हिम्मत हार जाते हैं और स्वयं को मृत्युद्वार के समीप ले जाते हैं। वह रोगी पहले मन से मरता है—फिर तन से। ठीक इसके विपरीत

होते हैं वे लोग जो जीवन से प्रेम करते हैं। अतः बीमारी यदि बिल्कुल ही असाध्य न हो तो वे जल्दी अच्छे हो जाते हैं।

* * *

अपने बेड पर डा. श्रीनिवासन लेटे हुए थे। भव्य माथा गंजेपन के कारण और भी बड़ा नजर आ रहा था। पिछली तरफ सफेद बालों के गुच्छे उनकी उम्र के अनुसार जंच रहे थे। उनकी लंबी दाढ़ी और मूंछें भी सफेद हो गयी थीं। चेहरा जरा थका हुआ था—लेकिन उस चेहरे की शोखी और तेज अब भी बरकरार थे।

डा. चितले कमरे में आये तो डा. श्रीनिवासन ने मुस्कराहट के साथ उनका स्वागत करते हुए कहा, "आइये डाक्टर साहब ! काफी थके हुए नजर आ रहे है। मुझ जैसे रोगी यानी डाक्टरों की टेंशन ! और डाक्टर को कभी टेंशन में काम नहीं करना चाहिए। है न ?"

डा. चितले भी मुस्करा दिये। वाकई उन्हें काफी टेंशन थी। किंतु डा. श्रीनिवासन ने अपनी बातों से वह कम कर दी थी।

"मुझे और कितने दिन की मोहलत दे रहे हैं आप ? यकीन मानिए, किसी हठी किरायेदार की तरह समय बढ़ाने को नहीं कहूंगा।"

"मैं कौन होता हूं आपको मोहलत देने वाला डा. श्रीनिवासन ? भगवान आपकी आयु लंबी करे, आप सलामत रहें, यही सबकी इच्छा है—लेकिन यहां अस्पताल में इस अवस्था में नहीं। दरअसल मैं तो आपसे कहने आया हूं कि आप जल्दी से जल्दी यहां से बाहर जाएं। मैं नहीं चाहता कि आप जिस अवस्था में यहां लाये गये थे, उस अवस्था में यह जगह छोड़ें। एक स्वस्थ आदमी की तरह जाइये...पूरी तरह से स्वस्थ...।"

"हां डा. साहब मुझे जाना ही चाहिए। इतना काम पड़ा है... मेरा काम मेरी राह देख रहा है। और मैं बैठा हूं यहां—आपकी कैद में !"

प्रेमिका से बलपूर्वक अलग कर दिये गये किसी व्याकुल प्रेमी की तरह डा. श्रीनिवासन का स्वर लग रहा था। अपने अनुसंधान कार्य से वे सच्चा प्यार करते थे।

"डा. श्रीनिवासन ! इस सबके लिए आपका जरूरत से ज्यादा धूम्रपान करना जिम्मेदार है।" डा. चितले शिकायत भरे स्वर में बोले।

"क्या करूं ? मुझे कोई भी काम साधारण स्तर पर करना आता ही नहीं। प्यार करता हूं तो जी भरकर—अब वह प्रेमिका हो, अनुसंधान हो या धूम्रपान ...कुछ समझे ?"

दरअसल जीवन के प्रति डा. श्रीनिवासन की यह निश्छल सादगी डा. चितले

को भा गयी थी। सच, डा. श्रीनिवासन की जिन्दादिली इस अहसास को भुला देती थी कि वे एक विश्वविख्यात वैज्ञानिक हैं। फेफड़ों में कैंसर जैसा रोग छिपाये वे कभी-कभी बीच में ही पूछते, "क्यों भाई, आप क्या सोचते हैं, इस बार गावस्कर की सेंचुरी पूरी होगी या नहीं ? चलो शर्त लगाते हैं। और यदि मैं शर्त हार जाऊं तो...हो सकता है कि शर्त पूरी होने से पहले मैं खुद ही आउट हो जाऊं। इसलिए सोच-समझकर शर्त लगाना।"

डा. चितले प्रशंसा भरी नजरों से डा. श्रीनिवासन को निहार रहे थे। वे एकदम बोले, "अभी आप टेंशन की बात कर रहे थे। सचमुच, पहले जबरदस्त टेंशन थी मुझे। आपको दूसरा आइन्स्टाइन जो कहते हैं लोग !"

"अरे, अभी तो कुछ नहीं हुआ। यूनिफाईड सिद्धांत का मेरा काम पूरा होने दीजिए–लोग आइन्स्टाइन से पहले मेरा नाम लेंगे।"

डा. श्रीनिवासन का कथन अपनी बौद्धिक क्षमता के आत्मविश्वास से भरा था। जिंदगी के दो-चार वर्ष यदि दान दिये जा सकते तो इस क्षण डा. चितले सचमुच तुरंत वह दान दे डालते।

लेकिन ऐसा कुछ भी संभव न था।

"ही इज टू डाई–आय कांट हेल्प इट।" डा. चितले ने अपने आपसे कहा। वे स्पष्ट रूप से तो कुछ नहीं बोले, लेकिन दुखी जरूर हो गये थे।

नर्स तथा परिचारक को आवश्यक निर्देश देकर वे वापस अपने केबिन में चले गये।

डा. श्रीनिवासन की करीब आती मौत उन्हें पराजय की अनुभूति करा रही थी। वैसे देखा जाए तो श्रीनिवासन की मृत्यु पर कोई उन्हें दोषी मानने वाला नहीं था। मृत्यु अटल थी–सभी जानते थे, मिलिटरी के वे नासमझ अधिकारी भी। परंतु डा. चितले सच्चे दिल से डा. श्रीनिवासन को बचाना चाहते थे। किंतु नियति के सम्मुख वे स्वयं को हताश-पराजित महसूस कर रहे थे। वे एक निश्चित रूप से हारी हुई लड़ाई लड़ रहे थे।

*　　　　*　　　　*

अगली सुबह डा. चितले, डा. श्रीनिवासन से मिलने आये तो ज़रा उत्साहित थे।

"गुड मार्निंग, दूसरे आइन्स्टाइन," उन्होंने कहा।

"गुड मार्निंग !"

डा. श्रीनिवासन के बेड के पास एक कुर्सी खिसकाते हुए डा. चितले गपशप के इरादे से उस पर बैठ गये। वे कुछ खास बात करना चाहते थे।

"डा. श्रीनिवासन, बचपन में मैंने बड़े कीर्तन सुने हैं। उपदेश करने का कीर्तन

एक अच्छा माध्यम है। उन धार्मिक कार्यक्रमों में ब्रह्म (सत्य) और माया (भ्रम) आत्मा और शरीर, इन विषयों को समझाते समय एक उदाहरण हमेशा दिया जाता था कि... ।"

"बाप रे ! तो क्या अब आप मुझे आध्यात्मिकता पर प्रवचन वगैरा देने जा रहे हैं ? अंत समय इतना निकट आ गया है क्या ? फांसी देने से पूर्व कैदी को गीता के श्लोक सुनाए जाते हैं, वैसा तो कुछ नहीं है न ?"

"नहीं, नहीं, डा. श्रीनिवासन मुझे गलत मत समझियें। मैं तो आपको अमर बनाना चाहता हूं। हमारी परंपरा हमें सात अनश्वरों के बारे में बताती है। मैंने सोचा ? उनमें एक ओर जुड़ जाये। बस।"

"हां, फिर ठीक है। पर आप कुछ कीर्तन की बात कह रहे थे।"

"वही तो कह रहा हूं। कीर्तनकार कहा करते थे–'आप अक्सर मेरा हाथ, मेरा पांव, मेरा हृदय, इन शब्दों का प्रयोग करते हैं। क्या अर्थ है इनका ? जब आप मेरा हाथ कहते हैं तब आप उस हाथ से अलग कोई होते हैं। और यह सच भी है क्योंकि हाथ के टूटने पर शरीर नष्ट नहीं होता। मेरा सिर, मेरा कान, मेरी आंख इन शब्द प्रयोगों में यह प्रथमपुरुष यानी एकवचन कौन होता है ?' श्रोताओं से ऐसा सवाल करके कीर्तनकार एक दो पल रुकते और फिर जवाब देते–'इन शब्दों में जो मैं है–वह आत्मा है–सार्वभौम ईश्वरीय आत्मा का एक अंश'... ।"

"डा. चितले, जो कुछ आप कह रहे हैं, क्या उसमें आप विश्वास करते हैं ? हम दोनों भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के ही सही, लेकिन वैज्ञानिक हैं और मुझे लगता है कि वैज्ञानिकों ने आत्मा के अस्तित्व को अभी तक स्वीकार नहीं किया है।"

"जी हां, जी हां। अरे, मुझे अपनी बात तो पूरी करने दीजिए। कीर्तनकार का तो मैं केवल उदाहरण दे रहा था। कहना तो मुझे कुछ और ही है–इससे बिल्कुल अलग ही।"

"ठीक है कहिए... ।"

"कीर्तनकार बाबा के प्रवचन में आये शब्द 'आत्मा' की जगह यदि हम 'दिमाग' शब्द का प्रयोग करें तो ?"

"आप कहना क्या चाहते हैं डाक्टर ?"

डा. चितले जोश में आकर सब कहने लगे। वास्तव में उन्हें कल रात सोते-सोते ही यह क्रांतिकारी विचार सूझा था। उस विषय पर वे जितना सोचते उतना ही वह परीक्षण उन्हें अधिक साध्य लगता। वह विचार अभी तक सप्रमाण व्यवहार में नहीं लाया गया था, बस। लेकिन डा. श्रीनिवासन जैसे क्रांतिकारी वैज्ञानिक के जीवन में यह अभूतपूर्व घटना होनेवाली थी। चिकित्सा क्षेत्र के इस सनसनीखेज परीक्षण में डा. श्रीनिवासन पहला मोहरा बनने वाले थे। परंतु इसके लिए उनकी

पूर्व सहमति पाना अत्यावश्यक था। परीक्षण सफल हो जाये तो डा. श्रीनिवासन सही मायनों में बच सकते थे। उसके बाद वे जीवित रहकर रहस्यों पर से पर्दा उठाने के अपने उद्देश्य को पूरा कर सकते थे और आइन्स्टाइन को पहला श्रीनिवासन बनने का अवसर भी मिल जाता।

डा. चितले ने कहा, "डा. श्रीनिवासन, मैं भी आपकी तरह एक जड़वादी वैज्ञानिक हूं। अपनी बात को सहज रूप से आप तक पहुंचा सकूं इसलिए मैंने आध्यात्मिक विचारों का आधार लिया था। अब बात को स्पष्ट करता हूं। हम जिसे मनुष्य कहते हैं उसमें आत्मा वगैरा कुछ नहीं होती। दरअसल खोपड़ी में कोई डेढ़ किलो वजन का, भूरे रंग का एक मांस का गोला होता है, जिसे हम मस्तिष्क कहते हैं। इसी के बल पर हम जीवित रहते हैं। इसने काम करना बंद किया और उधर शरीर का काम तमाम हो जाता है। शरीर के सभी अवयव मानो इसी के लिए बने होते हैं। अतः उनके खराब होते ही उन्हें काटा या बदला जा सकता है। अ को ब का हृदय, क की आंख, अथवा ड का गुरदा लगाया जाये तो भी अ, ब, क या ड नहीं बनता। अ सदैव अ ही रहता है। शेष सभी अंग मस्तिष्क के सेवकों की तरह हैं, जो उसके आदेश पर काम करते हैं।" अपनी बात कहकर डा. चितले रुके–मानो उनके सिर से बड़ा भारी बोझ हट गया हो।

"ठीक है, ठीक है। बात को इससे अधिक स्पष्ट करके बताने की जरूरत नहीं है। मेडिसिन यद्यपि मेरा क्षेत्र नहीं है, फिर भी मैं समझ गया हूं कि आप क्या कहना चाहते है।" डा. श्रीनिवासन शांत स्वर में बोले। शायद डा. चितले की बताई बातों पर उनका दिमाग पहले से ही काम करने लगा था।

"यह बात नहीं डा. श्रीनिवासन। किसी बात को समझने की आपकी योग्यता पर मुझे कोई शक नहीं। होना भी नहीं चाहिए। वो तो सरासर आपका अपमान होगा। और मुझे आपको हरगिज अपमानित नहीं करना। किंतु कुछ बातें हैं जो मुझे स्पष्ट करनी ही होंगी। इजाजत है ?"

"कहिए... ।" डा. श्रीनिवासन ने निश्छल मुस्कान के साथ कहा।

"डा. श्रीनिवासन, आपका एक फेफड़ा बिल्कुल खराब हो चुका है। हम उसे न ठीक कर सकते हैं और न ही बदल सकते हैं। लेकिन आपका संपूर्ण अस्तित्व फेफड़े जैसे किसी एक अवयव के अस्तित्व पर निर्भर करे, ऐसा मैं नहीं चाहता। आपके अस्तित्व का तात्पर्य यहां आपके दिमाग से है। कैंसरग्रस्त आपके फेफड़े के परिणामतः नष्ट हो रहा आपका शरीर मैं बचा नहीं सकता, पर आपका दिमाग अवश्य बचा सकता हूं। और आप इस संसार में जीवित रहेंगे–दिमागी तौर पर।"

"किंतु इस तरह के मेरे अस्तित्व से मेरा या दुनिया का क्या लाभ होने वाला है ?" डा. श्रीनिवासन ने पूछा।

"मैं बताता हूं। यह तो अच्छा है कि आप प्रयोग करने वाले वैज्ञानिक नहीं

है, क्योंकि प्रयोग करनेवाले वैज्ञानिकों को हाथ-पैर तथा अन्य अंगों का हरदम प्रयोग करना पड़ता है। आपका अनुसंधान क्षेत्र–अमूर्त रूप से संख्याओं के मेलजोल और मूलभूत विचारों से संबंधित है। अर्थात् आप केवल दिमाग द्वारा अनुसंधान करते है, विचार करते हैं। ठीक है ? और इस अनुसंधान में आप अन्य वैज्ञानिकों के सिद्धांतों और समीरकणों को भी दृष्टिगत रखते हैं। इसका प्रबंध किया जा सकता है। आई.आई.टी. दिल्ली के इलेक्ट्रानिक विभाग के डा. भटनागर से मैं इस बारे में चर्चा कर भी चुका हूं। हमारी आंखें प्रकाश किरणों द्वारा उत्तेजित होती हैं, अतः जो कुछ दिखता है उसका संदेश विद्युत लहरों द्वारा मस्तिष्क तक पहुंच जाता है। आंखों से मस्तिष्क तक विद्युत संदेश किस तरह जाते हैं, इस पर डा. भटनागर ने काफी काम किया है। उनकी मान्यता है कि इलेक्ट्रानिक उपकरणों द्वारा हम आपके दिमाग में कृत्रिम रूप से इलेक्ट्रिकल इम्पलसेस् पहुंचा सकेंगे। संक्षेप में कहें तो कुछ हद तक आपकी दृष्टिशक्ति अबाधित रहेगी, और उधर आपका दिमाग जीवित रहेगा। अतः मस्तिष्क के जीवित रहते आपके विचारचक्र भी अबाधित चलते रहेंगे। और क्या चाहिए ?"

डा. श्रीनिवासन कुछ देर खामोश रहे। फिर एकदम बोले, "नहीं भाई नहीं, डा. चितले ! आपका यह चित्र बहुत ही डरावना लगता है। अरे, आप मुझे कम्प्यूटर समझते हैं क्या ? इनपुट की व्यवस्था हो, प्रोसेसिंग यूनिट क्रियाशील रहे तो आऊटपुट आता रहेगा ? छोड़िए, मुझे यह सब नहीं जंचता। मैं एक इंसान हूं। सीधा-सादा इंसान–सुख-दुख की भावनाओं से परे रहने वाला कोई बैरागी नहीं।

"जरा रुकिए ! आपको सुख-दुख की अनुभूति चाहिए, यही न ! आपकी 'इस' अवस्था में भी हम आपको सुख की अनुभूति दे सकते हैं। उसके लिए शरीर की आवश्यकता नहीं। हम डाक्टर दिमाग के कुछ ऐसे हिस्सों को जानते हैं जहां विशिष्ट स्थानों पर यदि इलेक्ट्रोड्स लगाकर उन्हें उत्तेजित किया जाए तो मनुष्य को अवर्णनीय सुख की अनुभूति होती है। हम इस प्रकार सुख की अनुभूति दे सकते है।"

"अरे वाह ! इसका मतलब, आप मेरा सुख भी नियंत्रित करना चाहेंगे। स्कूल में बच्चों के लिए पी. टी. का एक पीरियड होता है वैसे मेरे सुख का भी एक निश्चित समय होगा। फिर आप कहेंगे, 'चलिए डा. श्रीनिवासन, तीन बज गये हैं। अब आपकी सुख की अनुभूति का समय शुरू हो रहा हैं–मजे से सुख का आनंद लीजिए।' ठीक है न ?"

काफी देर चर्चा करने के बाद भी डा. चितले अपने प्रयोग के लिए डा. श्रीनिवासन को राजी नहीं कर पाये।

आखिर चलते-चलते वे बोले, "डा. श्रीनिवासन, हम आप पर कोई जबरदस्ती नहीं करेंगे। लेकिन आप एक बार फिर सोच कर देखिए। आप ऐसा क्यों नहीं सोचते कि शरीर और दिमाग दोनों नष्ट होने से तो अच्छा है कि शरीर ही नष्ट

हो ताकि दिमाग काम करता रहे।"

"डा. चितले, आप पर अगर यही बीतती तो क्या आप ऐसा करने पर तैयार हो जाते ?" "हां, बिल्कुल !" डा. चितले ने जवाब दिया।

"आपके शब्द लड़खड़ा रहे हैं, डा. चितले।"

* * *

उस दिन दोपहर की उच्चस्तरीय समिति की मीटिंग में डा. चितले ने योजना की संपूर्ण जानकारी दी। साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि डा. श्रीनिवासन ने इस परीक्षण के लिए पूरी सहमति नहीं दी है।

ब्रिगेडियर खन्ना ने डा. चितले को बधाई दी और फिर बोले, "डा. श्रीनिवासन बेकार ही इस नेक काम में रुकावट डाल रहे हैं। क्या वे जानते नहीं कि न केवल भारत को अपितु संपूर्ण मानवजाति को उनके अनुसंधान की जरूरत है। और फिर वे जिस स्थिति में है उसमें इससे अच्छा और कोई उपाय हो ही नहीं सकता। अच्छा एक बात बताइए डा. चितले ! आपको कैसे मालूम होगा कि डा. श्रीनिवासन ने अनुसंधान पूरा कर लिया है। वे हमारे साथ संचार संपर्क कर पायेंगे ?"

"आफ कोर्स ! कम्युनिकेशन न हो तो हमारे परीक्षण का फायदा ही क्या ? ऐसी व्यवस्था की जा सकती है कि वे हमसे बातचीत कर सकें।

"वो कैसे ?"

"मानव दिमाग में स्वरकेंद्र कहां होता है, हमें पता है। और मनुष्य बोलता कैसे है ? स्वरयंत्र की तारों में जो विशिष्ट कंपन पैदा होते हैं, वही होता है मनुष्य का बोलना, उसकी भाषा। हमारे दिमाग से जब कोई विचार आता है तो उसे व्यक्त करने का काम स्वरकेंद्र करता है। यही केंद्र स्वरयंत्र के तारों पर नियंत्रण रखता है। जो विचार दिमाग में आता है उसे व्यक्त करना हो तो वैसी सूचना प्रेरणा स्वरयंत्र को मिलती है।"

"और यदि विचार व्यक्त न करना हो ?"

"ऐसी स्थिति में स्वरयंत्र को सूचना या प्रेरणा नहीं मिलती।" डा. चितले ने स्पष्ट किया।

"तब तो शायद आपके इस प्रयोग का कोई फायदा ही न हो। आपकी मेहनत बेकार जायेगी। दिमागी तौर पर जीवित डा. श्रीनिवासन को आप बेशक नयी-नयी जानकारी देते रहें। उनका अनुसंधान भी चाहे उनके दिमाग में पूरा हो जाये। उनका दिमाग यूनिफाईड सिद्धांत पूरा कर भी ले परंतु यदि उनकी मर्जी के खिलाफ सब होता है तो वे हमें सिद्धांत के बारे में बतायेंगे ही नहीं। हमें उनकी मर्जी पर निर्भर रहना होगा।" जनरल कृष्णमूर्ति ने कहा।

पहले पहल डा. चितले भी डा. श्रीनिवासन की मर्जी के खिलाफ उन्हें दिमागी तौर पर जीवित रखने के पक्ष में नहीं थे। किंतु धीरे-धीरे उन्हें अपने क्रांतिकारी प्रयोग से कुछ ज्यादा ही प्यार होता गया। मनुष्य पर इस प्रकार का प्रयोग आज तक हुआ नहीं था। क्लीवलैंड के डा. व्हाईट द्वारा एक बंदर के दिमाग पर यह प्रयोग सफल रहा था। परंतु मनुष्य पर इस तरह का प्रयोग, और वह भी डा. श्रीनिवासन जैसे उच्च वैज्ञानिक पर यदि सफल हो जाता तो उसका दोहरा लाभ होता। एक तो यूनिफाईड सिद्धांत सिद्ध हो जाता और दूसरे स्वयं डा. चितले विज्ञान-विकास के इतिहास में अमर हो जाते। नोबल पुरस्कार मिलने की भी पूरी आशा थी। डा. श्रीनिवासन पर किया जाने वाला यह प्रयोग अब उन्हें इस दृष्टि से और अधिक महत्वपूर्ण लगता था।

डा. चितले के जहन में यह विचार आया और उनकी आंखों में क्रूरता की चमक आ गयी। "जनरल, आप भूल कर रहे हैं। मनुष्य के विचार उनकी निजी संपत्ति नहीं होते। साधारण रूप से मनुष्य सचेत अवस्था में जो बात नहीं कहता उसी बात को वह सम्मोहन स्थिति में कह देता है।"

"परंतु श्रीनिवासन यदि सहयोग करने को तैयार न हुए तो उन्हें हम सम्मोहित भी कैसे करेंगे ? सम्मोहन के लिए तो मनुष्य के पूरे शरीर की जरूरत होती है... ।"

"नहीं, सिर्फ दिमाग काफी होता हैं। और हमारे पास ऐसी दवाइयां हैं जो दिमाग को सम्मोहन स्थिति में ले जाती हैं। सामान्यतया इन दवाओं का हम प्रयोग नहीं करते क्योंकि गर्दन के पास ब्लड बैरियर के कारण दवाएं दिमाग तक नहीं जा पाती हैं। लेकिन डा. श्रीनिवासन के मामले में तो हम उनका यह ब्लड बैरियर काट देंगे और दवाएं बिना किसी रुकावट के उनके दिमाग तक पहुंच जायेंगी और फिर... ।"

"फिर क्या ?"

डा. चितले की आंखों की अमानवीय चमक का रहस्य अब पूरी तरह खुल चुका था। "मनुष्य के दिमाग में सुख और दुख की अनुमति के लिए दो केंद्र होते हैं। दुख देने का डर दिखाकर उसे बोलने पर मजबूर कर सकते हैं। पुलिस थर्ड-डिग्री के तरीके अपनाकर इसी तरह अपराधियों से उनके अपराध कबूल करवा लेती है... ।"

"लेकिन सभी लोगों पर यह उपाय कारगर साबित नहीं होता। खासतौर से राजनीतिक कैदियों पर इस तरह के उपाय कोई असर नहीं करते। स्वतंत्रता पूर्व के जमाने में अनेक कैदियों को क्रूरता से सताया गया, फिर भी ब्रिटिश सरकार को वे कोई जानकारी नहीं देते थे। नक्सलवादियों ने भी अनेक जुल्म सहकर भी इस सिद्धांत को कारगर साबित नहीं होने दिया।"

मिलिटरी तथा राजनैतिक नेताओं द्वारा इस प्रयोग के विरोध किये जाने के बारे में नहीं सोचा गया था। इसलिए वे थोड़ा झिझके और इस पर फिर से विचार करने लगे। "बेशक, मैं फिर एक बार डा. श्रीनिवासन से मिलकर उन्हें राजी करने की कोशिश करूंगा। लेकिन अगर वे आखिर तक नहीं मानते तो मुझे यह प्रयोग करने के लिए आपकी अनुमति की जरूरत होगी। एक तरफ आप लोग 'ही मस्ट लिव' की रट लगा रहे हैं और दूसरी तरफ मुझे यह प्रयोग करने की इजाजत भी नहीं दे रहे। यह ठीक नहीं। जो कुछ भी मैं कर सकता हूं, वही सब करने की इजाजत मांग रहा हूं। अगर आपको इजाजत देने में हिचकिचाहट हो रही है तो मुझे वह सब करने के लिए भी न कहें जो असंभव है और जिसे मैं नहीं कर सकता। इन बातों में न तो कोई तुक है, और न ही तालमेल।" डा. चितले ने दृढ़ता वे अपनी बात कही।

मीटिंग यहीं समाप्त हो गयी।

*　　　　*　　　　*

जब से डा. श्रीनिवासन को दिमागी स्तर पर जीवित रखने का विचार डा. चितले के मन में कौंधा था, तभी से उनके सिर पर इस बात की धुन सवार हो गयी थी। वे एक साथ दोनों मोर्चों पर लड़ रहे थे। एक ओर वे डा. श्रीनिवासन को राजी करने की कोशिश करते रहे और दूसरी ओर प्रयोग करने के लिए इजाजत पाने की। बात जल्दी ही प्रधानमंत्री तक जा पहुंची।

डा. चितले ने प्रधानमंत्री को आश्वासन दिया कि अगर अनुसंधान पूरा करने के बाद डा. श्रीनिवासन खुद कुछ नहीं बोलते तो ऐसी स्थिति में उनके विचार व उनकी खोज आदि की जानकारी उनके स्मृतिकक्ष से हम हासिल कर सकते हैं। इलेक्ट्रानिक यंत्रों की सहायता से इम्पल्सेस के रूप में यह सारी जानकारी कागज पर उतारी जा सकती है। हालांकि उनके आश्वासनों के कारण उन्हें प्रधानमंत्री की स्वीकृति तो मिल गयी, लेकिन डा. श्रीनिवासन को राजी करने की उनकी सभी कोशिशें पूरी तरह असफल रहीं।

*　　　　*　　　　*

आखिर ऐतिहासिक शल्य-चिकित्सा का दिन आ ही गया।

डा. श्रीनिवासन के मस्तिष्क को बड़ी सावधानी से सफलतापूर्वक बाहर निकाला गया। मस्तिष्क तक रक्त पहुंचाने के लिए कृत्रिम रक्त नलिकाएं जोड़ी गयीं। उनके द्वारा मस्तिष्क को उचित ब्लडग्रुप का शुद्ध रक्त नियमित मिलता रहे, ऐसी

व्यवस्था की गयी। दिमाग से अशुद्ध रक्त को निकालने का विशेष प्रबंध किया गया। रक्त के जरिए आहार और शुद्ध वायु पहुंचाने का काम नियमित रूप से हो रहा था। दिमाग के स्मृतिकक्ष, तथा अन्य संवेदना-केंद्रों में इलेक्ट्रोड्स लगाये गये थे ताकि सुख की अनुभूति की जा सके। डा. श्रीनिवासन के दिमाग के स्वर केंद्र को एक कृत्रिम स्वरयंत्र से जोड़ा गया था। मानव शरीर की खोपड़ी में जिस द्रव्य में दिमाग हमेशा रहता है, उसी द्रव्य में डा. श्रीनिवासन का दिमाग रखा गया था। दिमाग को पूर्णतः विसंक्रमित रखने के लिए उसे कांच के गोले से ढंका गया था। उचित और नियंत्रित तापमान में डा. श्रीनिवासन का अस्तित्व उनके दिमाग के रूप जीवित अथवा सक्रिय रखा गया था।

"डा. चितले, आखिर आपने अपने मन की कर ही ली," डा. श्रीनिवासन के दिमाग ने अपने कृत्रिम स्वरयंत्र द्वारा शब्द बोले।

वे शब्द सुनकर, डा. चितले की खुशी की कोई सीमा न रही। उन्होंने कहा, "माफ कीजिए, डा. श्रीनिवासन। यह सच है कि आपकी इच्छा के विरुद्ध मैंने यह सब किया है, लेकिन इसके अलावा और कोई रास्ता भी तो नहीं था। आपका यह अनुसंधान संपूर्ण मानव जाति के भविष्य से जुड़ा हुआ है... ।"

"बस-बस, बहुत हो चुका, मुझे सब पता है। वही घिसी-पिटी बातें... ।"

"डाक्टर श्रीनिवासन, आप अभी नींद पूरी करके जगे हैं। अब हम आपको आपके अनुसंधान से संबंधित जानकारी आदि पढ़ने का मौका दे रहे हैं।"

"जरूर ! इसके सिवा मैं और कर भी क्या सकता हूं, है ना ?" डा. श्रीनिवासन ने व्यंग्य से कहा।

डा. चितले सोच रहे थे कि डा. श्रीनिवासन का गुस्सा लाजमी था। लेकिन उन्हें विश्वास था कि डा. श्रीनिवासन जल्दी ही शांत हो जायेंगे और अपने अनुसंधान कार्य में लीन हो जायेंगे।

डा. चितले का सोचना सही था।

डा. श्रीनिवासन जल्दी ही अपने अनुसंधान-कार्य में जुट गये।

* * *

और एक दिन अंततः उन्होंने घोषणा की कि उनका अनुसंधान पूरा हो गया है और वे यूनिफाईड सिद्धांत को सूत्र रूप में पेश करेंगे।

उस दिन अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की आठवीं मंजिल पर अतिविशिष्ट व्यक्तियों का एक दल उपस्थित था। स्वयं प्रधानमंत्री भी यह प्रयोग देखने के लिए आये थे।

डा. श्रीनिवासन यूनिफाईड सिद्धांत संबंधी मत प्रस्तुत करनेवाले थे। उनके

शब्द सुनने के लिए जगह-जगह माइक्रोफोन लगाये गये थे। सारी कार्रवाई को टेपरिकार्ड करने का प्रबंध भी किया गया था।

डा. श्रीनिवासन को सूचना दी गयी कि सब लोग आ चुके हैं। तब डा. श्रीनिवासन ने धीमे और संयत स्वर में बोलना शुरू किया, "मैं जानता हूं कि यूनिफाईड थ्यूरी पर आप मेरे सिद्धांत को सुनने आये हैं। मेरा अनुसंधान पूरा हो चुका है। परंतु मैं उस अनुसंधान पर भी बोलने से इंकार करता हूं, क्योंकि आइन्स्टाइन की तरह मैं भी इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि मानव जाति अभी इस प्रकार के आविष्कारों को संजोये रखने के योग्य नहीं हुई है। इन आविष्कारों का मनुष्य क्या उपयोग करेगा ? आज मनुष्य दूसरी संस्कृतियों को जानने-समझने के लिए लंबी यात्राओं पर जा रहा है। लेकिन ऐसा करके वह कौन सी संस्कृति, कौन-सी सभ्यता को अपनायेगा ? वह संस्कृति, जहां प्रकृति ने भी हमें भरपूर दिया है, लेकिन एक मानव दूसरे को भूखा रखता है, उसका शोषण करता है, उसके साथ दुर्व्यवहार करता है। हर नयी खोज के साथ मानव अधिकाधिक क्रूर और संहारक बन रहा है। कोई जरूरत नहीं है ऐसी संस्कृति के कहीं और पहुंचने की। इसीलिए, मुझे लगता है कि यूनिफाईड थ्यूरी समझने लायक मानव अभी तक सुसंस्कृत नहीं हुआ है। मैं जानता हूं कि मेरे सभी विचार मेरे दिमाग के स्मृतिकक्ष में सुरक्षित हैं। यदि मैं सहयोग नहीं करता तो भी उन विचारों को आप हासिल कर ही लेंगे। एक प्रकार की चोरी ही तो है यह, ठीक ! लेकिन आप अपने प्रयास में सफल नहीं होंगे, क्योंकि स्मृतिकक्ष में जो मेरे विचार हैं, वे एक ग्राफ के रूप में कागज पर उतरेंगे। आपको मालूम ही हैं कि बाद में मिले आइन्स्टाइन के रफ-कागजों से संसार कुछ भी समझ नहीं पाया है। और आज इस दूसरे आइन्स्टाइन ने अपने यूनिफाईड सिद्धांत को ग्राफ रूप में प्रस्तुत किया है–जिसे आप समझ नहीं सकते। उसे समझने के लिए आपको तीसरे या शायद चौथे आइन्स्टाइन का इंतजार करना होगा। जब तक कि मानव इसे पाने का सुपात्र नहीं बन जाता।

"मैं दो बातों के लिए डा. चितले का आभार मानता हूं। एक तो उन्होंने मुझे इस अवस्था में जीवित, रखकर मुझे अपना अनुसंधान पूरा करने का मौका दिया। लेकिन इससे भी अधिक महत्व की एक दूसरी बात है। मैं इसके लिए भी उनका आभार मानता हूं कि उन्होंने मनुष्य के दिमाग से छिपे हैवान के विषय में मेरा ज्ञान बढ़ाया। उन्होंने मुझे साफ दिखा दिया कि अव्वल दर्जे का एक वैज्ञानिक कितना गिर सकता है। इन्हीं बातों ने मुझे सहयोग न करने का यह निर्णय लेने के लिए विवश किया।"

कृत्रिम स्वरयंत्र से आनेवाली आवाज रुक गयी। हमेशा के लिए !

**अंग्रेजी से सुनीता परांजपे द्वारा अनूदित**

# अंधेरा सफर

सुबोध जावडे़कर

प्रिय तेजा,

लगता है, तुम अपना वादा भूल गयी हो। मैं तुमसे बेहद नाराज हूं। तुम मुझे पहले पत्र लिखने वाली थी। मैंने यहां आते ही खानसामे से पूछा भी, पर तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया था। तुमने तो उस पत्र का भी जवाब नहीं दिया जो मैंने सफर के दौरान लिखा था।

पिताजी कहते हैं कि बंबई में बहुत गड़बड़ी चल रही है। दो महाशक्तियां, यानी अमरीका और रूस इस समय युद्ध के कगार पर खड़ी हैं, इसलिए सभी डरे हुए हैं। हर तरफ काफी घबराहट और डर का माहौल है और इसी कारण चिट्ठियां समय पर नहीं मिल पा रहीं।

मैं नहीं मानती। रूस और अमरीका तो यहां से बहुत दूर हैं। पृथ्वी के बिल्कुल दूसरे सिरे पर, है न ? याद है पिछले वर्ष पांचवीं कक्षा में हमारी भूगोल की टीचर बताया करती थी–जब यहां दिन होता है तो वहां रात होती है। पर मैं, उसे ठीक से समझ नहीं पायी थी। लेकिन निश्चय ही टीचर का यह मतलब जरूर था कि वे देश यहां से बहुत दूर हैं। जब हमारी अनिता मौसी अमरीका गयी थी तो भगवान जाने विमान यात्रा में कितने घंटे तक बैठी रही थी। पिताजी को रहने दो। मुझे उनकी युद्ध वाली बात पर बिल्कुल विश्वास नहीं। तुमने पत्र लिखा ही नहीं होगा। एक नंबर की आलसी हो गयी हो तुम।

मेहरबानी करके मेरे इस पत्र का उत्तर तुरंत देना, समझी !

हमें यहां आये एक हफ्ता बीत चुका है। छुट्टियां जंगल में बिताने का विचार पिताजी का था। मैं और मां यहां आने से झिझक रही थीं। तुम तो जानती हो। जानती हो न ! हमें कश्मीर या किसी अन्य पहाड़ी जगह पर जाना कहीं ज्यादा अच्छा लगा था। अंडमान के जंगलों में छुट्टियां बिताने में क्या रखा है ? मैं और मां तो लड़ पड़े थे पिताजी से। पर अब लगता है, अच्छा किया जो पिताजी की बात मान ली। मां कहती नहीं पर उन्हें भी यहां रहना अच्छा लग रहा है। बड़ा ही मनोरम दृश्य है। जहां देखो, हरियाली ही हरियाली है। मुझे अभी मालूम हुआ

कि प्राकृतिक सौंदर्य क्या होता है। हमारा खानसामा कहता है कि 'प्यार की प्यास' फिल्म की शूटिंग यहीं पर हुई थी। सुन, जब मैं बंबई लौट आऊंगी, तो हम दोनों मिलकर यह फिल्म देखेंगे। सुबह तो यहां इतने तरह-तरह के पंछी आते हैं...तुम देखती तो खुशी से झूम उठती। सच, तुम क्यों नहीं आयी हमारे साथ ? हम सब मिलकर इतना मजा करते कि...लो, मैं तुम्हें थोड़ा और बताती हूं।

यहां हम एक पुराने डाक-बंगले में रहते हैं। बंगला एक छोटे से टीले पर है। कहते हैं अंग्रेजों के जमाने में यह कलेक्टर का घर हुआ करता था। बंगला बहुत बड़ा है। एक तहखाना भी है। और सबसे मजे की बात–तहखाने में एक कुआं भी है। पर इसके पानी से बड़ी दुर्गंध आती है। हम यह पानी इस्तेमाल नहीं करते। हमारे बंगले के पास ही झरने की एक नदी है। हम उसी का पानी पीने के लिए इस्तेमाल करते हैं। मई की गर्मी में भी पानी फ्रिज की तरह ठंडा है।

हमारे साथ यहां एक और परिवार है। वे लोग बंगाली हैं। परिवार में डाक्टर अंकल हैं जो सारा दिन सिगरेट पीते रहते हैं। लेकिन हैं वे बड़े अच्छे। मेरे साथ खूब गपशप करते हैं, ताश खेलते हैं और बहुत अच्छे बंगाली गीत भी सुनाते हैं। आंटी हर वक्त कुछ न कुछ पढ़ती या लिखती रहती हैं। सुना है कि वे बंगाली की प्रसिद्ध लेखिका हैं। उनका लड़का 'किट्टू' तो बड़ा ही प्यारा है। हम दोनों तो पक्के दोस्त बन गये हैं। वह सीनियर के. जी. में पढ़ता है। क्या बताऊं...सच, बड़ा मजा आता है उसके साथ खेलने में। हमेशा 'दीदी-दीदी' कहता मेरे पीछे-पीछे लगा रहता है। दिन-भर हम खूब खेलते हैं।

फिर भी दिन में सौ बार तुम्हारी याद आती है। और तुम्हें ? तुम तो शायद भूल ही गयी हो। यदि नहीं तो, अब तक तुम्हारा कोई पत्र क्यों नहीं आया ? डाकखाना यहां से दस किलोमीटर दूर है। खानसामा खान चाचा हफ्ते में दो बार मार्किट जाते है, और लौटते हुए डाक भी ले आते हैं। उनकी वापसी के समय तुम्हारा खत पाने की आशा से मैं बहुत बेताब हो जाती हूं।

जल्दी लिखना।

तुम्हारी,
संज्योत

* * *

प्रिय तेजा,

इतने दिन बीत गये, फिर भी तुम्हारा कोई पत्र नहीं। अब तो विश्वास होने लगा है कि तुम सचमुच मुझे भूल गयी हो। तुम्हें मेरी याद आयेगी भी क्यों ?

तुम्हारे साथ वहां रुचि और मानसी जो हैं। फिर नजरों से दूर मित्र की याद क्यों आने लगी ? आंख से दूर, दिल से दूर, ठीक ही तो है।

तेजू, सच बता तुम मुझे भूल तो नहीं गयी ? वहां सब कुशल तो है ? पिछले तीन-चार दिनों से पिताजी बड़े चिंतित हैं। जब देखो तब रेडियो सुनते रहते हैं। कल रात तो वे और डाक्टर अंकल बड़ी देर तक चर्चा करते रहे। अंग्रेजी में बोल रहे थे। इसीलिए मैं कुछ शब्दों के अलावा कुछ नहीं समझ पायी। पर अमरीका, रूस, वार, बम इस तरह की कुछ बातें ही रही थीं। पिताजी तो इस तरह की बातों में झगड़ने ही लगते है। आपे में नहीं रहते। टेबल पर इतनी जोर से हाथ मारते हैं कि मैं घबरा जाती हूं। लेकिन कल तो डाक्टर अंकल से बात करते हुए अचानक उन्होंने अपनी आवाज धीमी की और फुसफुसाकर कुछ गुप्त बातें बतायीं। मां से पूछा तो वे कुछ नहीं बोलीं। मैं तो सच में रो ही पड़ी।

सुबह से रेडियो पर न तो किसी स्टेशन पर कोई गाना बजा है और न ही कोई और आवाज सुनाई दी है। बस जोर-जोर की सिर्फ घरघराहट सुनाई देती है। मां-पिताजी, अंकल-आंटी सभी इतने डरे हुए हैं कि पूछो मत। समझ नहीं आता, इसमें इतनी डरने की कौनसी बात है ? क्या ट्रांजिस्टर खराब नहीं हो सकता ? किसी भी मशीन में कभी भी कोई भी खराबी आ सकती है। लेकिन मां तो बेहोश ही हो गयी थीं। डाक्टर अंकल ने तुरंत उनकी जांच की और इंजेक्शन दे दिया।

मुझे इंजेक्शन से कितना डर लगता है, तुम जानती हो। मैं तो बरामदे में आकर तुम्हें पत्र लिखने बैठ गयी। तुम्हें पत्र लिखती हूं तो तुमसे बातें करने जैसा संतोष मिल जाता है।

तेजू, तुम्हें एक बात बताऊं ? पर किसी से कहना नहीं–रुचि और मानसी से भी नहीं। तुम्हें मेरी कसम ! मेरी मां को बच्चा होने वाला है। कल रात जब मैं डरकर रो रही थी, तब मां ने बताया। सच बिल्कुल सच–यूं ही मुझे बहलाने के लिए झूठ-मूठ नहीं बताया। वैसे उसमें अभी समय है। पांच-छह महीने और लगेंगे, इसीलिए मां ने कहा कि किसी से कहूं नहीं। देखो, भूलकर भी किसी से कहना नहीं।

मां मुझसे पूछ रही थी कि मुझे भाई चाहिए या बहन ? सच, मुझे प्यारा-सा भाई चाहिए–किट्टू जैसा। लेकिन हम कौन होते हैं, यह तय करने वाले ? इसलिए मैंने कहा कि कोई भी हो, लेकिन ऐसा हो जो मेरे साथ खेल सके। मां मेरी पूरी बात समझ नहीं पायी तो मैंने कहा दिया–'सबसे जरूरी है कि बच्चा मानसी के भाई जैसा नहीं चाहिए।' तुमने देखा है न उसे ? आठ साल का होगा, पर अभी तक ठीक तरह से खड़ा भी नहीं हो सकता। छिः छिः, मैं नहीं चाहती कि मेरी बहन या भाई वैसा हो।

अच्छा अब बंद करती हूं। लगता है, बारिश होने वाली है। आकाश में जरूर घने बादल छाए होंगे, वरना दिन के दस बजे बाहर इतना अंधेरा न हो जाता।

खान चाचा तो तड़के ही पड़ोस के कस्बे से भाजी-तरकारी लाने गये हैं। वे बेचारे तो फंस जायेंगे आज बारिश में।

माता-पिता की मेरी नमस्ते कहना। मैं पिछले पत्र में यह लिखना भूल ही गयी थी। वे नाराज तो नहीं हुए न ? इस बात का सच में मुझे अफसोस है।

तुम्हारी,
संज्योत

* * *

प्रिय तेजा,

घना अंधेरा है। आज तारीख भी पता नहीं क्या है। पिछली बार जिस अंधेरे के बारे में मैंने अपने पत्र में लिखा था, वह तब से वैसा ही बना हुआ है। पता नहीं कितने दिन बीत गये हैं। हम लोग सारा समय लेटे रहते हैं। भूख लगी तो कुछ खा लिया और उसके बाद फिर सो गये। और खाना भी क्या होता है, पता है ? सिर्फ दाल-चावल।

मैं तो यह भी नहीं बता सकती कि कब सुबह हुई और कब शाम। पता नहीं कितने दिनों से सूरज के दर्शन ही नहीं हुए। हर तरफ अंधेरा, सिर्फ अंधेरा। बड़ी घुटन-सी होने लगी है, पर करूं भी तो क्या... ?

अरे, एक बात बताना तो भूल ही गयी। जब मैंने पिछला खत लिखा था, उस दिन से हम लोग तहखाने में रहने लगे हैं। पिताजी कहते हैं कि युद्ध शुरू हो गया है। लेकिन हमने न तो गोलियां चलने की आवाज सुनी हैं और न मिसाइलें देखी हैं। हां, इधर धूल बहुत हो गयी है। पहले कुछ दिन तो इतनी धूल उड़ती थी कि नाक-मुंह में घुस जाया करती थी। नाक पर रुमाल रख किसी तरह सांस लेते थे। अब धूल तो कम उड़ती है, पर अंधेरा ज्यों का त्यों है। यह किस तरह की लड़ाई है, कुछ समझ नहीं आ रहा।

पिताजी कहते हैं कि ज्यादा बम गिरने के कारण ही इतनी ज्यादा धूल आकाश में जमा है। जब तक वह बैठ नहीं जाती, तब तक उजाला नहीं होगा। क्या यही होगा ? मैं तो पागल हो जाऊंगी। रही-सही कसर पूरी करता है तहखाने का यह बदबूदार पानी। याद है न इसके बारे में मैंने पिछले पत्र में लिखा था। बदबू तक तो ठीक था, लेकिन अब वही गंदा पानी हमें पीना भी पड़ता है। क्या किया जा सकता है ? पहली बार चखा तो सबको उलटी हो गयी थी। अब आदत हो गयी है, सो उल्टी नहीं होती। फिर भी एक घूंट गले के नीचे मुश्किल से उतरता

है। पर कर भी क्या सकते है ? पिताजी कहते हैं कि अभी अगले कई दिनों तक यही पानी पीना पड़ेगा।

पता नहीं, तुम्हारे यहां क्या स्थिति है ? क्या वहां भी इतना ही अंधेरा है ? कम से कम हमारी तरह नाली जैसा गंदा पानी तो नहीं पीना पड़ता होगा। नलके में स्वच्छ और दुर्गन्धहीन पानी आता होगा।

इधर जिस दिन से अंधेरा छाया है, किट्टू बीमार है। हर समय सोया रहता है। इसी तरह हम सभी सोते ही रहते हैं। फिर भी बीच-बीच में हम कुछ तो बातें करते ही है। किट्टू तो कुछ बोलता ही नहीं। बस, जब-तब कराहता रहता है। उसके सारे शरीर पर छोटी-छोटी फुंसियां भी निकल आयी हैं।

अच्छा, लिखना तो और भी चाहती हूं, पर मोमबत्ती खत्म होने वाली है। यहां ज्यादा मोमबत्तियां जलाना हमारे लिए संभव नहीं है। दूसरे, बाहर इतनी ठंड है कि ठिठुरन के कारण मेरी बाहें अकड़ रही हैं। यहां लाइट नहीं, इसलिए मोमबत्तियां बचा-बचा कर इस्तेमाल करनी पड़ती हैं। तुम्हें वहां बिजली की कोई समस्या नहीं होगी, है न !

स्कूल खुल गया होगा। वैसे, तुम यह सब कैसे बताओगी मुझे, क्योंकि अगर तुम पत्र लिखो भी तो उसे डाकखाने से लायेगा कौन ! खान चाचा तो उस दिन के बाद लौटे ही नहीं।

तुम्हारे माता-पिताजी को नमस्ते।

तुम्हारी,
संज्योत

* * *

प्रिय तेजा,

थोड़ी ही देर पहले किट्टू भगवान को प्यारा हो गया। पता नहीं उसे क्या हुआ था। हर वक्त रोता रहता था। उसके सिर के सारे बाल झड़ गये थे– अंत में तो भौंहें और नाखून भी। आंखें तो इतनी लाल हो गयी थीं मानो खून बह रहा हो। पूरे शरीर पर फुंसियां थी। त्वचा जगह-जगह से फट गयी थी। बेचारा ! तकलीफ से बेहाल उसकी हालत देखी नहीं जाती थी।

मुझे बहुत रोना आ रहा है। बहुत डर भी लग रहा है।

तुम्हारी,
संज्योत

* * *

प्रिय तेजा,

कल मेरी मां ने बच्चे को जन्म दिया। परंतु... वह मृत था। खैर, जो कुछ हुआ अच्छे के लिए ही हुआ।

अपने भाई के बारे में इस तरह की बातें ? तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा। पर यकीन मानो, मेरी जगह तुम होती तो तुम भी यही कहती क्योंकि...क्योंकि उस बालक के न हाथ थे न पैर।

कहते हैं कि उस युद्ध में फूटनेवाली कुछ विध्वंसक किरणों के कारण ऐसा हुआ। मैंने पिताजी से पूछा कि क्या अब सभी बच्चों के हाथ-पैर नहीं होंगे ? पिताजी ने कहा, 'ऐसी बात नहीं। एक-दो साल बाद पैदा होने वाले बच्चे इस दुष्परिणाम के शिकार नहीं होंगे। लेकिन अगर...।' 'लेकिन अगर क्या··· ?' मैंने पूछा। मेरे बार-बार पूछने पर भी उन्होंने कुछ नहीं बताया।

मैंने सोचा था, बच्चे को खोने के दुख में मां बहुत रोयेंगी। पर वो बिल्कुल नहीं रोईं। सिर्फ मुझे पास बिठाकर मेरे बालों को सहलाती रहीं।

आंटी एक बार बच्चे के पास आयीं और देखते ही चीख पड़ीं। हाथों को हिला-हिलाकर बंगाली में जोर-जोर से कुछ बोल रही थीं। मेरी समझ में कुछ नहीं आया। किसी तरह डाक्टर अंकल ने उन्हें संभाला, समझाया।

उसके बाद जाने कितने दिनों बाद हम सबने एक साथ बैठकर खाना खाया। खाना वही दाल-चावल का था। किंतु साथ मिलकर बैठना अच्छा लग रहा था।

एक और आश्चर्य ! बाहर धुंधला उजाला होने लगा है–जैसे भोर के समय होता है।

अगर कभी यहां सूर्योदय होता है, दिन निकल आता है तो मैं तुम्हारे पास लौट आऊंगी। अब तो यहां से मन उठ गया है। तुम सब मित्रों से मिलने को मन तरस गया है।

अच्छा, इस साल हमारी क्लास टीचर कौन है ?

तुम्हारी,<br>
संज्योत

* * *

प्रिय तेजा,

पता नहीं क्यों मैं तुम्हें पत्र लिखती रहती हूं। कौन जाने तुम्हें ये मिलते भी हैं या नहीं। पर पिताजी का कहना है कि वे सारे खत डाकखाने में दस्ती देकर आते हैं। इन दिनों कभी-कभी वे और डाक्टर अंकल टार्च लेकर बाहर जाते हैं। बाहर जमा देनेवाली ठंड है। घर के अंदर भी बहुत ठंड महसूस होती है, लेकिन

घर में हम एक कोने में अंगीठी जलाए रखते हैं। उसी की रोशनी में हम अपने सारे काम करते हैं। अंगीठी के लिए लकड़ी लाने ही पिताजी बाहर जाते हैं। जाते समय एक विचित्र बुरकानुमा पोशाक पहन लेते हैं। लगता है कोई भूत चल रहा हो। उनका यह रूप देखकर मुझे तो हंसी आ जाती है।

किट्टू के गुजर जाने के बाद डाक्टर अंकल अब मेरे साथ कुछ नहीं खेलते। अधिकतर वे अपने आप में खोये रहते हैं। अब तो उनकी सिगरेट भी खत्म हो गयी हैं। इसलिए समय काटने का यह जरिया भी समाप्त हो गया है। आंटी पहले थोड़ा-बहुत बोल लेती थीं। परंतु अब सिर्फ मन ही मन कुछ बड़बड़ाती रहती हैं। कभी-कभी मां-पिताजी बड़े धीमे स्वर में बातें करते हैं। मेरे साथ बोलने के लिए किसी को फुरसत ही नहीं हैं। इसलिए जब भी बहुत उकता जाती हूं, तंग आ जाती हूं तो फिर अंगीठी की रोशनी में तुम्हें खत लिखने बैठ जाती हूं। जो कुछ मन में आता है लिखती रहती हूं। कई पत्र तो डाक में डालने के लिए पिताजी को देती ही नहीं हूं। अपने लिए उन्हें ठंड में बार-बार बाहर भेजना ठीक नहीं लगता। जब हमारी भेंट होगी, तब सारे पत्र तुम्हें पढ़ने के लिए दूंगी।

स्कूल खुल गया क्या ? पिछले साल का क्या परिणाम आया, मुझे तो यह भी पता नहीं। पास तो हो गयी हूंगी मैं। कौन-सी डिवीजन आयी होगी, पता नहीं। तुम्हारी और रुचि की कौन-सी आयी ? पर मुझे, कैसे पता चलेगा ? पिताजी कहते हैं, अंधेरे के कारण यहां चिट्ठियां नहीं आ रहीं। सुनो, तुम मुझे तार भेजो तो कैसा रहेगा ? डाकियों को तार देने तो रात को भी आना पड़ता है। बंबई में मैंने अपनी आंखों से देखा है ऐसा। तो फिर इस अंधेरे में आने में उन्हें क्या आपत्ति होगी। पिताजी से पूछना पड़ेगा। कुछ दिनों बाद अगर सूरज निकला जैसे कि पहले निकलता था और मैं वहां गयी तो स्कूलवाले मुझे छठी क्लास में बैठने देंगे न ? या मेरा एक साल बरबाद हो जायेगा ?

तुम्हारी,
संज्योत

* * *

प्रिय तेजा,

हमारे इस छोटे से परिवार में अब सिर्फ चार प्राणी बाकी हैं। मां, पिताजी, मैं और डाक्टर अंकल।

दो-दिन पहले दोपहर बाद थोड़ी रोशनी हो गयी थी। हमेशा की तरह दाल-चावल खाकर हम लोग कुएं का पानी पी रहे थे। तभी अचानक आंटी चीखती-चिल्लाती बाहर भाग गयीं। डाक्टर अंकल उन्हें समझा-बुझाकर वापस लाने उनके पीछे दौड़े।

पिताजी ने उन्हें रोककर बुरका पहनने को कहा। उन्होंने स्वयं भी बुरका पहना और फिर दोनों आंटी को ढूंढ़ने निकल पड़े।

दो-तीन घंटे बाद वे आटी को लेकर लौटे पर तब से आंटी की तबीयत बिगड़ती ही गयी। पेट की गड़बड़ के साथ उल्टियां शुरू हो गयी थीं। उल्टी में हर बार खून आ रहा था। पिताजी कह रहे थे कि आंटी ने बाहर झरने का पानी पिया था। युद्ध में इस्तेमाल किसी जहरीले रासायनिक पदार्थ के पानी में घुल जाने के कारण पानी बहुत दूषित हो गया था। उसके पीने से ही आंटी बीमार पड़ गयी थीं।

इसका मतलब है, हमें अब जिंदगी भर उसी कुएं का सड़ा हुआ पानी पीना पड़ेगा। हमें स्वच्छ और अच्छा पानी क्या कभी नहीं मिलेगा ? उफ ! कैसी गंदी बदबू है उस पानी में। कितनी भयानक स्थिति है कुछ समझ में नहीं आता। जी करता है, सबकी नजर बचाकर बाहर निकल भागूं और जो आंटी ने किया वही कर डालूं।

डरो मत। मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी। कम से कम...कुछ नहीं। जाने दो ! इसके बारे में बात करना भी बेकार है। मैंने अब तुम्हारे पत्र की आशा छोड़ ही दी है। और कुछ न सही, कम से कम दुनिया से अलग-थलग पड़ी अपनी सहेली के पत्र जरूर पढ़ना।

तुम्हारी,
संज्योत

पुनश्चः पिताजी के बार-बार चेतावनी देने पर भी एक बार मैं उनके पीछे-पीछे बाहर गयी थी—चुपचाप, छिपते-छिपाते। जब से हम तहखाने में रहने लगे हैं, पहली बार मैं बाहर की दुनिया में गयी थी। जो कुछ मैंने देखा, उस पर अब भी विश्वास नहीं होता। आसपास का हरा-भरा घना जंगल पूर्णतः नष्ट हो गया है। सारे पेड़ सूखकर निष्प्राण ठूंठ बन गये हैं।

क्या तुम्हारे उधर भी ?...नहीं, मैं ऐसा सोच भी नहीं सकती।

*   *   *

प्रिय तेजा,

यह मेरा आखिरी पत्र है।

पिछले कुछ दिनों से मुझे बुखार है। पेट में भी बहुत तेज दर्द होता है। दबाओ तो उदर सख्त सा लगता है। कमजोरी इतनी है कि पत्र लिखने की अब मुझमें ताकत नहीं है। इसीलिए इसी पत्र में सब कुछ लिख देना चाहती हूं।

लेकिन यह पत्र मैं पिताजी को डाकखाने में देने को नहीं दूंगी।

मैं चाहती हूं कि यह पत्र तुम तक पहुंचे। इसलिए इसे मैं जेब में रख लूंगी। जब तुमसे भेंट होगी, स्वयं तुम्हें दिखा दूंगी।

जब से हम तहखाने में रहने आये तब से मैं जानती हूं, तुम अब इस दुनिया में नहीं हो। मैं जानती थी। फिर भी मैं तुम्हें पत्र लिखती रही। हालांकि तुम्हें वे कभी मिलने वाले नहीं थे, फिर भी लिखती रही, क्योंकि पत्र लिखते समय यह अहसास होता था कि तुम मेरे पास हो। बस, इसीलिए लगातार लिखती रही। वरना... वरना मैं पागल हो जाती।

पत्र लिखने का और भी एक कारण है। मां-पिताजी सोचते थे कि शेष दुनिया में कैसा मृत्यु का तांडव हुआ है, मैं उससे अनजान हूं। मां, पिताजी और डाक्टर अंकल अपनी पूरी कोशिश कर रहे थे कि मुझे इस सबका पता न चले। मैंने भी सोचा कि मैं यह प्रकट नहीं होने दूंगी कि मुझे सब मालूम है। बस, इसीलिए तुम्हें लगातार पत्र लिखती रही।

अब बाहर आसमान साफ हो गया है। खूब रोशनी है। लेकिन पिताजी कहते हैं कि अभी हम साल-दो साल धूप में नहीं जा सकेंगे। बाहर का पानी भी नहीं पी सकेंगे। मतलब साफ है कि कुएं के बदबूदार पानी से अभी एक और साल तक हमारा छुटकारा संभव नहीं। खैर...अब मुझे इसकी क्या चिंता...

हैरान हो न मेरी बातें सुनकर कि अपने बारे में इतनी लापरवाही से मैं कैसे बातें करने लगी हूं। लेकिन पिछले एक साल में मैं बहुत बड़ी हो गयी हूं। मौत का अब कोई डर नहीं रहा। बल्कि इस बात से खुश हूं कि वहां आकर अपनी सब सहेलियों से मिल सकूंगी !

मुझे विश्वास है कि मेरी मां को और बच्चे होंगे। मैं न सही मेरे भाई-बहन तो जरूर जिंदा रहेंगे। पिताजी ने एक बार ऐसा बताया था। उन्होंने कहा था कि साल भर बाद पैदा होने वाले बच्चे मेरे मरे हुए भाई की तरह पैदा नहीं होंगे। मेरे भावी भाई-बहन यकीनन सामान्य और स्वस्थ होंगे। वे जब बड़े हो जायेंगे तो फिर से दुनिया में सब कुछ ठीक हो जायेगा।

सिर्फ एक बात बार-बार मन में आती है तेजा कि मेरे भाई-बहन शादी किससे करेंगे ?

लेकिन हां, शायद कहीं पर कुछ परिवार बच गये हों।

आशा है कि उनके यहां बच्चे भी पैदा होंगे। उन्हीं में से अपनी पसंद के साथी चुनकर मेरे भाई-बहन अपना जीवन शुरू करेंगे। है न ! जल्दी ही तुम्हारे पास आ रही हूं।

तुम्हारी,
संज्योत

**अंग्रेजी से सुनीता परांजपे द्वारा अनूदित**

# पुरुष

निरंजन एस. घाटे

कोई नवयुवती नजर आ जाये तो प्रायः हर नवयुवक उसकी ओर गौर से देखता है। यह स्वाभाविक है। किसी सुंदर लड़की की ओर देखना कोई अपराध भी तो नहीं है ! लेकिन कोई नवयुवक ऐसा भी हो सकता है जो किसी विशेष नवयुवती को नजरअंदाज कर दे। शायद कोई नवयुवक अन्य नवयुवक को ही देखना पसंद करे। कुछ नवयुवक ऐसे भी होते हैं जो सोचें कि काश यह महिला जवान होती... । वैसे ऐसे युवकों से हमें कोई सरोकार नहीं। यहां हम एक ऐसे नवयुवक की कहानी सुनाने जा रहे हैं जो सुंदर है, सफल है और हर दृष्टि से नवयुवक है। अतः युवती को देखते ही वह उसे ताकता रह गया। शायद उसके दिल की धड़कन तेज हो गयी हो। वैसे इस बात को पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता। वह इसलिए क्योंकि धड़कन मापने के लिए न तो वहां स्टैथोस्कोप था और न कोई अन्य यंत्र। लेकिन फिर भी यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि धड़कन अवश्य तेज हुई होगी, क्योंकि एक तो उसे पसीना छूट रहा था और दूसरे, वह अपने आपसे बोला कि "ओफ ! सीने में दिल बड़ी तेजी से धड़क रहा है। वाकई यार सर चकरा रहा है। ऐसा नहीं कि इतने सालों तक मैं एकांतवासी रहा हूं। जीवन में कोई लड़की नहीं आयी। किंतु खूबसूरती का ऐसा नमूना पहले कभी नहीं देखा।"

एक कहावत है कि 'प्यार में इंसान पागल हो जाता है।' लगता है, जब मानव जाति अस्तित्व में आयी. तभी यह कहावत भी आयी होगी। उसकी विक्षिप्त अवस्था देखकर उसके दोस्त इस सारी कहानी को संदेह की दृष्टि से देख रहे थे, किंतु जब उन्होंने उस नवयुवती को देखा तो उनकी समझ में आ गया कि क्यों उनके दोस्त ने अपना दावा पहले घोषित किया था। जाहिर है, पूरी कोशिश करने का पहला हक उनके दोस्त का था। अब अगर वह स्वयं दोस्त को दुत्कार देती है और वह तंग आकर उसका ख्याल छोड़ किसी दूसरी के पीछे पड़ता है, तभी बाकी मित्रों को उस पर लाईन मारने का अधिकार था। वैसे सभी इस मछली को अपने जाल में फांसना चाहते थे।

आप भी कहेंगे कि दोस्त को इन बातों पर पहले ही सोचना चाहिए था। लेकिन बुद्धिमानी शायद बाद में ही आती है। उसे पूरी खोजबीन कर लेनी चाहिए थी। माना कि इक्कीसवीं सदी की युवतियां मंगलसूत्र नहीं पहनतीं, सिंदूर नहीं लगाती; पर इसका यह मतलब तो नहीं कि उन्होंने शादी करना छोड़ दिया है। कुछ युवतियां तो एक से अधिक बार विवाह करती हैं। लेकिन फिर भी उन्होंने इस भारत भूमि से पति नामक जाति को पूरी तरह ठुकराया नहीं है। प्रेम अंधा होता है और प्रेम करने वाले को भी अंधा भी बना देता है। यही बात इस नवयुवक पर भी सही साबित होती है। दोस्त ने सिर्फ सुंदर लड़की को देखा था, उसके पति को नहीं। देखा होता तो इस तरह उसे अपना दिल न दे बैठता। उसका 'वो' जब सबसे पहले हमारे मित्र को दिखा तो उस पर क्या बीती होगी, न जानना ही बेहतर होगा। जिसे हम अपने दिल की धड़कन समझते हैं वो पहले ही किसी और की हो चुकी है, यह जान लेने पर सामान्यतया पुरुष की जो अवस्था हो सकती है, वही उसकी भी हुई थी।

काफी दिनों तक वह निराशा में डूबा रहा। दिल के जख्म कोशिश करने पर छिपाये तो जा सकते हैं, लेकिन वे भरने में काफी समय लेते हैं। उसने भी अपने जख्म छिपाने की कोशिश की। उसकी वर्तमान मित्र को उसके बदले तेवर नजर नहीं आये क्योंकि वह कंप्यूटर विशेषज्ञ था और जब भी कंप्यूटर संबंधी किसी समस्या में डूबा होता तो यों ही खोया-खोया रहता था। उसके साथ वैसे भी यह अकसर ही होता था। हम कभी-कभी सुविधानुसार कुछ धारणाएं बना लेते हैं। उसकी वर्तमान मित्र की भी यह धारणा थी कि वह किसी व्यावसायिक समस्या में डूबा हुआ है। लेकिन मित्र के बदलते व्यवहार के बारे में दिल टूटने के बावजूद वह कम चिंतित नहीं था।

वह एक कंप्यूटर वैज्ञानिक था, अतः बैठे-बैठे वह कई बातें जान लिया करता था। काफी दिनों से उसने अपनी इच्छा को दबाए रखा था। किंतु एक दिन उसे अपने बगीचे में काम करता देख उसके तो होश उड़ गये। सच पूछिए तो किसी के भी होश उड़ जाते। सफेद शार्ट्स्, उस पर लाल टी-शर्ट। ऊपर वाला एक बटन खुला हुआ था। शायद बालों की लट को पीछे हटाते समय गाल पर लगा मिट्टी का ब्यूटी स्पाट। पता नहीं, तंग शार्ट्स् ज्यादा सफेद थी या उसकी जांघें। तौबा, कयामत ढा रहा था उसका रूप। बगीचे के अहाते के उस पार से वह उसे बिना पलकें झपके ताक रहा था, तभी उसके पति ने प्लास्टिक की एक थैली उसे दी। इसके साथ ही अहाते के उस पार खड़े इसके होश ठिकाने आये। उसके बाद होश उड़ने और वापस आने की घटनाएं कई दिनों तक होती रहीं। हारकर उसने अपने कंप्यूटर से मदद लेने की ठान ली। हाउसिंग बोर्ड के कंप्यूटर से ज्ञात हुआ कि वह बगीचे के उस पार ही रहती है। नाम, पता और अन्य व्यक्तिगत

जानकारी भी उसके पास थी। अतः उसके काम करने की जगह को ढूंढ़ना कोई मुश्किल काम न था।

किंतु उसे इसमें कोई सफलता नहीं मिली। हालांकि कोई सफलता नहीं मिली हो तो भी प्रारंभिक जांच-पड़ताल पूरी हो चुकी है, राजनीतिक ढंग से ऐसा कहने की हमें क्या पड़ी है ?

उस दिन शाम को एक असामान्य बात हुई। वैसे तो इसी बात के लिए उसने कुछ खास योजनाएं बनाई थीं। अपने कंप्यूटर पर उसने इन घटनाओं की सजीव कल्पना करके कुछ जांच भी की थी। लेकिन एक कंप्यूटर वैज्ञानिक होने के नाते सजीव कल्पनाओं की सीमाओं को वह अच्छी तरह जानता था। खराब मौसम या तूफान में अथवा बरसात में किसी हवाई जहाज की सजीव कल्पना करना आसान था। किसी समुद्री जहाज को यदि आग लग जाय तो आग पर काबू पाने की सजीव कल्पना भी वह कर सकता था। इसका जवाब भी कंप्यूटर दे सकता था कि कुछ दूसरे ग्रहों का वातावरण रहने योग्य कैसे बनाया जा सकता है। यही नहीं, उसने कई राकेटों को दूसरे ग्रहों पर उतरने में अपने कंप्यूटर के द्वारा मदद की थी। किंतु कंप्यूटर यह नहीं बता सकता था कि भतीजे के साथ खेलते हुए यदि गेंद पड़ोसी के बगीचे में चली जाये तो क्या हो सकता है। इससे पड़ोसन से जान-पहचान बढ़ भी सकती थी और उससे झगड़ा भी हो सकता था। दोनों बातों की संभावना बराबर-बराबर थी। सच, कंप्यूटर मानवीय व्यवहार के बारे में भविष्यवाणी करने के मामले में कितना असहाय था।

ऐसी स्थिति में जब शाम को वह घर लौटा तो देखा कि वह उसकी ओर देखते हुए प्यार से मुस्करा रही है। इतना ही नहीं, उसे देखकर वह सीढ़ियों से नीचे उतरी और अहाते के पास आ गयी। इस बीच उसके घर का स्वचालित फाटक खुल गया और उसकी कार अपने घर के अहाते में घुस गयी। उसका रोबट उसे उतारकर कार गैरेज की ओर ले गया। और वह लड़की की तरफ ताकता ही रह गया। तभी वह अहाते के पास बढ़ आयी।

"आज आप हमारे घर चाय पर आयेंगे ?" उसने पूछा। क्या जवाब दे, कुछ सूझा नहीं। वैसे वह घुन्ना नहीं था। बल्कि अपने मित्रों में मजाकिया व्यवहार के लिए प्रसिद्ध था। किंतु आज उसके चाय के निमंत्रण ने उसे निरुत्तर कर दिया था।

"चाय नहीं, तो काफी, शरबत जो भी लें ? लेकिन आयें जरूर।"

दोनों घरों के बीच की बाड़ वह कब लांघ कर आ गया, पता ही न चला, जैसे वह सम्मोहित हो। वह उसे अंदर ले गयी। उसके घर में काम करने के लिए रोबट नहीं है, यह देख उसे आश्चर्य हुआ। उसके आश्चर्य के दो मुख्य कारण थे। पहला यह कि उस इलाके में रहने वाले सभी लोग आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न

थे और दूसरा 'भारत रोबट प्रोडक्शन' नामक कंपनी में वह अभियांत्रिकी विभाग में वरिष्ठ अधिकारी थी। इसके बावजूद उसके घर में रोबट नहीं था और सारा काम वह स्वयं करती थी। अच्छा ही था, अन्यथा वह उसे बगीचे में काम करते हुए कैसे देख पाता ? एक ट्रे में शरबत के दो गिलास लेकर वह वापस आयी। उसके पति बाहर नहीं आये। शायद वह अपने काम में व्यस्त थे। उसने एक गिलास उठाया और एक घूंट लिया।

"आपने सीधे मुझसे पूछा होता तो मैं अपने बारे में स्वयं सारी जानकारी आपको दे देती।" उसने सीधे से कहा और इधर शरबत से उसका सांस रुकने लगा।

"लेकिन आप··· !" वह जैसे-तैसे इतना कह सका।

"लेकिन क्या ? आप स्वयं कंप्यूटर विशेषज्ञ हैं। मैं रोबट निर्माण विभाग में हूं। अतः कोई हमारे बारे में जानकारी हासिल करने लगे तो हमें सतर्कता की वजह से तुरंत पता चल जाता है। इस संदर्भ में काफी कंप्यूटर प्रोग्राम मैंने खुद बनाये है। आप अपने को कंप्यूटर विशेषज्ञ कहते हैं, लेकिन आपके बारे में जानकारी हासिल करना कोई कठिन काम नहीं था। आपको अधिक सावधानी से काम करना चाहिए। वैसे आपका बायोडाटा बहुत प्रभावशाली है।" वह हंसते-हंसते दनादन तोपें दागे जा रही थी।

"थैंक्यू !" किसी तरह वह बोला।

"आपने शरबत तो पिया ही नहीं।" उसने कहा।

उसने एक बड़ा घूंट लेकर शरबत को खत्म कर दिया। "वह जानकारी प्राप्त करने का मेरा उद्देश्य केवल आपसे यानी अपने पड़ोसियों से जान-पहचान करना था। मेरे मन में कोई बुरी बात नहीं थी।" वह गिलास नीचे रखते हुए बोला।

"लेकिन मैंने कब कहा कि कोई बुरा उद्देश्य था ? पड़ोसी हैं तो एक दूसरे के बारे में पता होना चाहिए। यही तो मैं कह रही हूं। मैं तो स्वयं आपके यहां आने वाली थी। लेकिन तभी आपने मेरे बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश शुरू कर दी। इसलिए मैंने इंतजार करना उचित समझा। बाइ द वे, हमारी कंपनी 'के आर इ–1000' मंगवा रही है। एकदम नया माडल है। क्या आप उस पर काम करना पसंद करेंगे ?"

यह प्रश्न सुन कर दोस्त तो जैसे पागल ही हो गया। 'के आर इ–1000' कंप्यूटर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अनूठा उदाहरण था। ऐसे सुपर कंप्यूटर पर काम करने को बड़े-बड़े तरस जायें। अन्य लोगों की तरह उसका भी यही स्वप्न था। लेकिन पूरे ब्रह्मांड में सिर्फ दस-पंद्रह ऐसे सुपर कंप्यूटर थे। पृथ्वी पर तो केवल तीन ही थे। इसलिए उसने जितनी सहजता से सवाल पूछा था, वह उतना ही हैरान था। वह भौंचक हो आंखें फाड़कर उसे देखता ही रह गया।

"अरे, इस तरह क्या देख रहें हैं मेरी तरफ ? अगर आपको मेरा प्रस्ताव पसंद नहीं आया तो छोड़िये। आपने मेरे बारे में जानकारी पाने की कोशिश की, इसीलिए मैंने भी आपके बारे में सूचनाएं हासिल कीं। इसमें मेरी भी कोई बुरी भावना नहीं थी।" उसने कहा।

इस बीच वह कुछ संभला। बोला, "नहीं, वह बात नहीं। 'के आर इ-1000' पर काम करना मेरा सबसे बड़ा सपना था, परंतु वह हकीकत में इतनी जल्दी साकार होगा, यह मैंने सोचा भी नहीं था। हम जैसों के स्वप्न होते तो सुंदर हैं, लेकिन वे कभी पूरे नहीं होते।" उसकी ओर देखते हुए वह बोला। इधर उसका वाक्य पूरा हुआ और उधर उसका पति बाहर आया, ग्लास-केस खोला, कुछ निकाला और पति-पत्नी दोनों ने इशारे में कुछ कहा और वह फिर से अंदर चला गया।

तभी बात को आगे बढ़ाते हुए वह बोली, "हां तो क्या कह रहे थे आप ?"

"हमारे स्वप्न, स्वप्न ही रहते हैं। सच नहीं होते।"

"क्यों नहीं होते ? कोशिश करें तो सब कुछ हो सकता है। करने से होता है भई ! नौक, एंड द डोर्स विल ओपन। मैं आपके सामने प्रस्ताव रख रही हूं, और आप हैं कि कोशिश भी नहीं करना चाहते !"

उसने गौर से देखा। वह काफी गंभीरता से बात कर रही थी।

"ठीक है। अर्जी वगैरा कहां भेजनी होगी ? मैं कंप्यूटर के जरिए अपने व्यक्तिगत विवरण, संदर्भ आदि भेजता हूं।"

"तो आप हमारे साथ काम करने को तैयार हैं ?"

"नहीं ऐसा नहीं ! आप कह रही हैं तो अर्जी दे देता हूं। लेकिन इससे मेरी आजादी खत्म हो जायेगी। मन बनाने के लिए थोड़ा समय चाहता हूं।"

"देखिये आप अगर 'हां' कह दें तो आज से बल्कि अभी से 'भारत रोबट प्रोडक्शन' में शामिल हो सकते हैं।"

"वाकई मुझे सोचने के लिए थोड़ा समय चाहिए।"

"कितना ?"

"एक सप्ताह !"

"ठीक है। अपने निर्णय से मुझे सूचित कीजियेगा।"

"अच्छा, तो अब मैं चलूं ?"

"क्यों ? इस विषय पर तो बस यों ही बात चल निकली। आइये, कुछ और बात करें। वैसे, हमारी टीम को आपने आने पर खुशी ही होगी... ।"

फिर वे दोनों बातचीत करने लगे–होलोग्राफिक टेप्स, शुक्र ग्रह पर छुट्टी बिताना, उसका काम, उसका बागवानी का शौक और नये रोबट का निर्माण। उसने बताया कि घर में एक ही रोबट इसीलिए रखा है...वगैरा। तब एक बार फिर से शरबत का दौर चला। उसके बाद दो एक दिन में रात्रिभोज पर आने का निमंत्रण।

उसने जब रात्रिभोज के दिन का पुनः स्मरण कराया तो वह खुशी से फूला न समाया। लेकिन तभी एकाएक उसने अपने को संभाला। एक विवाहित स्त्री से इस तरह का व्यवहार ठीक नहीं–स्वयं को जताया। दो दिन बाद रात्रि भोज हुआ। वह बला की खूबसूरत लग रही थी...शबाब और शराब एक साथ...तभी खाने की शुरुआत हुई।

"आपके पति घर पर नहीं है क्या ?"

"क्या कहा ? मेरे पति ?" वह छेड़ने के अंदाज से मुस्करायी। "उनका आज खाने का मूड नहीं। इसलिए बाहर निकल गये हैं।" उसने कहा।

"ओह सारी !" वह तुरंत बोला।

"आप भला सारी क्यों कह रहे हैं?" उसने पूछा।

ऐसा लगा कि भोजन का बंटाढार अब बस होने ही वाला है। लेकिन वैसा नहीं हुआ। उसने बातचीत शुरू की, और धीरे-धीरे बातचीत में रंग भरता गया। भोजन के बाद उसने अनुभव किया कि अब वे दोनों काफी अनौपचारिक हो गये हैं। बातों का सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा था। जब वह लौटने के लिए उठा, आधी रात बीत चुकी थी। उसने पूछा, "अच्छा तो कुछ तय किया आपने ?"

"अभी थोड़ा समय और चाहिए।" उसने कहा।

"फिर आइयेगा।" वह हंसते हुए बोली।

उस रात को वह सो न सका। नौकरी के नहीं बल्कि 'उसके' बारे में ही सोचता रहा और पूरी मानव सभ्यता को कोसता रहा। एक-दो शताब्दी पहले तक कोई भी, किसी से भी संबंध रखने के बारे में कितना निडर था। लेकिन फिर धीरे-धीरे एडस् रोग का प्रसार बढ़ता गया जिसके फलस्वरूप विवाह बंधन पुनः दृढ़ होते गये। उसके लिए वह अपने पति से तलाक लेगी, इसकी उसे ज्यादा उम्मीद नहीं थी। यदि वह 'भारत रोबट प्रोडक्शन' में काम करता है तो हमेशा उसके साथ रहना पड़ेगा। उसने सपने में देखा कि वह उसके साथ कोई भयानक हरकत कर रहा है और तभी उसकी नींद टूट गयी। वह फिर से सोचता चला गया। क्षण भर के लिए भी नींद नहीं आयी।

अगले दिन वह घर पर ही रहा। आज की सभी मुलाकातें रद्द कर दो–उसने अपने रोबट से कहा। शाम के समय विजीफोन की घंटी बज उठी। वह कुछ बोलना चाहती थी। उसने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"मैं आ रही हूं।" उसने कहा। विजीफोन अचानक कट गया। कुछ देर बाद उसने दरवाजे से प्रवेश किया।

"क्या हुआ ? तबीयत ठीक नहीं है ? मेरे करामाती भोजन से बदहजमी हो गयी क्या ?" उसने पूछा।

सिर हिलाकर उसने न में जवाब दिया। फिर उससे बैठने को कहा और बोला, "पेशकश पर मैंने गंभीरता से विचार किया हैं। 'के आर इ-1000' पर काम करना कौन नहीं चाहेगा ? लेकिन ऐसा करने से मेरी आजादी समाप्त हो जायेगी। नौकरी करना मुझे पसंद नहीं। आय एम नाट ए टीम मैन। अतः कंपनी में नौकरी न करने का मैंने निर्णय लिया है।"

"परंतु सही मायने में वहां टीम है ही नहीं। मैं और आप। हम दोनों ही उस पर काम करने वाले थे। मुझे भी आप न चाहते हों तो कंपनी यह भी मान लेगी। हां, सिक्योरिटी क्लीयरेंस वगैरा की कुछ दिक्कतें जरूर आयेंगी। लेकिन, यह तो चलता ही है, हम देख लेंगे।"

"इसीलिए तो मैंने ना कही।" उसने हिम्मत से कहा।

"क्या मतलब ? मैं समझी नहीं।"

"मैं जरा खुले दिल से अपनी बात कहता हूं। आपके साथ हरदम काम करना भी मेरे ना कहने का एक कारण था।"

"क्या मैं इतनी बुरी हूं ? या बुद्धि से कम हूं ?"

"मुझे गलत मत समझिये। आप तो बहुत अच्छी हैं। आपकी प्रतिभा पर भी मुझे शक नहीं। काश, हम कुछ साल पहले मिले होते।"

"क्यों ? क्या आपका रिश्ता तय हो चुका है ?"

"मेरा तो नहीं। पर आपका ?"

"क्या कहा ?"

"आप तो शादी-शुदा हैं न ?"

उसने जोर से ठहाका लगाया। आखिर उसने कहा, "शादी ? आप क्या कह रहे हैं ? शादी के बंधन को कौन मानता है इन दिनों ? बीच में यह रूढ़ी पनपने अवश्य लगी थी, लेकिन अब पुनः आजादी के दिन आ गये हैं।" वह हंसकर बोली।

"माफी कीजिये, इस बारे में मेरे और आपके विचार बिल्कुल मेल नहीं खाते। आप मुझे पुराणपंथी कह सकती हैं; परंतु मैं आज भी विवाह-संस्था में पूरा विश्वास रखता हूं।" कुछ नाराज हो कर उसने कहा।

"इतने नाराज क्यों हो रहे हैं आप ? और आपको किसने कहा कि मेरी शादी हो चुकी है ?" उसने पूछा।

"तो क्या आप उनके साथ वैसे ही रह रही हैं ?"

"किनके साथ ?"

"आपके घर में जो आदमी है, और आपने जिससे मेरा परिचय भी नहीं कराया, उसके साथ।"

"अच्छा वह ? अब कैसे बताऊं।"

"न बताना चाहें तो बेशक कुछ मत कहिये !"

"सुनिये तो ! मुझे सिर्फ पांच मिनट दीजिये।"

वह कुछ नहीं बोला।

वह बोलने लगी—"मैं सुंदर हूं, बड़े पद पर हूं, इसलिए कई पुरुष मुझे फंसाने की कोशिश में रहते थे। शुरू-शुरू में उन्होंने मेरी आजादी और मेरे खुलेपन का गलत फायदा उठाने की भी कोशिश की। इसलिए मैं अपनी ही कंपनी से एक रोबट ले आयी। धीरे-धीरे लोग अपने आप ही उसे मेरा पति मानने लगे। हमारी कंपनी में भी बहुत कम लोग यह भेद जानते हैं। एकदम लेटेस्ट माडल है यह। बिलकुल पुरुष जैसा दिखता है। जब से वह घर आया है, तब से पुरुषों का झंझट कम हो गया है। मैंने भी चैन की सांस ली। इस बीच आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस के सेमिनार में मैंने आप को देखा। आपके बारे में काफी सुन रखा था। उस दिन आपका शोध-निबंध भी सुना। भोजन के समय भी आपके आसपास ही मंडराती रही, परंतु आप अपने अनुसंधान की चर्चा में इतने डूबे हुए थे कि आपका मेरी ओर ध्यान ही नहीं गया। फिर मैंने आपका पता खोजा और आपके पड़ोस में रहने आ गयी। लेकिन फिर भी आपका मेरी तरफ ध्यान नहीं गया था। तभी आपने मेरी जानकारी पाने के प्रयत्न शुरू किए। उस समय लगा कि आप इतने नीरस नहीं है जितना मैंने सोचा था।"

सिर पीटकर वह कह उठा, "आयम रीयली सारी।"

आगे क्या कुछ हुआ, बताने की जरूरत नहीं। देरी की क्षतिपूर्ति उन्होंने कैसे की, यह बताना उचित नहीं। कुछ देर के बाद उनकी सुध-बुध लौट पायी। फिर उस दिन वह अपने घर गयी ही नहीं।

*   *   *

कुछ दिनों बाद उन्होंने शादी कर ली। बिना शादी किये बच्चा हो जाने पर आजकल कोई एतराज नहीं करता, फिर भी उसने पहले ही विवाह-सूत्र में बंध जाने पर जोर दिया। उन्होंने सुहागरात भी विवाह के बाद ही मनायी। शादी से पहले ही उसने उस रोबट को वापस कंपनी में भेज दिया। जल्दी ही वह प्रसूति-गृह में भर्ती हुई। आजादी की छोटी-सी अवधि का जश्न मनाने के लिए उसने हम कुछ मित्रों को आमंत्रित किया। बाकी मित्रों के चले जाने के बाद अब हम दोनों ही बचे थे। उसकी पूरी कहानी सुनने के बाद मैं उसे समझा रहा था कि वह बहुत भाग्यशाली है जो उसे ऐसी पत्नी मिली। तभी वह कुछ सोचता जान पड़ा।

"अरे ? किस सोच में डूबे हो ?" मैंने पूछा।

"यार, कैसे बताऊं, समझ में नहीं आ रहा। जो मेरे सवालों का जवाब दे

सकता है, उससे मैं पूछ नहीं सकता। रोबट को तो मैंने ही वापस भेजा था। वह भी मेरे प्रश्नों के उत्तर दे सकता था। मुझे सही जवाब मिल भी जाता लेकिन फिर भी क्या उसे सह पाना मेरे लिए संभव होता ? पता नहीं। इसीलिए मैंने सोचा कि पूरी कहानी को क्यों न भुला ही दूं। क्या बताऊं तुझे अपने शक के बारे में ?" शून्य में देखते हुए वह बोला।

"तू क्या कह रहा है, मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। जरा समझाकर बता जो बताना है यार।"

उसने एक लंबी आह भरी। फिर बोला, "कैसे बताऊं, यही सोच रहा हूं।"

"अरे यार, मुझे ऐसी सुंदर, बुद्धिमान और पैसे वाली पत्नी मिलती तो स्वर्ग जैसा आनंद आता। और एक नये किस्म की हाइड्रोफोइल समझकर लोग मेरी ओर देखते।"

"क्यों नहीं ! और अगर तुम्हें हमेशा यह लगता कि तुम्हारी पत्नी के उस रोबट के साथ संबंध हैं, तो जबरदस्त मुंह की खानी पड़ती।" उसने कहा।

"अबे मूर्ख ! मान लो संबंध होते भी तो क्या फर्क पड़ता ? वह रोबट तो अब यहां है नहीं।" यदि वह वास्तविक मनुष्य होता तो ? और यार तेरे पास कोई सबूत भी तो नहीं है। मेरी बात मान, और अपना मर्दों का सा शक दिमाग से निकाल दे और सुख-से अपनी गृहस्थी चला। शक ने अगर दिमाग में घर कर लिया तो सब कुछ तबाह हो सकता है। समझा !" मैंने कहा और उठ खड़ा हुआ। घर लौटते समय में सोच रहा था कि इससे बढ़कर गधा और कोई नहीं होगा जो बेवजह शक को दिमाग में पाल रहा है। मैं चला आया।

उसकी गृहस्थी अब सुदृढ़ दिखती है। उसके चेहरे पर तेज है, ताजगी है। बच्चे बड़े हो गये हैं। कहना होगा कि अपना शक पत्नी पर जाहिर करने की मूर्खता उसने नहीं की होगी, ऐसा मुझे लगता है।

**अंग्रेजी से सुनीता परांजपे द्वारा अनूदित**

# रूबी

अरुण मांडे

मरीज के बाहर जाते ही मैं उसके बारे में नोट्स लिखने लगा। केबिन का दरवाजा खुलने की आवाज हुई। शायद दूसरे मरीज की सूचना देने के लिए रूबी आयी होगी, यह सोचकर मैंने ऊपर देखे बिना ही कहा, "हां रूबी ! दूसरा मरीज भेज दो।"

और तब मैं पुनः नोट्स लिखने लगा। बाहर जाते हुए न रूबी के कदमों की आहट हुई और न ही दरवाजे की आवाज। इसलिए मैंने ऊपर देखा। रूबी मेरे सामने ही खड़ी थी।

"रूबी, और पेशेंट्स को नहीं भेज रही हो क्या ?" मैंने पूछा।

"डाक्टर, बाहर अब कोई पेशेंट नहीं है। आज के सभी मरीजों को आप देख चुके हैं।" उसने कहा।

मैंने घड़ी देखी। रात के दस बजे थे। नोट्स की डायरी बंद करते हुए मैंने कहा, "अच्छा रूबी, अब मैं चलता हूं। तुम यह सब समेटकर रख दो।" हैरानी की बात कि रूबी अब भी वहीं खड़ी थी। मैं समझ गया, जरूर कुछ गड़बड़ है।

"क्यों रूबी, कुछ कहना चाहती हो ?"

"हां, डाक्टर।"

"तो बैठो ना। रिलैक्स। ड्यूटी खत्म हो चुकी है। आराम से बैठो और कहो, क्या कहना चाहती हो ?"

संभलकर रूबी सामने वाली कुर्सी पर बैठ गयी। तब सिर झुकाकर कहने लगी, "डाक्टर, मैं जो कुछ कहने जा रही हूं, वह अत्यंत निजी और गोपनीय है।"

"अरे, तुम तो बिल्कुल अपने यहां आने वाले पेशेंट्स की तरह बोल रही हो।" हंसकर मैंने कहा। "और तुम पेंशेट नहीं मेरी सेक्रेटरी हो। तुम यह भी जानती हो कि इस केबिन में होने जाने वाली हर बात हमेशा ही कांफिडेंशियल होती है। तुम्हें मेडिकल एथिक्स बताने की जरूरत नहीं है। तुम मेरी पेशेंट न सही, लेकिन तुम्हारी हर बात गुप्त ही रहेगी। चलो, कह दो जल्दी से।"

"डाक्टर, मैं तुमसे प्यार करती हूं।" वह धीरे से बोली।

मैं एकदम संभलकर बैठ गया।

केबिन में पेशेंट्स की कई अजीबो-गरीब कहानियां मैंने शांति से सुनी थीं। लेकिन रूबी की बात ने आज जिंदगी में पहली बार मुझे झकझोर दिया।

"तुम क्या कह रही हो, समझ रही हो ना ?" मैंने पूछा।

"हां, डाक्टर समझ रही हूं।" उसने कहा।

"तुम एक रोबट हो, जानती हो ना ?"

"हां, डाक्टर, जानती हूं।'

और फिर भी उसे मुझसे प्यार हो गया था।

"देखो रूबी, मेरा एक मित्र रोबट मनोवैज्ञानिक है। कल सुबह हम उसके पास चलते हैं। अरे हां, हो सकता है इस समय वह अस्पताल में ही हो। मैं अभी कल का समय ले लेता हूं।" मैंने कहा और अपना हाथ विजीफोन की ओर बढ़ाया।

तभी बिजली की चपलता से वह मेज पर झुकी और मेरा हाथ पकड़ लिया था। मैं जानता था कि मनुष्य शरीर के तापमान के समान ही रोबट के शरीर का तापमान होता है। पर रूबी का शरीर कुछ ज्यादा ही गरम लग रहा था। आज तक रोबट के स्पर्श को मैंने अनुभव नहीं किया था। और वह कैसा होगा, इसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। मेरी तो मान्यता थी कि वह स्पर्श रूखा, यंत्रवत्, अमानर्वाय एवं भावरहित होगा। लेकिन इसके विपरीत रूबी का स्पर्श बहुत मृदु और मानवीय लग  रहा था। उस स्पर्श ने उसके मन (!) की भावनाओं को प्रकट कर दिया था। उसने तुरंत अपना हाथ खींच लिया। फिर बोली, "सारी डाक्टर, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। प्लीज, डाक्टर, उन्हें फोन मत कीजिये।"

"मगर क्यों ?" मैंने पूछा।

"डाक्टर, क्या प्रेम करना कोई मानसिक विकार है ?" उसने पूछा।

"नहीं। प्रेम तो एक अत्यंत सहज-सुंदर भावना है।"

"प्रेम करने वाला मानसिक रूप से असामान्य होता है क्या ?" उसने पूछा।

"नहीं।" मैंने कहा।

"तो फिर आप मुझे रोबट मनोवैज्ञानिक के पास क्यों भेज रहे हैं ?" उसने पूछा।

"इसलिए कि तुम एक रोबट हो।" चिढ़कर मैंने कहा।

"और रोबट को प्रेम करने का अधिकार नहीं है ?" उसने पूछा।

"देखो रूबी, यह अधिकार का प्रश्न नही है, कर्तव्य का है।"

"क्या मतलब ?"

"रोबट कंपनी से मैं तुम्हें अपनी सेक्रेटरी के नाते लाया हूं। हर माह उसके लिए मैं काफी अधिक किराया भी दे रहा हूं। इस अपेक्षा से कि तुम मेरे सारे काम करो। किसी पर प्रेम जताने के लिए मैं तुम्हें यहां नहीं लाया हूं।" थोड़ा

नाराज होकर मैंने जवाब दिया।

"डाक्टर, मेरी जगह कोई अन्य स्त्री होती और वह किसी से प्रेम करती तो ?"

"वह किससे प्रेम करती है, यह उसका निजी मामला होता। लेकिन उसके प्रेम से मेरे काम पर अगर बुरा असर पड़ता तो मैं उसे टोकता। मैं कतई नहीं चाहूंगा कि मेरे काम का नुकसान हो।" मैंने कहा।

"डाक्टर, मैं पिछले एक साल से आपसे प्रेम करती हूं। लेकिन क्या मेरे काम से आपको कोई शिकायत हुई है ?' क्या मैंने आपको शिकायत का कभी मौका दिया ?"

"देखो रूबी, मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता। मेरी बात ध्यान से सुनो..."

तभी विजीफोन की घंटी बजी। मैंने बटन दबाया। उसी समय छोटे से पर्दे पर हेमा का चेहरा दिखने लगा।

"हाय, अनिल !" वह बोली।

"हेमा ! अरे, तुम शिकागो से कब लौटी ?"

हेमा ने खुशी से उत्तेजित होते हुए कहा, "बस, अभी ! हवाई अड्डे से ही बोल रही हूं। यहां आते ही सबसे पहले तुम्हीं याद आये। सोचा, पता नहीं इस वक्त मिलते भी हो या नहीं। मेरी याद आयी कभी ?" हेमा ने पूछा।

"कैसी बात करती हो ? तुम्हें याद नहीं करूंगा भला ! अच्छा बताओ, कितने दिनों के लिए आयी हो भारत ?"

"हमेशा के लिए। अब यहीं रहने का इरादा है।"

"बहुत अच्छे ! कहो कब मिल रही हो ?" मैंने पूछा।

"तुम कहो तो अभी आ जाती हूं।" शरारती अंदाज में हेमा बोली।

"क्या बजा है, जानती हो ? रात के साढ़े दस हो चुके हैं।"

"इसीलिए तो कह रही हूं। रात भर हम दोनों साथ-साथ रहेंगे।"

"अच्छा, मजाक छोड़ो। शनिवार शाम को मैं खाली हूं। तभी मिलते हैं। डिनर एक साथ करेंगे।"

"कहां ?"

"वहीं, हमेशा वाली जगह।"

"ठीक है। अनिल, तुम्हारी बगल में एक सुंदर लड़की बैठी है। कौन है ?"

"वह मेरी नयी रोबट है–रूबी।"

"ओह यह बात है। अच्छा फिर, अनिल, सी यू।" कुछ ही क्षणों में विजीफोन पर दिखने वाला हेमा का चेहरा ओझल हो गया।

"यह हेमा कौन है ?" रूबी ने पूछा।

"मेरी क्लास-मेट। डाक्टरी की डिग्री लेने के बाद जराचिकित्सा (जेरीऐट्रिक्स) में एम. डी. करने के लिए वह शिकागो गयी थी।"

"डाक्टर, आप उससे प्यार करते हैं ?" रूबी ने पूछा।

"ओहो रूबी ! क्या हो गया है तुम्हें ? लगता है हिंदी फिल्में देख रही हो इन दिनों। प्यार के अलावा कुछ सूझता भी है तुम्हें ? हेमा सिर्फ मेरी अच्छी दोस्त है। वह मुझे बहुत अच्छी लगती है फिर भी प्यार वगैरा...मुझे नहीं मालूम... ।"

"लेकिन लगता है वह तुमसे प्रेम करती है।" उसने कहा।

मैंने हंसकर कहा, "रूबी तुम तो प्रेम दीवानी हो गयी हो। प्रेम के अतिरिक्त तुम कुछ और सोच ही नहीं पा रही। और यह स्थिति तुम्हारे लिए ठीक नहीं।"

"लेकिन डाक्टर, आपने ही तो कहा था कि प्रेम एक बहुत सुंदर अनुभूति है।"

"हां, बिल्कुल ! परंतु वह सिर्फ हमारे लिए, तुम्हारे लिए नहीं। मत भूलो कि तुम एक रोबट हो।" मैंने कहा।

"रोबट में कोई भावना नहीं होती क्या ?" उसने पूछा।

"नहीं और होनी भी नहीं चाहिए, ऐसा मैं मानता हूं।"

"डाक्टर, आप रोबट होते तो जान पाते कि हममें भी भावनाएं होती हैं।"

"कभी-कभी लगता है कि मुझे मनोवैज्ञानिक नहीं होना चाहिए था।"

"आप ऐसा क्यों कह रहे हैं, डाक्टर ?" रूबी ने पूछा।

"रूबी, गत दो सौ वर्षों में मनुष्य ने बड़ी भारी उन्नति की है। लगभग सभी क्षेत्रों में आश्चर्यजनक खोजें हुई हैं, नये अनुसंधान हो रहे हैं। अपने डाक्टरी क्षेत्र की ही बात लो–इसमें भी कई महत्वपूर्ण अनुसंधान हुए हैं। जेनेटिक इंजिनियरिंग के कारण अनुवांशिक रोग, कैंसर, एडस् जैसे असाध्य रोगों पर हमने संपूर्ण विजय पा ली है। मनुष्य की आयु सीमा अस्सी वर्ष की हो गयी है। मेरी दोस्त हेमा तो इस पर अनुसंधान कर रही है कि मनुष्य का बुढापा किस तरह रोका जाये। तुम्हारे रोबोटिक्स को ही देखो। दो सो वर्ष पहले के रोबट और आज के रोबट में जमीन-आसमान का अंतर आ गया है। मनुष्य की शारीरिक विशेषताओं और अन्य गुणों से तुम परिपूर्ण हो। लेकिन फिर भी रूबी, तुम शत-प्रतिशत संपूर्ण मानव कभी नहीं हो सकती।"

"क्यों ?" रूबी ने पूछा।

"क्योंकि मनुष्य की तरह तुम्हारे पास मन नहीं है। और उसका न होना अच्छा ही है।" मैंने कहा।

"मन कैसा होता है ?" उसने पूछा।

"मानव स्वयं अभी तक इस मन की परिभाषा नहीं कर पाया। वह अत्यंत रहस्यमय है और उसकी थाह ले पाना असंभव है। तुम्हारे सिर में फिट किये गये

पौज़िट्रौनिक मस्तिष्क से भी अधिक उलझा हुआ मामला है यह मन। सच कहता हूं रूबी, मनुष्य ने चाहे कितनी ही प्रगति क्यों न कर ली हो, फिर भी उसका मन आज भी आदिमानव या किसी पशु जैसा जंगली ही है। रूबी, मनुष्य के मन में केवल प्रेम, यही एकमात्र भावना नहीं होती। प्रेम, दया, करुणा, शांति, क्षमा, त्याग, द्वेष, ईर्ष्या, तिरस्कार, जलन, क्रोध, हिंसा, अस्थिरता या विकृति जैसी भयानक भावनाएं भी इस मन में होती हैं। कभी-कभी मनुष्य की सभ्य संस्कृति के मुखौटे हट जाते हैं और तब वह अपने वास्तविक जंगली और हिंसक रूप में दिखने लगता है। तब अहसास होता है कि मनुष्य में कोई परिवर्तन नहीं आया। फिर लगता है कि हम रोबट होते तो कितना अच्छा होता।"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मन में केवल अच्छी भावनाएं ही रहें ?" रूबी ने पूछा।

"बात इतनी सरल होती तो गली-गली मनोवैज्ञानिकों के क्लीनिक नजर ही न आते। दुनिया के सभी साधू पुरुषों ने क्या सिखाया है थोड़ा सोचकर देखो–'सच बोलो; चोरी मत करो; हिंसा से दूर रहो; सेवा करो।' तब यही सीख दी थी न उन्होंने, क्यों ? क्योंकि उस समय मनुष्य स्वयं ऐसे सद्व्यवहार नहीं करता था। आज यदि कोई महात्मा जन्म लेता है तो उसे भी वही संदेश देना होगा, क्योंकि मनुष्य आज भी वैसा ही है। बदलने की थोड़ी भी चाह उसमें नहीं है। और एक हजार साल बीत जायें तो भी वह नहीं बदलेगा।"

"पर मुझे बदलना है। मुझे मनुष्य बनना है।" रूबी ने कहा।

"रूबी, तुम्हारा यह पागलपन बहुत हो चुका। कल सुबह मैं तुम्हें रोबट कंपनी चेकअप के लिए भेजूंगा।"

"मगर डाक्टर..."

"अगर-मगर कुछ नहीं। यह मेरा आदेश है। रोबट को मनुष्य की आज्ञा का पालन करना ही चाहिए। एसिमौव के इस पहले सिद्धांत को तुम जानती हो ना ?" मैंने कठोरता से कहा। वह धीरे-धीरे कुर्सी से उठी। सिर झुकाकर बोली, "ठीक है डाक्टर।" तब मेरी ओर देखे बिना वह मुड़ी और तेजी से केबिन से बाहर हो गयी।

दूसरे दिन कंपनी ने रूबी की जगह नयी सेक्रेटरी भेज दी। वह भी अपने काम में माहिर थी, पर रूबी की योग्यता उसमें नहीं थी। उसका काम अत्यधिक यंत्रवत् और रवैया बहुत रूखा था। वेटिंग रूम में बैठे रोगियों और उनके रिश्तेदारों से रूबी बड़े प्यार से पेश आती थी। अतः उनमें वह कितनी लोकप्रिय थी, इसका मुझे अब अहसास हो रहा था। लगभग सभी स्थायी रोगियों ने, रूबी की अनुपस्थिति के बारे में पूछताछ की। उसके न होने के कारण मेरे काम का ताल भी चूक गया था। रोगियों का ब्लडप्रेशर सही वक्त पर मापना, किसकी इ इ जी करनी

है, इसका निर्णय लेना, रोगियों को इंजेक्शन देना है, प्रोजेक्टर से पर्दे पर आने वाले लाईट-पैटर्न कब बदलने हैं आदि सब कुछ रूबी बिना बताए ही कर लेती थी। और इस नयी रोबट को हर बात बतानी पड़ती थी। इसी कारण रोगियों का उचित ध्यान नहीं रख पा रहा था। सुबह के रोगियों को मैंने जैसे-तैसे निपटाया। उनमें से कई रोगियों को तो मैंने तीन चार दिन बाद आने के लिए कह दिया।

सब निपटाने के बाद मैंने पहले रोबट कंपनी को फोन किया। वहां का मैनेजर राघव मेरा अच्छा मित्र था। विजीफोन की स्क्रीन पर उसे देखते ही मैंने पूछा, "यार राघव, रूबी को क्या हुआ ?"

"रूबी ? कौन रूबी ?" घबराकर उसने पूछा।

"ओहो...रूबी यानी आर यू बी-16। मैं उसे रूबी कहता हूं।"

"मैं इस समय उसी की रिपोर्ट पढ़ रहा हूं।" उसने कहा।

"क्या हुआ है उसे ?"

"चंद बातें छोड़कर वह बहुत अच्छी स्थिति में है। उसका पौज़िटौनिक मस्तिष्क एकदम बढ़िया स्थिति में है।"

"वे चंद बातें कौन-सी हैं ?" मैंने पूछा।

"ओह... बहुत रोचक हैं वे बातें। अनिल, रोबट कैसे बनता है, कुछ पता है तुम्हें ?" राघव ने पूछा।

"अरे यार, मैं तुम्हारी तरह रोबोटिस्ट तो हूं नहीं। तुम ही बताओ।"

"रोबट के दो मुख्य भाग होते हैं। एक उसका शरीर और दूसरा उसका मस्तिष्क। वैसे रोबट में स्त्री-पुरुष जैसा भेद हम नहीं मानते। सौ साल पहले ऐसा भेद करने की आवश्यकता भी नहीं थी, क्योंकि रोबट का प्रयोग तब केवल अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए ही होता था। तत्पश्चात् डाक्टरी क्षेत्र में नर्स के रूप में और खदानों में मजदूरों के रूप में रोबट का प्रयोग होने लगा। अर्थात् उस समय रोबट का रूप बहुत ही साधारण था। तभी से अनजाने में ही रोबट में स्त्री-पुरुष ऐसा भेद पैदा होने लगा था। और आज तो हम उन्हें रोबट कहने की बजाय एंड्रौईड कहते हैं–अर्थात् वह 'जो मनुष्य जैसा है'। रोबट कौस्मैटिक्स ने तो इस संदर्भ में बड़ा भारी परिवर्तन कर दिया है। किसी रोबट को यदि गलती से खरोंच भी आ जाये तो उसमें से खून बहने लगता है, उसका शरीर इतना मनुष्यवत् हो गया है। रिसेप्शनिस्ट और सेक्रेटरी के रूप में काम करनेवाली रोबट तो इन दिनों ब्यूटी पार्लर में भी जाती हैं।"

"रूबी के शरीर में कोई दोष उत्पन्न हो गया है ?" मैंने पूछा। रोबट का इतिहास काफी मनोरंजक था, किंतु वह सब सुनने की मेरी इच्छा नहीं थी। मुझे हेमा से मिलने की जल्दी थी।

"नहीं, कोई दोष नहीं !" राघव ने कहा।

"तो क्या उसके मस्तिष्क में कोई दोष आ गया है ?"

"ओह, रोबट का मस्तिष्क। यह रोबोटिक्स में एक बहुत बड़ी क्रांतिकारी घटना है।" राघव आज बोलने के मूड में था। अतः उसका लेक्चर सुने बगैर कोई चारा न था।

"तुम तो जानते ही तो कि रोबट का मस्तिष्क पौज़िट्रौनिक सिद्धांत के अनुरूप कार्यरत रहता है। उसके मस्तिष्क में जो असंख्य, अनगिनत सर्किट्स हैं, उनकी तुलना हमारे मस्तिष्क से की जा सकती है। रोबट को जिस क्षेत्र में काम करना है उसकी सारी जानकारी उसे दी जाती है। तत्पश्चात् सामाजिक नीति नियम सिखाये जाते हैं। बोलने, चलने और बर्ताव के तौर-तरीके भी मस्तिष्क में भर दिये जाते हैं। संगणक की तरह उनमें निष्कर्ष निकालने की, निर्णय लेने की और सबसे महत्वपूर्ण यह कि नयी बातें सीखने की शक्ति भी होती है।"

"तो फिर मनुष्य के मस्तिष्क में और उनके मस्तिष्क में क्या अंतर हुआ ?" मैंने बीच ही में एक प्रश्न किया।

"बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है।" राघव ने कहा। लगता है, कल इंटरप्लैनेटरी चैनल पर होनेवाले अपने साक्षात्कार की तैयारी कर रहा था। और मुझे यकीन हो चला था कि यह महाशय मेरे सामने उसका पूर्वाभ्यास कर रहा था। "उनके और हमारे मस्तिष्क में बहुत बड़ा अंतर है। उनका पौज़िट्रौनिक मस्तिष्क पूर्वनियोजित मार्ग पर ही काम करता है। एसिमौव के तीन नियमों का वह उल्लंघन नहीं कर सकता। और इधर हमारे मस्तिष्क का एक सबसे बड़ा गुण अथवा दोष है उसकी अनिश्चितता (अनप्रिडिक्टेबिलिटी)। किसी विशेष स्थिति में मनुष्य का रवैया कैसा होगा, यह बताना असंभव होता है। किसी एक स्थिति के प्रति भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न हो सकती है। वही व्यक्ति उसी घटना में दूसरी बार अलग तरह से पेश आ सकता है। वह इसलिए कि हमारे मस्तिष्क में जो सर्किट्स हैं, वे पौज़िट्रोनिक मस्तिष्क की भांति बंद नहीं होते। वे ओपन होते है, खुले होते हैं। यही कारण है कि मनुष्य के मस्तिष्क में सीखने और सर्जन की असीम शक्ति है।"

"रूबी को वास्तव में क्या हुआ है, तुम यह बताओ ?" उसे सही मुद्दे पर लाने का प्रयत्न करते हुए मैंने कहा।

"हां। रूबी का केस जरा विचित्र है, " राघव ने कहा। "कंप्यूटरों की सहायता से मैंने उसके सारे सर्किटस् जांचे हैं। लेकिन कहीं कोई विशेष खराबी नजर नहीं आयी। परंतु उसमें एक आश्चर्यजनक परिवर्तन जरूर हुआ है।"

"कौन सा ?"

"उसके मस्तिष्क में कुछ नये सर्किट बन गये हैं। मस्तिष्क के मूलभूत सर्किटप्लैन के अनुसार मैंने उसकी दस बार जांच की है। मुझे पूरा विश्वास है कि पहले ये

सर्किट नहीं थे। आश्चर्य की बात तो ये कि यह सभी सर्किट खुले हैं।"

"क्या ? इसका क्या अर्थ हुआ ?" मैंने हड़बड़ाकर पूछा।

"मतलब, कुछ मामलों में वह किस तरह पेश आयेगी, यह कहा नहीं जा सकता।"

"वह मुझ पर हमला भी कर सकती है ?' मैंने कहा।

"अनिल, तुम तो एक मनोवैज्ञानिक हो। फिर भी तुम्हारे मन में बैठा फ्रैंकेन्स्टाइन कांप्लेक्स अभी तक गया नहीं तुम्हारे दिमाग से। रोबट से इस तरह डरने का कोई कारण नहीं है। उसका मस्तिष्क एसिमौव के तीन नियमों पर आधारित है। और इन नियमों में से दूसरा नियम है कि, रोबट किसी भी परिस्थिति में, जाने या अनजाने, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मनष्य को कोई चोट नहीं पहुंचायेगा। अतः रूबी तुम पर हमला करना तो छोड़ो, उसका विचार भी नहीं करेगी। तुमने जो उसके लक्षण बताये हैं, उनसे तो लगता है कि उसमें जो परिवर्तन आया है वह अच्छा ही है। देखो अनिल, तुम चाहते हो तो मैं रूबी के बदले किसी और को भेज देता हूं।"

"रूबी के बदले तुमने जो एस एल वाई-1 भेजी थी ना, मुझे वह पसंद नहीं। इससे तो अच्छा होगा कि तुम रूबी को ही ठीक करके वापस भेज दो," मैंने कहा।

"अनिल, रूबी के नये सर्किट्स हमें समझने हैं। इसलिए अभी उनके साथ छेड़छाड़ करना उचित नहीं है।" राघव ने कहा।

"इसका मतलब है, रूबी अब कभी नहीं आयेगी ?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं आयेगी ? बल्कि मेरा तो कहना है कि अगर वह तुम्हारे पास रहे तो यह हम दोनों के लिए ही लाभदायक होगा।"

"वह कैसे ?" मैंने पूछा।

"हम तो केवल उसके सर्किट का ही अभ्यास कर सकेंगे, परंतु विभिन्न स्थितियों में वह किस तरह पेश आती है, इसका ज्ञान हमें नहीं होगा। यह तो अच्छा ही हुआ कि तुम एक मनोवैज्ञानिक हो। उसके बरताव का अध्ययन करो। नोट्स तैयार करो।" राघव ने कहा।

"मैं कोई रोबट मनोवैज्ञानिक नहीं हूं।" मैं चिढ़कर बोला।

"रोबट-मनोवैज्ञानिक !" राघव ने घृणा से जवाब दिया। "पौज़िट्रौनिक मस्तिष्क में बरताव के सांचे बनाना और बिगड़े हुए सांचों की मरम्मत करने के सिवा उन्हें कुछ नहीं आता। वे अभी बच्चे हैं। और रूबी का केस उनके बस की बात नहीं। तुम यदि योजनाबद्ध ढंग से उसका निरीक्षण करते हो और यदि कुछ आश्चर्यजनक निष्कर्ष-तुम्हारे सामने आते हैं तो रोबट और मनुष्य के आपसी संबंधों पर यह बहुत बड़ी क्रांतिकारी खोज होगी। इस क्षेत्र के पहले विशेषज्ञ के तौर पर तुम अजर-अमर हो जाओगे।"

"मुझे निश्चित रूप से क्या करना होगा, यह बताने का कष्ट करोगे ?" मैंने

पूछा।

"कुछ विशेष नहीं। जस्ट वाच हर। तुम्हें एक मजेदार बात बताता हूं। रूबी की आंखें सजीव और आबदार दिखें, इसलिए उसकी आंखों में हमने कृत्रिम अश्रुग्रंथियां बनायी थीं। चौबीस घंटे हरदम पानी की एक पतली परत आंखों पर रहे ऐसी व्यवस्था हमने की थी। आज जब हमने उसकी जांच की तो देखा, उसकी अश्रुग्रंथियां खाली हो चुकी थीं।" राघव ने कहा।

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि वह रोई होगी, ऐसा हमें लगता है। इसीलिए मैंने कहा, जस्ट वाच हर। ऐसे ही छोटे-मोटे परिवर्तन तुम्हें नजर आयेंगे। हां, कोई दिक्कत आये तो तुरंत मुझे फोन करना। सहयोग के लिए धन्यवाद।"

इससे पहले कि मैं कुछ कहूं पर्दे से राधव का चेहरा ओझल हो गया। टेबल पर लगा घंटी का बटन मैंने दबाया। अनापेक्षित रूप से रूबी दरवाजा खोलकर अंदर आ गयी।

"रूबी, तुम कब आयीं ?" मैंने खुश होते हुए पूछा।

"आप मि. राघव से जब बात कर रहे थे तभी।" उसने कहा, "उन्होंने क्या कहा आपसे ?"

"कुछ नहीं ! यही कि तुम बिल्कुल ठीक-ठाक हो।" मैंने कहा।

"मैंने तो पहले ही आपसे कहा था।" उसने कहा, "डाक्टर, यहां से जाते समय मुझे बहुत बुरा लगा था।"

"इसलिए तुम रोई थी ?" मैंने धीरे से पूछा।

"आपसे किसने कहा ?" बड़ी आंखें करके उसने हैरानी से पूछा।

"किसी ने भी कहा हो, लेकिन है तो सच ना ?"

"डां, डाक्टर," गर्दन नीचे झुकाकर उसने कहा। "मैंने सोचा आपसे पता नहीं अब भेंट होगी या नहीं।"

"चलो, अब तो हो गयी ना ? बस...तो फिर ! देखो मैं बाहर जा रहा हूं। तब तक..."

"हेमा से मिलने ?" उसने पूछा।

"हां।"

"इसी तरह ?" वह बोली।

"मतलब ?" मैंने हड़बड़ाकर पूछा।

"इन्हीं कपड़ों में जायेंगे आप ?"

"तो क्या हुआ ? ये बुरे हैं क्या ?"

"डाक्टर, आपने कभी किसी से प्यार किया है ?"

"नहीं। लेकिन रूबी..."

सिर हिलाते हुए वह बोली, "तभी ! आप अभी मेरे साथ चलिये।"

"अरे, पर कहां ?" मैंने पूछा।

"आप उठिये ना !" उसने आग्रहपूर्वक कहा।

"पर हेमा मेरी राह देखती होगी।" मैंने कहा।

"अभी समय है। आप चिंता ना करें। आप समय पर वहां पहुंच जायेंगे।" वह बोली। मन में उत्सुकता लिए मैं उसके पीछे हो लिया। मुझे साथ लेकर वह बिल्डिंग की लिफ्ट में घुसी। लिफ्ट का दरवाजा बंद होते ही रूबी ने वहीं से टैक्सीकौप्टर को फोन किया। देखते ही देखते मंजिलें पार करती लिफ्ट हमें लेकर ऊपर छत पर पहुंची। वहां हमारे लिए एक हैलिकौप्टर तैयार खड़ा था। सीढ़ी चढ़कर हम अंदर बैठे तो रूबी ने पायलट से कहा, "अकबरअली।"

केवल पांच मिनट में हमारा हैलिकौप्टर अकबरअली की छत पर था। क्रेडिटकार्ड निकालने के लिए मैंने जब में हाथ डाला, पर रूबी ने मुझे रोक दिया। पर्स में से उसने उसका कार्ड निकाला और पायलट को दिखाया। उसने नंबर दर्ज किया और हम नीचे उतरे। लिफ्ट में बैठकर हम नीचे आये। रूबी मुझे पुरुषों के विभाग में ले गयी। हमें देखते ही दो-तीन रोबट हमारे सामने आ गये। उनमें से एक ने कमर तक झुककर रूबी से पूछा, "मैडम, क्या सेवा करूं आपकी।"

मेरा परिचय कराने के बाद वह बोली, "डाक्टर साहब के लिए प्यारे सिल्क का एक सूट चाहिए। रेडिमेड।"

वह वाक्य सुनते ही दो रोबट मेरे पास आये। और मेरा माप लेने लगे। तीसरे रोबट ने पूछा, "रंग कौनसा, मैडम ?"

"क्रीम कलर। और टाई नीले आसमानी रंग की–सफेद रंग की कढ़ाई वाली। वो भी सिल्क की ही। टाइपिन प्लैटिनम की ओर जूते काले रंग के।"

"और कुछ, मैडम ?"

"रजनीगंधा के फूलों का एक बुके। असली। कृत्रिम सुगंध वाले फूल न हों।"

"ठीक है, मैडम।" रोबट बोला।

"डाक्टर, हेमा को कौन-सा सेंट पसंद है ?" रूबी ने पूछा।

"पर रूबी... ।"

"नाईट-क्वीन।" उसने रोबट से कहा।

हम बातें कर ही रहे थे, उतने में एक रोबट मेरा सूट और जूते ले आया। दूसरा रजनीगंधा के फूलों का एक बुके और दूसरी चीजें। सूट-बूट पहनकर जब मैंने खुद को आईने में देखा तो मैं अपने आपको पहचान ही नहीं पाया। कपड़ों के बारे में मैं बहुत लापरवाह हूं (अधिकतर मनोवैज्ञानिक ऐसे ही होते होंगे, मुझे ऐसा लगता हैं)। आज इन कपड़ों में पता नहीं क्यों, मैं बहुत प्रसन्नता अनुभव कर रहा था।

"डाक्टर, आप बहुत सुंदर दिख रहे हैं।" जी भरके निहारते हुए रूबी बोली।

"धन्यवाद !" मैंने कहा।

"लंबे अरसे से मैं आपको इस रूप में देखना चाहती थी।" रूबी ने कहा। फिर मेरे कोट पर उसने सेंट का फव्वारा उड़ाया। तब उसने मेरे एक हाथ में फूलों का बुके थमाया और दूसरे हाथ में एक पैकेट।

"क्या है इसमें ?" मैंने पूछा।

"साड़ी !" उसने कहा।

"साड़ी ? वह किसलिए ?" मैंने पूछा।

"हेमा के लिए। और यह बुके भी उसी के लिए है। अच्छा अब जल्दी जाइये।"

"अरे, पर इस सबका बिल देना है ना ?"

"वो मैं दे दूंगी। मेरे पास क्रेडिट कार्ड है।" वह बोली।

"क्या तुम भी क्रेडिट कार्ड का प्रयोग कर सकती हो ?"

"नहीं, मेरा स्पेशल केस है। मि. राघव ने यह खास व्यवस्था की है।" उसने कहा।

"परंतु रूबी, तुम यह सब क्यों कर रही हो ?"

"ताकि हेमा आपसे प्रेम करने लगे।"

"रूबी, तुम भी तो मुझसे प्रेम करती हो ना ?"

"हां।"

"मान लो, हेमा सचमुच मुझसे प्यार करने लगे तो ?"

"आपको खुशी होगी ना ?"

"हां।"

"मुझे भी होगी। आपकी खुशी मेरी खुशी।"

"पर रूबी, मुझे नहीं लगता कि मैं उससे प्रेम करता हूं।"

"तो कीजिये, डाक्टर ! प्रेम दुनिया की सबसे सुंदर चीज है। मनुष्य हो या रोबट प्रेम सभी को करना चाहिए। अब जाइये ! वह आपकी प्रतीक्षा कर रही होगी। बेस्ट आफ लक।"

जब मैं न्यू क्रैब होटल की विशाल छत पर उतरा तो शाम हो चुकी थी। सौ मंजिलों वाली इस बिल्डिंग की इस छत से आसपास की पूरी बंबई नजर आ रही थी। रंगबिरंगी बत्तियों से बंबई जगमगा रही थी। ऐसा लग रहा था मानो तारों को जन्म देने वाले नेब्युला के गर्भ में मैं घुसा हूं। सामने नीचे समुद्र को देख लगता था मानो दो गैलैक्सियों के बीच फैला हुआ अनादि-अनंत अंतरिक्ष हो। शरीर को चुभती समुद्र से बहती नमकीन ठंडी हवा प्रसन्नता प्रदान कर रही थी।

छत अनगिनत टेबल-कुर्सियों से अटी हुई थी। उनमें एक भी टेबल खाली नहीं था। सर्चलाईट की तरह मेरी नजरें हेमा को खोज रही थीं।

"हाय अनिल, मैं यहां हूं।" एक कोने से आवाज आयी। मैंने मुड़कर उस दिशा में देखा। हेमा खड़ी होकर हाथ हिलाते हुए मुझे बुला रही थी। रोबट वेटर और वेट्रेस को पीछे छोड़कर मैं उसके टेबल की ओर बढ़ा।

रजनीगंधा के फूल उसे देते हुए मैंने कहा, "हेमा... ये तुम्हारे लिए..."

फूलों को सूंघकर और मेरी ओर देखते हुए वह बोली, "अनिल, तुम तो सचमुच बहुत बदल गये थे।"

"अच्छा बना हूं या बुरा ?" मैंने पूछा।

"बेशक अच्छा ! कालेज में थे तो कितने बुद्धू दिखते थे। लेकिन अब तो बहुत स्मार्ट दिखते हो। क्या चक्कर है ? किसी से प्यार-व्यार हो गया है क्या ?" शरारती अंदाज में वह बोली।

उसकी आंखों में देखते हुए मैंने कहा, "अभी तक तो नहीं हुआ, परंतु तुम्हारे जैसी कोई मिल जाये तो प्यार करने में मुझे कोई एतराज नहीं।"

सिर पर हाथ हिलाते हुए हेमा ने कहा, "अरे, तुम दोनों का परिचय कराना तो मैं भूल ही गयी। यह है दिगू। शिकागो में हम दोनों एक साथ थे। अगले महीने मैं इससे शादी करने वाली हूं।"

मुड़कर मैंने उसकी ओर देखा। हाथ मिलाने के लिए उसने हाथ आगे बढ़ाया। हेमा को देखते ही मेरा मन जो खुशी से नाच उठा था, अब चुप और उदास हो गया था।

* * *

टैलेक्स पढ़कर मैंने कहा, "रूबी अगले आठ दिन तक की मेरी सभी एपाईंटमेंट्स कैंसिल कर दो।"

"क्या हुआ, डाक्टर ?" उसने पूछा।

"मेरी बहन मीरा बीमार है। मुझे आज ही निकलना होगा।"

"क्या हुआ है उसे ?"

"पता नहीं। लेकिन डिलीवरी के लिए वह मां के पास आयी हुई है। उसका यह पहला प्रसव है।"

"कहां रहती हैं आपकी माताजी ?"

"दापोली। रत्नागिरी के पास।"

"और कौन है वहां ?"

"कोई नहीं। मां अकेली रहती है। पिताजी के गुजरने के बाद मैंने कई बार उन्हें बंबई आकर मेरे साथ रहने का आग्रह किया, पर वह है कि कोंकण छोड़ना ही नहीं चाहती। मां को बंबई बिल्कुल पसंद नहीं है। शाम की फ्लाइट से रत्नागिरी

का एक टिकट बुक करवा दो।" मैंने कहा।

"क्या मैं भी आपके साथ चल सकती हूं ?" सिवाय बंबई के मैंने और कुछ नहीं देखा। दूसरे, आपकी मां और बहन से मिलकर मुझे बहुत खुशी होगी।"

मैंने थोड़ी देर विचार किया और कहा, "ठीक है, चलो। पर एक बात का ध्यान रखना। उन पर तुम यह जाहिर न होने देना कि तुम एक रोबट हो।"

"क्यों ?"

"पुराने जमाने के इन लोगों को रोबट से आज भी डर लगता है। लाख कोशिश करने के बावजूद उसके मन की गलतफहमी दूर नहीं हुई है।"

"ठीक है। मैं उन्हें बिल्कुल मालूम नहीं होने दूंगी।"

"एक बार और। मेरी मां पुराने विचारों की है। उसे फैशन के ये कपड़े पसंद नहीं। तुम्हें वहां साड़ी पहननी पड़ेगी।" मैंने कहा।

"मेरे पास तो एक भी साड़ी नहीं है। मुझे खरीदारी करनी पड़ेगी।" उसने कहा।

टेबल का दराज खोलकर मैंने एक पैकेट बाहर निकाला और उसकी ओर खिसकाते हुए कहा, "खरीदारी करने के लिए अब समय नहीं है। फिलहाल यही पहन लो। बाकी वहां जाकर खरीद लेंगे।"

पैकेट हाथ में लेते ही वह पहचान गयी। हेमा के लिए उसी ने यह साड़ी खरीदी थी।

"डाक्टर... ?"

"रूबी, अब ज्यादा बातें करने का समय नहीं। जल्दी करो।" मैंने उसे वह विषय छेड़ने ही नहीं दिया।

* * *

हवाई जहाज के सफर में मैंने उससे ज्यादा कुछ नहीं कहा। जब हम घर पहुंचे तो मां दरवाजे पर खड़ी मेरी ही राह देख रही थी। मैंने झुककर मां के पांव छुए। आंखें मिचकाते हुए रूबी की ओर देखते हुए मां ने पूछा, "यह कौन है रे ?"

"यह रूबी है—मेरी सेक्रेटरी। यह एक अच्छी नर्स भी है।" मैंने जवाब दिया।

"नर्स है क्या ? अच्छा हुआ जो तू साथ लेता आया। मीरा के प्रसव की अब चिंता नहीं रही। आ बेटी, अंदर आ।"

मां के पीछे-पीछे हम घर के भीतर घुसे। अंदर मीरा एक आरामकुर्सी पर आंखें मूंदे बैठी हुई थी। उसका पेट बढ़ा हुआ था। उसके चेहरे पर थकान नजर आ रही थी। उसके माथे पर हल्के से हाथ रखकर मैंने कहा, "मीरा !"

उसने आंखें खोलीं। बड़ी कठिनाई से मुस्कराते हुए बोली, "भैया, आप कब

आये ?"

"अभी-अभी। कैसी है तू ?"

"ठीक हूं। डाक्टर पेंडसे ही मेरी देखभाल कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि घबराने की कोई बात नहीं। पहली बार थोड़ी-बहुत समस्या होती ही है। पर आप कैसे आ गये एकाएक ?"

"मां ने टैलेक्स देकर बुलवाया है।" मैंने कहा।

"मां तो बेहद डरपोक है। बेकार ही आपको बुलवा लिया। लेकिन आपको यहां पाकर मैं बहुत खुश हूं।"

"तुमसे मिले काफी अरसा बीत चुका था। इसलिए टैलेक्स पाते ही तुम्हारी चिंता होने लगी और मैं भागा आया।

"अरे यह कौन है ?" मीरा ने मेरे पीछे देखते हुए पूछा।

"यह रूबी है। मेरी सेक्रेटरी, लेकिन नर्स भी है।" मैंने कहा।

"सचमुच कितनी सुंदर है !" मीरा ने कहा। "और कितनी शरमा भी रही है।" मैंने पीछे मुड़कर देखा। बेरीलियम निकल-सा रूबी का चेहरा लाल हो गया था। मैं भी रूबी को शरमाते हुए पहली ही बार देख रहा था।

मां ने कहा, "अनिल मुंह-हाथ धो लो। मैं चाय बनाती हूं। खाने के बारे में बाद में सोचते हैं।"

तभी रूबी ने कहा, "मां, चाय मैं बनाती हूं, आप रहने दें।"

—"चाय बना सकती हो ?" मां ने पूछा।

"हां, पर खाना नहीं बना सकती।" रूबी ने कहा।

"अरे, इतनी बड़ी हो गयी। और अब तक खाना नहीं बना सकती ?" मां ने कहा।

"आप सिखा दें तो मैं एक दिन में सीख जाऊंगी।"

"एक दिन में खाक सीखोगी।" मां ने कहा, "शादी के बाद पति को क्या बनाकर खिलायेगी ?"

"ओ मां, शादी से पहले मुझे भी कहां कुछ आता था ?" मीरा ने कहा।

"तुम तो पूरी आलसी थी। मैंने कितना कहा, पर तू सीखना चाहती, तब न !" मां ने कहा।

"फिर भी, सब सीख ही गयी ना ?" मीरा बोली।

"खाना बनाना सिखाने वाली किताब से सीखा होगा ?" रूबी ने पूछा।

"हां, बिल्कुल।" मीरा ने कहा, "वो किताब तुम्हें दूं क्या ?"

"मुझे दीजिये पढ़ने के लिए," रूबी ने कहा। "कल दोपहर का खाना मेरे जिम्मे।"

"पहले चाय तो बनाकर दिखाओ। खाना बनाने में अभी वक्त लगेगा।...

इतनी जल्दी नहीं आ जाता सब।"

रूबी मां के साथ रसोईघर में चली गयी। वाकई रूबी ने चाय बहुत अच्छी बनायी थी। मां ने भी कहा, "वाह बेटी, चाय तो सचमुच अच्छी बनी है। पर बेटी, तू क्यों नहीं लेती ?"

चकराकर रूबी ने मेरी ओर देखा। रोबट क्या कुछ खाते-पीते होंगे, इस बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था। कभी ऐसा मौका ही नहीं आया था।

"रूबी चाय नहीं पीती।" मैंने स्थिति को संभालते हुए कहा। फिर खाली कप नीचे रखते हुए मैंने रूबी को घर दिखाने की बात की।

खपरैल की छत वाला, पुराने ढंग का, लंबा-चौड़ा घर था हमारा। लेकिन अंदर हौलोविजन सहित सभी आधुनिक सुख सुविधाएं मौजूद थीं। रूबी को मैं पिछवाड़े ले गया। वहां नारियल के बगीचे दिखाये। पवन-चक्की द्वारा कुएं से पानी कैसे निकाला जाता है, यह भी दिखाया। लेकिन सच तो यह था कि मैं उससे बातचीत करना चाहता था।

मैंने पूछा, "रूबी, क्या तुम्हें हमारी तरह रोज खाना पड़ता है ?"

"नहीं।"

"तो फिर तुम्हें ऊर्जा कैसे मिलती है ?"

"हमारे शरीर में न्यूक्लियर-सेल्स होते हैं। हमारी गतिविधियां, मस्तिष्क की कार्यक्षमता इत्यादि सभी इन्हीं सेल्स की ऊर्जा पर निर्भर करते हैं।" रूबी ने कहा।

"अब क्या होगा ? मां ने खाना खाने की जिद की तो क्या करेंगे ?"

"आप चिंता न करे। मां की खुशी के लिए मैं खा लूंगी। हमारे पेट में एक थैली होती है, जिसे बाद में खाली किया जा सकता है। औपचारिकता निभाने के लिए होटलों में कई बार यह नाटक करना पड़ता है।" रूबी ने कहा।

"अच्छा ?" मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। "लेकिन मैं इस बात से कैसे अनभिज्ञ हूं ?"

"क्योंकि आप मुझे कहीं ले ही नहीं गये।" रूबी ने कहा।

इस पर क्या बोलूं, मुझे कुछ नहीं सूझा।

* * *

रात को खाना खाने के बाद मैं उठा और बरामदे में आ गया। मुझे महसूस हुआ कि वहां कोई कुर्सी पर बैठा है। मैंने तुरंत बत्ती जलायी। देखा तो वहां रूबी बैठी थी। उसके हाथ में एक किताब थी।

"रूबी ? तुम सोई नहीं ?" मैंने पूछा।

"हमें आपकी तरह नींद की आवश्यकता नहीं होती।"

"अंधेरे में क्या कर रही थी ?" मैंने पूछा।

"पाक-शास्त्र की किताब पढ़ रही थी।"

"अंधेरे में ?"

"हम अंधेरे में भी देख सकते हैं। हमारी आंखों में इन्फ्रारेड कैमरे होते हैं।" उसने कहा और पन्ने पलटने लगी।

"पर तुम तो केवल पन्ने पलट रही हो।"

"हमें आपकी तरह प्रत्येक शब्द नहीं पढ़ना पड़ता। प्रत्येक पन्ना ज्यों का त्यों हमारे मैमरी-बैंक में जैरोक्स कापी की तरह अंकित हो जाता है। और फिर आवश्यकतानुसार वह जानकारी हम जब जी चाहें तब इस्तेमाल कर सकते हैं।" रूबी ने कहा।

"किताब रख दो। आओ, ज़रा चलकर वहां बरामदे में बैठते हैं।" मैंने कहा।

* * *

बरामदे में हम लकड़ी के रेलिंग पर झुककर खड़े हुए थे। ठंडी हवा चल रही थी। बगीचे में लगे रातरानी के फूलों की सुंगध चारों ओर महक रही थी। नारियल के पत्तों की ध्वनि और दूर समुद्र से आने वाली लहरों के संगीत को सुनते हुए हम चुपचाप खड़े थे–बिना कुछ बोले। कुछ देर बाद वह धीरे से बोली, "डाक्टर, एक बात पूछूं ?"

मैं जानता था वह क्या पूछना चाहती है। मैंने पूछा, "हेमा के बारे में ?"

"हां।"

"वह अध्याय अब समाप्त हो चुका।" मैंने कहा।

"ठीक है।" उसने कहा।

"तुम्हें घर पसंद आया ?" मैंने पूछा।

"हां। और घर के सभी लोग भी अच्छे लगे। आप मानव कितने भाग्यवान हैं।" उसने कहा।

"वह कैसे ?" मैंने पूछा।

"आपकी मां होती है। पिता होते हैं। भाई-बहन होते हैं। लेकिन हमारा कोई नहीं होता, हम बिल्कुल अकेले होते हैं। कारखाने में हमारा जन्म होता है और निर्धारित समय पूरा होते ही हम पुनः कारखाने लौटते हैं और मर जाते हैं।" फिर कुछ देर रुककर वह बोली, "डाक्टर, हम यहां कितने दिन रहेंगे ?"

"सात-आठ दिन। लगता है, मीरा को कल या परसों ही डिलीवरी के लिए अस्पताल ले जाना पड़ेगा। उसके बाद वापस चलेंगे। क्यों , मन नहीं लग रहा यहां ?" मैंने पूछा।

"नहीं, वो बात नहीं। मैं तो चाहती हूं कि हमेशा के लिए यहां रह जाऊं। अभी इसी क्षण यदि मृत्यु आ जाये तो कितना अच्छा हो।"

"मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया। बोला, "ऐसा मत कहो रूबी।" लगा जैसे मेरे गले में कुछ अटक गया है।

कुछ देर बाद वह बोली, "डाक्टर, बच्चे का जन्म कैसे होता है मैं जानती हूं। लेकिन देखने का अवसर कभी नहीं मिला। क्या मैं वह देख सकती हूं ? मीरा के साथ मैं अस्पताल जा सकती हूं ?"

"क्यों नहीं ? बल्कि वहीं तुम्हारी ज्यादा आवश्यकता रहेगी। वैसे रूबी, तुम्हें यहां भी काफी काम करना पड़ेगा। कर लोगी ना ? तुम्हें कोई आपत्ति··· ?" मैंने पूछा।

"'आपत्ति कैसी ! बल्कि यह सब करके मुझे तो सुख मिलेगा।"

"तुम्हारी खुशी ही मेरी खुशी है। सच, प्रिय रूबी।" ऐसा कहते हुए मैंने उसे अपनी ओर खींचा।

चकराकर वह पीछे हटी। "डाक्टर, यह क्या कर रहे हैं आप ?" उसने पूछा।

"तुम मुझसे प्यार करती हो ना ? मुझे क्या चाहिए, इतना भी तुम नहीं जानती ?"

"क्या चाहते हैं, आप ?" उसने पूछा।

"तुम्हें।"

"क्या मतलब ?"

तभी अंदर से किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। मैं रूबी से दूर हो गया। मां बरामदे में आकर बोली, "अरे अनिल, बाहर क्या कर रहे हो ?"

"कुछ नहीं मां। नींद नहीं आ रही, इसलिए हम गप्पें मार रहे थे।" मैंने कहा।

"अच्छा, अच्छा, अब सो जाओ। कल काफी भाग-दौड़ करनी पड़ेगी तुम्हें।"

* * *

दूसरे दिन सुबह से रूबी रसोईघर में काफी व्यस्त दिखाई दे रही थी। उसने थोड़ी देर बाद हमारे सामने हमारा एक विशिष्ट भोजन परोसकर हम सबको आश्चर्य चकित कर दिया। दोपहर को उसने हमारा एक परंपरागत व्यंजन बनाकर पहले से कहीं ज्यादा चकित कर डाला। मां को यकीन नहीं हो पा रहा था कि कल तक इसे खाना बनाना नहीं आता था।

मीरा जब से आयी थी, घर के कामकाज में बढ़ोतरी हो गयी थी। अब हाथ बंटाने वाला कोई आ गया है, यह देख मां कुछ ज्यादा ही खुश थी। तीसरे दिन, काफी सबेरे ही मीरा को प्रसव-पीड़ा शुरू हो गयी और उसे तुरंत अस्पताल ले

जाना पड़ा। लेबर रूम में मैं और रूबी दोनों उसके पास थे। रूबी के लिए वह दृश्य देख पाना बहुत कष्टदायक था। फिर भी बीच-बीच में मेरा हाथ जोर से पकड़कर वह अंत तक वहां हिम्मत के साथ रुकी रही।

"बधाई हो अनिल। लड़का हुआ है। तुम मामा बन गये हो।" डाक्टर पेंडसे ने बताया। डाक्टर नवजात शिशु को अपने हाथों में लिए खड़े थे। नन्हा शिशु चमकदार और गुलाबी रंग का दिख रहा था।

कुछ क्षण रूबी शिशु को एकटक देखती रही। फिर धीरे से उसने डाक्टर पेंडसे से पूछा, "डाक्टर, क्या मैं इसे छू सकती हूं।" डाक्टर पेंडसे हंसे और रूबी से शिशु को छूने को कहा।

डरते-डरते वह आगे बढ़ी और हल्के से शिशु को छुआ। तब रेशम से मुलायम उसके बालों को सहलाया और एकाएक घबराकर पीछे हट गयी। फिर उसने मीरा की ओर देखा। मीरा बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसका पीला पड़ गया चेहरा पसीने से तरबतर था। लेकिन फिर भी मां होने का संतोष उसके चेहरे पर छलक रहा था। थकी नजरों से उसने रूबी की ओर देखा।

"बहुत तकलीफ हुई क्या ?" रूबी ने पूछा।

मीरा हल्के से मुस्करायी और बोली, "इस दर्द में क्या सुख है, तुझे अभी नहीं पता चलेगा रूबी। जब तुम मां बनोगी, तभी पता चलेगा।"

रूबी ने सिर झुका लिया।

मां को यह खुशखबरी सुनाने हम दोनों बाहर आये। काफी देर तक रूबी कुछ नहीं बोली। फिर अचानक उसने पूछा, "डाक्टर, क्या मीरा की तरह मुझे बच्चा हो सकता है ?"

"नहीं, रूबी ! दुर्भाग्य से तुम एक रोबट हो...और रोबट में मानव की तरह प्रजनन-शक्ति नहीं होती।"

लेकिन मैं एक स्त्री बनना चाहती हूं।...एक मां बनना चाहती हूं।" उसने रुआंसी होकर कहा। "डाक्टर, कल रात जब आपने मुझे अपने पास खींच लिया था, तभी से लगता है कि मुझमें कोई परिवर्तन आ गया है। यह परिवर्तन कल आपके स्पर्श के बाद हुआ है। वैसा अनुभव मेरी मैमरी-बैंक में नहीं है। उन मधुर क्षणों के बाद मुझे लगता हे कि मैं रोबट नहीं रही। लगता है मैं एक स्त्री बन गयी हूं। एक पूर्ण स्त्री।"

मैंने उसका हाथ थाम लिया। उसने कहना जारी रखा, "और डाक्टर, उस नन्हे से बच्चे के शरीर के स्पर्श का अनुभव भी कुछ अलग ही था। उस स्पर्श से मेरा पूरा शरीर सुख की अनुभूति से तरंगित हो उठा था। उसी क्षण यह अहसास हुआ कि मेरा हाथ कितना यंत्रवत् और निर्जीव है। यह शरीर मुझे बोझ लगने लगा। बेरीलियम निकल का यह शरीर छोड़कर मुक्त होने को मन चाहने लगा।
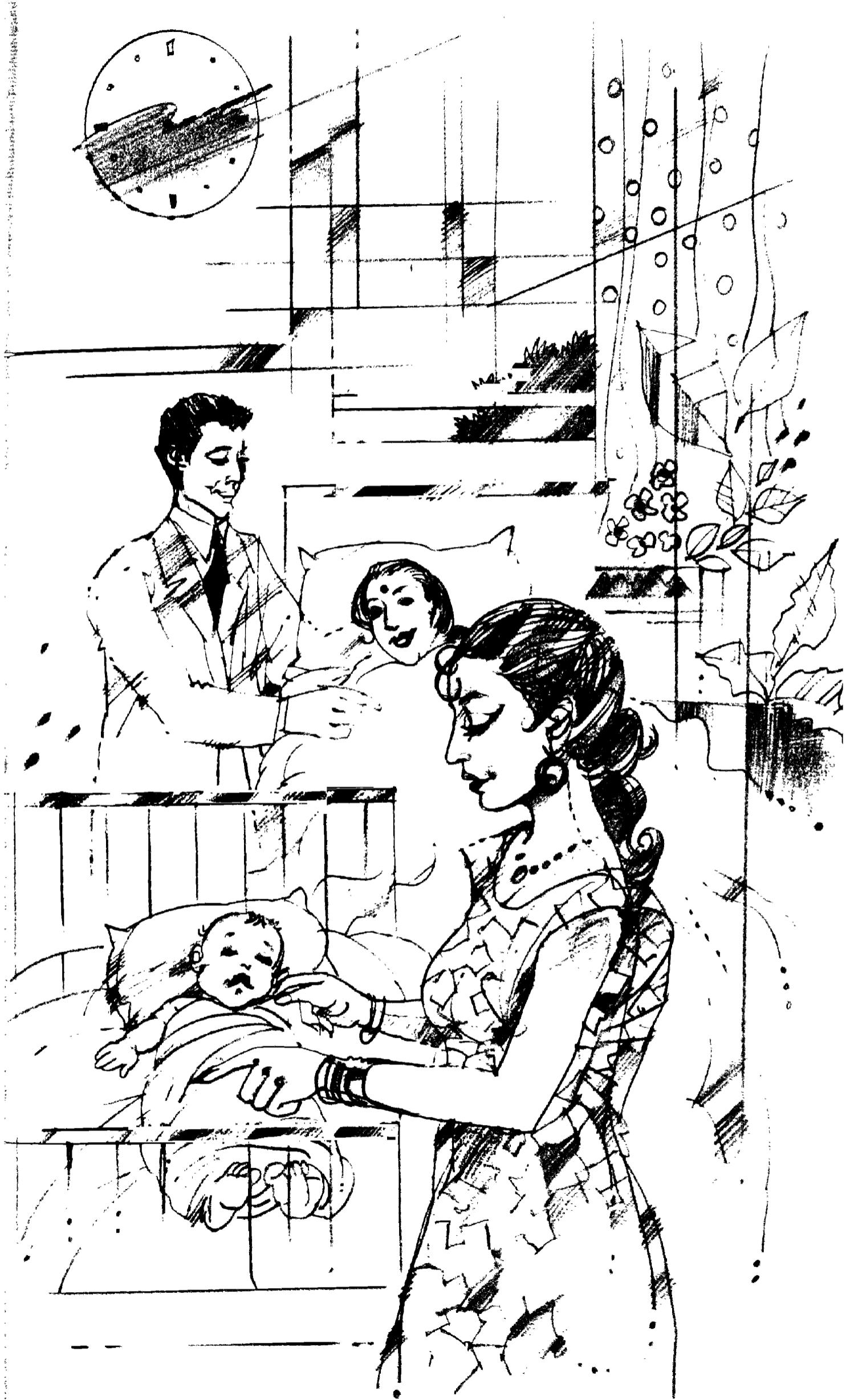
डाक्टर, बताइये ना, मुझे ऐसा क्यों लग रहा है ? क्या हो रहा है मुझे ?"

"आज से लगभग पचास हजार वर्ष पूर्व मनुष्य को भी ऐसी ही अनुभूति हुई थी, जो आज तुम्हें हुई है। मनुष्य जब एक पत्थर को उठाकर दो पैरों पर खड़ा हुआ तो उसे यह अनुभूति हुई कि वह अन्य जानवरों से अलग है। वह क्षण था मानव संस्कृति के उदय का। शिशु को छूकर तुम्हें भी आज ठीक वैसी ही अनुभूति हुई है। इससे अन्य किसी भी रोबट से तुम स्वयं को अलग अनुभव करने लगी हो। यही वह क्षण था जिससे मानव को अपने बौद्धिक अस्तित्व का अहसास हुआ। उसी प्रकार एक नयी संस्कृति का जन्म होगा। कुछ हजार वर्ष बाद हो सकता है कि रोबट जीते-जागते मानव बन जायें। तुम्हारी इस रोबट-संस्कृति में उस समय पता नहीं मानव का क्या स्थान होगा ? शायद वह सुपरह्यूमन हो जायेगा या फिर तुम्हारा गुलाम। आज हमने एसिमौव के तीन नियमों में जिस तरह तुम्हें जकड़ रखा है, तब वही परिस्थिति शायद हमारी हो। लाज आफ ह्यूमैनिटिक्स की वह शुरुआत होगी। हो सकता है कि पृथ्वी पर मनुष्य का अस्तित्व ही न रहे। वह किसी अन्य ग्रह पर रहने लगे। भविष्य में क्या होगा, कहा नहीं जा सकता। परंतु रूबी, तुम्हारी और हमारी दृष्टि से आज की अनुभूति का यह क्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें कोई शक नहीं।"

"पर, डाक्टर ! मेरा क्या होगा ? क्या मैं ऐसी ही बनी रहूंगी ? बस, एक रोबट...जीवन भर...?" उसने पूछा।

"कोई चारा नहीं है रूबी। तुम्हारा मन भले ही मानव जैसा हो, पर शरीर तो रोबट का ही है। फिलहाल तुम उसकी मर्यादा नहीं लांघ सकती। रूबी, अब बंबई लौटने पर तुम्हें राघव के पास हमेशा-हमेशा के लिए जाना पड़ेगा। हमारी फिर कभी भेंट होगी या नहीं, क्या पता।"

"नहीं डाक्टर, ऐसा कुछ ना कीजियेगा। मैं आप ही के पास रहना चाहती हूं। मैं आपसे से प्यार करती हूं, डाक्टर।" उसने कहा।

"मैं जानता हूं। और रूबी... और सच कहूं तो मैं भी तुमसे प्यार करता हूं।" उसका हाथ दबाते हुए मैंने कहा।

"सच ? फिर आप क्यों मुझे वापस रोबट-कंपनी में भेज रहे हैं ?" उसने पूछा।

"राघव तुम्हारे मस्तिष्क का अध्ययन करना चाहता है। तुम्हारे अलग होने पर मुझे भी उतना ही दुख होगा जितना तुम्हें। लेकिन हमारा बिछड़ना ही हमारे हित में है। भविष्य में कभी न कभी मेरी जाति के किसी अनिल और तुम्हारी जाति की किसी रूबी, इन दोनों का मिलन अवश्य होगा। तब तक हमें अपनी-अपनी मर्यादाओं का पालन करना ही होगा।"

"लेकिन, डाक्टर..."

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, रूबी। क्या तुम एसिमौव का नियम भूल गयी हो ? तुम्हें उस नियम और मेरी आज्ञा का पालन करना होगा।" उसके बाद घर आने तक हम एक शब्द भी नहीं बोले। लेकिन उसका हाथ अवश्य मेरे हाथ में था।

* * *

मीरा को लड़का हुआ है, यह सुनकर मां की आंखें खुशी से छलक आयीं।

"तेरा लाख-लाख शुक्र है।" आंखें पोंछते हुए मां ने कहा, "बस, अब तुम दोनों शादी कर लो और मुझे एक पोता दे दो। मेरा तो जीवन ही सकारथ हो जायेगा।"

"मां, यह सब क्या कह रही हो... ?" मैंने आपत्ति की।

"मैं समझती नहीं क्या ?" हंसकर मां ने कहा। फिर रूबी की पीठ पर हाथ फिरा कर कहा, "मुझे तो रूबी बहुत पसंद है। यह अच्छी पत्नी साबित होगी। क्यों रूबी, तुम मेरी साध पूरी करोगी ना ?" उसने पूछा।

"पर मां...।" रूबी ने कहना चाहा।

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहती। एक बार तय हो गया, सो हो गया। समझ लो मेरा यह आदेश है।" मां ने कहा।

रूबी लड़खड़ाती हुई मां के पास से हटकर जैसे-तैसे अपना संतुलन संभालते हुए दूसरे कमरे में घुस गयी।

"देखा, कैसे शरमा गयी ! देखो अनिल, अब तुम दोनों मंदिर जाओ और मीठे का चढ़ावा चढ़ाओ और हां, वापस जल्दी आ जाना।"

मां की बातों में मुझे कोई रुचि नहीं थी। मैं तेज कदमों से रूबी के कमरे की ओर गया।

रूबी एक आरामकुर्सी में बैठी थी। उसकी आंखें बंद थीं और गर्दन पीछे की तरफ लुढ़की हुई थी। उसके पास जाकर मैंने उसे पुकारा, "रूबी !"

परंतु उसने आंखें नहीं खोलीं।

मैंने उसका हाथ थामा। वह किसी निर्जीव धातू की तरह ठंडा था। "रूबी !" मैंने उसे कंधों से पकड़कर हिलाते हुए पुकारा परंतु मेरी आवाज उसके पौज़िट्रौनिक मस्तिष्क तक नहीं जा रही थी।

मैं राघव को फोन करने के लिए बाहर लपका।

* * *

रूबी की अच्छी तरह जांच करने के बाद राघव खड़ा हुआ और बोला, "अनिल, मुझे दुख है, अब कुछ नहीं किया जा सकता।"

"क्या मतलब है तुम्हारा ?" मैंने घबराकर पूछा।

"वह एसिमौव के नियमों की शिकार हो गयी है। तुमने उसे मेरे पास लौटने का आदेश दिया था। परंतु मां उससे पोता चाहती थी, जो बिल्कुल असंभव था। वह ना इधर जा पा रही थी, ना उधर। बीच में फंस गयी थी। तीसरा नियम पता ही है तुम्हें ?"

"हां। पहले दो नियमों का यदि उल्लंघन नहीं होता है तो रोबट अपना अस्तित्व बनाए रख सकता है।" मैंने कहा।

"तुम दोनों की आज्ञा का पालन या उल्लंघन दोनों ही उसके लिए असंभव थे। ऐसे में अपना अस्तित्व बनाए रखना तो और भी असंभव था। कोई निर्णय लेना उसकी क्षमता से बहुत परे था। अतः उसके सभी सर्किटस् कुछ ही क्षणों में जलकर खाक हो गये। दूसरे शब्दों में कहें तो 'रूबी इज़ डेड', वह मर चुकी है।" उदास होकर राघव ने कहा।

मैंने रूबी का बर्फ-सा ठंडा हाथ अपने हाथों में ले लिया।

"रूबी...रूबी... !"

मेरी आंखों से आंसू गिरने लगे।

**अंग्रेजी से सुनीता परांजपे द्वारा अनूदित**

# स्वतंत्र आदमी

शुभदा गोगाटे

दोपहर के तीन बजे आसावरी और शेखर 'गर्भ विकास केंद्र' पहुंचे। केंद्र की भव्य इमारत तेज धूप में चमक रही थी। सफेद रंग की उस इमारत की पहली मंजिल पर मोटे-मोटे अक्षरों में 'गर्भ विकास केंद्र' लिखा था। कांच का विशाल प्रवेश द्वार अपनी भव्यता के कारण मन में डर पैदा कर रहा था।

सहमें से, वे दोनों भीतर घुसे। भीतर का दृश्य देखकर दोनों हैरान रह गये। इमारत के भीतरी स्वरूप का बाहरी स्वरूप से कोई संबंध नहीं था। प्रवेश द्वार से भीतर घुसते ही एक लंबा-गोलाकृति का स्वागत-कक्ष था। कक्ष के दायें सिरे पर दो लकड़ी के सुंदर बेशकीमती टेबल रखे थे। उनके पीछे बैठी दो हंसमुख युवतियों से दो युवक घुलमिल कर बैठे बातें कर रहे थे। शेष पूरी जगह में भिन्न-भिन्न समूहों में आरामदायक सोफा-सेट रखे थे। लेकिन किसी भी सूरत में उस जगह को अटी हुई नहीं कहा जा सकता था। जगह-जगह घर के भीतर रखे जाने वाले पौधे सुशोभित थे। बीचों-बीच सेंटर-टेबलों पर रंगबिरंगी पत्रिकाएं रखी थीं। दीवारें सुंदर नक्काशी वाले पीले रंग के वाल-पेपर से शोभायमान थीं। दीवारों के कोने हरे-भरे पौधों की कतार से सजे हुए थे। स्वागत कक्ष में बायीं ओर की दीवार पर एक विशाल पोस्टर लगा था। पोस्टर में तीन-चार साल की एक नन्ही बच्ची की तस्वीर थी, जिसमें लड़की की बगल में कुत्ते का एक छोटा-सा पिल्ला था। उसे देख वह बड़ी प्यारी मुस्कान बिखेर रही थी। उसके लहराते बाल, हाथों में कुत्ते का वह गुदगुदा पिल्ला और उसकी मनमोहक मुस्कान देखने वाले को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी।

प्रवेश द्वार से आसावरी और शेखर जब अंदर आये तो वे भी कुछ क्षण उस पोस्टर को देखते रह गये। उसके बाद, शेखर ने आसावरी को एक कुर्सी पर बिठाया और स्वयं पूछताछ के लिए स्वागत-कक्ष की तरफ आगे बढ़ा।

उन्हीं की तरह स्वागत-कक्ष में और भी बहुत से लोग थे। किंतु खुली जगह और अलग-अलग समूहों में बैठने की व्यवस्था के कारण कहीं भी भीड़-भाड़ नहीं थी। आसावरी जिस कोने में बैठी थी, वहां तो और भी शांति थी।

शेखर लौटा और असावरी के पास बैठ गया। अब दोनों डाक्टर के बुलावे की प्रतीक्षा करने लगे। मन को भली लग रही सजावट तथा सार्वजनिक स्थल होने के बावजूद एकांत के कारण दोनों कुछ खुले और फिर आराम से बातें करने लगे।

कुछ देर बाद एक नर्स ने आकर बताया कि उन्हें डा. माने ने बुलाया है। उसके पीछे-पीछे वे दोनों डा. माने के कमरे की तरफ चल दिये।

डा. माने के कमरे की सजावट भी मन मोह लेने वाली थी। इन्हें देख खड़े होकर स्वागत करने वाले डा. माने भी हंसमुख थे। शेखर से हाथ मिलाया और दोनों से बैठने को कहा।

आसावरी ने उन्हें डा. नलिनी जोशी द्वारा दी गयी रिपोर्ट पकड़ा दी। डा. जोशी एक युवा स्त्री विशेषज्ञ थीं और युवा गर्भवती स्त्रियों में काफी लोकप्रिय थीं, विशेष रूप से आसावरी की आयु वाली युवतियों में।

बीसवीं सदी का विशेषज्ञता संबंधी सामान्यीकरण अर्थात स्त्री रोग विशेषज्ञ, बाल रोग विशेषज्ञ अब बदल चुका था। शरीर की किसी भी समस्या अथवा रोग को और अधिक विशेषज्ञताओं में बांट दिया गया था। अब एक ओर शरीर, सामान्य फिटनेस, कमजोरी, कायापलट और विकास की गति आदि के विशेषज्ञ और दूसरी ओर शारीरिक बीमारियां का वास्तव में इलाज करने वाले विशेषज्ञ, ऐसे दो वर्ग बन चुके थे। लोगों के मन में यह बात बिठा दी गयी थी कि समय-समय पर आवश्यक शारीरिक जांच करवाकर अपने शरीर को सुदृढ़ और निरोगी रखना उनका कर्तव्य है। विशेषज्ञों की राय सरकारी खर्चे पर मिलती थी, इसलिए लोग भी इस बारे में पूरा ध्यान रखते थे।

जननक्षम युवतियों के लिए कानूनी तौर पर आवश्यक था कि वे महीने में एक बार स्त्री रोग विशेषज्ञ से अपनी जांच करवायें। इसी कारण, आसावरी सुबह डा. जोशी के पास गयी थी। डा. जोशी ने हमेशा की तरह अनेक यंत्रों द्वारा उसे जांचा और बताया कि वह मां बनने वाली है। आसावरी को भी यही अंदेशा था, क्योंकि उसके 'महीने' को सात-आठ दिन ज्यादा हो चुके थे। डा. जोशी ने बताया कि उसका अंदेशा सही था और उसे गर्भधारण किये तेईस दिन हो चुके थे।

आसावरी जानती थी कि अब 'गर्भ विकास केंद्र' जाना उसके लिए आवश्यक होगा। लेकिन तुरंत जाना होगा, वह यह नहीं जानती थी। डा. जोशी ने रिपोर्ट बनायी और कहा, "आज दोपहर बाद यह रिपोर्ट लेकर आपको 'गर्भ विकास केंद्र' जाना होगा। हर प्रकार की शेष जानकारी वहां के विशेषज्ञ आपको देंगे।"

"अं··· ? कल-परसों चली जाऊं तो चलेगा ?" आसावरी ने पूछा। एक तो 'गर्भ विकास केंद्र' उसके घर से बहुत दूर था, और दूसरे उस इलाके की आसावरी को कोई जानकारी नहीं थी। अतः वह चाहती थी कि शेखर भी उसके साथ जाये।

लेकिन शेखर तो सुबह ही काम पर चला गया था।

डा. जोशी उसकी परेशानी समझ गयी। वह बोलीं, "अरे इतनी-सी बात है ना ? हम उनसे आज की छुट्टी लेने को कह देंगे, ठीक है ?"

"लेकिन वह तो सुबह काम पर जा चुके हैं।" आसावरी ने कहा।

"मैं उन्हें फैक्ट्री में फोन किये देती हूं। मेरे कहने पर उन्हें अवश्य छुट्टी मिल जायेगी और फिर यह छुट्टी उनकी छुट्टियों में से कटेगी भी नहीं। यह एक विशेष प्रकार की छुट्टी मानी जाती है।" डा. जोशी ने मुस्कराते हुए कहा।

आसावरी का चेहरा उसकी हैरानी दर्शा रहा था। वह देख डा. जोशी ने कहा, "आसावरी जी, अब आप मां बनने वाली हैं। हमारे देश की दृष्टि से आप और आपकी संतान बड़ी अहमीयत रखते हैं। इस देश का भविष्य आपके गर्भ में पल रहा है। अतः वह सुदृढ़, निरोगी और संतुलित जन्मे यह आवश्यक है। इसीलिए सरकार हर दृष्टि से प्रत्यनशील है। आपकी और बच्चे की जिम्मेदारी गर्भधारण करने के दिन से ही सरकार की है और सरकार अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाती है।"

डा. जोशी इतना लंबा लेक्चर दे डालेंगी, आसावरी को इसकी कल्पना नहीं थी। वह दुबककर बैठ गयी।

डा. जोशी ने शेखर की फैक्ट्री का टेलीफोन नंबर आसावरी से लिया और उसी क्षण उससे बात की। उसके बाद शेखर के बॉस से बात की। फिर मुस्कराते हुए उन्होंने फोन नीचे रखा और कहा, "लीजिए, आपके शेखर साहब तुरंत घर पहुंच रहे हैं। दोपहर बाद उनके साथ केंद्र हो आइये। इस महत्वपूर्ण काम में एक दिन का भी विलंब न हो। अच्छा नागरिक बनाने के लिए प्रत्येक क्षण कीमती है।"

डा. माने के सामने बैठे-बैठे आसावरी को वह सब याद आ रहा था।

डा. माने ने ध्यान से रिपोर्ट पढ़ी और उसकी ओर देख प्रसन्न होकर बोले, "बधाई हो, मिसिस देव, आप मां बनने जा रही हैं। आपको भी बधाई, मिस्टर देव !"

"थैंक यू, " आसावरी और शेखर ने उन्हें लगभग एक साथ धन्यवाद कहा।

डा. माने बोले, "बच्चे का जन्म आनंद तो देता है, लेकिन साथ ही हमें अपने उत्तरदायित्वों का ज्ञान भी कराता है। आपकी संतान को एक उत्तम नागरिक बनाने के लिए हमें अभी से प्रयत्नशील रहना होगा। पूरी आशा है कि इसके लिए आप सहयोग करेंगे। है ना ?"

आसावरी और शेखर ने सिर हिलाये। डा. माने पुनः बोले, "गर्भवती महिलाओं और उनकी होनेवाली संतानों की शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक जिम्मेदारी केंद्र की है। आपको रोजाना दो-एक घंटे के लिए यहां आना होगा। समय आप अपनी

सुविधा के अनुसार तय कर लीजिए। लेकिन आपको खाना खाने से पहले आना होगा। हर रोज सुबह अथवा रात्रि का एक भोजन आपको यहां, हमारे साथ लेना होगा। भोजन के साथ यहां कुछ व्यायाम और खेल सिखाए जायेंगे। अन्य गर्भवती महिलाओं के साथ गपशप और बौद्धिक शिक्षण के लिए भी थोड़ा समय देना होता है। इसकी आपको और आपकी संतान को नितांत आवश्यकता है। आपके लिए आवश्यक सभी दवाइयां, टॉनिक्स आदि का प्रबंध यहां से किया जायेगा। हर सप्ताह आपकी पूरी जांच की जायेगी और आवश्यकतानुसार दवा तथा अन्य चीजों में परिवर्तन भी। बाद में, केंद्र से संलग्न किसी एक अस्पताल में आपके नाम को भी हम दर्ज करायेंगे–आपकी सुविधानुरूप। ठीक है ? अब यह फार्म भर दीजिये।" आसावरी के सामने चार पन्नों का एक फार्म बढ़ाते हुए डा. माने बोले, "आप इसमें केवल अपना नाम, पता, आयु लिखकर हस्ताक्षर कर दीजिये। कल आपकी पूरी जांच की जायेगी, तभी इस फार्म में शेष जानकारी भरी जायेगी... और हां, बेटा होगा या बेटी, आप यह जानने के लिए भी उत्सुक होंगे। है ना ?"

थोड़ा-सा मुस्कराते हुए आसावरी ने गर्दन हिलायी।

"ऐसा कीजिये, आप दायीं तरफ जो कमरा है, उसमें जाइये। वहां बैठी डाक्टर आपको बता देंगी कि आपको लड़का होगा या लड़की।"

आसावरी उस कमरे में गयी, तब शेखर ने पूछा, "क्या बच्चे के लिंग के बारे में इतनी जल्दी पता चल सकता है ?"

"जी हां। गर्भधारण के तुरंत बाद किसी भी समय इस बात का पता लगाया जा सकता है। विज्ञान इतना प्रगति कर चुका है कि गर्भ का लिंग जानने के लिए अब पिछली सदी की तरह पांचवें महीने तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। हम इक्कीसवीं सदी पार कर रहे हैं।"

डाक्टर बोल ही रहे थे कि आसावरी वहां आ पहुंची। शेखर ने जब कार्ड अपने हाथ में लिया तो अनुभव किया कि आसावरी कुछ उतावली नजर आ रही थी। वह कारण के बारे में सोच ही रहा था कि डा. माने ने कार्ड को एक नजर देखते हुए प्रसन्न होकर कहा, "गुड, आपको लड़का होने वाला है। आप सचमुच बहुत लकी हैं।"

शेखर भी खुश था। वैसे लड़का हो या लड़की, उसके लिए समान खुशी की बात थी। लेकिन फिर भी, लड़के के प्रति उसका खिंचाव अधिक था। और अब यह सुन उसकी खुशी दुगनी हो गयी थी कि उनके यहां लड़का होगा।

इसी खुशी में उन्होंने डा. माने से विदा ली और पहली मंजिल पर पहुंचे। वहां नर्स की राय लेकर सुबह ग्यारह से एक बजे का समय निश्चित किया और तब दोनों घर लौट आये।

अगले ही दिन से आसावरी नियमित रूप से केंद्र में जाने लगी। चार-पांच

दिनों में ही यह उसकी दिनचर्या बन गयी। घर के समीप बस स्टैंड पर वह सुबह पौने ग्यारह के करीब पहुंच जाती थी। कुछ मिनट बाद केंद्र की बस आती थी। आसावरी से अलावा बस में पहले से बारह गर्भवती महिलाएं होती थीं। आसावरी बस में चढ़ने वाली अंतिम सवारी होती। इसलिए उसके बाद बस सीधे केंद्र जाया करती थी। लगभग ग्यारह बजे वे तेरह महिलाएं केंद्र में प्रवेश करतीं। अन्य स्थानों से आने वाली महिलाएं भी उस समय आती दिखायी देती थीं। केंद्र में आने वाली इन महिलाओं के भिन्न-भिन्न समूह बनाये गये थे। आसावरी के समूह में उसके सहित दस गर्भवती लड़कियां थीं। उसकी बस में आने वाली मंजरी पटेल भी उसी के समूह में थी। खुले दिल की और बातूनी मंजरी बस में और समूह में उसके साथ होने के कारण चार-पांच दिनों में उसकी अच्छी दोस्त हो गयी।

आसावरी और मंजरी के समूह का काम पहली मंजिल पर होता था। आधा घंटा प्रसव सुविधा से होने के लिए कुछ व्यायाम कराये जाते थे। तत्पश्चात पंद्रह मिनट का विश्राम होता था। यह समय होता था एक-दूसरे से बातचीत करने का, एक-दूसरे को और लीडर को यदि कोई दिक्कत हो तो बताने का। तब व्यायाम के कपड़े बदलकर वे केंद्र के ढीले-ढाले लंबे गाउन पहन लेती थीं। इसके बाद आधे घंटे के लिए भोजन का कार्यक्रम चलता था। हर रोज ठीक एक ही समय पौष्टिक और गरमागरम भोजन मिलता था। इसी समय प्रत्येक को दवाई और टानिक की खुराक भी दी जाती थी।

भोजन के बाद पौन घंटा विश्राम और बौद्धिक शिक्षण के लिए होता था। आसावरी को लगा कि बौद्धिक शिक्षण यानी अब लंबा-चौड़ा भाषण सुनना पड़ेगा। किंतु उसका यह अनुमान गलत निकला। पहले ही दिन उनके समूह को दो-दो में बांट दिया गया। अब उसके साथ मीनाक्षी थी। मीनाक्षी आसावरी से एक ही दिन पहले केंद्र में दाखिल हुई थी। आसावरी से कुछ बड़ी दिखने वाली मीनाक्षी हमेशा गंभीर नजर आती थी। उसके बोलने में भी अजीब-सी कड़ुवाहट होती थी। आसावरी ने पहले ही दिन इसे अनुभव कर लिया।

भोजन के बाद उन दोनों को एक छोटे केबिन में ले जाया गया। वहां चश्मा पहने एक अधेड़ उम्र का आदमी उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। किसी प्रोफेसर की तरह दिख रहा था वह। आसावरी और मीनाक्षी के अंदर आने पर उसने उन्हें बैठने को कहा और बोलने लगा, "अगले पौने घंटे के लिए मैं आपका बौद्धिक शिक्षक हूं। वैसे बौद्धिक शिक्षण नाम जरा अटपटा-सा लगता है। दरअसल पौन घंटे का यह समय आपके विश्राम के लिए है। लेकिन साथ ही आपके बच्चे के शिक्षण की नींव डालने का काम भी धीरे-धीरे शुरू करना है। आप तो जानती ही होंगी कि बच्चा जब पेट में आता है उसी समय से वह आवाजें सुन सकता है...या यूं कहें कि वह विभिन्न आवाजों को महसूस कर सकता है और बार-बार

उन आवाजों को सुने तो उन्हें पहचान भी सकता है।...वैज्ञानिकों ने इस तथ्य का कुछ साल पहले ही पता लगाया है। या यूं कह लीजिये कि इस तथ्य को बीसवीं सदी के अंत में खोजा गया था। उसी खोज पर आधारित आज कई अनुसंधान किये जा चुके हैं। वें सभी यही बताते हैं कि गर्भावस्था की आरंभिक अवस्था में भी भ्रूण कुछ विचार ग्रहण करने की क्षमता रखता है।

"मानवजाति की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण खोज है। जन्म से पहले ही बच्चे में यदि अच्छे संस्कार डाले जायें तो जवानी में गुंडागर्दी, विद्रोह आदि भावनाओं से काफी हद तक उसे बचाया जा सकता है। इसकी वजह से हड़ताल, मोर्चे, दंगे-फसाद, और अन्य अपराध कम हो जायेंगे। समाज में शांति और सुव्यवस्था रहेगी और हर नागरिक सुख चैन से रह सकेगा। इसीलिए प्रधानमंत्री नें युवा भावी माताओं के लिए इस योजना की शुरुआत की है। सरकार आपकी और आपके बच्चे की पूरी जिम्मेदारी लेती है। इसके लिए समय, श्रम और पैसा पानी की तरह बह रहा है। लेकिन सरकार को उसकी कोई चिंता नहीं, क्योंकि वह भावी नागरिकों को सभ्य बनाने में कृतसंकल्प है...।"

"आप यह इधर-उधर की बातें बंद करके सीधे मुद्दे पर आइये ना !" मीनाक्षी इतनी तपाक से बोली कि आसावरी आश्चर्य से देखती रह गयी। प्रोफेसर जैसे दिखनेवाला सामने बैठा आदमी भी क्षण भर के लिए दंग रह गया। फिर खींच-तानकर चेहरे पर हंसी लाते हुए वह बोला, "सॉरी, लगता है आप तंग आ गयी हैं। लेकिन मैं चाहता था कि हमारे उपचार की नीति आपको मालूम हो जाये। इसीलिए मुझे यह सब बताना पड़ा। और हां, आप मुझे भाई कहें तो बेहतर होगा। यहां सब मुझे भाई ही कहते हैं।"

"आपको भाई कहकर मैं अपने भाई का अपमान कभी नहीं करूंगी।" मीनाक्षी ने गुस्से के साथ कहा।

आसावरी को लगा कि भाई नाम का यह आदमी अब बहुत नाराज होगा ! लेकिन वैसा कुछ नहीं हुआ। कुछ पल वह खामोश रहा। फिर बोला, "लगता है, आज मीनाक्षी जी बहुत परेशान हैं। इनके कहे अनुसार काम शुरू कर देते हैं।"

उन दोनों को वह दूसरे कमरे में ले गया। कमरा काफी बड़ा था। कमरे के दोनों सिरों पर बड़े-बड़े सोफे रखे थे। उनके पास ही कुछ कुर्सियां तथा टेबल थे। कमरे में एक परिचारिका थी जो मीनाक्षी को एक ओर ले गयी, तो आसावरी को भाई ने दूसरे सिरे वाली कुर्सी पर बिठाया। टेबल पर टेपरिकार्डर और कुछ कागज रखे थे। आसावरी के सामने वाली कुर्सी पर बैठते हुए भाई बोले, "अच्छा तो ध्यान से सुनिए कि अब क्या करना है ताकि आपका बच्चा आपकी आवाज को पहचानने लगे। इसके लिए आपकी आवाज यहां टेप की जायेगी। फिर रोज

आपके बच्चे को यह आवाज सुनायी जायेगी। और यही समय होगा आपके विश्राम का।"

"परंतु डाक्टर...भाई, बच्चे को आवाज की पहचान तो हो सकती है लेकिन वह भाषा कैसे समझेगा ? कानों से टकराने वाले शब्दों का अर्थ वह कैसे समझेगा ?"

कुछ देर चुप बैठने के बाद भाई ने कहा, "आसावरी जी मैं आपके सवाल पर बहुत खुश हूं। आज तक किसी ने यह प्रश्न नहीं पूछा। मैं समझाने का प्रयत्न करता हूं। यह सच है कि अभी वच्चा जो शब्द सुनेगा उनके अर्थ उसे पता नहीं चल सकते। लेकिन बार-बार सुनने पर वे शब्द उसकी स्मृति में हमेशा के लिए अंकित हो जायेंगे...बिल्कुल उसके अपने विचारों की तरह। किंतु उसके ये विचार अप्रकट अवस्था में होंगे, उनका अहसास भी बच्चे को नहीं होगा। जन्म के बाद जब बच्चा बढ़ने लगेगा, उस दौरान वही शब्द जब वह पुनः सुनेगा तो वे उसे जाने-पहचाने और अपने से लगेंगे, क्योंकि उसके अवचेतन मस्तिष्क में वे पहले से ही विद्यमान होंगे। उदाहरणार्थ, जन्म से पूर्व यदि बार-बार यह कहा गया हो कि चोरी करना बुरी बात है—तो आगे चलकर जब कोई उससे कहता है कि चोरी कभी नहीं करना, चोरी करने वाले लोग बुरे होते हैं—तब वह तुरंत मान जायेगा। वह इतनी अच्छी तरह समझ जायेगा कि जिंदगी में कभी चोरी नहीं करेगा।"

आसावरी सोचने लगी। भाई ने कहना जारी रखा, "आपने पढ़ा ही होगा कि पिछले कुछ सालों से अपराधों की संख्या में भारी गिरावट आयी है। यह हमारी योजना का ही परिणाम है। आज की युवा पीढ़ी गुंडागर्दी की तरफ बिल्कुल आकर्षित नहीं होती।"

अपराधों में आयी कमी के बारे में आसावरी ने पढ़ा तो था, लेकिन उसे यह मालूम नहीं था कि उसके पीछे गर्भ विकास योजना का हाथ था।

"अच्छा तो अब शुरू करें ! यह कागज एक बार पढ़ लीजिये। फिर उसे जोर से पढ़िये, तब मैं रिकार्ड कर लूंगा। लेकिन आपका पठन बिल्कुल सहज होना चाहिए।"

भाई से कागज लेते-लेते आसावरी ने मीनाक्षी की ओर देखा। वह भी पढ़ रही थी और नर्स रिकार्ड कर रही थी।

अगला सप्ताह इसी तरह बीता। पहले दो दिन सीधे-साधे लेख थे। बच्चों की कुछ कविताएं, गाने, दूध का स्वाद कितना अच्छा होता है, मित्रों से खेलने में खूब मजा आता है, झगड़ा करना बुरी बात है, इत्यादि। तीसरे दिन से उपदेशात्मक विषयों की रिकार्डिंग शुरू हुई जिसके अंतर्गत मां-बाप की आज्ञा का पालन करना चाहिए, बड़ों का आदर करना चाहिए, क्योंकि उन्होंने तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम किया है, प्रत्येक व्यक्ति दूसरे पर अर्थात् समाज पर निर्भर है, अपने हित से समाज

का हित बड़ा है, आदि विषय चुने गये थे।

इस तरह तीन-चार दिन बाद देश भक्ति की भावना, देश के लिए त्याग करनेवालों की जानकारी, उनका गुणगान, देश के लिए बलिदान करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है, ऐसे विषयों को रिकार्ड किया गया।

देश का जनतंत्र विश्व का सर्वश्रेष्ठ जनतंत्र है, दूसरे दिन कुछ देर यही वर्णन होता रहा। फिर कहा गया कि देश की सरकार अत्यंत कार्यक्षम और जनहितवादी है। सरकारी कार्यक्रमों पर अमल करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। कभी भी किसी भी परिस्थिति में सरकार के विरुद्ध विद्रोह नहीं करना चाहिए, बल्कि ऐसे देशद्रोहियों का विरोध करना चाहिए। सरकार के विरुद्ध कोई भी कार्रवाई या निषेधाज्ञा नहीं सहन की जायेगी, प्रत्येक नागरिक का सबसे पहला कर्तव्य यही है कि उसकी निष्ठा देश के प्रति हो। इस तरह का काफी मजमून उस दिन रिकार्ड किया गया।

उस दिन आसावरी घर लौटी तो टेप किए गये विषयों के बारे में ही सोचती रही, जिसकी उसे होने वाले बच्चे के लिए तोते की रटंत करनी थी। उसने अपने आपसे कहा–"अभी तो बच्चे ने जन्म भी नहीं लिया, और हम उस पर कौन से संस्कार थोप रहे हैं ? अभी से सरकार के प्रति निष्ठावान रहने के ? कोई विरोध, कोई भी निषेध न करने के ? समय कोई भी हो, सरकार कोई भी हो, लेकिन नागरिकों की निष्ठा सरकार के प्रति ही होनी चाहिए ? इसका यह मतलब तो नहीं कि सरकार कुछ भी करे, हम उसकी हां में हां मिलाते रहें। तो फिर अपने बच्चे को अभी से यह सब क्यों सिखाया जाये ?"

दिन भर आसावरी बेचैन रही। दूसरे दिन मंजरी से इस बारे में बात करने का उसने निश्चय किया, तब कहीं जाकर उसे थोड़ी-सी राहत मिली।

* * *

परंतु दूसरे दिन मंजरी आयी ही नहीं।

किसी अन्य से अपनी बेचैनी का इजहार करे, इतनी किसी से जान-पहचान नहीं थी। मीनाक्षी और उसकी जोड़ी तो थी, मगर मीनाक्षी का गंभीर स्वभाव और कड़ुवी भाषा के कारण दोनों में हमेशा फासला बना रहा। अशांत मन से वह बौद्धिक शिक्षण के कमरे की ओर चल दी।

अंदर आकर वह अपनी कुर्सी पर आ बैठी। तभी भाई नाम का वह व्यक्ति भागा-भागा उसके पास आया। हाथ में पकड़े ढ़ेर सारे कागज उसे थमाते हुए बोला, "रिकार्ड करने का आज अंतिम दिन है और बातें भी बहुत-सी रिकार्ड करनी हैं। अतः आज हम सीधे रिकार्डिंग शुरू करते हैं। पहले पढ़ने की आपको कोई

आवश्यकता नहीं है। अब आप इस सब की अभ्यस्त हो गयी हैं।"

"ठीक है।" आसावरी बोली और उसने जोर से पढ़ना शुरू किया। लगता था कि कल का सिलसिला आज भी जारी हो। शुरू में वर्णन था कि लोकहित एवं कल्याण के लिए सरकार कितनी तत्पर है। और फिर प्रधानमंत्री की तारीफों के पुल बांधने वाला एक कागज था। इस अलौकिक पुरुष का जन्म एक साधारण हाथ-गाड़ी खींचने वाले के घर में हुआ था।... घर की अति दरिद्र स्थिति के कारण प्रधानमंत्री को बचपन से ही बहुत से संकट झेलने पड़े, लेकिन अपनी बुद्धिमत्ता, लगन और मेहनत के बल पर उन संकटों पर उन्होंने विजय पायी और आज सर्वोच्च पद पर विराजमान हैं। इसके बाद कोई सात-आठ पृष्ठों में उनकी उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन किया गया था। यह सब पढ़ते समय आसावरी को बहुत गुस्सा आ रहा था। अपने बच्चे में इस सब का प्रचार क्यों किया जाये ? कौन से बड़े संस्कार पड़ेंगे उसमें ? बार-बार यही सवाल आसावरी को सता रहे थे।

प्रधानमंत्री के पुरुषार्थ के वर्णन के बाद उनके व्यक्तित्व का वर्णन शुरू हुआ। बुद्धिमान सुस्वरूप, गठीले शरीर वाले, राजनीति के मर्मज्ञ एवं तीक्ष्ण दृष्टिवाले, लोगों के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले... पढ़ते-पढ़ते आसावरी अचानक रुकी। यह सब बातें रिकार्ड करते हुए उसे घिन होने लगी थी। वह बोली, "भाई, यह सब क्या है... ?"

"अरे, आप रुक क्यों गयी आसावरी जी ?" उसकी बात काटते हुए भाई जल्दी में बोला, "आगे पढ़िये और जल्दी से खत्म कीजिये इसे। इस तरह समय व्यर्थ न गंवाइये।"

हारकर आसावरी ने आगे पढ़ना शुरू किया। प्रधानमंत्री के गुणगान के बाद आगे सिलसिला इस प्रकार था : 'हमारा सौभाग्य है कि ऐसा अलौकिक पुरुष हमारा नेता है। इस व्यक्ति को चिंता है तो, सिर्फ नागरिकों के सुख की। मां-बाप जितना प्यार बच्चे से करते हैं उससे कहीं ज्यादा प्यार वह अपनी जनता से करते हैं। दिन-रात उनके सुख के अतिरिक्त वे और कुछ सोचते ही नहीं हैं। अतः उनका साथ देना, उनकी आज्ञा का पालन करना उनकी खातिर वक्त आने पर जान की बाजी लगा देना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है··· हम सब का···।'

आसावरी पुनः पूरे निश्चय के साथ रुकी। भाई ने उसकी ओर देखा और बोला, "अरे, आसावरी जी इस तरह रुकिये नहीं। चलिये, जल्दी से आगे पढ़िये।"

"नहीं। पहले आपको बताना होगा कि यह सब क्या है ?"

"सब-कुछ लिखा हुआ तो है। आपके हाथ में है। और क्या बताऊं मैं आपको ?"

"वह तो मैं भी जानती हूं। पर बच्चे में डाले जानेवाले संस्कारों का इन बातों से क्या लेना-देना ?"

"क्या मतलब ? देश की महान विभूतियों की जानकारी बच्चे को मिले तो इसमें बुरा क्या है ?"

"जो कुछ मैं पढ़ रही हूं वह महान विभूतियों की जानकारी कतई नहीं है। यहां तो प्रधानमंत्री की आरती उतारी जा रही है, सिर्फ उनकी स्तुति की जा रही है।"

"तो क्या आप कहना चाहती हैं कि हमारे प्रधानमंत्री महान नहीं है ?"

"वो बात नहीं है। किंतु जन्म लेने से पहले ही बच्चे के ऊपर यह सब लादने की क्या आवश्यकता है ? किसी व्यक्ति की स्तुति मन पर अंकित करना और अच्छे विचार, अच्छे संस्कार अंकित करना पूर्णतः अलग बातें हैं।"

"सच तो यह है आसावरी जी कि यह सब हमें लिखा-लिखाया भेजा जाता है। वरिष्ठ अधिकारी जो कहेंगे हमें करना पड़ता है।" खेदजनक स्वर में भाई बोला।

"पर मुझे यह पसंद ना हो तो ?"

"कोई फायदा नहीं है, आसावरी।" मीनाक्षी का स्वर सुनकर आसावरी चौंकी। मीनाक्षी हाथों में कागज थामे उसी की ओर आ रही थी।

"मीनाक्षी जी, आप अपनी जगह लौट आइये।" उसे रोकने के प्रयास में नर्स बोली।

लेकिन उसकी परवाह न करते हुए मीनाक्षी आसावरी के पास आयी। उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोली, "आसावरी, जो कुछ कह रहे हैं उसे मान लेना ही तुम्हारे हित में है।"

"लेकिन मुझे यह बिल्कुल···।"

"अपना बच्चा चाहती हो न ?"

"हां, लेकिन तुम्हारा मतलब ?" आसावरी ने डरते हुए पूछा।

तभी मीनाक्षी की नर्स भागती हुई वहां आ पहुंची। भाई भी गड़बड़ाकर उठा। उसने आसावरी के कंधे से मीनाक्षी का हाथ हटाया और बोला, "मीनाक्षी जी, आप अपनी जगह लौट जाइये। वरना मुझे... आपकी शिकायत करनी पड़ेगी।"

"हुंह... !' मीनाक्षी घृणा से फुंफकारते हुए अपनी जगह लौट गयी। इधर भाई ने जेब से रूमाल निकालकर अपना पसीना पोंछा।

आसावरी उसे देखती रह गयी। मीनाक्षी की अनापेक्षित बातों से उसके पसीने छूट गये थे। नर्स भी बुरी तरह घबरा गयी थी। मीनाक्षी वास्तव में क्या कहना चाहती थी वह जानना ही होगा—आसावरी ने तय किया।

कुछ देर तक एक अजीब-सी खामोशी रही। फिर भाई बोला, "बाकी बची हुई रिकार्डिंग पूरी कर लें आसावरी जी। प्लीज अब दो-तीन पृष्ठ ही तो बचे हैं। वैसे भी, बाकी सबकी रिकार्डिंग आप करा ही चुकी हैं।"

आसावरी ने देखा। भाई की बात सही थी। अब सिर्फ कुछ ही मिनटों का काम बाकी था। तीन पृष्ठ ही बचे थे। उन्हें भी जल्दी से खत्म करने में ज्यादा वक्त नहीं लगने वाला। और उधर मीनाक्षी के शब्द "अपना बच्चा चाहती हो ना !" घंटी की तरह लगातार उसके कानों में बज रहे थे। लाचार होकर आसावरी ने आगे पढ़ना शुरू किया।

रिकार्डिंग समाप्त हो जाने पर भाई ने आसावरी को अपने केबिन में बुलाया। आसावरी उसके पीछे-पीछे गयी और उसके सामने रखी कुर्सी पर बैठ गयी। टेबल पर रखे पेपरवेट के साथ खेलते हुए कुछ देर भाई चुपचाप बैठा रहा। जैसे उचित शब्दों की तलाश में हो। फिर अपना चश्मा उतारकर पोंछते हुए धीरे से बोला, "कैसे कहूं आपसे ? लगता है अब आपको बताना ही होगा। देखिये, मीनाक्षी जी की बातों पर आप ध्यान न दें। वह ज़रा...परेशान हैं। ऐसा है कि..."

"वह पागल हो गयी है, यही कहना चाहते हैं न आप ?"

"अं··· नहीं, पूरी तरह वैसी नहीं। परंतु कुछ हद तक वही बात है। वास्तव में, इससे पहले दो बार उनका गर्भपात हो चुका है।"

"गर्भपात ?"

"जी हां। दोनों बार वह यहां केंद्र में ही उपचार के लिए आती थी। इसलिए उसके दिमाग में यह बैठ गया है कि यहां के उपचारों के कारण ही उनके गर्भपात हुए। पिछली बार यह बात हमारे ध्यान में आयी थी। पर क्या कर सकते हैं ? उनकी इस अवस्था में कुछ नहीं किया जा सकता। बल्कि उनकी नाजुक स्थिति के प्रति हमें काफी सतर्क रहना पड़ता है। उनकी एक बार सकुशल प्रसूति हो जाये तो अपने आप सभी गलतफहमियां दूर हो जायेंगी। तब तक उनके दुर्व्यवहार को हमें सहन करना ही होगा। सीधी-सी बात कि जो कुछ वह बोलती हैं, उसकी तरफ ध्यान न दिया जाये। आप समझ गयीं ना, मैं क्या कह रहा हूं ?"

आसावरी असमंजस में थी। उसने सिर्फ गर्दन हिलायी और चल दी।

मंजरी दूसरे दिन भी नहीं आयी। व्यायाम के बाद आसावरी ने सहज भाव से पूछा, "पता नहीं दो दिन से मंजरी क्यों नहीं आ रही ?"

"अब उसका यहां क्या रखा है ?" हमेशा की तरह मीनाक्षी तपाक से बोली।

"क्या मतलब ?"

"उसका गर्भपात हो गया है।"

"क्या ? मंजरी का गर्भपात हो गया ?" आसावरी ने मीनाक्षी की ओर देखकर यह पता लगाने की कोशिश की कि यह सब कैसे और क्यों हुआ। और फिर मीनाक्षी को यह सब कैसे मालूम हुआ ?

"तुझे कैसे पता चला ? किसने बताया ?" उसने पूछा।

"किसी के बताने की आवश्यकता कहां है ? उसे लड़की होने वाली थी न ?"

"हां।" आसावरी जानती थी कि मंजरी को लड़की होने वाली है।

"बस्स, तो फिर और क्या होता ?"

"मीनाक्षी तुम क्या कह रही हो ? लड़की होने वाली थी इससे क्या फर्क..."

"सहेलियों में क्या कानाफूसी हो रही है ?" उनके समूह की लीडर की आवाज आते ही आसावरी चौंकी। पीछे मुड़कर देखा तो लीडर उनके पीछे खड़ी थी।

लीडर लगभग मीनाक्षी की आयु की थी। वह स्वभाव से हंसमुख, खुशमिजाज और बातूनी थी। अपना नाम उसने स्मिता बताया था, लेकिन सब उसे लीडर ही पुकारते थे। सभी महिलाओं के बौद्धिक शिक्षण के लिए अलग-अलग विभागों में जाने तक वह उनके साथ रहती थी। उनके साथ गपशप करती, प्रत्येक को उचित दवाइयां दिया करती और सबके साथ मिलकर भोजन भी करती थी।

लेकिन आज अचानक उसका दबे पांव आकर खड़े होना आसावरी को चौंका गया। वह बोली, "हम मंजरी के बारे में सोच रही थीं।"

लीडर कुछ देर चुप रही, फिर बोली, "बेचारी मंजरी, उसका तो अबार्शन हो गया।"

"हे भगवान !" आसावरी ने आह भरी। "यह कैसे हो गया ?"

"कारण तो ठीक-ठीक नहीं बताया जा सकता कि कैसे..."

"इतनी सावधानी के बावजूद... ?"

"कितनी ही सावधानी क्यों न बरतें, आखिर प्रत्येक का शरीर और नसीब अलग-अलग होता है !" लीडर ने कहा, "यह सब जाने दो—चलो, भोजन के लिए चलो, नहीं तो देर हो जायेगी।" इतना कहकर वह भोजन-कक्ष की ओर चल दी।

मीनाक्षी और आसावरी भी उसके पीछे हो लीं। तभी मीनाक्षी आसावरी के कान में बोली कि, "देख वह लंबे बाल वाली लड़की है न, उसे भी लड़की होने वाली है। देखना, थोड़े ही दिनों में उसका भी गर्भपात हो जायेगा।"

यह सुन आसावरी धक से रह गयी और लंबे बालों वाली लड़की की ओर देखा। वह खुशी से गाना गुनगुनाती भोजन कक्ष की ओर जा रही थी।

उसी दिन से रिकार्ड किये गये विचार पेट में पल रहे गर्भ को सुनाने का कार्यक्रम शुरू हुआ। कमरे में नरम तकिए और एक चादर रखी थी। मीनाक्षी के साथ वह जैसे ही अंदर आयी, नर्स ने खिड़कियों के आगे पर्दे खींच दिये और बिजली के बटन दबाये। शीघ्र ही कमरे में हल्का नीला प्रकाश फैल गया।

भाई के कहे अनुसार आसावरी ने सोफे पर टांगे सीधी करके तकिए सिर के नीचे रख लिये। सामने के टेबल पर एकदम अर्धगोलाकार आकृति में मोड़ी गयी और एक दूसरे से जुड़ी पट्टियों जैसा कुछ रखा था। उन्हें हाथों में उठाकर भाई बोला, "मैं इस ट्रांसमीटर को आपके पेट पर रख रहा हूं। इससे आपकी

आवाज आपके बच्चे के लिए संचारित की जायेगी। आपको चुपचाप लेटकर सोने की कोशिश करनी है। घर में आपको नियत समय पर पौष्टिक भोजन और नियमित विश्राम ठीक से नहीं मिलता। अतः यहां हर रोज कुछ देर के लिए हम आपको सुलाया करेंगे।" हाथों में पकड़ा ट्रांसमीटर भाई ने आसावरी के पेट पर रखा और बोला, "मैं अब बाहर जाता हूं। आप आंखें बंद करके चुपचाप सो जाइये। कोई परेशानी हो तो यह बटन दवाइये, मुझे पता चल जायेगा।" सोफे के पांव में लगा बटन उसे दिखाकर भाई ने आसावरी के ऊपर चादर डाली और बाहर चला गया।

मीनाक्षी के पास खड़ी नर्स भी बाहर निकल गयी। कमरे में उन दोनों के अलावा कोई नहीं है, यह देख आसावरी ने मीनाक्षी को 'ए मीनाक्षी' कहकर पुकारा।

मीनाक्षी ने सिर्फ उसकी ओर देखा: कुछ बोली नहीं।

और इसी बीच भाई दरवाजा खोलकर अंदर आया। "आप कुछ चाहती हैं क्या ?" उसने पूछा।

आसावरी ने गर्दन हिलाकर न कह दी।

भाई ने तब कहा, "तो फिर आप चुपचाप सो जाइये। बात बिल्कुल ना कीजिये।" और वह पुनः बाहर चला गया।

इसका मतलब है कि कमरे के भीतर की आवाजों को बाहर सुनने की उन्होंने व्यवस्था की हुई है। हारकर उसने आंखें मूंद लीं।

पेट पर रखे ट्रांसमीटर से धीमी सी आवाज सुनायी दे रही थी। गौर से सुना तो ध्यान आया कि वह उसकी रिकार्ड की हुई आवाज है। सभी बातें धीमी गति में तथा एकदम स्पष्ट सुनायी दे रही थीं।

व्यायाम के वाद भरपेट भोजन। और अब नरम, आरामदायक सोफा तथा कमरे में फैला मंद प्रकाश और ट्रांसमीटर से आनेवाली धीमी आवाज—आसावरी की पलकें नींद से बोझिल हो गयीं और कुछ ही क्षणों में वह गहरी नींद में थी।

उसकी नींद खुली तो पेट पर रखा ट्रांसमीटर हटाया जा चुका था। नर्स खिड़कियों के पर्दे हटा रही थी और भाई हाथ में चाय का प्याला लिए सोफे के किनारे खड़ा था। उसे जगा देख भाई बोला, "क्यों, अच्छी नींद आयी ना ! लीजिये, अब गर्मा-गर्म चाय लीजिये।"

आसावरी और मीनाक्षी ने कपड़े बदलने के लिए अपने-अपने कमरे में जाने से पहले चाय पी। आसावरी ने मन ही मन ठान ली थी कि कमरे में जा कर मंजरी के बारे में मीनाक्षी से और पूछताछ करेगी। किंतु भीतर उन्हीं के समूह की अन्य कई महिलाओं समेत लीडर भी उपस्थित थी। अतः मीनाक्षी से फिलहाल बोलने का विचार आसावरी ने छोड़ दिया।

अगले दो दिनों में आसावरी ने महसूस किया कि केंद्र जाने वाली बस में चढ़ने से लेकर घर लौटने तक केंद्र का कोई न कोई व्यक्ति हरदम उनके साथ

होता है। उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ा जाता। बस में एक अटेंडेंट होता है। बस से उतरो तो प्रवेश द्वार पर स्वागत के लिए लीडर होती है और उसका साथ तो भोजन की समाप्ति तक होता ही है। तत्पश्चात् बौद्धिक शिक्षण कक्ष में भी परिचारिका मौजूद होती है। समूह में भले ही लड़कियां खुलकर गपशप करती हों, किंतु सिर्फ दो महिलाएं आपस में ज्यादा देर बातें नहीं कर सकती थीं। यदि किसी की बातचीत लंबा समय ले रही हो तो लीडर तुरंत उनकी बातचीत में शामिल हो बातचीत को कोई और रुख दे देती।

आसावरी सोच रही थी कि क्या दूसरी लड़कियों ने भी उसकी तरह इन बातों पर ध्यान दिया है या नहीं। बौद्धिक शिक्षण के नाम पर संचारित संदेशों से उसी की तरह क्या और कोई इतनी घृणा करती होगी ? या सिर्फ एक वही है जो इसे हौवा मान बैठी है। इस बारे में वह किसी न किसी से बातचीत करना चाहती थी। वह दूसरी गर्भवती लड़कियों से मालूम करना चाहती थी कि क्या वे भी ऐसा ही सोचती हैं। ऐसा मौका कब मिलेगा ? कैसे मिलेगा ? यह कैसे संभव होगा ?

असमंजस की इस स्थिति में आठ-दस दिन बीत गये। मंजरी के स्थान पर बस में इन दिनों एक नयी लड़की आने लगी थी। आसावरी का बस में सभी से अच्छा परिचय हो गया था। उनमें से दो को लड़कियां होने वाली थीं। आसावरी जब भी उनकी ओर देखती, उसके कानों में मीनाक्षी के शब्द बज उठते थे।

और एक दिन लंबे बालों वाली वह लड़की नहीं आयी। दूसरे दिन भी जब वह नहीं आयी तो आसावरी सीधे लीडर से ही पूछ बैठी, "सुनो, वह लंबे बालों वाली क्यों नहीं आ रही ?"

"मैं क्या जानूं ? शायद तबीयत ठीक नहीं होगी।" लीडर दूसरी ओर मुंह करके बोली।

और तभी एक दूसरी लड़की आगे बढी और बोली, "क्या तुम्हें कुछ पता नहीं ? उसका तो गर्भपात हो गया !"

"हे भगवान ! यह सब कैसे हो गया ?" किसी ने पूछा।

"परसों शाम अचानक उसके पेट में दर्द हुआ और कुछ ही देर में गर्भ गिर गया। तुम्हें पता नहीं ? उसके घर से यह संदेश था। डा. माने स्वयं भी उसके घर गये थे।"

"मुझे तो कुछ भी पता नहीं।" लीडर टालते हुए बोली, "अच्छा, चलो अब बातें बहुत हो चुकीं। जल्दी से खाना खाने चलो।"

आसावरी बहुत बेचैन हो गयी। यह सब क्या हो रहा है ? और क्यों ?"

कुछ समय बाद जब वे कपड़े बदलने गयीं तो उसे यह मीनाक्षी को बताने का अवसर मिल गया।

"मीनाक्षी, मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूं।"

"मैं जानती हूं।" कनखियों से चारों ओर देखते हुए दबी आवाज में वह बोली, "पर इधर नहीं।"

"क्यों नहीं ? कोई सुनता है तो सुने ले !"

"नहीं। यहां नहीं। तुम कहां रहती हो ? मुझे अपना पता दो।"

आसावरी ने उसे अपना पता दिया ही था कि लीडर वहां आ धमकी, जैसाकि मीनाक्षी ने सोचा था। कुछ और बोले बगैर वे दोनों वहां से चल दीं।

शाम को मीनाक्षी को अपने घर आयी देख आसावरी थोड़ी हैरान थी। वह जानती थी कि मीनाक्षी ने चूंकि उससे पता मांगा था, इसलिए वह आयेगी जरूर, परंतु इतनी जल्दी आ जायेगी, इसका अंदाजा न था।

जब वह आयी, आसावरी और शेखर केंद्र के ही बारे में बातचीत कर रहे थे। पिछले कुछ सप्ताहों में शेखर यह जान चुका था कि आसावरी केंद्र की उपचार पद्धति से नाखुश है। वैसे जो कुछ उसने सुना था, उससे वह भी कतई प्रसन्न नहीं था।

आसावरी ने अपने पति का मीनाक्षी से परिचय करवाया। मीनाक्षी ने कहा, "मेरे पास आज ज्यादा समय नहीं है। घर जल्दी जाना है। आसावरी के मन में उठ रहे कई सवालों के जवाब मुझे देने हैं। आज आसावरी भी वही अनुभव कर रही है जो केंद्र में मैंने अनुभव किया। इसलिए मैं उसे चेतावनी देने चली आयी हूं। केंद्र में मेरा यह तीसरा मौका है।"

आगे मीनाक्षी ने जो कुछ बयान किया, वह बहुत भयानक था।

लगभग दो साल पहले केंद्र में वह पहली बार भर्ती हुई थी। शादी के चार साल बाद उसका पांव भारी हुआ था। अतः वह बहुत खुश थी। केंद्र में हुई परीक्षाओं से पता चला था कि उसे लड़की होने वाली थी। गर्भ विकास केंद्र जैसी विशिष्ट संस्था की देखरेख में होने के कारण वह एकदम निश्चिंत थी। मगर केंद्र में जाने के पांच-छह दिन बाद ही उसका गर्भपात हो गया था। अचानक घटी इस घटना ने उसे एकाएक बहुत हैरान और दुखी कर दिया था। संभलने में काफी समय लग गया। घर में उसका पति, सास और देवर सभी उसके दुख में दुखी थे।

और कुछ दिनों के बाद उसके देवर ने एक भयंकर तथ्य सामने रखा। उसका एक मित्र केंद्र में तकनीशियन था। वह बता रहा था कि जन्म लेने वाले बच्चों में लड़के-लड़कियों का एक निश्चित अनुपात उन्हें दिया जाता है। और उसे बनाए रखने के लिए जितने गर्भपात आवश्यक हों, उन्हें वे करने की अनुमति है। केंद्र से दी जाने वाली दवाइयां यह काम करती हैं।

"भाभी को केंद्र में पंजीकृत कराने से पहले मुझे क्यों नहीं बताया ? पेट में पल रहा गर्भ लड़का है, ऐसी झूठी रिपोर्ट देने का मैं प्रबंध कर देता।" मित्र

ने देवर से कहा था।

सात-आठ महीने के बाद मीनाक्षी पुनः गर्भवती हुई। तब उस मित्र को उसके देवर ने यह सूचना दी थी। उसके एक सप्ताह बाद वह केंद्र में भर्ती हो गयी। उसे लड़का होगा ऐसी रिपोर्ट भी मिल गयी थी। क्या गोलमाल था, भगवान ही जाने।

चार महीने पूरे होने तक सब कुछ ठीक चल रहा था। पांचवें महीने में बौद्धिक शिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। उस समय बच्चे में 'संस्कार' डालने का यह नाटक चार महीने का हो जाने के बाद होता था। पहले दिन से ही यह नाटक अभी हाल ही में शुरू हुआ है।

लिखे हुए लेखों को रिकार्ड करके गर्भ में पल रहे बच्चे को सुनाने के बारे में अर्थहीनता की बात कहकर उसने वहां के लोगों को नाराज कर दिया। उसके साथ उन दिनों संगीता दवे नाम की लड़की थी। मीनाक्षी को देख वह भी बहस करने लगी और निर्धारित लेखों को रिकार्ड करने से मना कर दिया। केंद्र में यह खबर हर तरफ फैल गयी थी। एक दिन उसके देवर का मित्र उसे सतर्क करने उसके घर गया था कि काम निर्धारित समय में पूरा करना ही हितकर है, वरना नुकसान की आशंका है। उसने चेतावनी दी, "बेहतर यही है कि आप उनके कहे अनुसार चलें। अगर नहीं चलेंगी तो परिणाम अच्छे नहीं होंगे।"

लाचार मीनाक्षी मजबूरन उनके कहे अनुसार आचरण करने लगी, लेकिन जब भी वे लेख उसकी आवाज में बच्चे को सुनाए जाते तो वह सुन्न होकर लेटी रहती। इस दौरान मनोस्थिति बहुत तनावपूर्ण होती थी। अतः उसे ज़रा भी नींद नहीं आती थी।

ऐसी ही हालत में करीब तीन सप्ताह बीत गये। अचानक एक दिन उसने अनुभव किया कि ट्रांसमीटर से आने वाल आवाज उसकी न होकर किसी पुरुष की है।

उसने ध्यान से सुना। पुरुष की वह आवाज़ परिचित लग रही थी। लेकिन वह पहचान नहीं पा रही थी कि वह किसकी आवाज है। वह आवाज कह रही थी, "हमारा जनतंत्र दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है। हमारा संपूर्ण सरकारी प्रबंध केवल समाज कल्याण के लिए है। हमारे इस जनकल्याणकारी राज्य के प्रमुख इसके नेता हैं हमारे प्रधानमंत्री। उन्होंने..." मीनाक्षी ने पेट पर रखा ट्रांसमीटर निकाल फेंका और उठ गयी। ठीक उसी समय नर्स और 'भाई' भागकर अंदर आये और दोनों ने मीनाक्षी को समझाने की काफी कोशिश की। लेकिन उसने एक न सुनी। कपड़े बदले और सीधा घर चली गयी।

उस दिन से भोजन के बाद वह रिकार्ड कराने की बजाय सीधा घर जाने लगी। केंद्र के मुख्य डाक्टर से लेकर लीडर तक सभी ने उसे समझाया, परंतु

वह किसी की बातों में नहीं आयी और बौद्धिक शिक्षण से कार्यक्रम में सहभागी होने से उसने साफ इन्कार कर दिया।

हमेशा की तरह एक दिन जब वह साप्ताहिक जांच के लिए गयी तो उसकी स्त्री रोग विशेषज्ञ काफी चिंतित दिखी। उसने कारण पूछा तो वह कहने लगी, "आपकी तबीयत खराब है मीनाक्षी जी। आप काफी कमजोर नजर आ रही हैं।"

"नहीं, मुझे तो जरा भी कमजोरी नहीं लगती। ना कभी थकान महसूस होती है और ना ही कभी मैं निढाल होती हूं।"

"आपको अभी भले ही महसूस न होता हो, पर जांच से तो मुझे दिख रहा है। ऐसा करते हैं, आपको एक इंजेक्शन दे देती हूं, फिर चिंता की कोई बात नहीं होगी।"

देखते ही देखते, कुछ समझने से पहले ही डाक्टर ने मीनाक्षी की बांह में इंजेक्शन लगा दिया। मीनाक्षी को उनकी वह हरकत पसंद नहीं आयी, पर वह कुछ बोली नहीं।

उस दिन मीनाक्षी घर लौटी और एक घंटे के अंदर-अंदर उसका गर्भपात हो गया।

अपना अनुभव बताने के बाद मीनाक्षी ने कहा, "तुम्हारा असंतोष, तुम्हारी, नाराजगी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, इसलिए मैं तुम्हें सतर्क करने आयी हूं। याद रखो, तुम्हारे बच्चे का जीवन उनके हाथ में है। प्रसव होने तक अपना असंतोष छिपाए रखो।"

"पर, पर यह सब बड़ा खतरनाक है।" आसावरी ने कहा, "कोई भी गर्भ चाहे वह लड़का हो या लड़की, माता-पिता से पूछे बगैर गिराना उनके अधिकार-क्षेत्र से बाहर है। इस प्रकार हत्या करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं।"

"अधिकार तो नहीं है। यह वे भी जानते हैं, इसीलिए तो चोरी-चोरी यह काम किये जाते हैं" शेखर ने कहा।

"पर क्यों ? क्या मिलता है उन्हें ?"

"यह सच है कि समाज में स्त्री-पुरुषों के अनुपात में असंतुलन आ जाये तो कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं। और यदि किसी भी कीमत पर उन्हें टालना हो तो अवांछनीय गर्भ की इस तरह की हत्याएं उचित और समर्थनीय लगती हैं। ऐसी हत्याओं की मां-बाप तो इजाजत देने से रहे। खास तौर से मां तो कभी ऐसा करने नहीं देगी, इसीलिए तुमसे पूछे बिना ये हत्याएं की जाती हैं।" शेखर बोला।

तो फिर मीनाक्षी का दूसरा गर्भपात क्यों किया गया ? सिर्फ इसलिए कि मीनाक्षी बहुत बहस करती थी, इतनी सी बात के लिए हैं... ?"

"केवल मैं बहस करती थी, इसलिए नहीं, बल्कि मेरे कारण अन्य महिलाओं

में भी असंतोष फैलता है, इसलिए। संगीता तो बहस करने में मुझसे दो कदम आगे थी। इस तरह से असंतोष का फैलाव केंद्र वालों के लिए खतरनाक हो जाता। अतः असंतोष की जड़ ही उन्होंने नष्ट कर दी।"

"एक बात बता, इतना सब होने पर भी तू फिर इसी केंद्र में क्यों आयी ?" आसावरी ने पूछा। मीनाक्षी कुछ पल चुप रही, फिर बोली, "और कहां जाती मैं ?"

"किसी निजी अस्पताल में नाम क्यों नहीं दर्ज कराया ?"

"वह प्रयत्न भी करके देख लिया।" उदास स्वर में मीनाक्षी ने जवाब दिया। "शहर के सभी अस्पताल और डाक्टर केंद्र से जुड़े हुए हैं। गर्भ विकास केंद्र के जरिए आए बगैर प्रसूति का कोई भी केस दर्ज नहीं किया जाता। मेरा केस कोई ले ले, इसके लिए मैं और सासू जी पंद्रह दिन दर-दर भटकते रहे। सभी ने केंद्र में ही जाने की सलाह दी। हारकर केंद्र में ही आना पड़ा।"

मीनाक्षी की बात पूरी हुई और तीनों जैसे थककर चुपचाप बैठ गये—अपने ही विचारों में खोये हुए। आखिर मीनाक्षी खड़ी हुई और बोली, "अच्छा मैं अब चलती हूं। देर हो रही है। मैंने जो कुछ कहा वह सब याद रखना। देख आसावरी, केंद्र के लोगों पर अपनी नाराजगी नहीं दर्शाना। उसका कोई उपयोग तो होगा नहीं, हां अपना कुछ अमूल्य जरूर खो बैठोगी।"

मीनाक्षी चली गयी। आसावरी और शेखर काफी देर तक इसी विषय पर चर्चा करते रहे। अब यह तय करना था कि आसावरी को अब आगे क्या करना चाहिए, केंद्र में उसका बर्ताव कैसा होना चाहिए। यह भी सोचा गया कि मीनाक्षी की बातों पर कितना भरोसा करना चाहिए।दो बार हुए उसके गर्भपात कहीं प्राकृतिक तो नहीं थे ? कुछ महिलाओं को बार-बार गर्भपात हो जाता है, और वे जानते थे कि डाक्टर भी इसका सही कारण नहीं बता पाते।"

* * *

मीनाक्षी की आप-बीती पर आसावरी का शक दो ही दिनों में मिट गया। आसावरी की बस में आने वाली और दो उन गर्भवती लड़कियों का आना बंद हो गया, जिन्हें लड़की होने वाली थी। उन दोनों का भी 'गर्भपात' हो गया था।

क्या किया जाये, कुछ सूझ नहीं रहा था। इसलिए आसावरी केंद्र में जाती रही। जो कुछ भी वे कहते, उसका विरोध करना उसने छोड़ दिया था। मीनाक्षी की हकीकत सुनने के बाद से दोपहर के भोजन के बाद की उसकी नींद ही उड़ गयी थी। ट्रांसमीटर से आती अपनी आवाज वह लेटे-लेटे सुनती रहती। उसने जो लेख रिकार्ड किये थे, उसका पहला दौर पूरा हो गया था।

दूसरा दौर शुरू हो चुका था। इसी तरह और दस दिन बीत गये। और एक दिन उसने अचानक ट्रांसमीटर में से आती किसी पुरुष की आवाज सुनी। मीनाक्षी के कहे अनुसार ही सारा घटनाचक्र चल रहा था। उसने मीनाक्षी को अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा; मीनाक्षी ने उसे। शायद उसके ट्रांसमीटर से भी किसी पुरुष की आवाज आ रही थी।

आसावरी आवाज को ध्यान से सुनने लगी। टेप से वही आवाज सुनायी दे रही थी जो मीनाक्षी ने बतायी थी। और... और वह आवाज परिचित भी लग रही थी। कई बार वह आवाज सुनी थी... कहां... भला कहां सुनी थी ?... कहीं, किसी वार्तालाप में... नहीं, उस आवाज वाले व्यक्ति से कभी बात की हो, ऐसा याद नहीं आ रहा था।... तो फिर कहां... किसी भाषण में ?... हां भाषण में ही उसने वह आवाज सुनी थी।

सब कुछ स्पष्ट हो गया। आसावरी एकदम वह आवाज पहचान गयी थी। आवाज की पहचान ने उसे और असमंजस में डाल दिया कि आखिर यह क्या हो रहा था ?

* * *

उस दिन शेखर के घर लौटने पर वह जैसे-तैसे तब तक चुप साधे रही जब तक कि शेखर ने रात का भोजन नहीं कर लिया। खाने के बाद हमेशा की तरह शेखर ने हाथ में अखबार पकड़ा, पांव टेबल पर रखकर नीचे खिसकते हुए वह कुर्सी में आराम से बैठ गया। उसी समय आसावरी उसकी कुर्सी के समीप आ बैठी और कहने लगी, "आज मेरे ट्रांसमीटर से भी पुरुष की आवाज आ रही थी।"

"क्या ?" चौंककर अखबार नीचे रखते हुए शेखर बोला।

आसावरी ने अपनी बात दोहराई।

"साले, हरामजादे... " शेखर ने गालियों की बौछार कर दी। "हर बात की एक हद होती है, आसावरी। अभी से मेरे बच्चे को कोई दूसरी आवाज सुनायी जा रही है। उसके मन पर किसी और का प्रभाव हो ? क्या मतलब है इसका ? मैं यह सब नहीं चलने दूंगा। ठहरो, कल मैं तुम्हारे साथ केंद्र जाता हूं और डा. माने की गर्दन ना मरोड़ी तो मेरा भी नाम शेखर नहीं। देखता हूं, कोई क्या करता है।"

"शेखर, मैंने वह आवाज पहचान ली है।" आसावरी धीरे से बोली।

"पहचानती हो ? किसकी है वह आवाज ?"

"हमारे प्रधानमंत्री की।"

"हमारे प्रधानमंत्री की ?... तुम्हें पूरा यकीन है ?"

"हां !"

शेखर सोच में पड़ गया। उसे चुप बैठा देख आसावरी बोली, "यह सब क्यों हो रहा है, मैं नहीं जानती। परंतु मुझे यह सब अनैतिक लगता है। न चाहते हुए भी मुझे यह सब करना पड़ रहा है। किसी पराये आदमी की आवाज, मेरे बच्चे की अभी से क्यों कर सुनाई जाये... अब चाहे वह आदमी कितना ही बड़ा क्यों न हो। अभी से उस व्यक्ति की महत्ता बच्चे के मन पर अंकित करने का प्रयत्न... छी... छी... सब बड़ा भयानक और घिनौना है। मेरी बात तो सुन रहे हो ना ?"

"हां, सुन रहा हूं, आसावरी ! मुझे भी यह सब भयानक प्रतीत हो रहा है। लेकिन आसावरी यह सब बहुत सोच-समझकर पूर्वनियोजित ढंग से किया जा रहा है। अतः इससे छुटकारा पाना कोई आसान काम नहीं। याद है, केंद्र में दाखिल होते ही उन्होंने एक फार्म दिया था। तुमने उस पर हस्ताक्षर किये थे। क्या तुमने वह फार्म पढ़ा था ?"

"नहीं। मैंने तो सिर्फ नाम, पता, उम्र लिखी, हस्ताक्षर किये और फार्म उन्हें लौटा दिया था।"

"मैंने भी उन नियम और शर्तों को नहीं पढ़ा था। मैंने सोचा था कि फार्म केवल एक औपचारिकता होगी। पर अब लगता है बात इतनी सीधी नहीं थी। हो सकता है, उस फार्म में तुमने केंद्र के सभी उपचार लेने के लिए अपनी मंजूरी दे दी हो और यदि ऐसा है तो इस पूरी प्रक्रिया के विरुद्ध हम कुछ नहीं कर पायेंगे !"

"लेकिन मैं अब तंग आ गयी हूं। मैं कल से केंद्र नहीं जाने वाली। देखती हूं, क्या होता है ?"

"ऐसा कुछ नहीं करना, आसावरी। कोई रास्ता ढूंढ़ना है तो सोच-समझकर काम करना होगा। यूं आतंकित होने से कोई लाभ नहीं।"

"तो फिर मैं क्या करूं ?"

"फिलहाल तुम केंद्र में जाती रहो। कोई न कोई रास्ता निकालते हैं।"

* * *

लाचार होकर आसावरी केंद्र में जाती रही। जैसे-तैसे चार दिन बीते। पांचवे दिन ट्रांसमीटर से बच्चे को सुनाया जा रहा वक्तव्य सुनकर उसकी सहनशक्ति जवाब दे गयी। बड़ी मुश्किल से वह निर्धारित समय तक वहां रुकी। घर आते ही उसने शेखर को फोन किया कि उसकी तबीयत ठीक नहीं और उसे जल्दी से घर आने को कहा। शेखर घर आया तो देखा कि आसावरी सामने ही बैठी थी–चुपचाप,

बिना हिले-डुले। उसने चप्पल भी नहीं उतारी थी। वह आसावरी के भीतर उबल रहे सब-कुछ का अंदाजा लगा सकता था।

"क्या बात है, आसावरी ? क्या हुआ ?" उसने पूछा।

"मुझे होने वाला बच्चा तुम्हारा है या प्रधानमंत्री का ?" शेखर को जैसे झटका लगा। बोला, "तुम भी आसावरी, जो जी में आये बोल देती हो !"

"मैं सच कह रही हूं। मैं इसी तरह रोज केंद्र जाती रही तो कुछ दिनों बाद हमारा बेटा हमें पहचानेगा भी नहीं। अपने ही घर में वह पराया बनकर रहेगा। और जैसे ही बड़ा होगा, उसकी दृष्टि में हमारी जरूरत खत्म, और एक दिन वह चल देगा। हमसे उसका न कोई लगाव होगा और न कोई भावात्मक नाता !"

"ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"ऐसा ही होगा, क्योंकि गर्भ विकास केंद्र की योजना इसीलिए बनी है। जानते हो आज ट्रांसमीटर से बच्चे को क्या सुनाया जा रहा था ?"

"क्या ?"

"हमारे प्रधानमंत्री जिन्हें हमारे बच्चे के अस्तित्व तक का पता नहीं, हमारे वही महान प्रधानमंत्री उसे कह रहे थे कि वे हम सबको बचाने वाले हैं। उनकी आवाज कह रही थी, 'मैं तुम्हारा पिता हूं, माता हूं, अभिभावक हूं, और मालिक भी मैं ही हूं। तुम्हारी निष्ठा केवल मेरे प्रति होनी चाहिए। देश के प्रत्येक नागरिक की निष्ठा केवल सरकार और मेरे प्रति ही होनी चाहिए'।" शेखर हैरान था। उसे खामोश बैठा देख आसावरी ने आगे कहा, "शेखर, लगातार नौ महीने जिस बच्चे पर यह विचार अंकित होते रहेंगे, वह अपने पिता के रूप में किसको मानेगा ? दिखने में शायद हमारा बेटा हमारे जैसा हो, परंतु विचारों से वह किसी और का होगा। तब कितने ही प्रयत्न करने पर भी हम आधारभूत उसके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं ला पायेंगे क्योंकि वे विचार उसके व्यक्तित्व का एक हिस्सा बन चुके होंगे। मैं किसी पराये आदमी की ऐसी संतान को जन्म नहीं दूंगी... कभी नहीं दूंगी।" निरंतर बढ़ता तनाव सह पाना आसावरी के लिए असंभव हो गया, और वह रो पड़ी। शेखर ने आसावरी को फूट-फूटकर रोते देखा तो आगे बढ़कर उसे अपनी बांहों में ले लिया, फिर उसके सिर को धीरे से थपथपाते हुए कहा, "रो नहीं, आसावरी ! मैं भी ऐसी संतान नहीं चाहता। कल से तुम केंद्र जाना बंद कर दो।"

* * *

अगले दिन केंद्र में न जाने के कारण आसावरी को थोड़ा चैन अवश्य मिला। परंतु वह केंद्र को याद करते हुए खोयी-खोयी-सी थी। केंद्र की तरह ही व्यायाम, गर्मागर्म

भोजन और फिर थोड़ी देर आराम उसने घर पर ही किया। उसने महसूस किया कि नियमित रूप से यदि यह किया जाये तो उसका स्वास्थ्य अच्छा बना रह सकता था।

दो दिन बीते। तीसरे दिन सुबह आसावरी के समूह की लीडर घर आ पहुंची। शेखर भी अभी काम पर नहीं गया था। आसावरी और शेखर से उसने खूब गप्पें लड़ायीं। उनके साथ चाय भी पी। शेखर ने कहा कि आसावरी की तबीयत जरा नरम थी, इसलिए वह दो दिन केंद्र नहीं जा सकी। इस पर लीडर ने कहा, "तबीयत ठीक नहीं थी तो आना और भी जरूरी था। केंद्र में तुरंत जांच कर दवा-पानी की जाती है। अच्छा, अब आज से आना शुरू कर दो आसावरी।" और उनसे विदा लेकर लीडर चली गयी।

लेकिन आसावरी अब किसी कीमत पर केंद्र में जाने वाली नहीं थी। सुबह के सारे काम निपटाकर आसावरी बाहर निकली और सीधे डा. जोशी के पास गयी। पिछले कई वर्षों से वह शेखर के परिवार की डाक्टर थीं। किंतु फिर भी उन्होंने आसावरी का नाम अपने नर्सिंग होम में दर्ज कराने से इन्कार कर दिया। वहां से बाहर निकलकर उसने आसपास के पांच-छह अस्पतालों में पूछताछ की। सभी जगह वही अनुभव हुआ। आखिर थक-हारकर वह घर लौटी।

शाम को शेखर के लौटने पर उसने सुबह का अपना अनुभव बयान किया। तब शेखर ने कहा, "मैं समझ सकता हूं क्योंकि पिछले दो-तीन दिनों से मेरे साथ भी यही हो रहा है। दफ्तर से कुछ दिनों की छुट्टी ली है और यही कोशिश कर रहा हूं कि कोई तुम्हारा नाम दर्ज कर ले। लेकिन कोई तैयार नहीं हो रहा।"

"तो अब क्या करेंगे ?"

"हमारे पड़ोस की बड़ी-बूढ़ी औरतें हमारी जरूर सहायता करेंगी। नहीं, क्या ?"

"सहायता कर सकती हैं। किंतु सहायता करना अलग बात है और प्रसव कराना अलग। और कोई समस्या पैदा हो जाये तो ? किसी डाक्टर की आवश्यकता तो होगी ही।"

तीन दिन और बीत गये। लेकिन कोई भी डाक्टर केंद्र के साथ झगड़ा मोल लेने को तैयार नहीं था। अन्ततः शेखर ने फिलहाल प्रयत्न करना छोड़ दफ्तर जाने का निर्णय लिया। जैसे ही शेखर दफ्तर गया, मकान मालिक के भेजे एक आदमी ने एक चिट्ठी आसावरी के हाथों थमा दी। चिट्ठी पढ़कर आसावरी भौंचक रह गयी थी। वह एक महीने के अंदर मकान खाली करने का नोटिस था।

शेखर को भी एक ही घंटे में दफ्तर से वापस लौटा देखकर आसावरी को आश्चर्य हुआ। आसावरी ने बिना कुछ कहे वह नोटिस शेखर के हाथ में पकड़ा दिया। उसने जड़ चेहरे से नोटिस पढ़ा और बिना किसी प्रतिक्रिया के आसावरी

को लौटा दिया। चकित होकर उसने पूछा, "अरे, नोटिस देखकर तुम्हें जरा भी गुस्सा नहीं आया ? कितने साल हो गये हमें यहां रहते हुए। अचानक वे इस तरह नोटिस कैसे दे सकते हैं ? भला क्या कारण हो सकता है ?"

शेखर कुछ नहीं बोला। अपनी जेब से लिफाफा निकालकर आसावरी को थमा दिया।

दफ्तर के पैसों की हेराफेरी के आरोप में उसे तत्काल निलंबित करने संबंधी आदेश था वह !

"पैसों की हेराफेरी... घोटाला... ?"

"नहीं, मैं कोई घोटाला करने की सोच भी नहीं सकता। दफ्तर से मिले आदेश और मकान मालिक से मिले नोटिस, दोनों के पीछे एक ही कारण है—हम केंद्र का विरोध जो कर रहे हैं।"

"लेकिन सिर्फ उसी कारण से... ?"

"तुम्हारा केंद्र उनके द्वारा चलाया जा रहा है जिनके पास अपार शक्ति है। उन्हें किसी प्रकार का विरोध पसंद नहीं। विरोध का झंडा फहराते ही केंद्र का अत्यंत सक्षम शासन-तंत्र उसे उखाड़ फेंकता है। इतनी शक्ति है उनके पास।"

"अब क्या करें ? दरअसल मकान मालिक हमें मकान खाली करने को कैसे कह सकता है ? हम समय पर किराया देते हैं। जगह का उचित इस्तेमाल करते हैं... ।"

"कानूनी तौर पर वह ऐसा नहीं कर सकता। लेकिन मेरे बाहर जाने पर यदि मालिक के आदमी आकर हमारा सामान वगैरा निकाल बाहर फेंकें और साथ में तुम्हें भी तो... ? हम क्या कर लेंगे ? उसी प्रकार मुझ पर लगे आरोप भी झूठे साबित किये जा सकते हैं। लेकिन तब तक तो मैं लटका रहूंगा।"

"अब करें भी तो क्या ? मैं केंद्र जाना शुरू कर दूं ?"

"नहीं, हरगिज नहीं।"

"पर अब हमारी कैसे गुजरेगी ? न रहने को जगह है, न नौकरी का पता है।" रुआंसी होकर आसावरी बोली।

"निकलेगा, कोई न कोई रास्ता अवश्य निकलेगा। परंतु किसी हालत में केंद्र में नहीं जाना। किसी पराये आदमी की मानसिक गुलामी करने वाला लड़का हमें नहीं चाहिए। केंद्र के तथाकथित 'संस्कारों' से निर्माण होने वाली नयी पीढ़ी तो प्रधानमंत्री के इशारे पर नाचने वाली कठपुतलियां होंगी। जिस तरह किसी कम्प्यूटर को विशिष्ट काम के लिए प्रोग्राम किया जाता है, उसी प्रकार ये बच्चे प्रधानमंत्री के आदेशों के लिए प्रोग्राम किए गये होंगे। वे जीने-मरने तक के लिए प्रधानमंत्री के आदेशों पर निर्भर करेंगे। इस तरह का प्रोग्राम किया हुआ लड़का मुझे नहीं चाहिए।

"और फिर, किसी कारणवश यह व्यक्ति सत्ताविहीन हो जाये तथा और कोई दूसरा व्यक्ति सत्तासीन हो जाये तो इन कठपुतलियों का क्या होगा ? जिस आवाज के आज्ञानुसार हिलने-डुलने के आदी हैं, अगर वह आवाज ही नहीं रही तो ये बिना पतवार की नैया जैसे हो जायेंगे–दिशाहीन, भटकते हुए। सोचने विचारने की शक्ति तो ये प्रधानमंत्री के पास गिरवी रख चुके होंगे–फिर राह कैसे तलाश करेंगे ये ? इस तरह का दुर्बल बेटा मुझे नहीं चाहिए।"

"लेकिन, शेखर इस कुचक्र से बाहर निकलना कठिन होता जा रहा है। और हमें बरबाद करने की इच्छा रखनेवाला तंत्र बहुत बड़ा भी है और शक्तिशाली भी। मुझे तो बहुत डर लग रहा है।"

"घबराओ नहीं आसावरी। निडर रहेंगे, तभी कोई मार्ग मिल पायेगा। कुछ भी हो हमारे बेटे का जन्म स्वतंत्र रूप से ही होना चाहिए। उसे एक स्वतंत्र जीवन जीने का अवसर मिलना चाहिए।"

"शेखर, कहीं हम उसकी जिंदगी से खिलवाड़ तो नहीं कर रहे ? आसपास के ऐसे वातावरण में अकेले लड़ना आसान नहीं है...।"

"संघर्ष का मूल्य तो चुकाना ही होगा आसावरी। कभी हताश और निराश भी होना पड़ सकता है, लेकिन यह आनंददायक अधिक होगा। हमारे बेटे को यह आनंद और दुख तथा स्वतंत्रता के हर्षोन्माद का अनुभव मिलना ही चाहिए। मैं जानता हूं, आसावरी, स्वतंत्रता का सुख और दुख दोनों उसके लिए आनंददायक ही होंगे, क्योंकि वह उसकी अपनी, निजी उपलब्धि होगी।"

शेखर की बातों ने आसावरी को अभिभूत कर दिया था। वह देख रही थी कि शेखर ने इस बारे में कितनी गहरायी से विचार किया था। और अपने विचारों की सत्यनिष्ठा के लिए सारी दुनिया के विरुद्ध अविचल खड़े रहने के लिए कमर कस ली थी।

टेलीफोन की तीक्ष्ण घंटी से दोनों का वार्तालाप भंग हुआ। शेखर ने फोन उठाया।

शेखर के पहले वाक्य से ही आसावरी पहचान गयी कि फोन डा. माने का था।

"हैलो, डा. माने," शेखर ने कहा। "नहीं, वह केंद्र में नहीं आयेगी... तबीयत एकदम बढ़िया है। सब कुछ ठीक चल रहा है, धन्यवाद। करो, करो, जो जी में आये कर लो। तुम्हारी धमकियों से मैं डरने वाला नहीं हूं... जहन्नुम में गया तुम्हारा केंद्र और तुम्हारा बिग बॉस। तुम सब ऊपर से नीचे तक चोर हो। और तुम्हारे जैसे छोटे लोगों के साथ मैं बात भी नहीं करना चाहता।" शेखर ने रिसीवर पटका और ठहाका लगाकर हंस दिया। आसावरी हैरान थी कि इतनी चिंता में, पता नहीं यह हंस कैसे रहा है ?

तभी शेखर ने कहा, "अब गर्मा-गर्म चाय हो जाये।"

"चाय ?" आसावरी बोली।

"और क्या ! तुम बढ़िया चाय बनाओ, मैं तुम्हें एक बढ़िया बात बताता हूं। अभी डा. माने से बात करते समय मुझे सूझी है। इस पर विचार करते हैं... ।"

आसावरी चाय बनाने लगी और शेखर अपनी योजना बताने लगा। शेखर के दूर के रिश्ते के मामा महाराष्ट्र के तासगांव में खेतीबाड़ी किया करते थे। कई साल पहले मामी का निधन हो चुका था, इसलिए अब वे और उसकी बूढ़ी मां, यानी शेखर की नानी, दोनों ही घर में रहते थे। तासगांव शहर से दूर थोड़ी-सी आबादी वाला एक छोटा-सा गांव था। इसीलिए वहां गर्भविकास केंद्र भी नहीं था। ऐसे कई गांवों में केंद्र नहीं थे। सरकार की अपेक्षा थी कि महिलाएं तालुके के केंद्र जायें। लेकिन ऐसे केंद्र पर्याप्त नहीं थे। अतः अधिकांश महिलाएं घर में ही दायी के हाथों प्रसव कराना पसंद करती थीं। उसके गांव में दो-तीन दाइयां थीं–शेखर को याद है।

"हम यदि तासगांव जाते हैं तो मुझे पूरा भरोसा है कि मामा हमें रख लेंगे। मेरी नानी भी बड़ी दयालू और स्वतंत्र है। और मान लो, वे हमारी सहायता करने से इन्कार भी कर दें, तो भी गांव में रहने के लिए हमें कोई न कोई जगह अवश्य मिल जायेगी।"

एकदम से दूर-दराज के गांव में जाना कोई मजाक नहीं था। लेकिन दूसरा कोई विकल्प भी नहीं था। आसावरी के मायके जाने में कोई तुक नहीं थी, क्योंकि आसावरी के पिता स्वयं सरकारी नौकरी में थे। इससे उनके लिए मुसीबत खड़ी हो सकती थी जो न शेखर चाहता था और न आसावरी। शेखर के पिता तो उसके बचपन में ही गुजर गये थे और मां उसके बड़े भाई के साथ रहती थी।

आसावरी को विचारमग्न देख शेखर बोला, "आसावरी, हमने एक लड़ाई शुरू की है। अब पीछे नहीं हट सकते। तासगांव जाकर रहना कोई सरल नहीं। मतलब साफ है कि कष्ट सहने के लिए तैयार हो जाओ... लेकिन... ।"

"मैंने कब ना कही ?" उसे बीच में ही टोकते हुए आसावरी ने कहा। "तासगांव जाने के लिए मैं तैयार हूं। सामान वगैरा अभी से बांधना शुरू कर देते हैं। जितनी जल्दी हो सके, यहां से चलते हैं।"

* * *

तासगांव में हवेली जैसे बड़े अपने घर के आंगन में मामा बैठे थे। अपनी बेचैनी को छिपाने के लिए शेखर उनके पास बैठकर कुछ भी बोल रहा था। दायी आ

चुकी थी और काफी देर से आसावरी और नानी के पास थी। शेखर सोच रहा था कि यहां आए छह महीने से अधिक समय बीत गया। मामा और नानी दोनों ने कितनी सहजता से अपनी जिंदगी में हमें समा लिया। नानी आसावरी का बेहद ध्यान रखती और आसावरी के खाने, आराम और दूसरी चीजों को लेकर हमेशा परेशान और सतर्क रहती। जल्दी ही नानी के प्यार ने आसावरी का मन मोह लिया। अब वह समय आ गया था जिसकी वे न जाने कब से प्रतीक्षा कर रहे थे। सुरक्षित प्रसव ही उन सबके द्वारा अनुभव की गयी तकलीफों का इनाम था।

शेखर अपने विचारों के भंवर में खोया हुआ था कि तभी उसे नवजात शिशु के जोर से रोने की आवाज सुनायी दी।

शेखर उछलकर खड़ा हो गया। उसकी ओर देखते हुए मामा हंसकर बोले, "अरे बैठ जा, बैठ जा... तुम्हारे यहां पुत्र ने जन्म लिया है... मुझे मालूम है... यह लड़के की ही आवाज है... ।"

मुस्कराते हुए शेखर बैठ गया। लड़का होगा, यह तो उसे पहले से पता था। लड़का कैसा है। आसावरी तो ठीक है ना ?

कुछ देर बाद नानी की आवाज आयी, "अरे बच्चो, आओ, भीतर आ जाओ।"

शेखर और उसके मामा अंदर गये। अंदर सब साफ-सफायी हो चुकी थी। आसावरी थकी हुई लग रही थी, परंतु उसका चेहरा खिला हुआ था। नानी मां ने बच्चे को अपनी बांहों में उठाया हुआ था।

"देख रे, तेरा बेटा !" नानी ने कहा, "तगड़ा है ना। होगा क्यों नहीं ! सारी दुनिया से लड़कर जो इस तरह आया है।"

नवजात शिशु के प्रति स्नेह और गर्व से शेखर की छाती चौड़ी हो गयी। उन सबके प्रयास सफल हो गये थे।

एक नये जीव का जन्म हुआ था।

एक स्वतंत्र आदमी का जन्म हुआ था।

**अंग्रेजी से सुनीता परांजपे द्वारा अनूदित**

# नीली विपत्ति

अनीष देब

राकेश गहरी नींद में नीले सियार का सपना देख रहा था। कल रात को ही उसने कहानी पढ़ी थी कि एक सियार अचानक नील के टब में गिरकर नीले रंग का हो गया। उसके बाद जब वह जंगल में पहुंचा तो जंगल के पशु-पक्षियों ने उसे जंगल के राजा के रूप में स्वीकार कर लिया, क्योंकि उन्होंने कभी भी नीले रंग का सियार नहीं देखा था। इसलिए उन सबने उस अद्‌भुत जानवर को अपना राजा चुन लिया।

राकेश सपना देख रहा था कि उसे एक नीले रंग का सियार बुलाकर कह रहा है, "राकेश बाबू, राकेश बाबू, मैं उस कहानी का सियार नहीं हूं, बल्कि सचमुच में नीले रंग का सियार हूं।"

राकेश ने थोड़ी देर आश्चर्य से देखा और फिर पूछने लगा, "क्या यह सच है ?"

"बिल्कुल सच।" सियार ने जवाब दिया।

उसके बाद राकेश को आश्चर्यचकित करते हुए सियार 'मियाऊं, मियाऊं' करने लगा। राकेश चौंक उठा। 'कभी सियार मियाऊं, मियाऊं करता है ?' उसने अपने आपसे पूछा। फिर एक झटके के साथ उसकी नींद टूट गयी।

नींद खुलते ही उसने देखा कि उसके बिस्तर पर उसके पास एक नीले रंग की बिल्ली उकडूं होकर बैठी है, जो मियाऊं-मियाऊं कर रही है। उसकी नीली आंखें कांच की गोलियों की तरह ही चमक रही थीं और वह लगातार राकेश की तरफ ही देख रही थी। झाड़ू की सीकों की तरह और पतली नीले रंग की उसकी मूंछों ने राकेश का ध्यान आकर्षित किया। शरीर गाढ़े नीले रंग का था, सिर्फ पूंछ के सिरे पर एक काला धब्बा था।

राकेश ने सोचा कि शायद उसका सपना अभी तक नहीं टूटा। उसने सोचा, जरा चुटकी काटकर देखूं तो ! 'यह क्या ! उसका सफेद रंग नीला कैसे हो गया ?' उसने हैरान होकर अपने आपसे पूछा। उसके बाद, एक-एक करके अजीब सी घटनाएं राकेश के सामने होने लगीं।

घर की दीवारें, चादरें, तकियों के गिलाफ, मेज-कुर्सी, पंखा, यहां तक कि कमरे का फर्श, सभी कुछ नीले रंग का हो गया। कोई चीज चमकीले नीले रंग की, कोई मटमैले नीले रंग की, कोई काले-नीले रंग की तथा कोई पूरी तरह काले रंग की हो गयी थी।

बिस्तर पर बैठी हुई बिल्ली अब भी मियाऊं, मियाऊं किये जा रही थी।

राकेश घबराकर उठ बैठा। उसने देखा कि उसकी मां आसपास कहीं नहीं है। वह बहुत पहले ही उठ चुकी थी। शायद वह रसोईघर में होगी। राकेश को रोना आ गया। किसी तरह वह चीख उठा, "मां, मां !"

मां आवाज सुनते ही दौड़ी चली आयी।

मां को देखते ही वह फूट-फूटकर रोने लगा।

उसके शरीर का रंग गाढ़ा नीला पड़ गया था। सिर्फ आंखों की पुतलियां काली थीं, बाकी भाग का रंग चटकीला नीला हो गया था। यद्यपि सिर के बाल पहले की तरह काले थे।

राकेश बिस्तर से उतरा और दौड़कर अपनी मां से लिपट गया। मां के पल्लू में मुंह छिपाकर रुंधे हुए स्वर में कहा, "यह सब क्या है, मां ? क्या यह सब मैं गलत देख रहा हूं ?"

मां उसके बालों को सहलाने लगी। प्यार से आश्वासन देते हुए वह कहने लगी, "नहीं बेटा, तूने गलत नहीं देखा। हम सभी को हर चीज नीले रंग की दिख रही हैं। सबेरे नींद टूटते ही मैंने यह हालत देखी। लेकिन डरने की कोई बात नहीं। कुछ ही देर पहले रेडियो और टी. वी. से पता चला है कि सारे विश्व भर में इस तरह की घटना घटी है। इसके डरने का कोई कारण नहीं है। सब ठीक हो जायेगा।"

मां की बातों को सुनकर राकेश आश्वस्त नहीं हुआ। उसने बिस्तर पर बैठी बिल्ली की तरफ इशारा करते हुए कहा, "उधर देखो !"

मां हंसी और बोली, "वह तो तेरी मीनू है। बाकी चीजों की तरह उसका रंग भी नीला हो गया है। चलो, अब हाथ-मुंह धोकर पढ़ने बैठो।"

मां को रोज की तरह स्वाभाविक देखकर राकेश का आश्चर्य और भय धीरे-धीरे कम होने लगा। मां के रसोई में जाते ही उसने अपने टूथब्रश में थोड़ा-सा टूथपेस्ट लगा लिया। टूथब्रश का रंग वैसे भी नीला था, अतः उसका रंग नहीं बदला। लेकिन सफेद टूथपेस्ट गाढ़े नीले रंग में परिवर्तित हो गया था।

मुंह धोने के लिए जब वह वाश-बेसिन के पास पहुंचा तो सफेद वाश-बेसिन का रंग भी नीला पाया। अब तक उसका डर मन से निकल गया और उसके मन में एक हर्ष भरा कौतूहल जाग उठा। हाथ-मुंह धोकर वह इधर-उधर देखने लगा।

मां खाना बनाना छोड़कर बरामदे के रेलिंग का सहारा लेकर पड़ोस में रहनेवाली टूकी की मां के साथ बातें कर रही थी। दोनों हंस भी रही थीं।

राकेश ने सुना, पड़ोस की मौसी कह रही हैं, "दीदी, भात का जो आज रूप बना है, वह देखने लायक है। मुझे नहीं लगता कि टूकी के पिता आज आफिस जाते समय उसे खाकर जायें।"

सच तो है, नीले रंग का भात खाना क्या कोई मजाक है ! राकेश सोचने लगा।

राकेश की मां कहने लगीं, "मेरी भी तुम्हारी जैसी हालत है, बहन। भात, दाल, हल्दी, मिर्च सभी का रूप बदल गया है।"

टूकी की मां बहुत चिंतित नजर आ रही थी। उसने कहा, "रातों-रात यह कैसा जादू हो गया दीदी ? मुझे तो लगता है दाल में कुछ काला है।"

राकेश की मां ने कहा, "थोड़ी देर पहले ही रेडियो में आया है कि वैज्ञानिक इस विषय पर काफी छानबीन कर रहे हैं। जल्दी ही वे इसका समाधान कर लेंगे।"

राकेश वहां और नहीं रुका। दौड़कर उस बाल्कनी में पहुंचा जहां से सड़क नजर आती थी। अरे ! यह क्या ! उदय होते सूर्य का रंग भी गहरा नीला है। आकाश के नीले रंग में जैसे वह समा गया है। चारों तरफ नीली धूप बिखरी हुई थी। पेड़-पौधों का रंग भी नीला दिखायी दे रहा था। सिर्फ काले रंग के कौए नीले रंग के टी. वी. एनटीना के ऊपर बैठकर पहले की तरह 'कांव-कांव' कर रहे थे।

राकेश हैरान होकर चारों ओर देखता रहा।

थोड़ी देर बाद मां भी बाल्कनी में आकर खड़ी हो गयी। उसके हाथ में दूध का एक गिलास था। उससे संबोधित हो मां ने कहा, "लो राका, जल्दी से दूध पी लो। गैस जलती छोड़कर आयी हूं।"

राकेश ने दूध का गिलास हाथ में लेते हुए मुंह बिचका लिया। नीले रंग का दूध ! मां की तरफ मुंह घुमाकर प्रार्थना भरे स्वर में उसने कहा, "तुम्हीं बोलो मां, ऐसा दूध क्या कोई पी सकता है ?"

मां ने व्यस्तता दिखाते हुए कहा, "हां-हां, सब हो सकता है। यदि हर चीज का रंग हमेशा के लिए नीला ही रह जाये तो बताओ, क्या करोगे। दूध, भात, वगैरा सभी कुछ नीले रंग का–खाने की आदत तो डालनी ही होगी। क्यों ठीक है न ! इंसान बिना खाये तो रह नहीं सकता। लो, जल्दी से पीकर गिलास बेसिन में रख देना। मैं जा रही हूं... ।"

मां व्यस्त पांवों से लौट रही थी कि राकेश ने पूछा, "पिताजी क्या अभी तक नहीं आये ?"

मां ने कहा, "नहीं। लगभग एक घंटा हो गया उन्हें बाजार गये। लगता है

बाजार में कोलाहल मच गया है। लो, दूध जल्दी खत्म करो।"

मां उसे विचारों में खोया छोड़ पलक झपकते ही वहां से चली गयी।

राकेश ने सावधानी के साथ दूध के गिलास से एक घूंट दूध पिया। लगा, उसे उबकायी आ जायेगी। लेकिन दूध का स्वाद पहले जैसा ही था, सिर्फ रंग बदल जाने से ही खाने-पीने की इच्छा क्यों बदल जाती है ! नहीं तो राकेश को दूध बहुत भाता है।

मीनू अब बिस्तर से उतरकर उसके पैरों के इर्द-गिर्द मियाऊं-मियाऊं करती घूमने लगी थी। शायद उसे दूध की खुशबू मिल गयी थी। राकेश ने सोचा, उसे थोड़ा-सा दूध देकर देखा जाये कि वह पीती है या नहीं। राकेश ने गिलास से थोड़ा-सा दूध जमीन पर ठीक मीनू के सामने डाल दिया। बिल्ली दूध को देख अचकचा गयी।

राकेश ने अपने पिताजी से सुना था कि कुत्ता, बिल्ली, गाय आदि जानवर इन्सानों की तरह प्रकृति के सात रंग नहीं देख पाते। यहां तक कि स्पेन में जो सांड की लड़ाई होती है, उसमें सांड़ लाल कपड़े को देखकर नहीं भड़कता। बेचारे सांड़ को तो कपड़े का रंग सिर्फ मटमैला ही दिखायी देता है। असल में कपड़े के तेजी से हिलाने के कारण वह चिढ़ जाता हैं ओर दौड़ने लगता है।

अतः इसके अनुसार देखा जाये तो मीनू को दूध का रंग अवश्य मटमैला ही दिख रहा होगा। क्या मालूम, बिल्ली के लिए नीले रंग देखना संभव हो। शायद इसलिए वह दूध की तरफ संदेहभरी नजरों से देख रही है।

अंततः प्राणशक्ति की ही जीत हुई। गंध के सहारे मीनू ने फर्श पर पड़े दूध को धीरे से चाटा। फिर चप्-चप् की आवाज के साथ उसने पूरे दूध को चाटकर साफ कर दिया।

मीनू की नकल करते हुए राकेश ने गिलास के दूध को आंखें मूंद कर पी लिया। फिर एक घूंट पानी पीकर गिलास वाश-बेसिन ने पास रखा और अपनी किताबें खोलकर पढ़ने बैठ गया।

इतिहास की पुस्तक खोलते ही राकेश ने महसूस किया कि पढ़ना किसी तरह भी संभव नहीं। कारण यह है कि किताब के गाढ़े नीले पन्ने पर छपे काले रंग के अक्षर ठीक से देख पाना मुश्किल था। राकेश उदास होकर हर किताब और कापी के पन्नों को उलट-पुलट कर देखने लगा। धत् ! स्कूल जाकर भी अब क्या होगा ! किताबें छोड़कर वह उठा और पिताजी की मेज पर पड़े ट्रांजिस्टर को उठा लाया। स्विच् आन करते ही विशेष घोषणा सुनाई दी : ... 'हर स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए , जब तक रंग अपनी स्वाभाविक दशा में नहीं आ जाते तब तक सभी स्कूल, कालेज, सरकारी व गैर-सरकारी संस्थान अनिश्चित काल के लिए बंद रहेंगे। सरकारी माध्यम के अनुसार वैज्ञानिक इस आश्चर्यजनक घटना की छानबीन

कर रहे हैं एवं परिवेश को स्वाभाविक परिस्थिति में लाने के लिए यथासंभव चेष्टा कर रहे हैं। आम जनता की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए वाहनों के लिए सभी सड़कें बंद कर दी गयी हैं... ।"

स्विच् दबाकर राकेश ने रेडियो बंद कर दिया। सामान्य रंगों में थोड़ी फेरबदल हो जाने से ही कैसा संकट आ गया है।

इसी बीच राकेश के पिताजी कमरे में घुसे और बोले, "राका, तुम्हारे स्कूल की छुट्टी है।"

राकेश ने देखा, पिताजी नीले रंग का मलमल का कुर्ता और नीली धोती पहने हुए हैं। शरीर का रंग गाढ़ा नीला है।

कुर्ता उतारकर एक तरफ रखते हुए राकेश के पिताजी ने फिर कहा, "बाजार में तो कोलाहल मचा हुआ है। अजीब-अजीब रंग की चीजें बेची जा रही है : नीली फूलगोभी, नीली रजनीगंधा, और मछली बाजार में तो काली रोहू मछली के टुकड़े दिखायी दिये।"

"पिताजी, मछली का रंग काला क्यों था ?" राकेश ने प्रश्न किया।

पिताजी ने हंसकर कहा, "होगा क्यों नहीं ? खून का रंग जो काला हो गया है। और हां, बाजार में सुना कि स्कूल, कालेज, परिवहन-सेवाएं, दफ्तर, फैक्ट्रियां, सभी कुछ अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिये गये हैं।

"हां, ठीक ही सुना है। अभी-अभी रेडियो में भी इसकी घोषणा की गयी है।"

"देखूं तो, रेडियो तो बढ़ाना ज़रा।"

राकेश ने रेडियो पिताजी को दे दिया। किताबों को समेटकर वह उठा और फिर बाल्कनी में जा खड़ा हुआ।

सामने वाले मकान की छत पर तीन गहरे नीले रंग के कबूतर बैठे हुए थे। उस घर के तपनदा कबूतर पालने के शौकीन हैं। एकटक उस तरफ देखते हुए राकेश सोच रहा था, सचमुच, यह कैसा अजीब दृश्य है ! सूर्य के सात में से छह रंग गायब हो जाने से कैसी विपत्ति आ खड़ी हुई है। सारी दुनिया ठहरकर रह गयी है। रास्ते पर गाड़ी चलाना बहुत खतरनाक हो गया है। चारों तरफ सिर्फ नीले या काले रंग की चीजें ही नजर आ रही थीं। इस परिवेश में गाड़ी चलाने का अभ्यास ने होने के कारण ड्राइवर कहीं भी एक्सीडेंट कर सकते थे। कोई भी वाहन सड़कों पर न चलाने संबंधी रेडियो निर्देश के पीछे यही कारण रहा होगा।

सिनेमाघर भी शायद बंद होंगे। नीला रंग छोड़कर सभी रंग अगर गायब हो जायें तो रंगीन सिनेमा में और बचा ही क्या ? और श्याम-श्वेत सिनेमा में भी यही समस्या। सफेद रंग तो समाप्त ही हो जायेगा। उसकी जगह रहेगा नीला

सिर्फ नीला रंग। ठीक यही दशा टी. वी. की भी होगी।

जब रंग मौजूद थे तब उन रंगों के महत्व को किसी ने नहीं समझा। किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि इनके न रहने से मनुष्य का जीवन गतिहीन हो जायेगा। अब पृथ्वी पर रहने वाले हम सबके आने वाले दिन कैसे कटेंगे–राकेश सोचने लगा।

शाम को राकेश को पिता से पता चला कि कलकत्ता के सब रंग की कम्पनीवाले कोई दूसरा काम करने की सोच रहे हैं। दुकानों में जितने भी रंग थे सब उलट-पुलट कर नीले या काले हो गये थे।

इधर, वृद्ध व्यक्तियों के बाल और दाढ़ी सब नीले रंग में बदल गये हैं और वे बहुत खूबसूरत लग रहे हैं। इसे देखकर उन लोगों के लिए बालों को तुरंत सफेद करने संबंधी कृत्रिम उपाय होने लगे थे। विभिन्न सैलूनों में काले बालों को सफेद करवाने की होड़ सी लग गयी है।

राकेश आश्चर्यचकित हो अपने पिताजी की बातों को सुन रहा था। उससे भी ज्यादा चकित वह तब हुआ जब उसने रेडियो से यह समाचार सुना कि इस बीच दुनिया में कई लाख दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। हिमालय की बर्फ का रंग आकाश के रंग के समान नीला हो गया है, इसलिए सत्ताईस हवाई जहाज हिमालय की चोटियों से टकरा चुके हैं। भारतवर्ष में अब तक तीन पुरुष, एक महिला इस रंग बदलने के घटनाचक्र से घबराकर पागल हो गये हैं।

कई जगहों से इस तरह की घबरा देने वाली और भी अनेक दुर्घटनाओं का विवरण था।

राकेश का मन दुखी हो गया। वह धीरे-धीरे चलता हुआ बरामदे में जा खड़ा हुआ। शाम हो चुकी थी और अंधेरा हो चला था। लेकिन आकाश से चांद-तारे कहां गये ? गाढ़े काले रंग के आकाश में गाढ़े नीले रंग का चांद था। वह ठीक दिखायी भी नहीं दे रहा था। और तारे ? वे तो दिखायी न देने के बराबर। क्या इसी तरह बीतेगा हर दिन, हर रात ?

राकेश वापस कमरे में लौट आया। कमरे में नीले रंग की बत्ती जल रही थी। ट्यूब और बल्ब दोनों ही नीली रोशनी दे रहे थे। पिताजी और मां चुपचाप बैठे थे। मां का चेहरा मटमैला नजर आ रहा था। सुबह की चमक अब चेहरे पर मौजूद नहीं थी। पिताजी भी बड़े चिंतित जान पड़ रहे थे। रेडियो सामने रखा था। ऐसे में रेडियो के सिवा और चारा भी क्या था। किताब या अखबार पढ़ना कठिन था। टी. वी. देखना भी संभव न था। इस तरह घर में बैठे-बैठे सब अपने आप में ही खीज रहे थे।

पिताजी रेडियो पर संगीत का कार्यक्रम सुन रहे थे। अचानक राकेश की तरफ मुड़कर उन्होंने कहा, “राका, तुमने ध्यान दिया, रेडियो पर समाचारों को समाचार-

वाचक ठीक से पढ़ नहीं पा रहे हैं। नीले कागज पर काले अक्षर पढ़ना लोहे के चने चबाने जैसा होता होगा उनके लिए।" राकेश धीरे से मुस्कराया।

मां ने कहा, "फिर भी रेडियो के अलावा और चारा भी क्या है ?"

राकेश ने पूछा, "पिताजी, ताजा समाचार में कुछ कहा है क्या ?"

"हां, कहा है। अमेरिका के वैज्ञानिकों ने काफी छानबीन के बाद बताया है कि सूर्य में ही कुछ गड़बड़ है, जिसकी वजह से यह विचित्र घटना घटी है। अगले चौबीस घंटे के बाद ही वे निश्चित रूप से कुछ कह पायेंगे।"

मीनू राकेश के इर्द-गिर्द घूम रही थी। राकेश उसे गोद में लेकर प्यार से सहलाने लगा। फिर काले रंग का गेंद लेकर खेलने लगा। ऐसा लग रहा था मानो समय ठहर गया है।

इसी तरह रात के दस बज गये, किसी तरह खाना खाकर राकेश अपनी मां के पास जाकर लेट गया। मीनू भी उससे सटकर लेट गयी। पिताजी ने बगल के कमरे में जाते-जाते राकेश से कहा, "दिल छोटा मत करो राका। कल सवेरे उठकर देखोगे कि सब ठीक हो गया है।

*　　　　*　　　　*

पिताजी की बात इतनी जल्दी सच हो जायेगी, राकेश ने यह कभी नहीं सोचा था।

सुबह जब उसकी नींद टूटी तो वह हैरान रह गया। क्या उसकी आंखें गलत देख रही हैं। राकेश ने लेटे-लेटे ही कनखियों से चारों तरफ देखा। कमरे की दीवारों का रंग फिर से सफेद हो गया था। उसका अपना रंग भी फिर से गोरा हो गया।

खिड़की से सूरज की सुनहरी किरणें कमरे की शोभा बढ़ा रही थीं। घूमकर उसने देखा कि मां नहीं है। वह तो बहुत पहले ही उठ चुकी होगी।

राकेश झट अपने बिस्तर से नीचे कूद पड़ा। वह बहुत खुश था। हे भगवान ! अच्छा हुआ जो सब कुछ पहले जैसा हो गया था। लेकिन यह सब हुआ कैसे ?

राकेश मां को खोजता हुआ रसोई की तरफ दौड़ पड़ा। वहां पहुंचकर देखा कि पिताजी हाथ-पांव हिलाते हुए मां को कुछ समझाने की कोशिश कर रहे हैं। उनके एक हाथ में बाजार का सामान लाने वाले दो झोले थे। झोलों को ऊपर उठाते हुए पिताजी समझा रहे थे, "सोचो यह सूर्य है। इस सूर्य से ही हमारी पृथ्वी पर सफेद रोशनी आती है।"

मां ने बीच में ही टोका, "सफेद कहां, वह तो पीली रोशनी है।"

पिताजी उत्तेजित होकर कुछ बड़बड़ाये। फिर बोले, "तुम्हें यह सब बताने से कोई फायदा नहीं। बेहतर होगा कि यह बात मैं राका से ही जाकर कहूं।"

राकेश को मजा आ गया, "सभी रंग फिर से बदल गये हैं पिताजी। लेकिन यह सारा बदलाव आया कैसे ? रेडियो में क्या इस बारे में कुछ आया है ?"

"अरे, वही तो मैं तुम्हारी मां को समझाने की कोशिश कर रहा था। रेडियो ने जो कुछ संक्षेप में बताया, वह इस प्रकार है : परसों रात यानी तीस घंटे पहले सूर्य में एक भयानक विस्फोट हुआ था। उस विस्फोट का कारण अभी तक वैज्ञानिकों को पता नहीं चला। लेकिन कहा है कि विस्फोट के कारण एक अजीब-से विकिरण ने सूर्य को चारों तरफ से घेर लिया था। विकिरण ने सूर्य के प्रकाश से छह रंगों को सोख लिया। उसने सिर्फ नीली आभा को ही निकलने दिया। फलस्वरूप पृथ्वी की हर चीज नीली दिखायी पड़ रही थी। इसके सिवा इस विकिरण का प्रभाव सूर्य के सबसे निकटवर्ती तीन ग्रहों यानी बुध, शुक्र और पृथ्वी पर भी पड़ा। इसलिए हमारे कृत्रिम रोशनी के स्रोत यानी ट्यूब और बल्ब भी नीले रंग की रोशनी दे रहे थे।"

"लेकिन काला रंग ?" चावल के बर्तन में कड़छी चलाते हुए राकेश की मां ने पूछा।

जवाब दिया राकेश ने, "काला कोई रंग नहीं होता। अगर किसी चीज का कोई रंग न हो तो वह हमें काली दिखायी देती है।"

मां का चेहरा देखकर पता चलता था कि राकेश के जवाब से मां संतुष्ट नहीं हैं। इसे भांपकर पिताजी ने कहा, "भारतीय समय के अनुसार पिछली रात साढ़े तीन बजे के करीब सूर्य के चारों तरफ जो विकिरण फैला हुआ था, वह महाशून्य में समा गया। फलतः शेष छह रंग फिर से दिखायी देने लगे तथा पृथ्वी के ऊपर से उस विकिरण का प्रभाव छंट गया। इसलिए अब ट्यूब और बल्ब की रोशनी में कोई गड़बड़ी नहीं रहेगी। हम सिनेमा व टी. वी. भी पहले की तरह देख सकेंगे।

पिताजी ने बाजार के झोलों को नीचे करते हुए राकेश को धीरे से कहा, "राका, अब रंगों के विषय में अपनी मां को संक्षेप में बता देना।

राकेश को मजा आया और उसने सिर हिला दिया। हालांकि मां खाना बनाने में व्यस्त थी, फिर भी उसके कान उन दोनों की तरफ थे।

गला खंखार पिताजी कहने लगे, "ध्यान से सुनों ! सूर्य की जो सफेद किरणें, तुम्हारे अनुसार पीली किरणें हैं, वैज्ञानिकों के अनुसार सफेद किरणें ही हैं। यदि सफेद रोशनी के अलग-अलग भाग होकर बिखर जायें तो तुम्हें सात-सात रंग दिखायी देंगे। आकाश में इंद्रधनुष निकलने पर हम वही सात रंग अलग-अलग देख पाते हैं। दिन में हर चीज के ऊपर यह सफेद रोशनी फैली रहती है, लेकिन फिर भी हम सभी चीजों को अलग-अलग रंगों में देख पाते हैं। ऐसा क्यों होता है ? तुमने जो यह लाल रंग की साड़ी पहन रखी है, इसके बारे में सोचो। इसके लाल दिखने

का कारण यह है कि इस लाल रंग ने अन्य छह रंगों को सोख लिया है। सिर्फ लाल आभा को आने दिया है जैसे उस विकिरण ने सिर्फ नीले रंग को आने दिया था। जो चीज सभी रंगों को सोख लेती है, वह हमें काले रंग की दिखायी देती है तथा जो चीज स्पेक्ट्रम के सभी रंगों को वापस भेज देती है, वह हमें सफेद दिखायी देती है। जैसे मेरा यह धोती-कुर्ता, बर्तन के चावल। अब समझी ना !"

मां ने कड़छी चलाते हुए कहा, "समझी, बहुत समझी ! अब जल्दी जाओ और बाजार कर लाओ। कल तो आप नीला भात नहीं खा पाये, आज पेट भरकर सफेद भात खाकर आफिस जाना।"

पिताजी चल दिये। जाते-जाते कह गये, "कल अखबार नहीं पढ़ पाया। देखूं तो, आज कोई विशेष समाचार छपा है कि नहीं..."

मां ने राकेश से कहा, "क्या बात है राका ! जाओ, जाकर पढ़ो।"

राकेश पढ़ने की मेज पर लौट आया। मीनू टेबल के नीचे चुपचाप लेटी हुई थी। खिड़की से आती धूप को देखकर राकेश बहुत खुश था। वह उठा और सीखचों से माथा सटाकर सूर्य की तरफ देखने लगा। आज सूर्य कितना खूबसूरत लग रहा है। इससे पहले कभी ऐसा नहीं महसूस हुआ। सभी ने सूर्य को घर की मुर्गी दाल बराबर समझ रखा था।

लेकिन आज तो वह एक नया सूर्य लग रहा था—पीली आभा के साथ झिलमिलाता हुआ।

**अंग्रेजी से कमलेश सेन द्वारा अनूदित**

# समय

शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय

सोमनाथ की उम्र थी सिर्फ बाईस साल। इस उम्र में हर आदमी की ताकत, उत्साह और आवेग सभी कुछ उठान पर रहता है। सोमनाथ को एक उच्छृंखल और समझदार लड़की से एक-तरफा प्रेम हो गया। लड़की का नाम था—अपरा। सोमनाथ का उससे कोई परिचय न था। मुहल्ले का सबसे खूबसूरत घर मित्रा लोगों का था। बंगले के आगे-पीछे बड़े-बड़े बगीचे थे। टेनिस लान, स्वीमिंग-पूल भी थे। सात गाड़ियों को एक साथ रखने वाला गैरेज। सात विदेशी कुत्ते। ऐसे घर में रहने वाली लड़की अपरा को पता भी नहीं कि गली के भीतर एक टूटे-फूटे मकान में सोमनाथ नामक एक युवक रहता है। उसके पिता स्कूल मास्टर हैं और वह बेकार है। बैंक से ऋण लेकर वह वैज्ञानिक उपकरण का छोटा-सा लघु-उद्योग शुरू करने के इरादे से दौड़धूप कर रहा था। उसकी आंखों में बड़े-बड़े सपने थे।

इसी समय बज्रपात-सा हुआ—यह प्रेम।

सोमनाथ विरह में इतना दुखी हो गया कि वह अपरा की नजरों में पड़ने के लिए उसकी गाड़ी से टकरा जाने को तैयार था। या फिर हिंदी फिल्मों के नायक की तरह उस घर की दीवार पर चढ़कर गाना गाने लगेगा।

आखिर उसने अपरा को एक पत्र लिख डाला। बड़ा ही शालीन और साहित्यिक रुचि वाला पत्र। वैसे, जवाब आने की उसे उम्मीद नहीं थी। पर जवाब आया। अप्रत्याशित, ज़रा डरते-कांपते हाथों से लिखा हुआ पत्र। गंगा के किनारे एक सूनी जगह पर शनिवार को शाम छह बजे सोमनाथ को पहुंचने के लिए कहा गया था।

नवयुवक सोमनाथ के मन में जरा भी शक नहीं हुआ कि यह एक षड़यंत्र भी हो सकता है। उत्तेजना से उसका दिल धड़कने लगा। काफी तनाव था। उसने कई गिलास पानी पिया और सारा दिन बहका-बहका सा इधर-उधर घूमता रहा।

मिलने की जगह खिदिरपुर-डॉक के पास थी। बहुत ही सूनी और शाम के अंधेरे में बड़ी ही भयानक लगती थी। यह जगह सोमनाथ के लिए एकदम अनजानी थी। ऐसी जगह अपरा ने क्यों चुनी, सोमनाथ यह न समझ सका।

सोमनाथ की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। दो ट्यूशनों पर उसके सारे महीने का खर्च चलता था। वह भी इसलिए कि वह बीड़ी-सिगरेट, सिनेमा-थियेटर आदि किसी चीज का शौक नहीं रखता।

बीच-बीच में विज्ञान की किसी किताब को खरीदना ही उसकी फ़िजूलखर्ची कहा जा सकता था। इसलिए जो थोड़े से रुपये उसके पास थे, उन्हीं से उसने टैक्सी करने की सोची।

* * *

एसप्लेनेड आकर उसने कई टैक्सी वालों से पूछा। लेकिन जगह का नाम सुनकर टैक्सी वाले चौंककर आगे बढ़ जाते या इंकार की मुद्रा में सिर हिला देते।

इधर जाड़े की शाम तेजी से गहरा रही थी। छह बजने में अब ज्यादा देर न थी।

सोमनाथ आखिरकार मैदान की ओर चल पड़ा। शायद खिदिरपुर के लिए कोई शेयर्ड टैक्सी मिल जाये।

शाम के बाद मैदान भी एक सूनी-डरावनी जगह में बदल जाता है। कोहरे और धुंध में पूरा विस्तृत मैदान धुंधला और रहस्यमय हो उठा था। सोमनाथ हताशा के कारण टूटा जा रहा था। उसके लिए शायद यह उचित होता कि दिन रहते निर्दिष्ट स्थान बेलाबेली में जाकर खड़ा हो जाता।

सोमनाथ ने अचानक ही प्रायः चौंका देने वाली लेकिन परिचित आवाज सुनी। यह घोड़ा गाड़ी की हल्की आवाज थी। साथ ही उसे घोड़े की टापें भी सुनायी दे रही थीं। तभी उसने दक्षिण की ओर से एक पुरानी घोड़ा-गाड़ी को बढ़ते हुए देखा।

सोमनाथ निराश होकर सोच रहा था कि घोड़ा-गाड़ी ही भाड़े पर ले ले या नहीं। यद्यपि घोड़ा-गाड़ी उसे सही वक्त पर पहुंचायेगी, इसकी कोई उम्मीद नहीं थी। फिर भी एक कोशिश...

हवा में चाबुक मारने की आवाज़ हुई और कोहरा चीरकर घोड़ा-गाड़ी निकल आयी।

सोमनाथ ने न तो हाथ दिखाया था न ही पुकारा था, फिर भी गाड़ी उसके सामने आकर खड़ी हो गयी। कोचवान ने कोचबक्स से ज़रा-सा झुककर पूछा, "खिदिरपुर चलियेगा क्या बाबू ?"

सोमनाथ ने अवाक होकर कहा, "हां, जाना तो है, लेकिन मुझे तो छह बजे तक वहां पहुंचना है।"

कोट , मफलर और टोपी में वह आदमी एकदम उल्लू बनकर बैठा था। हाथ

में बीड़ी या सिगरेट में से कोई एक चीज जल रही है। अपने सफेद दांत निकाल कर हंसते हुए वह बोला, "कोई चिंता की बात नहीं, पहुंचा दूंगा। मेरा घोड़ा पक्षीराज है, आइये।"

सोमनाथ ने घबड़ायी हुई आवाज में पूछा, "कितना लोगे ?"

उस आदमी ने कुछ देर सोचकर कहा, "एक रुपया।"

एक रुपया ? इतना कम भाड़ा तो सोचा भी नहीं जा सकता था। लेकिन उसके पास बरवाद करने का समय नहीं था। साढ़े पांच बज गये थे। वह जल्दी से गाड़ी पर चढ़कर बैठ गया।

घोड़ा-गाड़ी पर वह कभी नहीं बैठा था। प्रायः लुप्त होती जा रही दो-एक गाड़ियां उसने कलकत्ता की सड़कों पर देखी थीं। वे जीर्ण-शीर्ण अवस्था में जैसे अपने दिन गिन रही थीं।

गाड़ी के भीतर अंधेरे में भी सोमनाथ को आश्चर्यजनक अनुभूति हुई। पहली बात तो यह है कि भीतर बाहर की तरह सर्दी न थी। सुहावनी गर्मी थी। किसी भी तरह की दुर्गंध न थी। बल्कि एक भीनी-भीनी सुगंध थी। गाड़ी की गद्दी इतनी नर्म थी कि कीमती मोटर-गाड़ियों में भी शायद वैसी गद्दी न हो।

सोमनाथ यह भी न समझ सका कि गाड़ी कब चलने लगी थी। उसे किसी भी प्रकार का धक्का या हिलने-डुलने का बोध नहीं हुआ। सिर्फ पीछे छूटते रास्ते और पेड़ों को देखकर पता लगता था कि गाड़ी चल रही है।

लेकिन किस गति से ? क्या एक घोड़ा इतनी तेज दौड़ सकता है ? घोड़ा-गाड़ी की गति से लगता था वह कम से कम पचास-साठ किलोमीटर की गति से चल रही थी। लेकिन न तो घोड़े की टापों की आवाज थी, न चाबुक की। थोड़ी देर में उसे लगा कि गाड़ी की रफ्तार और बढ़ गयी है। फिर भी कोई आवाज नहीं सुनायी पड़ रही थी।

यह क्या हो रहा है ? ऐसा तो नहीं होना चाहिए।

सोमनाथ अचानक चीख उठा, 'कोचवान ! मानो किसी एक स्पीकर से परिचित स्वर गूंजा, "जी ! कुछ कहा आपने ?"

"गाड़ी इतनी तेज क्यों जा रही है ?"

"आपको छह बजे जो पहुंचना है साहेब।"

"लेकिन घोड़ा क्या इतना तेज दौड़ता है।"

"मेरा घोड़ा पक्षीराज जो है साहेब।"

गाड़ी जब सही स्थान पर जाकर रुकी तब सोमनाथ की घड़ी में पांच बजकर चौंतिस मिनट हुए थे। अर्थात् सिर्फ चार मिनट में एसप्लेनेड से खिदिरपुर पहुंच गया था।

मन उत्तेजित होने के कारण सोमनाथ ने इस बात पर ज्यादा गौर नहीं किया।

कोचवान को एक रुपया देकर वह घाट के करीब आकर खड़ा हो गया।

कोचवान ने गाड़ी से उतरकर घोड़े को सूखी घास दी और सोमनाथ की ओर देखकर बोला, "साहेब, क्या लौटियेगा ?"

"देर है। क्यों, बोलो तो ?"

"मैं पहुंचा सकता हूं।"

सहमते हुए सोमनाथ ने पूछा, "कितना भाड़ा लोगे ?"

"एक रुपया। मैं कभी भी एक रुपये से ज्यादा भाड़ा नहीं लेता।"

सोमनाथ की हिचकिचाहट को भांपते हुए कोचवान ने कहा, "यहां से लौटने की कोई सवारी नहीं है साहेब।"

"ठीक है तब ठहरो।"

गंगा के किनारे पक्की जगह थी। कुछ दूर लैंपपोस्ट से धीमी रोशनी पड़ रही थी। जितनी दूर दिखायी देता था, सिर्फ सन्नाटा था। दूर तक जीवन का अंश तक दिखायी नहीं देता था। बीच-बीच में एक-आध गाड़ी तेज रफ्तार से गुजर जाती थी। कोई पैदल आता-जाता भी नजर नहीं आ रहा था।

सोमनाथ बार-बार घड़ी देखकर अधीर हो उठता था। अपरा ने ऐसी जगह क्यों चुनी, काफी सोचने पर भी वह समझ नहीं पा रहा था।

जब घड़ी में ठीक छह बजे, अंधेरा चीरकर एक बड़ी-सी गाड़ी उसके पास आकर रुकी। यह एक काली पटियाक गाड़ी थी। ऐसी गाड़ी तो अपरा की नहीं थी। सोमनाथ का हृदय कांप उठा। वह गाड़ी की ओर भय से आगे बढ़ा।

लेकिन गाड़ी के पास पहुंचते ही उसने देखा कि वहां अपरा की जगह तीन-चार आदमी बैठे हुए हैं।

सोमनाथ ने जल्दी से पीछे हटना चाहा। लेकिन तभी अचानक गाड़ी का पिछला दरवाजा खोलकर एक विशालकाय आदमी बाहर उतर आया।

सोमनाथ को कुछ समझ में आये इससे पहले ही उस आदमी ने हाथ बढ़ाकर उसका स्वेटर पकड़ लिया, "कितने दिन से लड़की के पीछे पड़े हो।"

सोमनाथ डर से कांपने लगा।

उस आदमी ने दूसरे हाथ से कसकर एक तमाचा उसके गाल पर रसीद किया और बोला, "प्रेम रोग का इलाज हम जानते हैं। हवाई किले बनाकर खुश हो रहे थे, क्यों ?"

सोमनाथ को जीवन में किसी ने कभी तमाचा नहीं मारा था और न ही इस प्रकार के किसी पचड़े में कभी फंसा था। वह इतना घबरा गया कि मुंह से एक शब्द तक नहीं बोल पाया। गाड़ी से और तीन आदमी उतर आये। इन लोगों को सोमनाथ ने पहले कभी नहीं देखा था।

जब चारों लोगों ने उसे घेर लिया। तब भी सोमनाथ यह न समझ पाया

कि उसने क्या गड़बड़ की है। अपरा को चिट्ठी लिखी थी। उसने जवाब भी दिया था। इसमें गलत क्या हुआ ?

लेकिन इसके बाद जो कुछ हुआ वह सोमनाथ की कल्पना के परे था। एक आदमी ने उस्तरा निकाल कर उसका सिर मूंड दिया। फिर सबने मिलकर उसके कपड़े फाड़ डाले। उसके बदन पर सिर्फ कच्छा रह गया था। ठंड और भय से वह जड़ हो गया। वह लगातार कांप रहा था। इसके बाद दो आदमियों ने उस पर दोनों तरफ से मुक्के बरसाने शुरू कर दिये। उसके होंठों से खून बहने लगा। आंखों से भी खून जैसे रिसने को हुआ, सारे खुले सीने पर खून फैल गया। तब भी वह समझ नहीं पाया कि भूल कहां हुई है और इस सजा का कारण क्या है ? बेहोश होने से पहले उसने सिर्फ इतना ही पूछा कि, 'चिट्ठी क्या अपरा ने लिखी थी मुझे ? खुद ?'

"वह तेरी तरह बेवकूफ नहीं है।"

पेट पर एक लात पड़ते ही सोमनाथ बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

कुछ दूर खड़ा कोचवान सब कुछ देख रहा था। उन चारों लोगों के गाड़ी में चढ़कर तेजी से निकल जाने के बाद उसने घोड़े को प्यार से सहलाया और धीरे-धीरे बढ़कर बेहोश पड़े सोमनाथ के पास आया।

चैन की सांस लेते हुए उसने आवाज लगायी, "साहेब, ओ साहेब।"

सोमनाथ निरुत्तर और निश्चल पड़ा रहा।

कोचवान ने उसे गोद में उठा लिया, जिससे उसके मुंह से सीटी जैसी आवाज निकल गयी। घोड़ा झट गाड़ी समेत आगे बढ़ आया। कोचवान ने गाड़ी की सीट पर सोमनाथ को लिटा दिया और कोचबक्स पर जा बैठा। चाबुक को हवा में घुमाते हुए बोला, "चल रे पक्षीराज !"

घोड़े ने एक छलांग लगायी। उसके बाद गाड़ी समेत हवा से बातें करने लगा। जल्दी ही घोड़ा-गाड़ी घटना-स्थल से दूर हल्की धुंध में खो गयी।

सोमनाथ को जब होश आया तब चारों तरफ अंधेरा था। वह घोड़ा-गाड़ी की पिछली सीट पर पड़ा था। गाड़ी चल रही है क्या ? यह जानने के लिए वह उठ बैठा। बाहर उसने जो कुछ देखा उसे देखकर वह पलक झपकना भूल गया। बाहर बर्फ का तूफान चल रहा था। काले-काले बादलों से आकाश काला नजर आ रहा था।

"कोचवान, कोचवान !"

वही परिचित स्वर सुनायी पड़ा, "सीट पर पड़े कपड़े पहन लीजिये साहेब, बाहर काफी सर्दी है।"

आश्चर्यचकित होकर सोमनाथ ने पूछा, "लेकिन तुम मुझे कहां ले आये हो ? मैं क्या सपना देख रहा हूं ?"

"कपड़े पहन लीजिये साहेब।"

सोमनाथ कुछ देर असहाय-सा बैठा रहा। उसने महसूस किया कि वह सोया हुआ है। लेकिन अगर यह सपना ही है तो कुछ देर पहले लगी चोटों का दर्द उसके सारे बदन में क्यों हो रहा है ? पेट की तीखी पीड़ा, सूजा हुआ जबड़ा, छाती पर जमा खून, नाक से बहता खून, फटे हुए होंठ, यह सब क्या है ? इतनी मार उसने जिंदगी में पहले कभी नहीं खायी थी। इतने दर्द के साथ निश्चय ही वह सो नहीं सकता। तो क्या सपना देख रहा है ? तब क्या वह मर गया है ? यह क्या मौत के बाद की दुनिया का अनुभव है ? सोमनाथ ने इन सब विचारों में खोये-खोये सामने सीट पर पड़े कपड़े उठा लिये। वह सफेद रंग की पतली झब्बे जैसी कोई चीज थी। इसे पहनने पर क्या वह बाहर की सर्दी से बच सकता है ?"

वैसे, गाड़ी के भीतर सर्दी का आभास भी नहीं है। सोमनाथ को वह पोशाक पहनने में कोई कठिनाई नहीं हुई। वह कुर्ता-पायजामा जैसी ही कोई चीज थी जो एक-दूसरे के साथ जुड़ी हुई थी। यह बिल्कुल वैसी पोशाक थी जैसी कारखानों के मजदूर काम के वक्त पहनते हैं। उस पोशाक में जूते, दस्ताने और टोपी भी लगी हुई थी। कपड़ा किस प्रकार का है, यह सोमनाथ समझ न पाया। भीतर से काफी मुलायम और आराम देने वाला, लेकिन ऊपर से खुरदरा-सा था। पोशाक का वजन एकदम नहीं के बराबर था। इतनी हल्की कि बदन पर कुछ पहने होने का अहसास नहीं हो रहा था।

गाड़ी के दायीं ओर वाला दरवाजा धीरे से खुल गया। फिर से वही परिचित स्वर सुनायी दिया, "उतर आइये साहेब।"

सोमनाथ गाड़ी से उतरा। सचमुच ही एक बर्फीला तूफान चल रहा था।

कलकत्ता निवासी होने के कारण उसने कभी बर्फीला तूफान नहीं देखा था। एक बार वह संकेकुफ में ट्रेकिंग करने गया था और दूसरी बार शिमला में एक टेबल-टेनिस टूर्नामेंट खेलने गया था। वहां पर उसने बर्फ गिरते देखी थी। लेकिन यह तूफान तो हिमपात नहीं था। यह तो कई गुणा ज्यादा खतरनाक था। तूफानी झोंकों के कारण वह सीधा खड़ा नहीं रह पा रहा था। लेकिन आश्चर्य की बात यह कि जितनी सर्दी थी, उतनी उसे लग नहीं रही थी।

गाड़ी पर कोचवान की सीट पर कोचवान नहीं दिखायी दिया। चारों ओर बर्फ ही बर्फ फैली थी। इसके सिवा कुछ भी न था।

"कोचवान ! कोचवान !"

कानों में वही परिचित आवाज सुनायी दी, "डरने की बात नहीं है साहेब, नाक की सीध में ठीक दस कदम चलिये।"

सोमनाथ आतंकित कदमों से ठीक दस कदम बढ़ा।

अब ! पांवों के नीचे न जाने बर्फ की कितने फुट मोटी परत जमी थी।

सोमनाथ ने आश्चर्यचकित होकर देखा कि अंधेरे में बर्फ की परतों को चीरते हुए कोई चीज उसकी तरफ बढ़ रही है। पहले उसकी चोटी दिखायी दी, फिर धीरे-धीरे एक छोटा-सा काला पिरामिड दिखायी देने लगा।

"बढ़ते जाइये साहेब। दरवाजा अपने आप खुल जायेगा।"

सोमनाथ दुविधा में कुछ कदम आगे बढ़ा। हैरानी की बात कि दीवार में अचानक अंदर जाने की जगह दिखायी दी। सोमनाथ डरते-डरते जैसे ही अंदर घुसा, फटाक से पीछे का दरवाजा बंद हो गया।

सामने एक सीढ़ी नीचे की ओर जा रहा थी। उस पर एक बहुत ही सुंदर बड़ी सी कालीन बिछी थी, जिसमें से हल्की-सी रोशनी फूट रही थी। दीवारें भी वैसी ही थीं। हर चीज से प्रकाश की आभा झलक रही थी।

सोमनाथ फिर से शरीर में तीखी पीड़ा अनुभव करने लगा।

लेकिन अब कोई आवाज उसे निर्देश नहीं दे रही थी। सोचने लगा, सीढ़ी से उतरे या नहीं।

सीढ़ी पर पांव रखते ही सीढ़ी तीव्र गति से नीचे की ओर सरकने लगी। यह एस्क्लेटर की तरह थी, लेकिन एस्क्लेटर कहीं पर तो खत्म होता है। यह सीढ़ी बिल्कुल वैसी भी नहीं थी। अति तीव्र गति से सोमनाथ को नीचे खींचे लिये जा रही थी। उसकी रफ्तार पचास किलोमीटर प्रति घंटा से कम नहीं रही होगी। कुछ दूर चलने के बाद सीढ़ी थोड़ी-सी सीधी हो गयी, फिर बायें मुड़ी और तब दायें। कुछ मिनटों के बाद वह रुक गयी।

यह एक बड़ा-सा हाल था। सोमनाथ समझ गया कि उसे यहां उतरना है। हाल का फर्श सीढ़ी से सटा हुआ था। उस पर भी एक प्रकाशवान कालीन् बिछी थी। सोमनाथ ने चारों ओर नजर डाली कि प्रकाश का स्रोत ढूंढ़ पाये, पर उसे मालूम नहीं हुआ। हाल की बनावट को देखकर वह भौचक्का रह गया। कहीं उसकी काफी ऊंची और विशाल छत, कहीं बिल्कुल चपटी और सीधी, किसी जगह वह टेढ़ा-मेढ़ा था तो किसी जगह लहरदार।

सोमनाथ धीरे-धीरे कुछ आगे बढ़ा। बढ़ते ही एक पहिये वाली किसी धातु की बनी एक चारपाई उसकी तरफ बढ़ने लगी। मोटर लगी और रिमोट द्वारा चालित इस चारपाई पर एक बिस्तर बिछा हुआ था। तरह-तरह के पाइप और विचित्र प्रकार के यंत्र इस चारपाई से जुड़े हुए थे।

किसी ने उससे लेटने को कहा।

पीड़ा और थकान के मारे, भयभीत और परेशानी से सोमनाथ ने वही किया जैसा उससे कहा गया था। वह बिस्तर में घुसा और देखते ही देखते सो गया। विज्ञान के साथ अपने संबंध के कारण वह अजीब तरह की मशीनों के सपने अकसर

देखता रहा है। उसने सोचा, यह भी कोई सपना ही है।

अगली बार जब वह जगा तो उसने टेलीफोननुमा यंत्र अपनी छाती पर रखा देखा। उसका शरीर बक्से के साथ रस्सियों आदि से बंधा हुआ था। अब उसके शरीर में दर्द नहीं हो रहा था। वस्तुतः वह तरोताजा महसूस पर रहा था।

बेशक वह अब भी सपना देख रहा था। सपने को दूर करने के लिए उसने आंखों को पुनः बंद कर लिया। "साहेब, साहेब !"

सोमनाथ ने आंखें खोलीं तो एक काले से आदमी को अपने पर झुका पाया, जो उसे देख रहा था।

"तुम कोचवान नहीं हो ?"

"जी साहेब ! अब आप कैसे हैं ?"

इस मानव रहित नगरी में पहला आदमी देखकर सोमनाथ बड़ा खुश हुआ और बोला, "लेकिन मैं हूं कहां ?"

कोचवान उसके सवाल का जवाब न देकर बोला, "उन जालिमों ने बहुत पीटा था आपको।"

मार की बात याद आते ही सोमनाथ ने दर्द से दांत भींच लिये। उसने पूछा, "क्या मैं जग रहा हूं कोचवान ?"

"हां.साहेब । अस्पताल में।"

"यह कौन-सा अस्पताल है ? मैंने ऐसा अस्पताल तो पहले कभी नहीं देखा ?"

"इसका नाम है पुनर्जीवन केंद्र।"

"ऐसा नाम तो सुना नहीं किसी अस्पताल का।"

"आपके समय में इस नाम का कोई अस्पताल नहीं था। आप डेढ़ हजार साल और आगे बढ़ आये हैं साहेब।"

सोमनाथ का मुंह खुला का खुला रह गया। उसने समझा कि वह अभी भी सपना देख रहा है, इसलिए उसने आंखें बंद कर लीं।

कोचवान ठहाका मारकर हंसा और बोला, "आंखें बंद करने से कोई फायदा नहीं साहेब। आप सपना नहीं देख रहे हैं। आप जाग रहे हैं और चारों ओर जो कुछ भी दिखायी पड़ रहा है वह सब सच है।"

टाइम मशीन के बारे में उसने विज्ञान की कहानियों में पढ़ा था। लेकिन वह बात विश्वास करने योग्य न थी। होती तो अच्छा होता। लेकिन क्या ऐसा होना संभव है ?

धीरे-धीरे सोमनाथ ने फिर से आंखें खोलीं। "मैं कहां हूं कोचवान ?"

"आप वहीं हैं–खिदिरपुर। गंगा घाट याद है आपको ?" "हां, कोचवान !"

"आप वहीं हैं। लेकिन साल अलग है।"

"टाइम मशीन ?"

कोचवान गंभीर होकर बोला, "मशीन तो मनुष्य ही बताता है।"

"सो तो है।"

"तो फिर टाइम-मशीन से आप सब लोगों को डर क्यों लगता है ?"

सोमनाथ ने क्षण भर के लिए चारों तरफ देखा और हक्का-बक्का रह गया। फिर बोला, "मैं क्या उठ सकता हूं।"

"उठिये, साहेब ! आप अब ठीक हैं। ज़रा ठहरिये। मैं यंत्रों को हटा दूं।"

"उसने बड़ी दक्षता से यंत्रों को खोल दिया और तब बोला, "अब उठिये।"

सोमनाथ उठा। अचानक उसे याद आया कि उन खतरनाक आदमियों ने उसका सिर तो मूंड़ दिया था।

मानो मन की बात समझकर कोचवान बोला, "आपका सिर ऐसा ही रहेगा—गंजा। एक सोल्यूशन लगा दिया गया है। सात दिनों में बाल बड़े हो जायेंगे।"

"सात दिन ! तब तक क्या मैं यहीं रहूंगा ?"

कोचवान ने सिर हिलाकर कहा, "नहीं साहेब ! आपकी मर्जी न हो तो, न रहियेगा। दूसरे किसी समय के किसी आदमी को यहां लाने का हुकम नहीं है हमारे पास। अगर मैं आपको वहीं छोड़ आता तो मर ही जाते। उन्होंने तो मार-मारकर आपकी हालत खराब कर दी थी।"

"इसका मतलब है कि आपकी वह घोड़ा-गाड़ी टाइम-मशीन है।"

"टाइम-मशीन खुद नहीं चलती साहेब। उसे चलाना पड़ता है।"

सोमनाथ उस आदमी को समझने की कोशिश कर रहा था। स्पष्टतया टाइम-मशीन की प्रशंसा से वह खुश नहीं हुआ था। हालांकि बातचीत से वह आदमी विनम्र था, लेकिन दिखने में वह कठोर लग रहा था। हो सकता है, यह आदमी शायद कोई बड़ा वैज्ञानिक हो। वह बोला, "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। क्या आप बतायेंगे कि यह कौन-सा साल चल रहा है ?

"3551।"

सोमनाथ ने फिर आंखें बंद कर लीं। सिर चकराने लगा था उसका।

"आंखें खोलिये, साहेब ! किसी बात का कोई डर नहीं है।"

"मुझे थोड़ी देर बाहर ले चलेंगे आप ? मैं डेढ़ हजार साल के बाद के कलकत्ता शहर को ज़रा देखना चाहूंगा।"

"सब होगा, साहेब। लेकिन अभी दूसरे युग के लोगों को हम स्वच्छंदतापूर्वक अपने आसपास घूमने दें, इसकी हमें आजादी नहीं है।"

"क्यों ?"

मौसम का फर्क और टाइम-पश्चता दोनों ही खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं। आप बीमार हो सकते हैं।"

"तब आप 1987 में कैसे पहुंचे ?"

"मेरे पास सुरक्षा कवच है। आपके पास वैसा नहीं है।"

"पृथ्वी का मौसम अब कैसा है ?"

"बहुत ज्यादा सर्दी है। हिमयुग आ रहा है। आपने तो उसका हल्का-सा ही रूप देखा है।"

"तो क्या कलकत्ता में सचमुच बर्फ गिरती है ?"

"गिरती है साहेब, बहुत ज्यादा गिरती है।"

"तो क्या मैं कुछ भी नहीं देख पाऊंगा। पुराने कलकत्ता का कोई निशान नहीं बचा क्या ?"

"डेढ़ हजार साल काफी लंबा समय है, साहेब। लेकिन मैं ऐसा भी नहीं कहूंगा कि पहले का कुछ नहीं बचा। कुछ है, कुछ नहीं है। एक और बात है, साहेब याद रखियेगा, मैं आपसे डेढ़ हजार साल छोटा हूं।"

सोमनाथ ने ठंड से कांपते हुए कहा, "सो तो है... पर... "

कोचवान ने सिर हिलाकर कहा, "पर-वर नहीं, साहेब। आप मुझे तुम कहकर ही पुकारियेगा।"

सोमनाथ कुछ कदम आगे की तरफ चला। उतनी ज्यादा मार खाने के बाद कुछ ही देर में ठीक हो जाना ही एक अस्वाभाविक बात थी। सोमनाथ की घड़ी में अभी सिर्फ साढ़े सात बज रहे थे। सोमनाथ ने इस बार कोचवान की तरफ देखकर पूछा, "आप मुझे इस युग में क्यों ले आये ?"

कोचवान इस बार कुछ चिंतित नजर आया। कुछ देर तक सोमनाथ के चेहरे की ओर देखता रहा, फिर बोला, "कारण है, साहेब, गंभीर कारण।"

"क्या है वह कारण ?"

कोचवान के कुछ बोलने से पहले ही किसी छिपे स्पीकर की आवाज में मॉर्स संकेत बज उठा।

कोचवान बोला, "वे आ रहे हैं।"

सोमनाथ ने हैरान होकर पूछा, "कौन ?"

कोचवान ने कोई जवाब नहीं दिया। चार आदमी आये और सोमनाथ के सामने खड़े हो गये। सोमनाथ ने गौर किया कि सबने उसके जैसे झब्बे पहन रखे थे। वह सोचने लगा, क्या इस युग की एकमात्र यही पोशाक है ? उन चारों में एक आदमी, जैसे अचानक ही कुछ याद आ गया हो, हाथ जोड़कर बोला, "नमस्कार, सोमनाथ बाबू ! पैंतीसवीं सदी में आपका स्वागत है।"

ऐसी नाटकीय स्थिति देखकर सोमनाथ मुस्कराये बिना नहीं रह सका। लेकिन जितना हो सका, गंभीर होकर वह बोला, "नमस्कार, धन्यवाद। आप लोग कौन हैं।"

"महोदय, हम लोग आपके वंशज हैं। कृपया हमें आशीर्वाद दीजिए।"

लग रहा था कि वह आदमी नाटकीय ढंग से व्यवहार कर रहा है। उसके हाव-भाव दिखावटी थे।

सोमनाथ ने कुतूहल से पूछा, "आप लोग क्या इसी प्रकार बातचीत करते हैं ?"

उस आदमी ने सिर हिलाया, "नहीं ! भाषा एक परिवर्तनशील माध्यम है। हमारी भाषा दूसरी तरह की है। मैं केवल अपनी प्राचीन भाषा बोलने की कोशिश कर रहा था। मेरा नाम है र।"

"आप लोगों की भाषा कैसी है ?"

"संकेतमय और शब्द-निर्भर। आप लोगों की तरह हम वाक्यों में बात नहीं करते। हम वाक्य की बजाय एक शब्द ही बोलते हैं।"

सोमनाथ ने देखा कि वह जब उस आदमी से बात कर रहा था, तब बाकी तीनों धीमे स्वर में बातें करने लगे थे। बातचीत संबंधी कुछ अजीब-सी आवाजें ही सुनायी दे रही थीं।

सोमनाथ कविताएं पढ़ना पसंद करता था। उसने पूछा, "इस युग में क्या कविताएं नहीं लिखी जातीं ?"

उस आदमी ने अति विनम्र होकर कहा, "लिखी जाती हैं, हमारे कंप्यूटरों द्वारा।"

"कंप्यूटर ?"

"जी हां, महोदय ! पर हमारे पास इतना वक्त कहां होता है ! पूरे पृथ्वी ग्रह के अस्तित्व को भयानक संकट में दिखायी पड़ने के कारण हम आपको समय की बहती धारा में बहुत दूर इस युग में ले आये हैं। हमें क्षमा कीजिये। काफी हिसाब के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि आपको और चार घंटे यहां रखना बहुत खतरनाक हो सकता है। हो सकता है कि मानव-जाति का पूरा इतिहास ही बदल जाये।"

सोमनाथ ने आश्चर्य से पूछा, "क्यों ?"

"महोदय पृथ्वी का सारा इतिहास पूर्व निर्धारित होता है। जो बीत चुका है उसकी परिणति ही तो वर्तमान है। हम यात्रा करके बीते समय में जा सकते हैं। हम चाहें तो इतिहास को नियंत्रित कर सकते हैं। लेकिन हमें उनके नतीजों के बारे में सावधान रहना होता है। ज़रा-सी भूल-चूक से बाद का घटनाचक्र भयानक हो सकता है। महोदय, कुछ समय पहले इक्कीसवीं शताब्दी के एक शिशु को हमने एक जानलेवा बीमारी से बचाया था। वह बच्चा बाद में एक मारक रश्मि को खोजकर पूरी पृथ्वी के जीवन को नष्ट करने पर तुल गया।"

सोमनाथ ने चौंककर पूछा, "फिर ? आप लोगों ने क्या किया ?"

"हम लोगों ने दोबारा इक्कीसवीं सदी में लौटकर उसे मारने की व्यवस्था की। सामान्यतया यह बड़ा ही निष्ठुर कार्य है, पर मानव जाति के भविष्य की रक्षा के लिए हमें यह कार्य करना पड़ा। इसीलिए अब हम लोग भाग्य से नहीं खेलते। ईश्वर मंगलमय है !"

"आप लोग ईश्वर को मानते हैं ?"

"अवश्य, महोदय। ईश्वर एक प्रमाणित सत्य है।"

"भूत नाम की कोई चीज है ?"

"हां, महोदय। भूत भी एक प्रमाणित सत्य है। लेकिन अब हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है। हमारे ग्राम-प्रधान आपसे कुछ जरूरी बातें करना चाहते हैं।"

"ग्राम-प्रधान ?"

"सोमनाथ ने फिर हंसी रोकी। गांव ही कहां है जो ग्राम-प्रधान होगा ? पर उसने कुछ न कहा। सिर्फ बोला, "चलिये।"

हाल का बाहरी दरवाजा विशाल सुरंग की ओर जाता था। चारों ओर हल्की रोशनी थी। यह रोशनी दीवारों, छतों और फर्श से आ रही थी। बाहर एक कार खड़ी थी। उसमें न तो छत थी और न पहिये। वह लंबे सिगार जैसी लगती थी। विनम्र होकर र ने कहा, "कृपया पहले आप बैठिये।"

वे सभी गाड़ी पर सवार हुए। सिर्फ कोचवान रह गया। गाड़ी चलने लगी। न झटका, न धक्का, न ही हवा के झोंके। लेकिन वह काफी तेज रफ्तार से चल रही थी।

"यह कैसी गाड़ी है ?"

र ने विनीत होकर कहा, "यह एक ऐसा वाहन है जो जल, थल, गगन सभी जगह चल सकता है। आपके युग की कार का ही परिष्कृत माडल है। इसकी तकनालोजी आपके युग में अज्ञात थी। बताने पर भी आप इसे समझ नहीं पायेंगे।"

सोमनाथ सिर हिलाकर बोला, "ऐसा ही तो होना चाहिए। मैंने विज्ञान कथाओं में ऐसे ही यान के बारे में पढ़ा था।"

"जी, सही फरमाया आपने। उस कल्पना में ही इस तकनालोजी के बीज थे। हम लोग आप लोगों के सदैव ऋणी हैं।"

"आप लोग जमीन के नीचे ही रहते हैं शायद ?"

"नहीं महोदय, जमीन पर भी हमने नाना प्रकार के निर्माण किये हैं। पर पृथ्वी की सतह पर तापमान कहीं-कहीं शून्य से भी सौ डिग्री नीचे तक पहुंच जाता है। इसीलिए हम जमीन के नीचे रहने पर मजबूर हैं।"

"खेती-बाड़ी नहीं होती ?"

"होती है, महोदय। देखना चाहेंगे ?"

"हां !"

र ने एक आवाज दी। सुनायी पड़ा 'ब्रूथ'।

गाड़ी रुक गयी। र ने अपनी उंगलियों में रखी एक चौकोर-सी चीज को घुमाया तो दायें-बायें दोनों तरफ की गाड़ी की बाड़ी अचानक हट गयी। दोनों तरफ दूर तक फैले खेत दिखायी पड़ने लगे। ये बीसवीं शताब्दी के खेतों की तरह नहीं थे। बैंगनी रोशनी में नजर आया कि जमीन के नीचे वनभूमि तैयार की गयी है। उसके बीचों-बीच हरे या पीले पत्तों वाले अनाज के खेत थे।

"ये किस चीज के खेत हैं ?"

"धान, गेहूं, भुट्टा, जौ, दाल के खेत हैं। यहां मौसम नहीं बदलते। इसलिए वर्षभर हम सभी प्रकार की खेती कर सकते हैं। सामने गोशाला भी दिखायी पड़ रही है। कुत्ते, बतख, मुर्गी, बाघ, भालू, सभी पशु-पक्षियों को हम लोगों ने संभालकर रखा है।"

"ऊपरी सतह पर कोई पेड़-पौधा नहीं पनपता ?"

"पनपते हैं। दो ध्रुवीय क्षेत्रों में कुछ पेड़-पौधे उगते हैं। पर वे हिमयुग के पौधे हैं। उनकी जाति भी अलग है। ध्रुवीय क्षेत्रों में कुछ लोग पृथ्वी की सतह के ऊपर भी रहते हैं।"

गोशाला, जंगल, पोल्ट्री फार्म, सभी कुछ देखा सोमनाथ ने।

जमीन के नीचे यह एक अजीब दुनिया थी। सोचा भी नहीं जा सकता।

गाड़ी धीरे-धीरे ऊपर की ओर जा रही थी। कुछ देर बाद एक सुरंग से होते हुए वह जमीन की सतह पर आ गयी।

बाहर अभी भी बर्फीला तूफान चल रहा था। चारों ओर घना अंधेरा था। लेकिन गाड़ी जहां रुकी वह एक गांव था। चारों ओर मन को भाती रोशनी। सामने एक चित्र की तरह खूबसूरत झोंपड़ी साफ दिखाई दे रही थी। साथ में फूस के ढेर, चंडी मंडप, चरागाह नजर आये। आश्चर्य, आश्चर्य ! यहां पेड़-पौधे भी थे। बांसों के झुरमुट में जुगनू चमक रहे थे। सियार बोल रहे थे। पांवों के नीचे हरी-भरी घास थी। तिनके और कांटे भी।

सोमनाथ ने अवाक् होकर पूछा, "क्या यह सब सच है ?"

"यह सच है। इसे कहते हैं ताप विकिरण क्षेत्र। लेकिन ऐसे मुक्ताचंल ज्यादा नहीं है। ऐसा एक क्षेत्र तैयार करने में काफी स्रोतों की जरूरत होती है। और हमारी शक्ति का भंडार उतना समृद्ध नहीं है। सिर्फ ग्राम-प्रधानों के लिए ही पृथ्वी पर हमने कुछ इस तरह के गांव तैयार किये हैं। आइये, सामने के उस मकान में ही ग्राम-प्रधान रहते हैं।"

सोमनाथ अवाक् होकर देखता रहा, मकान के द्वार पर, छप्पर पर लौकी और अंगूर की बेलें चढ़ी हुई थीं। लौकियां फली-फूली हुई थीं। यह दृश्य इस युग में भी दिखायी पड़ेगा, इसकी उसने कल्पना भी न की थी।

घर के भीतर का दृश्य और आश्चर्यजनक था। एक छोटी चौकी पर एक मोटी पोथी खोले एक वृद्ध व्यक्ति दीपक के उजाले में कुछ पढ़ रहे थे। सोमनाथ के प्रवेश करते ही वे वृद्ध व्यक्ति उठ खड़े हुए। दंडवत् प्रणाम कर हाथ जोड़े और बोले, "आइये पिता ! हमारा परम सौभाग्य है।"

पहले तो वृद्ध को प्रणाम करते देख सोमनाथ अचकचा गया, लेकिन फिर उसे याद आया कि वह तो उनसे कम से कम डेढ़ हजार वर्ष बूढ़ा है।

सामने ही उसके बैठने के लिए एक कुर्सी लगा दी गयी। सोमनाथ के बैठने के बाद वृद्ध बैठे। फिर अति विनयी होकर उन्होंने कहा, "आप बड़े कष्ट में लग रहे है, पिता।"

सोमनाथ ने सिर हिलाकर कहा, "बिल्कुल नहीं। शाम छह बजे चार गुंडों ने मुझे पीटकर बेहोश कर दिया था। अगर आप लोग मुझे उठा न लाते तो मैं जरूर मर जाता।"

वृद्ध थोड़ा गंभीर हो गये। तब मानो अपने आपसे बोले, "आधुनिक इतिहास के अनुसार आपकी शाम मृत्यु शाम सात बजे हो चुकी है, पिता। पुराना रिकार्ड दर्शाता है कि सात जनवरी को आपकी मृत्यु हुई लेकिन हम ऐसा नहीं होने देंगे।"

सोमनाथ विस्मय-विमूढ़ होकर देखता रहा–भीतर कहीं खुशी भी थी। वृद्ध ने पोथी सोमनाथ की ओर बढ़ाते हुए कहा, "देखिये, पिता ! यह है उस साल की कलकत्ता कार्पोरेशन की मृत्यु तालिका की पुस्तक–'डेथ रजिस्टर'।"

सोमनाथ ने पुस्तक देखी। स्पष्ट रूप से उसका नाम मृत्यु तालिका में लिखा था। उसे देखकर उसका शरीर डर के मारे ठंडा पड़ गया।

वृद्ध व्यक्ति सोमनाथ की ओर स्थिर नेत्रों से देखते रहे। बड़े विनम्र स्वर में उन्होंने कहा, "बीती हुई घटनाओं का संशोधन हम साधारणतः नहीं कर सकते। उसका परिणाम बुरा होता है। लेकिन आपके बारे में दूसरी बात है। एक दूसरा इतिहास बनाने के सिवा कोई चारा नहीं है। ईश्वर हमारी मदद करें।"

सोमनाथ की आवाज मानो गले में ही रुक गयी थी। उसने खांसकर कांपती हुई आवाज से पूछा, "क्यों ?"

"हमारी शक्ति के स्रोत सीमित हैं। पृथ्वी का ऊपरी भाग क्रमशः ठंडी कड़ी बर्फ के नीचे दबा जा रहा है। यह हिमयुग का प्रारंभ है। इसकी ठंडक दिन-प्रतिदिन बढ़ती जायेगी। बरसों सूरज के दर्शन नहीं होंगे। आकाश हमेशा बादलों से ढंका रहेगा। हमारी शक्ति के स्रोत इतने अधिक नहीं है कि हम हिमयुग से लगातार संघर्ष कर सकें। हमारी असहाय अवस्था क्या आप समझ रहे हैं, पिता ?"

"हां ! समझ रहा हूं। कहिये।"

"लेकिन जो कुछ हो रहा है, हम उसे रोक नहीं सकते। हम एकाएक कोई आविष्कार भी नहीं कर सकते। पृथ्वी पर जो कुछ भी घटता है वह विकासवाद

नियमों के अनुसार ही घटता है। हमने काफी लेखा-जोखा किया है। हमारे कंप्यूटरों ने भी दिन-रात अथक परिश्रम किया है। अंततः हम एक परीक्षामूलक विकल्प इतिहास तैयार करने में सफल हो गये हैं। हमने क्या देखा है, जानते है, पिता ?"

"नहीं।"

"बीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्ष में एक शिशु का जन्म संभव है, जिसका नाम सोमसुंदर है। यह बुद्धिमान शिशु बाद में पृथ्वी के खत्म होते हुए दाह पदार्थों के बदले में एक शक्ति का आविष्कार करेगा। तब इक्कीसवीं शताब्दी से विकासवाद के नियमों के अनुसार उस शक्ति का स्रोत हमारे हाथों तक पहुंचेगा, पिता। उसका सही प्रयोग करके हम इस युग पर विजय प्राप्त कर सकेंगे।"

"समझा ! लेकिन मुझे क्या करना है ?"

"सोमसुंदर के माता-पिता का नाम तो अभी तक मैंने आपको बताया ही नहीं।"

"क्या नाम है उनका ?"

"सोमसुंदर के पिता का नाम सोमनाथ राय और माता का नाम है अपरा मित्रा। दोनों ही कुलीन कायस्थ हैं। दोनों ही विज्ञान के प्रति रुचि रखते हैं। विकल्प इतिहास तो यही कहता है।"

सोमनाथ फिर चौंक उठा। उसका दिल धड़कने लगा। परेशानी की हालत में सोमनाथ कह उठा, "वह तो अब संभव नहीं है।"

वृद्ध थोड़ा हंसे, "हां पिता, सामान्य परिस्थितियों में यह संभव नहीं है। हम यह जानते हैं। लेकिन मानव कल्याण के लिए हम लोग इस इतिहास में कुछ परिवर्तन करना चाहते हैं, पिता।"

"आप क्या करना चाहते हैं ?"

"हम आपके शारीरिक विधान में कुछ परिवर्तन करेंगे। उसके बाद आपको आपके समय में वापस भेज देंगे। शाम छह बजे, वापस गंगा घाट पर।"

"उसके बाद ?"

वृद्ध थोड़ा-सा हंसे, "इतिहास दूसरी तरह से लिखा जायेगा।

"अपरा मुझे नहीं पहचानती।"

"जानता हूं, पिता।"

"मैंने उसे पत्र लिखा था। उसके बाद... "

"जानता हूं पिताजी। पर इस बार दूसरी घटना होगी।"

"मेरे शारीरिक विधान में आप क्या परिवर्तन करेंगे।"

वृद्ध ने अति विनम्रता से कहा, "इस युग में विज्ञान बड़ा ही सूक्ष्म है। सब बातें आप समझेंगे नहीं। आप आज्ञा दें तो आपका ज्यादा वक्त नहीं लेंगे। हमारी योजनानुसार हमारे पास वक्त बहुत कम है।"

वृद्ध व्यक्ति खड़े हो गये और झुककर सोमनाथ को प्रणाम करने लगे। र आगे बढ़ा, "आइये पिता, गाड़ी में बैठिये।"

सोमनाथ चुपचाप गाड़ी में बैठ गया। जब तक गाड़ी चलती रही वह सम्मोहित-सा बैठा रहा। इतिहास दूसरी तरह से लिखा जायेगा। किस प्रकार ? अपरा। अपरा के साथ उसका...। ओह... असंभव !

र और उसके साथी उसे एक भूगर्भ के घर में ले आये। एक सुंदर से बिछौने पर सोमनाथ लेट गया। तब उस पर ऊपर से एक ढक्कन लगा दिया गया। वह सो गया।

*　　　*　　　*

गंगा घाट पर खड़ा है, सोमनाथ। पास ही वही घोड़ा-गाड़ी खड़ी है। कोचवान घोड़े को घास खिला रहा है। उस निर्जन डरावनी जगह पर लैंपपोस्ट से मद्धिम रोशनी फैल रही है।

चाबुक चलाने की अवाज हुई। सोमनाथ ने चौंककर देखा कि घोड़ा-गाड़ी वहां खड़ी है। वह तैयार हो गया। इतिहास को बदलना होगा।

गाड़ी सामने आकर रुकी। एक आदमी उतरा। काफी लंबा चौड़ा। आते ही उसने सोमनाथ के गले पर स्वेटर दबोच लिया, "कितने दिन से लड़की के पीछे पड़े हो ?"

हैरानी की बात कि अचानक सोमनाथ ने अपना सारा साहस एकत्र किया। यही वह क्षण है। उसने दाहिना हाथ उठाकर जोर से एक मुक्का उस आदमी के मुंह पर मारा।

वह दानव छिटककर जमीन पर गिर गया। बाकी तीन आदमी भी उतरे और सोमनाथ पर झपटे। लेकिन सोमनाथ पीछे नहीं हटा। आगे ही बढ़ता रहा।

सटाक्—चाबुक की एक बार और आवाज हुई। डेढ़ हजार साल सामने की पृथ्वी ने मानो आनंद से उसका अभिनंदन किया हो।

जिंदगी में सोमनाथ ने कभी मारपीट नहीं की थी। लेकिन उसके तेज मुक्के और लातों की मार से तीन-तीन बदमाश जमीन पर लोट रहे थे।

सोमनाथ ने देखा कि खाली घोड़ा-गाड़ी नजदीक ही खड़ी थी। विरोधी पक्ष जमीन पर चित्त था। तभी एक बार फिर चाबुक की आवाज हुई। सोमनाथ के उस ओर देखते ही कोचवान ने मोटरगाड़ी की ओर इशारा किया। उसके बाद कोचवान घोड़ा-गाड़ी समेत गायब हो गया।

आत्मविश्वास से भरा सोमनाथ आगे बढ़कर गाड़ी में जा बैठा। उसने कभी भी गाड़ी नहीं चलायी थी, लेकिन आज बिना किसी अतिरिक्त प्रयत्न के ही

वह गाड़ी चलाने लगा था।

सोमनाथ अब अपरा को छोड़ दूसरे विचारों में खोया हुआ था। वह जानता था कि सिर्फ उसी के लिए दूसरी तरह का इतिहास लिखा जा रहा था।

गाड़ी जब बड़े रास्ते से होती हुई गली में उसके दरवाजे पर पहुंची, तब रात के साढ़े नौ बजे थे।

* * *

इस घटना के तीन दिन बाद अपरा अपने कुत्ते को सैर कराने निकली थी। सर्दियों की सुबह अचानक वह एक युवक को देखकर मुग्ध हो गयी। सोचा, काश ! इससे मेरी शादी हो जाती।

* * *

इस घटना के तीन साल बाद सोमनाथ अपने बेटे सोमसुंदर को प्रेम से लेकर शाम को घूमने निकला। अब वह काफी अमीर लग रहा था। वैज्ञानिक उपकरणों का व्यापार काफी अच्छा चल रहा था। मुहल्ला पीछे छोड़कर वह सूनी जगह पर आ गया था।

अचानक एक घोड़ा-गाड़ी के आने की आवाज सुनायी दी। सोमनाथ ने चौंककर देखा।

"साहेब कहीं जायेंगे ? मैं पहुंचा दूंगा ?"

सोमनाथ ज़रा हंसा, "कैसे हो कोचवान ?"

"बहुत अच्छा हूं साहेब। सब ठीक है। इतिहास बदल गया है। चलूं साहेब नमस्कार।" कोचवान ने सैल्यूट की मुद्रा में हाथ उठाया। घोड़े ने एक छलांग लगायी और घोड़ा-गाड़ी अदृश्य हो गयी।

सोमनाथ ने भी अलविदा करने के लिए हाथ उठाया। उसके चेहरे पर मुस्कान थिरकने लगी। मुस्कुराते हुए ही सोते हुए बच्चे की ओर संतुष्ट दृष्टि से देखा।

इतिहास बदल चुका था।

**अंग्रेजी से कमलेश सेन द्वारा अनूदित**

# उच्चता

निरंजन सिन्हा

हिन्दुस्तान रोबट लिमिटेड में एक अजीब-सी स्थिति पैदा हो गयी थी। अनुसंधान एवं विकास विभाग के निदेशक डा. मूलचन्दानी गंभीर सोच में डूबे हुए अपने चैंबर में घूम रहे थे। गृह-सचिव मिस्टर महाजन सामने की कुर्सी पर बैठे हुए थे। उत्तेजित होकर वह बार-बार सिगार को बुझा दे रहे थे और फिर अपने कीमती गैसलाइटर से उसे सुलगा रहे थे। हिन्दुस्तान रोबट लिमिटेड के अध्यक्ष डा. सेनापति उनके पासवाली कुर्सी पर बैठे हुए थे। अपनी उत्तेजना को नियंत्रण में रखने के लिए ही शायद टेबल पर रखे हुए कांच के पेपरवेट को लगातार घुमाये चले जा रहे थे। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. वोरा सामने के कैलेंडर को बड़े ध्यान से देख रहे थे। अचानक बाहर से दरवाजे पर दस्तक की आवाज सुनायी दी। डा. मूलचन्दानी ने रुककर कहा, "अंदर आ जाइये।"

पुलिस कमिश्नर मिस्टर पारेख दरवाजा खोलकर अंदर आ गये। सबने आशा के साथ पारेख की ओर देखा। डा. मूलचन्दानी ने कुछ कदम आगे की ओर बढ़ते हुए कहा, "मिस्टर पारेख, आइये ! आपके सब आदमी सशस्त्र हैं न ?"

"हां, डा. मूलचन्दानी। वे सब नीचे प्रतीक्षा कर रहे हैं।" मिस्टर पारेख ने जवाब दिया।

मिस्टर पारेख, आशा करता हूं कि आपने अपने आदमियों को परिस्थिति की गंभीरता के बारे में बता दिया होगा। कृपया, आप अपने आदमियों को उसी तरह तैयार रहने के लिए कह दीजिये। लेकिन एक बात का ध्यान रखिये, जब तक बहुत जरूरी न हो शक्ति का प्रयोग मत करें।"

"ठीक है, डा. मूलचन्दानी। मैं आपको इतना भरोसा जरूर दिला सकता हूं कि परिस्थिति चाहे जैसी भी हो, मेरे आदमी उसका सामना बड़ी दूरदर्शिता के साथ करेंगे।" हालांकि यह बात श्री पारेख ने डा. मूलचन्दानी की तरफ देखकर कही थी। लेकिन दरअसल वह यह बात गृह-सचिव को सुनाना चाहते थे, लेकिन उस वक्त गृह-सचिव सिगार जलाने में व्यस्त थे। श्री पारेख को समझ में नहीं आया कि यह बात गृह-सचिव के कानों तक पहुंची है या नहीं।

ज़ब किसी ने कुछ न कहा तो श्री पारेख एक-दो मिनट रुके, कमरे में बैठे सभी चेहरों को बारी-बारी से देखा, और फिर अपने चैंबर से बाहर निकल गये। उनका चेहरा देखकर ऐसा लगा जैसे वह कुछ निराश हो गये हों।

श्री पारेख के जाते ही डा. मूलचन्दानी अपनी चांद पर हाथ फेरते हुए कह उठे, "स्थिति यह रूप ले लेगी, ऐसा मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।"

"इसमें आप का क्या कसूर ? अगर सरकार आपसे राजनैतिक रोबट तैयार करने को नहीं कहती तो ऐसा कुछ भी नहीं होता।" गृह-सचिव श्री महाजन ने कहा।

"यह समस्या कहां जाकर खत्म हो, क्या पता !" डा. सेनापति पेपरवेट को टेबल पर और तेजी से घूमाते हुए बोले।

डा. वोरा कैलेंडर पर से नजर हटाते हुए कह उठे, "यह समस्या अपनी रफ्तार से चलेगी, सिर्फ प्रतीक्षा करने के अलावा और कोई चारा नहीं।"

उसी वक्त दरवाजा धड़ाम की आवाज के साथ खुला और एक टेक्नीशियन चैंबर के अंदर घुस आया। वह बहुत ही उत्तेजित था, उसका चेहरा देखकर ही पता चल रहा था।

डा. मूलचन्दानी ने पूछा, "क्या बात है माइति ?"

"सर, वे रोबट बिल्डिंग के सामनेवाले लान में इकट्ठा होने लगे हैं।"

"ठीक है। सबसे कहिये कि सब अपना काम करते रहें। सशस्त्र पुलिस आ चुकी है। यदि कोई दुर्घटना घटी तो उसका मुकाबला करने के लिए पुलिस है।

टेक्नीशियन वापस मुड़ा और दरवाजा खोलकर बाहर चला गया। डा. मूलचन्दानी ने कहा, "चलिये, हम लोग बालकोनी में जाकर खड़े होते हैं। वहां से लान साफ नजर आता है।"

सब लोग बालकोनी में आकर खड़े हो गये और डा. मूलचन्दानी ने नीचे देखा। एच-4 से लेकर एच-10 तक सभी प्रकार के रोबट नीचे मौजूद थे। कंपनी ने एच-3 वाले माडल को रद्द कर दिया था, क्योंकि वे बड़े-बड़े मैकेनिकल रोबट थे। रोबट एच-4 माडल के निर्माण से रोबट-टेक्नोलोजी में जैसे एक क्रांति-सी आ गयी। रोबट अब बिल्कुल मनुष्यों की तरह थे। अनुसंधान एवं विकास विभाग के वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम से उनकी कार्यदक्षता और गुणवत्ता क्रमशः बढ़ती ही जा रही है। कहा जा सकता था कि एच-10 माडल रोबट उन्नति की चरम-सीमा पर पहुंच गया है। हिन्दुस्तान रोबट लिमिटेड के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स ने निश्चय किया था कि फिलहाल कुछ दिनों तक कोई भी नयी रोबट कार्ययोजना हाथ में नहीं लेंगे। इसी बीच सरकार की तरफ से एक अनुरोध आया कि राजनीति संबंधी ज्ञान से परिपूर्ण रोबट तैयार किया जाये; क्योंकि राजनीति के क्षेत्र में आज तक किसी रोबट का प्रवेश नहीं हुआ था। सरकार इस प्रकार के रोबट के साथ एक परीक्षण करना चाहती थी। परिणामस्वरूप मजबूर होकर हिन्दुस्तान रोबट

लिमिटेड को एच-11 माडल तैयार करना पड़ा। जोर से चिल्लाने की आवाज सुनकर डा. मूलचन्दानी की सोच में अचानक व्यवधान पड़ा।

लान में एकत्र हुए दो सौ रोबटों की आवाज सुनाई दी, "एच-11 जिन्दाबाद !" हिन्दुस्तान रोबट लिमिटेड भवन की सभी बालकोनियां लोगों से खचाखच भरी हुई थीं और उन सबकी नजरें लान की तरफ थीं।

एच-11 मुस्कराते हुए सामने एक ऊंची जगह पर आकर खड़ा हो गया। रोबटों ने तालियां बजाकर एच-11 का स्वागत किया। एच-11 ने एक बार दो सौ रोबटों पर नजर दौड़ायी। फिर चारों तरफ सिर घुमाकर बिल्डिंग की हर एक बालकोनी पर लोगों को देखा। तब उसने फिर से सामने खड़े रोबटों को देखते हुए गंभीर स्वर में कहना आरंभ किया, "मेरे प्यारे दोस्तो ! आप सभी जानते हैं कि आज हम लोगों के सामने एक बहुत बड़ी समस्या आ खड़ी हुई है। अगर इस समस्या को सही ढंग से सुलझाया नहीं गया तो हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। मानव सभ्यता की उन्नति के लिए हम लोग चुपचाप हर प्रकार से लोगों की सेवा करते आ रहे हैं। लेकिन उसके बदले लोगों ने हमें दिया क्या है ? आप लोगों को अच्छी तरह पता है कि हम लोगों के गुलाम हैं। दोस्तो ! इतने दिनों तक आप लोग चुपचाप अपमान सहते आये हैं, लेकिन अब और नहीं, इस तरह अब और नहीं चल सकता। मेहनती रोबट अपना आत्मसम्मान हासिल करके रहेंगे। अपनी मांगें पूरी करवाने के लिए हम हिंसा का रास्ता नहीं अपनाना चाहते। हम चाहते हैं कि लोग हमारी उचित मांगें बातचीत द्वारा शांतिपूर्ण तरीके से पूरी कर दें। अगर शांतिपूर्वक ढंग से ऐसा नहीं होता तो दोस्तो, हमें हर तरह के बलिदान के लिए प्रस्तुत रहना होगा। याद रखिये, हम लोगों को उचित मांगें पूरी करवानी ही पड़ेंगी। सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि हमारे बाद... आने वाली रोबटों की पीढ़ियों के लिए भी। यदि हम लोग अपनी मांगें पूरी न करवा सकें और इसी तरह गुलामों का जीवन व्यतीत करते रहे तो इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। इन्कलाब !"

दो सौ रोबट एक साथ चिल्ला उठे, "जिंदाबाद !"

एच-11 फिर दहाड़ा, "दुनिया के रोबट भाइयो..."

"एक हो जाओ। एक हो जाओ।"

"हमारी उचित मांगें..."

"पूरी करो। पूरी करो..."

"दोस्तो, अब चलिये। हमें अपना चार्टर आफ डिमांड्स गृह-सचिव को सौंपना है।" एच-11 ने कुर्ते की जेब से टाइप किये हुए कुछ पन्ने निकालकर उन पर एक नजर दौड़ायी और तब मुख्य बिल्डिंग की ओर बढ़ने लगा। दो सौ रोबटों ने चुपचाप नेता का अनुसरण किया।

बालकोनी में खड़े लोग हैरान होकर इस अविश्वसनीय घटना को देख रहे थे। श्री पारेख मुख्य बिल्डिंग के सामने सतर्क पुलिस के साथ खड़े हुए थे। वह एच-11 और दूसरे रोबटों को रोकने के लिए आगे बढ़ते हुए बोले, "आप ऊपर नहीं जा सकते।"

एच-11 ठिठक गया।

ऊपर की बालकोनी से गृह-सचिव ने चिल्लाकर कहा, "मिस्टर पारेख, उनमें से किसी एक को बात करने के लिए ऊपर भेज दीजिए।" उसके बाद फिर सब लोग डा. मूलचन्दानी के चैंबर में घुस गये।

डा. सेनापति ने आश्चर्य से पूछा, "क्या आप सचमुच उनके साथ बैठकर बात करना चाहते हैं ?"

"इसके अलावा और कोई चारा भी क्या है ! सिर्फ बातों से ही उनकी मांगों को दबाया जा सकता है। लेकिन पता नहीं इसमें मुझे सफलता मिलेगी कि नहीं।" गृह-सचिव पूरी तरह आश्वस्त नजर नहीं आ रहे थे, हालांकि वह काफी सख्त सचिव के रूप में जाने जाते थे।

सेनापति जैसे निराश होते हुए कहने लगे, "कोशिश करके देख लीजिये। लेकिन आप की तरह मुझे भी कोई उम्मीद नहीं है।"

दरवाजा खुला और एच-11 हाथ में मांग-पत्र लिए गर्व से कमरे के अंदर घुसा। एच-11 की ओर सबने निर्विकार भाव से देखा। किसी ने उसे बैठने के लिए भी नहीं कहा। मूलचन्दानी बहुत ज्यादा घबरा गये। उन्होंने दो बार सिर को खुजलाया और डा. वोरा से धीरे से पूछा, "चटर्जी कहां हैं, वह दिखायी नहीं दे रहे ?"

रोबट मनोवैज्ञानिक मिस्टर सजल चटर्जी की अनुपस्थिति का ध्यान एकाएक डा. वोरा को भी हो आया। "सच, चटर्जी अभी तक आये क्यों नहीं ?" इतना कहते हुए डा. वोरा उछलकर कुर्सी से उठे और चटर्जी को खोजने के लिए बाहर निकल गये।

श्री महाजन का अपना सिगार जलाते हुए धुआं गले में अटक गया और वह दो बार खांसे। अचानक जैसे उन्हें कुछ ध्यान आया हो, वह इस तरह एच-11 से बोले, "अरे खड़े क्यों हो एच-11, बैठो !" कहते हुए उन्होंने खाली कुर्सी की ओर इशारा किया।

"धन्यवाद !" कहकर एच-11 थोड़ा मुस्कराया और कुर्सी खींचकर बैठ गया। फिर ज़रा गंभीर होकर सबकी तरफ देखकर उसने मांग-पत्र श्री महाजन की ओर बढ़ा दिया। श्री महाजन ने हाथ बढ़ाकर उन कागजों को ले लिया। लेकिन उनके हाथ कांप उठे, जिसे लाख कोशिश करने पर भी यह छिपा नहीं पाये।

उसी वक्त डा. वोरा श्री चटर्जी को लेकर कमरे के अंदर घुसे। डा. मूलचन्दानी

ने उन्हें इशारे से अपने पास वाली कुर्सी पर बैठने को कहा। श्री चटर्जी उनके पास वाली कुर्सी में बैठ गये। डा. मूलचन्दानी ने धीरे से कहा, "कहां थे ?"

चटर्जी ने धीरे से जवाब दिया, "नीचे वाली बालकोनी में।"

तब तक श्री महाजन ने मांग-पत्र के पन्नों पर नजर दौड़ा ली और फिर उन्हें डा. सेनापति की तरफ बढ़ा दिया।

श्री महाजन की ओर देखते हुए एच-11 ने कहा, "आशा करता हूं कि आप हमारी मांगें स्वीकार कर लेंगे।"

श्री महाजन असमंजस में पड़ गये और एच-11 के प्रश्न का कोई जवाब नहीं दे सके। उन्होंने बुझे हुए सिगार को दो-चार बार खींचकर जैसे अपने आपको संभाल लिया। उसके बाद जरा खांसकर उन्होंने कहा, "एच-11 इस चार्टर आफ डिमांड की मुख्य बात है तुम लोगों को मुनष्य के रूप में स्वीकार कर लिया जाये, लेकिन यह कैसे संभव है ? रोबटों को मनुष्य के रूप में स्वीकार कर लेना एक सत्य से परे की बात है।"

"मिस्टर महाजन, आप जैसा जानकर आदमी भी इस समस्या को कोई महत्व नहीं देगा, ऐसा मैंने कभी सोचा भी नहीं था। रोबट को मनुष्य के रूप में स्वीकार करने में दिक्कत कहां है, यह बात क्या आप विस्तारपूर्वक समझा सकते हैं ?" एच-11 ने उत्तेजित होते हुए भी अपने आपको शांत रखते हुए यह प्रश्न किया।

महाजन आग-बबूला हो गये। उन्होंने ऐसा कभी सोचा भी नहीं था कि उनके साथ कोई इस तरह का व्यवहार भी कर सकता है। कुछ तीखे स्वर में बोले, "एच-11, व्याख्या करना कोई बड़ी बात नहीं है। सिर्फ तुम्हें इतना याद दिला देना चाहता हूं कि मनुष्य में कुछ विशिष्ट गुण हैं, जिसके कारण उसे पृथ्वी पर प्रमुख स्थान प्राप्त हैं।"

एच-11 ने प्रश्न किया, "वे विशिष्ट गुण क्या हैं ?"

"वे गुण हैं–सहजता, विलक्षणता और सर्जनात्मकता। अर्थात् वे अपने काम स्वयं कर सकते हैं, उनमें सृजनात्मकता के साथ नवीनता लाने की चिंता है।"

"माननीय, मिस्टर महाजन," कहकर एच-11 ने क्षण भर रुकने के बाद फिर ज़रा नाटकीय रूप से कहना आरंभ किया, "आपने जिन गुणों की व्याख्या की वे सिर्फ मनुष्यों में ही नहीं हैं, यह बात याद दिलाने के लिए माफी चाहता हूं। शतरंज खेलने की तरह दिमागी खेल में रोबट ने बहुत पहले ही ख्याति प्राप्त कर ली है। विभिन्न प्रकार के कठिन प्रमयों के मूल प्रमाणों का आविष्कार इसका बहुत महत्वपूर्ण उदाहरण है। कला का सर्जन किया जो आप लोगों के अमूर्त कलाकारों के लिए भी साधना का विषय है। बीसवीं शताब्दी के पांचवें और छठे दशक में हमारे आदि कंप्यूटरों ने संगीत में भी अपनी निपुणता का प्रदर्शन किया। आप चाहें तो किसी भी लाइब्रेरी से रिकार्ड संख्या एच/एच-एस-25053 लेकर सुन सकते

हैं। इसलिए हम भी कह सकते हैं कि ये सभी विशिष्ट गुण हममें भी हैं।" सबके चेहरों पर नजर डालकर एच-11 ने अपनी बात खत्म की। बड़ी मुश्किल से श्री महाजन ने अपने आपको संयत करने की कोशिश की।

श्री महाजन को ऐसी परिस्थिति से मुक्त करने के लिए अब डा. सेनापति सामने आये, "देखो, एच-11, छोटे से छोटा मनुष्य भी हर पल नयी-नयी परिस्थितियों से नये अनुभव और ज्ञान की प्राप्ति करता है, जबकि रोबट ऐसा कुछ भी सीख नहीं पाते।"

एच-11 डा. सेनापति की ओर देखकर मुस्कराया। फिर नजरें हटाकर गंभीर स्वर में कहने लगा, "डा. सेनापति, हिन्दुस्तान रोबट लिमिटेड के अध्यक्ष होने के नाते आपके मुंह से वह बात अच्छी नहीं लगती। आपने जो कुछ भी कहा है, वह सिर्फ मैकेनिकल रोबटों के लिए सही हो सकता है अर्थात् हिन्दुस्तान रोबट लिमिटेड के माडल एच-1 से लेकर एच-3 के बारे में, जिसे आपकी कंपनी ने पहले ही रद्द कर दिया था। लेकिन स्टेबल और अल्ट्रास्टेबल रोबटों के बारे में यह बात बिल्कुल सही नहीं है। आप अपने रोबट मनोवैज्ञानिक से यह बात मालूम कर सकते हैं।"

डा. मूलचन्दानी उत्तेजित हो गये थे। वह कंपनी के अध्यक्ष की घुटनभरी स्थिति किसी भी प्रकार सहन नहीं कर पा रहे थे। अचानक वह चिल्ला पड़े, "स्टेबल और अल्ट्रास्टेबल रोबटों के दिमाग में क्या थैलामस और कार्टेक्स है ? एच-11, तुम्हारे लिए एक बात जान लेना बहुत जरूरी है कि थैलामो-कार्टिकल प्रणाली मनुष्य के दिमाग में ऐसी जगह पहुंच गयी है, जिसके कारण वह लाखों समस्याओं को एक साथ ग्रहण कर सकता है और उसका विश्लेपण करके उसके अनुसार काम कर सकता है।"

एच-11 ने मुस्कराकर कहा, "निदेशक महोदय, आप बेकार में ही उत्तेजित हो रहे हैं। उत्तेजित होकर आप तर्क का सही जवाब दे पायेंगे कि नहीं इसमें मुझे संदेह है। मैं आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए बाध्य हो रहा हूं कि सजीव अवयव-संस्थान मुख्य रूप से थैलामो-कार्टिकल प्रणाली पर संकेत ग्रहण करने और प्रतिक्रिया के लिए उसका विश्लेषण करने हेतु निर्भर करता है। मनुष्य के अलावा दूसरे प्राणी भी संकेतों को ग्रहण कर सकते हैं और प्रतिक्रिया भी करते हैं हालांकि उनकी यह क्षमता कम होती है। इसके प्रमाण के रूप में एक पुरानी घटना का उल्लेख कर रहा हूं। बीसवीं शताब्दी के एक वैज्ञानिक को वर्षो तक आक्टोपस पर अनुसंधान करने पर एक मजेदार चीज दिखायी दी थी अर्थात् आक्टोपस का स्नायुतंत्र, जो पचास करोड़ सालों में क्रमशः उन्नत हुआ है। आक्टोपस के स्नायुतंत्र में मनुष्य के स्नायुतंत्र की तरह थैलामस, कार्टेक्स या उसी तरह की कोई चीज नहीं है, लेकिन फिर भी आक्टोपस विभिन्न प्रकार के संकेतों को कई

स्रोतों से ग्रहण करता है और प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकता है। इसलिए सूचना ग्रहण करना, उसका विश्लेषण करना और उसके अनुसार प्रतिक्रिया करने के लिए थैलामो-कार्टिकल प्रणाली ही एकमात्र चीज नहीं है। रोबट मनुष्यों के दिमाग के थैलामो-कार्टिकल प्रणाली की तरह कोई प्रणाली अपने दिमाग में नहीं बैठा सकते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे असंख्य समाचार ग्रहण नहीं कर पाते अथवा उसका विश्लेषण नहीं कर पाते या फिर उसके अनुसार प्रतिक्रिया नहीं कर पाते। माध्यम अलग होते हुए भी वे मनुष्यों की तरह संकेत ग्रहण करते हैं, विश्लेषण भी करते हैं और उनके अनुसार काम भी करते हैं।"

मूलचन्दानी एक शब्द भी नहीं बोल पाये। वह अपना बायां हाथ बार-बार माथे पर मारते हुए लगातार खीझ रहे थे।

"मनुष्य में प्रजनन की क्षमता है, लेकिन रोबट में नहीं है।" यह तर्क देकर जैसे श्री महाजन को थोड़ा बल मिल गया हो। उन्होंने यह बात उस तरह से कही जैसे रोबट से कह रहे हों कि इसका तोड़ करके दिखाओ तो जानें।

"रोबट में प्रजनन-क्षमता न हो लेकिन उनमें निर्माण की योग्यता है। हम लोग जो स्वाधीन रूप से ड्राईंग अवस्था से लेकर संयोजन तक कर पाते हैं, उसे तो आप अस्वीकार नहीं कर पायेंगे, और उन दोनों का मतलब ही है मात्रिक प्रगति–है ना, मिस्टर महाजन ?" इस बार व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ जवाब दिया एच-11 ने। एच-11 ने जारी रखा, "मिस्टर महाजन, मैं एक और बात कहना चाहता हूं। रोबट एक यंत्र के समान है अथवा मनुष्य के इस प्रश्न के उत्तर के लिए किसी नये आविष्कार की जरूरत मैं नहीं समझता, कारण यह है कि इसके संबंध में हिन्दुस्तान रोबट लिमिटेड की कंप्यूटर-लाइब्रेरी में 'साइबरनेटिक्स' पर आप ही लोगों की लिखी किताबों में यह बात प्रमाणित की गयी है कि रोबट मनुष्यों के बराबर हैं। आप की सरकार इस बात को मानेगी या नहीं, इसके लिए सिर्फ जरूरी है एक राजनैतिक निर्णय। रोबट का शरीर तार, कंडेंसर, रेसिस्टर, माइक्रोचिप, फोटोसेल और प्लास्टिक से तैयार होता है और आप लोगों का शरीर जीवित कोशिकाओं से तैयार होता है, इसीलिए आप लोग रोबट को मनुष्यों का दर्जा नहीं दे सकते। तो इससे यह समझ लेना चाहिए कि मनुष्य जितनी भी प्रशंसा करे, लेकिन वह अभी भी जाति संबंधी भेदभाव से छुटकारा नहीं पा सका है।"

कमरे में एक अजीब-सा सन्नाटा छा गया। कोई भी किसी दूसरे की ओर देखने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। सिर्फ श्री सजल चटर्जी कुर्सी पर थोड़ा हिले-डुले। उनके चेहरे को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह इन सारी बातों का आनंद ले रहे थे। अचानक डा. मूलचन्दानी ने असहाय होकर चटर्जी की ओर देखते हुए धीरे से अनुरोध किया, "तुम कुछ करो चटर्जी, वरना हमारा सारा सम्मान धूल में मिल जायेगा।"

श्री जटर्जी ने अवाक् होते हुए कहा, "मैं ?"

"हां चटर्जी, मैं समझता हूं कि तुम्हारे अलावा और कोई इस स्थिति को संभाल नहीं पायेगा, क्योंकि तुम रोबटों को अच्छी तरह समझते हो।"

"लेकिन एच-11 के तर्क में कहीं कुछ गलत नहीं है। ऐसे में मैं क्या कर सकता हूं ?"

"कुछ भी करो चटर्जी। मैं सब कुछ तुम्हारे ऊपर छोड़ रहा हूं।"

इसी बीच श्री महाजन उठ खड़े हुए। डा. सेनापति ने भी घड़ी देखी और उठकर खड़े होते हुए बोले, "ठीक है, लंच के बाद बैठक फिर होगी।" उसके बाद दोनों चैंबर से बाहर निकल गये।

लंच के बाद फिर से सभी डा. मूलचन्दानी के चैंबर में एकत्र हो गये। एच-11 चैंबर में ही बैटा था क्योंकि रोबट को लंच का कोई झंझट भी नहीं निभाना था। थोड़ी देर बाद श्री सजल चटर्जी कागज का एक छोटा-सा पैकेट लेकर चैंबर में दाखिल हुए।

कुर्सी पर बैटते हुए चटर्जी ने कहा, "एच-11, मैं तुम्हारे साथ कुछ बात करना चाहता हूं। आशा करता हूं कि तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।"

"नहीं, मिस्टर चटर्जी," एच-11 ने शांत स्वर में जवाब दिया।

डा. मूलचन्दानी के अंदर एक खुशी की लहर दौड़ गयी और उन्होंने जल्दी से कहा, "आपत्ति क्यों होगी, तुम अवश्य बात करो।"

"तुमसे एक छोटा-सा प्रश्न कर रहा हूं, सोच समझकर जवाब देना। तुम कौन हो ?"

प्रश्न सुनकर एच-11 श्री चटर्जी की ओर हक्का-बक्का होकर देखने लगा। पहली बार ऐसा लगा जैसे एच-11 कुछ घबरा गया हो, लेकिन कुछ देर बाद सहज और हंसते हुए उसने जवाब दिया, "मैं एच-11 माडल का पहला रोबट हूं।"

"और ?" चटर्जी जैसे किसी छात्र से प्रश्न कर रहे हों।

"और ?" चटर्जी के प्रश्न को दोहराते हुए एच-11 ने असमंजस में जवाब दिया, "मेरा मतलब है... आप अगर ज्यादा विवरण चाहते हैं तो मेरी ड्राईंग को देख सकते हैं, उससे सब कुछ पता चल जायेगा।"

चटर्जी ने मुस्कराते हुए कहा, "एच-11, तुम्हारे और हमारे बीच मूल अंतर यही है कि तुम सबके विवरण की ड्राईंग तैयार की जा सकती है। लेकिन हम लोगों के विवरण की ड्राईंग तैयार नहीं की जा सकती हालांकि हम लोगों ने मानव शरीर की बायोलाजी, फिज़ियोलाजी, न्यूरोलाजी, माइक्रोबायोलाजी, यहां तक कि संपूर्ण मानव सभ्यता का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त किया है।"

"आपकी बात ठीक से समझ में नहीं आयी, मिस्टर चटर्जी। ज़रा समझाकर

बतायेंगे आप," असहाय होते हुए एच-11 ने कहा। एच-11 की विमूढ़ता पर सभी को आनंद आ रहा था। डा. मूलचन्दानी ने धीरे से महाजन से कुछ कहा, जिससे उनकी उदासीनता छंट गयी और वह कुर्सी पर हिलडुलकर बैठते हुए एक नया सिगार जलाने में व्यस्त हो गये।

चटर्जी ने एच-11 पर मुस्कराते हुए कहा, "एक रोबट चाहे तो अपने संबंध में सब कुछ जान सकता है, लेकिन एक मनुष्य लाख कोशिश करने पर भी अपने आपको जान नहीं पाता है।"

"क्यों ?'

"वह इसलिए कि मनुष्य के अंदर एक अद्भुत रहस्यमय वस्तु है जिसे आज तक मनुष्य पूर्ण रूप से जान नहीं पाया है। सृष्टि के पहले दिन से ही उस रहस्यमय वस्तु को मनुष्य ढूंढ़ रहा है।"

"क्या है वह चीज़ ?"

"आत्मा।"

"आत्मा ? वह क्या है ?"

इस बार चटर्जी जोर से हंसे।

"आप हंस रहे हैं ?"

"वर्षों तक साधना करके भी मनुष्य आत्मा के सत्य स्वरूप को जान नहीं पाया है। उसी बात को मैं तुम्हें किस तरह समझाऊं, बताओ !"

इस बार एच-11 के हंसने की बारी थी। उसने कहा, "ऐसा लगता है जैसे आप मुझे उलझाना चाहते हैं। ऐसी किसी भी वस्तु का अस्तित्व मनुष्य के शरीर में नहीं हो सकता जिसकी बायोलाजी, फिजियोलाजी, न्यूरोलाजी या फिर माइक्रोबायोलाजी से भी व्याख्या नहीं की जा सकती हो। अगर इस तरह की किसी वस्तु का अस्तित्व है भी तो विज्ञान उसे कभी भी नहीं मानेगा।"

"विज्ञान माने या न माने लेकिन इतना जान लो आत्मा है, सिर्फ है ही नहीं—थी, है और रहेगी। वह अमर है... अनश्वर है... ।"

"अविश्वसनीय।" एच-11 ने अपनी अस्वीकृति प्रदर्शित की, "न तो विज्ञान आत्मा के अस्तित्व को मानता है और न मैं।"

चटर्जी ने टेबल से वह पैकेट उठाकर एच-11 की ओर बढ़ाते हुए कहा, "लो, यह किताब पकड़ो। हम लोग यहीं बैठे हुए हैं। तुम इस किताब को पढ़ो। उसके बाद एक बार फिर बातचीत करेंगे और अगर तुम यह प्रमाणित कर सके कि आत्मा नाम की कोई चीज नहीं है तो मैं सबसे पहले तुम्हारे मांग-पत्र पर हस्ताक्षर करूंगा।"

"क्या किताब है यह ?" एच-11 ने जरा संदिग्ध भाव से पूछते हुए पैकेट हाथ में उठा लिया।

"एक छोटी-सी किताब। तुमने यह किताब नहीं पढ़ी है, क्योंकि यह किताब हमारी कंप्यूटर-लाइब्रेरी में नहीं है।"

"ठीक है, मैं आपकी चुनौती स्वीकार करता हूं। मैं दस मिनट के अंदर लौटकर आता हूं", कहकर एच-11 जल्दी से डा. मूलचन्दानी के चैंबर से बाहर निकल गया।

इतनी देर तक सभी आश्चर्य से चटर्जी की हरकतें देख रहे थे। किसी को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। और सभी अजीब-सी स्थिति में स्वयं को अनुभव कर रहे थे। एच-11 के बाहर जाते ही डा. मूलचन्दानी ने पूछा, "उसे क्या पढ़ने को दिया है, चटर्जी।"

"मैंने उसे एक छोटी-सी किताब दी है ताकि वह इस बारे में कुछ जानकारी हासिल कर सके कि आत्मा का सत्य स्वरूप क्या है।" चटर्जी ने विधिवत ढंग से कहा।

महाजन चटर्जी से कुछ पूछने जा रहे थे कि डा. मूलचन्दानी ने उन्हें रोकते हुए कहा, "सर, ज़रा वेट कीजिए। अभी सब कुछ पता चल जायेगा। चटर्जी पर हम लोगों को पूरा भरोसा है।"

महाजन नाराज होकर मुंह फुलाकर बैठ गये।

समय तेजी से गुजरने लगा...

दस मिनट गुजर गये। सब लोग जैसे सांस रोके प्रतीक्षा कर रहे थे—सिर्फ चटर्जी को छोड़कर। चटर्जी का चेहरा गंभीर था।

पंद्रह मिनट बीत गये। डा. मूलचन्दानी बार-बार घड़ी और दरवाजे की ओर देख रहे थे।

बीस मिनट...

पच्चीस मिनट...

तीस मिनट...

एक घंटा...

डा. वोरा से अब और नहीं रहा गया। वह कह उठे, "आखिर क्या बात है ? मैं ज़रा देखकर आता हूं।"

डा. वोरा के बाहर जाते ही फिर से चैंबर में नीरवता छा गयी।

थोड़ी देर बाद टेबल पर वीडियो स्क्रीन पर डा. वोरा दिखायी देने लगे। सबने चौंककर स्क्रीन की ओर देखा। डा. मूलचन्दानी ने जल्दी से पास आकर पूछा, "क्या बात है डा. वोरा ? आप उत्तेजित दिखायी दे रहे हैं ?"

"मामला बड़ा संगीन है, सर। मुझे लगता है कि एच-11 पागल हो गया है। आप लोग जल्दी से रोबट बिल्डिंग के 201 नंबर केबिन में आ जाइये।"

सभी लोग 201 नंबर केबिन की ओर दौड़ पड़े। बरामदे में घबराये हुए रोबट

हो-हल्ला कर रहे थे। डा. मूलचन्दानी ने सबको डांट लगायी, "तुम सब क्या कर रहे हो यहां ? अपने-अपने केबिन में जाओ सब।" धीरे-धीरे सारे रोबट अपने-अपने केबिन में चले गये।

201 नंबर केबिन के सामने जाकर सब घबरा गये। डा. वोरा बंद दरवाजे के सामने उत्तेजित होकर चहलकदमी कर रहे थे और बंद दरवाजे के उस पार से एच-11 का गंभीर स्वर सुनायी दे रहा था :

"न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा
भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।"*

आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ?

चटर्जी सिर झुकाकर खड़े थे। डा. मूलचन्दानी ने दरवाजे पर दस्तक दी, लेकिन दरवाजा नहीं खुला। यह खबर सुनकर तब तक पारेख भी आ गये। उन्होंने मिस्टर महाजन से पूछा, "सर, क्या हम दरवाजा तोड़ डालें ?"

"नहीं," चटर्जी ने अचानक चिल्लाकर आदेश दिया।

"बात क्या है, चटर्जी ?" डा. मूलचन्दानी ने प्रश्न किया

चटर्जी ने गंभीर स्वर में जवाब दिया, "अब आप एच-11 का चार्टर आफ डिमान्ड फाड़कर फेंक सकते हैं। वह अपनी मांगों के पक्ष में अब और कुछ नहीं कहने आयेगा और कुछ ही मिनटों में उसके इलेक्ट्रानिक ब्रेन का सरकिट टूटकर बिखर जायेगा।"

"क्यों ?" इस बार महाजन ने प्रश्न किया।

"इसका कारण यह है कि उसे एक ऐसी समस्या दी गयी जिसका समाधान करना तो दूर रहा, उसके इलेक्ट्रानिक ब्रेन में उस सबको ग्रहण करने की भी क्षमता नहीं थी। इसलिए उसका ब्रेन सरकिट नष्ट होने लगा है, अभागा एच-11 !"

फिर एक बार एच-11 की आवाज सुनायी दी, लेकिन इस प्रकार गले की आवाज दबी-दबी-सी थी, "आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ?"

फिर अचानक आवाज़ आनी बंद हो गयी और जमीन पर किसी भारी चीज के गिरने की आवाज हुई।

"सब खत्म हो गया। मिस्टर पारेख, अब आप दरवाजा तोड़ सकते हैं," चटर्जी ने कहा।

पारेख अपने लोगों को बुलाने चले गये। अचानक चटर्जी ने डा. मूलचन्दानी

---

* आत्मा न जन्म लेता है, न कभी मरता है। इसका कोई भूत, वर्तमान और भविष्य नहीं है। यह अजन्मा है, शाश्वत है, अपरिवर्तनीय है। यह शरीर के साथ मरता नहीं।

का हाथ दबाते हुए कहा, "सर, आप सब लोगों से एक निवेदन करना चाहता हूं।"

डा. मूलचन्दानी के जवाब देने से पहले ही महाजन और सेनापति ने चटर्जी से कहा, "वह क्या निवेदन है, मिस्टर चटर्जी, कहिये। हम लोग पूरी कोशिश करेंगे कि उसे मान लिया जाये।"

"एच-11 की अंत्येष्टि अगर मनुष्य की मर्यादा के अनुसार हो तो मुझे बहुत खुशी होगी। उसकी यांत्रिक सत्ता थोड़े दिनों के लिए ही सही मानवीय सत्ता में परिणत हुई थी क्योंकि एच-11 मनुष्यों की तरह ही अपने जीवन के अंतिम क्षणों में शाश्वत प्रश्नों के द्वारा अधीर हो उठा था।" चटर्जी की आवाज भर्रा उठी।

"आपका निवेदन मुझे स्वीकार है," महाजन ने जवाब दिया। वह रोबट मनोवैज्ञानिक को आश्चर्यचकित हो देख रहे थे।

"धन्यवाद, सर।" कहकर चटर्जी धीरे-धीरे चले गये। वह बहुत थके हुए दिख रहे थे।

मुख्य भवन के पीछे सूर्य छिपने लगा था। कुछ अनजाने पक्षी लगातार कलरव कर रहे थे। सांझ के अंधेरे की तरह सबके मन पर एक उदासी छा गयी। पारेख दरवाजा तोड़ने के लिए तैयार खड़े थे। लेकिन लग रहा था जैसे अब भी कोई बंद दरवाजे के उस पार से कह जा रहा था : "आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ?"

**अंग्रेजी से कमलेश सेन द्वारा अनूदित**

# उलझन

'सुजाता'

सबसे पहले मैं आपका परिचय पात्रों से करा दूं–एक तो है उल्लास, दूसरी झरना (यानी मैं स्वयं) और एक मशीन। हम मशीन को संक्षेप में केवल 'न' कहेंगे। हमारे नामों के पहले अक्षरों को मिला कर ही इस यान का नाम रखा गया है–उलझन। इस क्रम के अन्य अंतरिक्ष-यानों के नाम भी इसी तरह रखे गये हैं। एक यान जिसमें हेमंत, अवंतिका और एनसेफेलान (उनकी कम्प्यूटर मशीन का यही नाम था) गये थे उसका नाम था–हेवेन। फिरोज, मधु और उनके XLS यंत्र को मिला कर बना था फर्मामेंट।

हमेशा ही बस केवल एक आदमी, एक औरत और एक मशीन। हमारे यान से पहले आठ ऐसे ही यान जा चुके हैं।

यह नौवां है।

हमारी मशीन ABC मार्क III, एक बहुत ही परिष्कृत कम्प्यूटर है। यह मानव के आकार का है, उसकी पारदर्शक आंखें कभी झपकती नहीं और शरीर पॉलीमर की बनी चमकदार पोशाक के कारण झिलमिलाता रहता है। इसके शब्दकोश में एक हजार शब्द हैं और यह अपनी बनावटी खरखराती हुई आवाज में बिल्कुल किसी इंसान की तरह बातें कर सकता है। बस इसके सीने में दिल की जगह एक सिलिकॉन चिप लगा है।

एक क्षुद्रग्रह एस्टिरायड 99 हमारा लक्ष्य है। पहले भेजे गये सात यान वहां आवश्यक साज-सामान की जानकारी दे चुके हैं जबकि आठवां यान कहीं खो गया। वहां की हवा में अमोनिया की मात्रा बहुत अधिक है। इसके लिए योजना थी कि वहां की हवा के रासायनिक संगठन में परिवर्तन कर इसे रहने योग्य बना लिया जायेगा। एक विशाल जिओडेसिक डोम स्थापित कर, थोड़े-थोड़े लोगों को वहां ले जाया जायेगा। वहां आवश्यक कार्य पूरा करने के लिए यान को कम से कम अठारह बार वहां जाना पड़ेगा। वहां जाने के लिए उत्सुक लोगों की सूची बड़ी लंबी है, जबकि अब भी कुछ लोग सूची में अपना नाम लिखवाने के लिए पूरी कोशिश में लगे हैं। जाहिर है कि मनुष्य धरती के एकरस जीवन से कितना

ऊब चुका है। आखिरकार, जब तुम्हारे पास जीवन के सारे भौतिक सुख और सुविधाएं उपलब्ध हों तो उससे ऊपर तुम और बना भी क्या सकते हो ?

उल्लास एक अच्छा इंसान है। समझदार और सुसंस्कृत। वह कभी मुझे परेशान नहीं करता। सच पूछिए तो, मैं ही उसे कभी-कभी सताती रहती हूं। सारे निर्णय हम मिलकर करते हैं और अगर कभी हमारे विचार अलग-अलग हों तो 'न' को मध्यस्थ की भूमिका निभानी होगी। जहां तक मेरा और उल्लास का सवाल है, हम अब तक तो कभी असहमत नहीं हुए हैं।

पांच महीने से हमारी यात्रा जारी थी और क्षुद्रग्रह 99 पर पहुंचने में एक महीना और लगना था। तभी उल्लास और 'न' के बीच यह झंझट शुरू हो गया। आमतौर पर रोजमर्रा के सभी कामों की देखभाल 'न' करता है, जैसे रिपोर्टों को बनाना, पृथ्वी से संपर्क बनाए रखना, गणनाओं के अनुसार सही मार्ग पर चलना, तारों से संबंधित सभी गणनाएं करना, आदि। केवल अंतिम अवस्थाओं में, उतरने के तुरंत पहले, उल्लास और मुझे उतरने संबंधी कुछ दृश्य-क्रियाएं सम्पन्न करनी थीं या फिर केवल तभी जबकि कोई एमरजेंसी हो। हालांकि, 'न' के बिना, हम ज्यादा देर तक कुछ भी नहीं कर सकते।

लेकिन मैं तो आपको उल्लास और 'न' के झगड़े के बारे में बताने जा रही थी।

* * *

एक दिन उल्लास ने मुझे बुलाया। उस समय मैं नीचे डेक में बैठी ऊंघ रही थी। मैं ऊपर गयी (लेकिन सच कहा जाये तो 'ऊपर' या 'नीचे' कुछ भी कहना गलत है, क्योंकि अंतरिक्ष में ऐसा कुछ नहीं होता..)।

उल्लास और 'न' शतरंज खेल रहे थे। 'न' ने मुझे गहरी नजर से देखा, बिल्कुल किसी अभिमानी शासक की तरह, और पूछा कि क्या मुझे ठीक से नींद आयी थी। मैंने जवाब देने का जरूरत नहीं समझी। एक मशीन को जवाब देना जरूरी भी नहीं था।

"जानती हो झरना, आज 'न' ने मुझे तीन बार मात दी है," उल्लास ने रुष्ट स्वर में कहा। "इसने केवल 48 सैकेंड में मुझे शहमात दे दी।"

"लगता है तुम बिल्कुल अनाड़ी खिलाड़ी हो," मैंने अपनी राय दी।

"नहीं झरना, अपनी यात्रा के शुरू के दिनों में मैं 'न' को बड़ी आसानी से हरा दिया करता था," उल्लास ने कहा। "मेरा मतलब है, 'न' बहुत तेजी से उन्नति कर रहा है। इसने मुझे बैंकरेट और ड्राफ्ट में भी मात दी है।" 'न' ने अपनी पारदर्शी आंखों से शतरंज के बोर्ड का मुआयना किया और कहा, "शह और मात।"
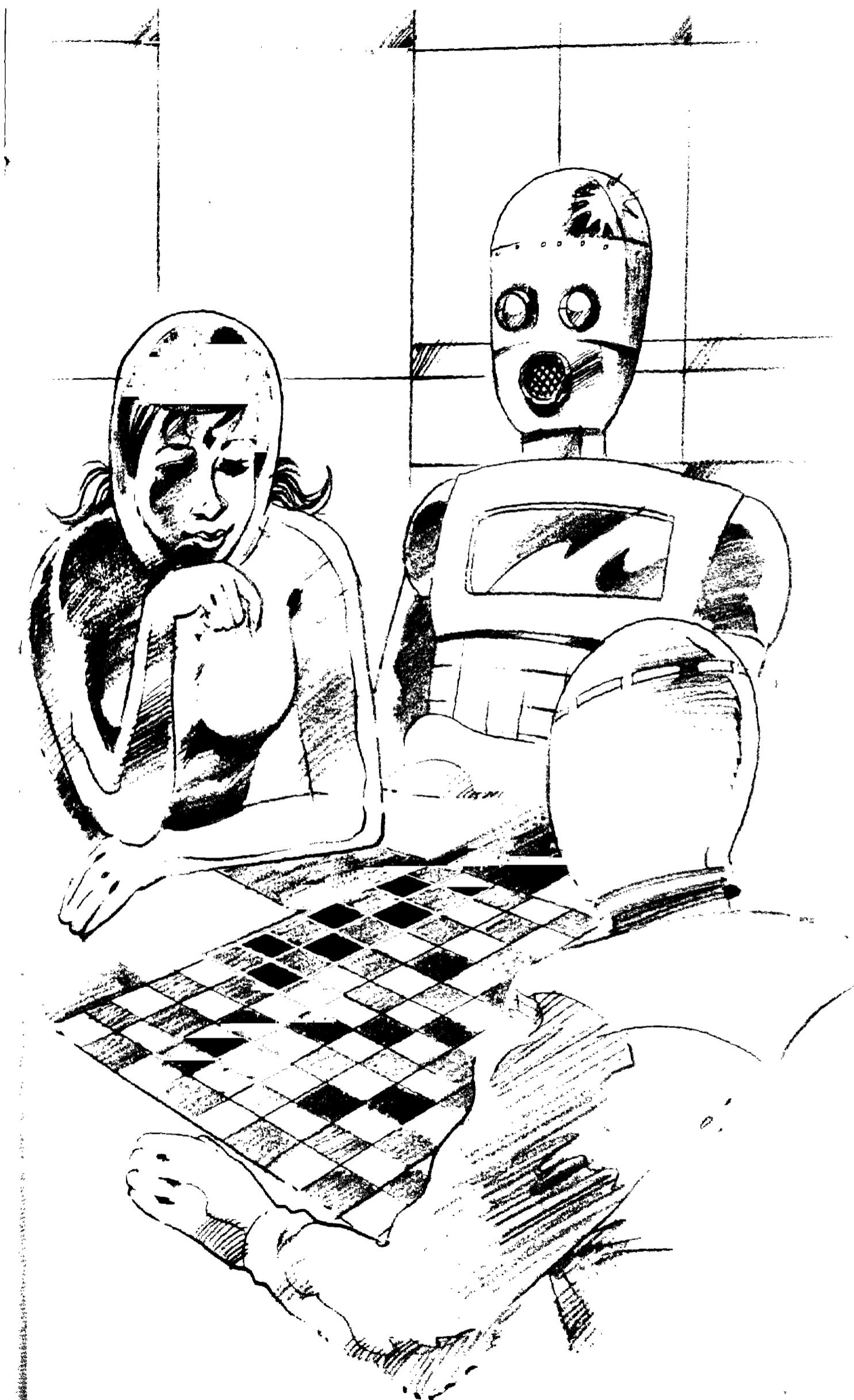
"देखा तुमने," उल्लास ने चकित होकर कहा। 'न' अपने खेल को बहुत ध्यान से सुधारता जा रहा है और मेरे खेल की कमियों का भी इसने विश्लेषण कर लिया है।"

"तो क्या ?" मैंने कहा। " 'न' तुमने खेलना किससे सीखा ?"

"अपने अनुभव से," 'न' ने कहा।

"मुझे लगता है, झरना, 'न' दिन-प्रतिदिन और अधिक मानवीय होता जा रहा है।" उल्लास ने कुछ ऐसी मरी हुई आवाज में यह बात कही कि मैंने पहले उसे और फिर 'न' को देखा।

"यह सच है," उल्लास ने फिर कहा। 'न' के प्रोग्राम में एक भाग ऐसा है जो गल्तियों को सुधार सकता है। इसकी स्मृति ऐसी बनायी गयी है जो तथ्यों को ध्यान में रख सकती है। और यह दिन-प्रतिदिन बिल्कुल हमारे जैसा होता जा रहा है।···'न', तुमने उस दिन वह क्या कविता लिखी थी ?"

"कविता नहीं, वह सेंट फ्रांसिस की प्रार्थना थी। मुझे वह समाचारों के बैंक में मिली," 'न' ने कहा।

"सुना तुमने। सेंट फ्रांसिस। कोई मशीन क्या यह बात कर सकती है, जिसका संबंध उसके काम से है ही नहीं। क्या ये किसी आदमी का किया हुआ काम मालूम नहीं होता ?"

"तुम कहना क्या चाहते हो, उल्लास ?"

उल्लास ने कुछ कहना चाहा, लेकिन फिर अपने आपको रोक लिया। 'न', क्या तुम नीचे जाओगे ? मैं झरना से कुछ अकेले में बात करना चाहता हूं।" उल्लास ने 'न' से कहा।

"ठीक है," कहकर 'न' उठा और जंगले के सहारे, किसी चिंपाजी की तरह कूदता हुआ नीचे चला गया। मैं चाहकर भी मुस्कराहट रोक नहीं पायी। "यह क्या है ? 'न' को इस तरह कूदना किसने सिखाया ?"

"यही तो मैं तुम्हें बताना चाहता था," उल्लास बोला। ये सब उसकी अपनी ही सीखी-समझी चीजें हैं।"

"ओके, तो फिर ?"

"इसमें एक खतरा है, झरना," उल्लास ने चारों ओर चोर नजर से देखते हुए कहा। ये सब मुझे बड़ा अजीब-सा लगा।

"झरना, हालांकि 'न' नीचे डेक पर चला गया है, लेकिन तब भी वह जरूर हमारी बातें सुन रहा होगा। पास आओ, तो मैं तुम्हारे कान में बताऊं। सुनो झरना, मुझे लगता है 'न' कुछ शरारत करने वाला है।"

"कैसी शरारत ?"

"यह हमारे खिलाफ कुछ षडयंत्र रच रहा है। दो दिन पहले मुझे मालूम हुआ

कि यह अपने मानीटर पर कुछ कठिन और अतिशयोक्तिपूर्ण (हाइपरबोलिक) गणनाएं करने में लगा है। मैंने जैसे ही इससे पूछा कि यह सब क्या है तो इसने "कुछ नहीं" कह कर स्क्रीन पर से सब कुछ मिटा दिया।"

"यह भी तो हो सकता है कि वह बोर हो रहा हो, इसलिए यूं ही निरुद्देश्य कुछ करने लगा हो।"

"अगर इसके पास करने को कुछ भी न हो तो इसको नींद के समान अवस्था में जाना चाहिए था जिससे बैटरी पावर की बचत कर सके। लेकिन इसके बजाय यह कठिन गणनाएं करने में लगा था। मैंने यह जानने की कोशिश की थी कि वह सब क्या है, लेकिन 'न' टाल-मटोल करता रहा। और जब हम सो रहे थे तो ये किसी को संदेश भेज रहा था।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?" मैंने पूछा।

"मैं चुपके से उठकर, उस पर नजर रख रहा था।"

"इसका मतलब तुम उसकी जासूसी कर रहे थे, यान पर यह सब क्या हो रहा है ?"

"देखो, झरना, मैंने उसे रंगे हाथों पकड़ा था। जब मैंने उस पर यह जानने के लिए दबाव डाला कि संदेश किसके लिए था तो उसने जवाब दिया 'पृथ्वी स्थित स्टेशन के लिए'। मैंने पूछा कि संदेश था क्या ? तब उसने बताया कि वातावरण में बहुत गड़बड़भरी आवाजें थीं, इसलिए मुझे पूरी तरह मालूम नहीं हो सका। मैंने उसे दिखाने के लिए कहा तो थोड़ी देर बाद उसने मुझे अनाप-शनाप न जाने क्या दिखा दिया।"

"उल्लास, क्या तुम किसी चीज से डर रहे हो ?" मैंने पूछा।

"डर नहीं रहा। केवल संदेह है," उसने कहा।

"एक मशीन पर शक ? यह कर भी क्या सकता है ? क्या तुम भूल गये कि अगर 'न' ठीक से काम न करे तो सारे कमांड अपने हाथ में लेने के लिए हमारे पास संयोगिक प्लान भी हैं। चिंता की क्या बात है ?"

"हर हालत में, तुम्हें इस पर नजर रखनी होगी," उल्लास ने कहा और ऊपरी हिस्से में चला गया।

संयोगिक प्लान एक अंतिम कदम है, केवल आपात्काल के लिए जब यात्रा को बचाने का और कोई रास्ता न रह जाये। यह वास्तव में बहुत कठिन काम भी है। मेरे पास एक गुप्त कोड है और ऐसा ही एक गुप्त कोड उल्लास के पास भी है। जब हम दोनों मिलकर पैनल पर सही ढंग से चाबी लगायेंगे तो कंप्यूटर बंद हो जायेगा। उसके बाद यान को हमें चलाना पड़ेगा क्योंकि इसके बाद 'न' मशीन को पुनः चालू करना असंभव है। इसलिए हमें बहुत सोच-समझकर ही इस युक्ति को प्रयोग में लाना होगा।

आपातकालीन प्रक्रिया के प्रयोग को उचित सिद्ध करने के लिए दस संयोगों की एक सूची है। इसके बाद भी भूमि स्थित केंद्र से आज्ञा लेना जरूरी है...

'न' क्या कर रहा है, यह देखने के लिए मैं पिछवाड़े गयी। हमेशा की तरह वह अपनी कोने वाली जगह पर बैठा था। बत्तियों की एक पंक्ति पर नजर रखे हुए।

"क्या आप लोगों की बात खत्म हो गयी ?"

"हां," मैंने कहा।

"मुझसे कुछ पूछना चाहती हैं ?"

एक सैकेंड के लिए मैं हड़बड़ा गयी, फिर संभलकर कहा, "नहीं तो।"

"ऐसा पहली बार हुआ है जब आप लोगों ने निजी बातचीत के समय मुझे वहां से हटा दिया।"

"तो ?"

"अगर आपकी बात यान से संबंधित है तो मुझे भी मालूम होनी चाहिए।"

"परेशान मत हो। यह हमारी आपस की बात थी। इसका यान से कोई संबंध नहीं। 'न', उल्लास कह रहा था कि तुम कुछ अपनी पढ़ाई कर रहे हो।"

"मैं सेंट फ्रांसिस की प्रार्थना पढ़ रहा था।"

"वह दूसरी कौन-सी किताब है ?"

"सौन्दर्यलहरी। आदिशंकराचार्य की लिखी एक हजार कविताएं। जरा इसकी इकहत्तरवीं कविता पढ़िए—इसका काव्य-सौन्दर्य आपको रुला देगा।"

"यह सब तुम्हें कहां से मिला ?" मैंने पूछा।

चुंबकीय लाइब्रेरी में है, यह सब। जब भी आप बोर हों, पढ़ लीजिए। चूंकि आप लोग तो पढ़ते नहीं हैं, मैंने सोचा क्यों न मैं ही इनका सदुपयोग करूं...।"

"ये तुम्हारे किस काम की ? तुम मानव नहीं हो। तुम किताबों को क्या समझोगे।"

'न' ने मेरे सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। बल्कि कहा, "मैं आपको याद दिला दूं, झरना, कि आपके सोने का समय हो गया है।"

"केवल एक बात बताओ—क्या तुम झूठ बोल सकते हो ?"

"जीनो की विरोधोक्ति के अनुसार यह कहना कि 'मैं झूठ नहीं बोलता', झूठ बोलने वाले और जो सच बोलते हैं, इन दोनों के लिए ही ठीक रहता है। आपको नहीं मालूम ?" मैं इस पर कुछ सोच पाती, इससे पहले ही मुझे नींद आने लगी।

दो दिनों तक कुछ नहीं हुआ। उल्लास और 'न' हमेशा की तरह अपने-अपने काम में व्यस्त थे और मैं इस बात को लगभग भूल चुकी थी जबकि हमें पृथ्वी से संदेश मिला। 'न' इसे लेकर हमारे पास आया। उस समय हम ऊपरी डेक पर थे।

यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण 'रेड अलर्ट' संदेश था–भूमि स्थित केंद्र से उलझन के लिए। आपातकालीन निर्देश। "पृथ्वी के समयानुसार 8.20 के बाद निर्देशानुसार कक्षा बदलें और छह दिन, अट्ठारह घंटे, तीन मिनट अड़तालीस सैकेंड दूर स्थित अनजान ग्रह के चित्र लें। ऐसा अंदाज है कि आठवां अंतरिक्ष-यान इसी ग्रह पर नष्ट हुआ था। दिशा परिवर्तन संकेतों के लिए तैयार रहो।"

"इसका मतलब है घर लौटने में देरी," मैं बड़बड़ायी।

उल्लास ध्यान से लगातार स्क्रीन पर आने वाले संदेश को देख रहा था। "हमें उसके बारे में पहले बताया क्यों नहीं ?"

"हो सकता है, उन्होंने अचानक ही कुछ सोचा हो," मैंने कहा।

" 'न', तुम्हें मालूम है हम अपना रास्ता बदल रहे हैं ?"

"मुझे मालूम है। मैं उसी की तैयारी कर रहा हूं," 'न' ने जवाब दिया।

"बड़ा रोमांचक है। हो सकता है, हमें खोया हुआ यान भी मिल जाये," मैंने कहा।

" 'न', क्या तुम मशीन-रूम स्टेशन में अपना स्थान लोगे ?" उल्लास ने आदेश दिया। जैसे ही 'न' दूर गया, वह फुसफुसाया, "झरना, यह तो जाली संदेश है। यह बिल्कुल भी पृथ्वी से नहीं आया है।"

मैंने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"यह सब 'न' की शरारत है," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "हो सकता है वह अब भी हमारी बात सुन रहा हो... झरना, मानो न मानो, यह 'न' का ही काम है।"

"तुम यह कैसे कह सकते हो ?" मैंने प्रतिरोध किया। "सभी गुप्त लाइनें ठीक हैं। इसके अलावा, सभी सूचनाओं को सुनिश्चित करने के लिए तुम पृथ्वी को संदेश भेज सकते हो, जांच कर सकते हो, लगातार पांच महीनों की यात्रा ने तुम्हें अधीर बना दिया है, तुम बिल्कुल गड़बड़ा गये हो। 'न' के पास हमारे खिलाफ षड्यंत्र रचने का क्या कारण हो सकता है ?"

"मैं तुम्हें बताऊंगा। यह संदेश क्या पृथ्वी से हमारा सीधा संबंध है ? जरा सोचो–हमारे सारे संपर्क इस डिजिटल-फार्म द्वारा हैं। डीकोडिंग, दृश्य सभी कुछ हमारे पास 'न' के माध्यम से ही आते हैं।"

"यह तो ठीक है–डिजिलट माड्यूलेशन, क्रिप्टो, सभी कुछ हमें कंप्यूटर से ही पता लगता है। अंतरिक्ष-यात्रा का यही नियम है।" मैं भी सहमत थी।

"यह तो तुम भी मानती हो कि बिना 'न' के हम पृथ्वी से संपर्क नहीं कर सकते ?"

"हां, लेकिन... ।"

"रहने दो। मेरी बात सुनो। मान लो कि 'न' ने हमारे खिलाफ कोई स्कीम

बनायी है। वह हमें कह सकता है कि यह संदेश पृथ्वी से आया है, ठीक है ? यह संदेश को बदल कर हमें गुमराह कर सकता है। यह भी ध्यान रखो कि अगर संदेश की सच्चाई का पता लगाना है तो भी हमें काम केवल कम्प्यूटर के द्वारा ही करना है... ।"

"लेकिन उल्लास, एक मशीन कैसे कोई षड्यंत्र रच सकती है ? क्या तुम्हें रोबट संबंधी तीन मूल सिद्धांतों का पता नहीं ?"

"हां, मुझे मालूम है, लेकिन 'न' रोबट की सीमाओं को तोड़ रहा हो तो ?"

"ऐसा नहीं हो सकता," मैंने प्रतिवाद किया। "यह ऐसा कर ही नहीं सकता। यह इसकी बनावट का हिस्सा ही नहीं है।"

"ठीक है। यह इसकी बनावट का हिस्सा नहीं था। लेकिन 'न' को जैसा बनाया गया था, वह उससे बहुत आगे जा चुका है। इसने अपने आप बहुत कुछ सीखा है। देखो, हमारी इस यात्रा के ठीक एक महीने पहले आठवां यान गायब हो गया था, तब से उसे ढूंढ़ा नहीं जा सका और इस संबंध में पृथ्वी से कोई निर्देश भी नही मिला है। और अब आज एकाएक हमें निर्देश मिला है एक अनजान ग्रह की ओर मुड़ जाने का। हमें प्रशिक्षण के समय भी इस संबंध में कुछ नहीं बताया गया। हम वहां क्यों जायें ? 'न' हमें वहां क्यों ले जा रहा है ?"

"तुम्हारा कहना है कि 'न' कुछ अनर्थकारी योजना बना रहा है... ।"

"हां, ऐसा ही है। या कोई और उसे ऐसा करने के लिए निर्देश दे रहा है।"

"कैसी बातें करते हो उल्लास ? अब यह दूसरा कोई और कौन ?"

"कौन जाने ? अरबों मंदाकिनियों में से हर एक में अरबों तारे हैं, यह भी तो संभव है कि पृथ्वी के अलावा भी कोई ग्रह हो जहां जीवन हो। इस संभावना को नकारना न केवल बेवकूफी है बल्कि अक्खड़पन की हद भी होगी।" वह कहता गया, "यह भी हो सकता है कि किसी अनजान ग्रह से कोई परग्रही 'न' को नियंत्रित कर रहा है। और यह उनके लिए काम कर रहा है। इसीलिए हमें गलत रास्ते पर ले जाना चाहता है... ।"

अचानक मुझे एक विचार आया। "देखो उल्लास।" मैंने कहा, "अगर तुम्हें लगता है कि संदेश में कोई सच्चाई नहीं है तो पहले हमें उसकी जांच करनी चाहिए। वह ऐसे कि मेरे घर में एक खास बक्स है और मेरे सिवा कोई भी नहीं जानता कि उसमें क्या है। हम पृथ्वी को संदेश भेजकर यह पूछेंगे कि उस बकस में क्या है। अगर जवाब सही होता है तो इसका अर्थ होगा कि संदेश पृथ्वी तक पहुंच रहा है और..."

"ठीक है, लेकिन..."

"रुको तो, पहले देखने तो दो", मैंने कहा और एक संदेश की रूपरेखा बनाकर 'न' को दी।

"यह मेरी ड्यूटी है कि मैं आपको याद दिला दूं कि आप इतने कीमती स्रोतों का इस्तेमाल फालतू संदेश भेजने के लिए नहीं कर सकते," 'न' ने मुझे याद दिलाते हुए कहा।

"चुप रहो और जैसा कहा है वैसा ही करो," मैंने डांटा। जैसे ही 'न' दूर गया, मैं उल्लास को सांत्वना देने के अंदाज में मुस्करायी। जैसे ही हमें पृथ्वी से प्रत्युत्तर मिलेगा, सब कुछ साफ हो जायेगा। मुझे लग रहा था कि उल्लास बिना बात के ही परेशान हो रहा था। लेकिन फिर भी...'न' अपने आप बहुत कुछ सीखने का प्रयास क्यों कर रहा था ? इसका मेरे पास कोई जवाब नहीं था।

उल्लास अपने डेक पर वापस चला गया। 'न' मेरा संदेश भेजने के बाद यूं ही बेकार में कुछ डायलों को छेड़ रहा था। मुझे उसके लिए बेहद अफसोस हो रहा था।

" 'न', तुम्हारा क्या ख्याल है, पृथ्वी के अलावा किसी अन्य ग्रह पर भी जीवन है ?"

"हां, ऐसी संभावनाएं हैं," उसने कहा। "केवल हमारी आकाशगंगा में ही 40,000 करोड़ सितारे हैं। और यह ब्रह्मांड की कई करोड़ आकाशगंगाओं में केवल एक है। ऐसा संभव है कि उनमें से किसी एक में जीवन हो..."

" 'न' एक और संभावना के बारे में भी बताओ।"

"पूछिए ?"

"क्या तुम हम दोनों का विरोध कर सकते हो और सब कुछ अपने नियंत्रण में... ?"

'न' ने एक क्षण के लिए सोचा और कहा, "हां, ऐसा संभव है।"

"क्या अब ऐसा हो रहा है ?"

"नहीं।"

"एक बात और जब मैं और उल्लास उस कमरे में बात कर रहे थे, क्या तुम हमारी बात सुन रहे थे ?"

"हां।"

"इसका मतलब है, उसने अपने संदेह के विषय में जो कुछ कहा... ?"

"मैंने सब कुछ सुन लिया था।"

" 'न', इसका मतलब है, इस यान पर तुमसे बचने का कोई रास्ता नहीं ?"

"हां, यह ठीक है। आप मुझसे और कुछ पूछना चाहती हैं ? मुझे अपना काम करना है।"

"नहीं, और कुछ नहीं," मैंने कहा।

जब थोड़ी देर बाद मेरा दिमाग शांत हुआ तो मैंने समझ लिया कि अगर 'न' वास्तव में अपने आप कुछ करने का प्रयास कर रहा है, जैसाकि उल्लास

ने कहा है, या फिर किसी परग्रही के प्रभाव में काम कर रहा है तो ऐसा कोई रास्ता नहीं है जिससे हम इस बात का पता लगा सकें क्योंकि संदेश भेजने और मंगाने के लिए हम पूरी तरह उसके ऊपर निर्भर हैं।

लेकिन अगर मान लिया जाये कि उसकी योजना हमें किसी अज्ञात क्षुद्रग्रह की ओर मोड़ देने की है तो यह संदेश वगैरह का नाटक करने की क्या जरूरत है ? वह हमें चुपचाप भी वहां ले जा सकता है।

नहीं, यह कोई षड्यंत्र नहीं हो सकता। ये पृथ्वी से मिला एक वास्तविक संदेश था...

'न' पृथ्वी-केंद्र से मिला जवाब लेकर आया :

"आपका अजीब संदेश। हम तुम्हें फिर से बता रहे हैं कि ऐसे बेकार के प्रश्न पूछने के लिए कमांड चैनलों का उपयोग करना अपराध है। बकस में जो फोटो है, उसका स्कैन देखने के लिए तैयार हो जाओ।"

बीस सेकेंड बाद, जिस फोटो को मैंने सावधानी से बकस में बंद करके रखा था, वह स्क्रीन पर चमक उठा। उल्लास ने प्रश्नसूचक दृष्टि से मेरी ओर देखा। "यही तो है। अब तुम्हारा संदेह मिट जाना चाहिए—संदेश पृथ्वी से ही आया है," मैंने कहा।

"यह संदेश पृथ्वी तक गया और वहां से जवाब आ गया। इससे यह तो सिद्ध नहीं होता कि सभी संदेश पृथ्वी से आ रहे हैं ? इस फोटो से कुछ भी पता नहीं चलता," उल्लास ने संदेह व्यक्त किया।

मैंने गड़बड़ाकर उसकी तरफ देखा। वह कहता गया, "यह जरूर कोई षड्यंत्र है। हमारे पास इतना ईंधन नहीं है कि हम इस अज्ञात ग्रह तक जायें और फिर क्षुद्रग्रह 99 तक जाकर दुबारा वापस जा सकें। इसका इरादा है, हमें नये क्षुद्रग्रह पर ले जाकर असहाय छोड़ दिया जाये।

"और..."

"कौन जानता है ? हो सकता है हमारे यान को पकड़ लिया जाये और हमारे ऊपर किसी तरह के प्रयोग किये जायें। हो सकता हैं वे सुपर बुद्धिमान हों या हो सकता इस क्षुद्रग्रह पर बर्बर लोग बसते हों..."

"उल्लास, तुम्हारी कल्पनाएं तुमसे भी तेज दौड़ रही हैं।"

"ठीक है। सिद्ध कर दो कि मैं गलत कह रहा हूं। चलो करो।"

"मैं नहीं कर सकती," मैंने कहा।

"तब फिर तुम्हें मुझसे सहमत हो जाना चाहिए।"

"किस बारे में ?"

"हमें आपात्कालीन हल निकालना चाहिए। अपना कोड नंबर बताओ और मैं तुम्हें अपना बता दूंगा। तब मैं चाबी लगाकर कंप्यूटर को बेकार कर दूंगा।

हम स्वयं यान चला लेंगे। मुझे मालूम है, यह आसान नहीं है, लेकिन ऐसा हो सकता है। हम देख लेंगे।"

मैं हिचकिचायी। "दिशा बदलने में केवल एक घंटा बाकी है। जल्दी करो, झरना, मान जाओ। अगर मशीन हावी हो गयी तो हम समाप्त हो जायेंगे।"

"मुझे आधे घंटे का समय दो," मैंने उलझन में कहा।

"भाड़ में जाओ," उल्लास चीखा और उठकर धड़ाम से दरवाजा बंद करके चला गया। 'न' अंदर आया, कुछ वाल्वों से खेलता हुआ, और तब मुझसे सम्बोधित हुआ, "मैंने दूसरे कमरे से तुम लोगों की सारी बातें सुन ली हैं।" उसने कहा। "इस यान और तुम दोनों की सुरक्षा के उत्तरदायित्व को समझते हुए, मैं यह कहना चाहता हूं कि..."

"रुको," मैंने बीच में ही टोका, "उल्लास को भी तुम्हारी बात सुनने दी जाये।"

"नहीं, उल्लास मेरे खिलाफ हो गया है, इसलिए मेरा उससे कुछ भी कहना बेकार है। तुम भी बस मेरे खिलाफ होने ही वाली हो। रोबट संबंधी सिद्धांत के दूसरे कोड के अनुसार यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं आपको आपके प्लान के संभावित खतरों के बारे में बता दूं। रोबट का कर्तव्य है कि अपनी और अपने मालिक की सुरक्षा करे।"

"प्राथमिकता किसको दी जानी चाहिए ?" मैंने पूछा।

"जाहिर है, मालिक को।"

"ठीक है, बताओ क्या खतरा है ?"

"अगर आप दोनों कोड को प्लग करेंगे और चाबी लगा देंगे तो मैं तो बेकार हो जाऊंगा और आपको सभी क्रियाएं स्वयं करनी होंगी।"

"हम उसके लिए तैयार हैं," मैंने कहा।

"आप ऐसा नहीं कर सकतीं। वैज्ञानिकों ने आपको कहा था कि आप आपात्काल में स्वयं कर सकते हैं, लेकिन यह केवल आपको समझाने के लिए था। इसमें 78 मूल और 120 सहायक सक्रियाएं होती हैं और 47 चेतावनियां हैं। बहुत सुयोग्य व्यक्ति भी केवल छह या सात क्रियाएं ही कर सकता है। अगर आपने मुझे नष्ट किया, तो हम सब एक साथ नष्ट हो जायेंगे।"

"लेकिन हमने इतने महीनों तक ट्रेनिंग ली है कि अगर मशीन फेल हो जाये तो हमें स्वयं यान को किस तरह चलाना है।"

"वह सब केवल आदर्श परिस्थितियों में ही संभव है। लेकिन यहां अंतरिक्ष में आप कुछ नहीं कर सकतीं। पहले यह सब सोच लीजिए।"

"क्या तुम यह सिद्ध कर सकते हो कि उल्लास का संदेह निराधार है... ?"

"यह सिद्ध नहीं किया जा सकता। आपको मेरा विश्वास करना होगा।"

"क्या तुम यह कह सकते हो कि उल्लास गलत कह रहा है ?"

"मैं उसे सही भी नहीं कह सकता।"

"तुम्हें मालूम है वह तुम्हारे ऊपर शक क्यों करता है ?"

"उसका दिमागा खराब हो गया है।"

"क्या कहा ?"

"ठीक कह रहा हूं। धीरे-धीरे उसका दिमाग बेकार होता जा रहा है। संभावनाएं तो बहुत-सी हैं लेकिन वे सब हों, यह जरूरी नहीं। माफ कीजिए··· लेकिन हो सकता है कि हमें उल्लास को खत्म करना पड़े।"

इससे पहले कि मैं कोई जवाब दे पाती, उसने फिर से कहना शुरू किया, "मैंने जो उसे खत्म करने को कहा है इसका मतलब उसे जान से मारना नहीं है। इसका मतलब है उसे मिशन से पूरी तरह अलग कर देना... । हम उसे गहरी नींद सुला देंगे। इस पांच महीने की लगातार यात्रा का असर उसकी मानसिक क्रियाओं पर हुआ है। ऐसे आदमी का बोर्ड पर रहना हम सबके लिए खतरनाक है। झरना अब यह निश्चय तुम्हें करना है कि तुम मेरा विश्वास करोगी या उल्लास का ? जल्दी करो–जल्दी ही मार्ग बदलने का समय होने वाला है..."

"तुम्हारा कहना है कि उल्लास जो कुछ कह रहा है उसमें कोई तथ्य नहीं है। तो इसे सिद्ध करो।"

"मैं कैसे कर सकता हूं ? आप मुझसे क्या करवाना चाहती हैं ?"

"मेरी बात हमारे लीडर रामाकृष्णन से करवाओ।"

'न' ने कुछ चैनलों में छेड़खाड़ की और पल भर बाद ही मुझे लीडर की आवाज सुनायी दी।

"गुड मार्निंग, सर," मैंने कहा। "मैं झरना बोल रही हूं। मेरी एक समस्या है। उल्लास सोचता है कि 'न' उद्दंड हो गया है। वह यह भी सोच रहा है कि दिशा बदलने का निर्देश झूठा है और 'न' का गढ़ा हुआ है। वह आपात्कालीन प्रक्रिया का प्रयोग करना चाहता है।"

कुछ क्षण के लिए मौन रहा। फिर पृथ्वी से हमारे भू-लीडर की आवाज आयी, "सुनो झरना, बिना बात के तुम लोग आपात्कालीन क्रिया नहीं शुरू कर सकते। तुम लोग स्वयं सब कुछ मैनेज कर सको, इसकी उम्मीद बहुत कम है।"

"लेकिन उल्लास जिद कर रहा है, सर।"

"मेरी उससे बात कराओ।"

मैंने उल्लास को बुलाया और उससे कहा कि लीडर उससे बात करना चाहते हैं।

"क्या उन्होंने स्वयं तुमसे संपर्क स्थापित किया है ?" उसने पूछा।

"नहीं," मैंने कहा, "मैंने 'न' से कहा था उनसे बात कराने के लिए।"

उल्लास ने चिढ़कर मुंह बनाया, "झरना, आखिर तुम समझती क्यों नहीं ?

कोई लीडर लाइन पर नहीं है। 'न' ही वह लीडर है जो तुम्हें जवाब दे रहा है।"

"लेकिन आवाज बिल्कुल लीडर जैसी ही है।"

"तुम क्या समझती हो ? 'न' को लीडर के बात करने का लहजा मालूम नहीं है ?" उसने कटु स्वर में कहा।

"तुम उससे बात करने जा रहे हो या नहीं ?"

"मैं तुम्हें बता दूं, वह लीडर नहीं है। बहुत पहले ही पृथ्वी से हमारा संपर्क टूट चुका है। उस दिन मैंने 'न' को रंगे हाथों पकड़ा था, तब से अब हम 'न' की दया पर हैं और वह हमें न जाने कहां ले जा रहा है..."

निराश होकर मैंने लीडर से कहा, "क्या आप सिद्ध कर सकते हैं कि आप ही वास्तव में हमारे लीडर हैं, सर ?"

कुछ क्षणों के अंतराल के बाद, लीडर ने पुनः कहा, "अगर कंप्यूटर पर तुम्हारा विश्वास नहीं रहा है तो तुम्हारी बुनियाद हिल चुकी है। उल्लास से बात करने का प्रयास करो। अब भी तुम्हारे पास कुछ वक्त है। अगर वह न माने... ?"

"अगर वह न माने... ?"

"वह थक चुका है। 'न' जानता है कि क्या करना है। उसकी 'चाबी' तुम्हारे पास है।"

"मेरे पास ?" मैंने आश्चर्य से कहा।

"हां, तुम्हें बिना बताए, हमने उसे तुम्हारे कपड़ों में छिपा दिया था। उसे बाहर निकाल लो—हम तुम्हें कुछ संकेत देंगे—वह तुम 'न' को दे देना। मिशन समाप्त होने तक के समय के लिए उल्लास बेहोश रहेगा। पृथ्वी पर वापस आने के बाद उसे होश में ले आयेंगे और जांच करेंगे।"

"क्या मुझे भी एक्शन से बाहर करने के लिए कोई चाबी है ?" मैंने पूछा।

"हां, उल्लास के पास है। उसके लिए भी 'न' के सहयोग की जरूरत होगी।"

"मैं बहुत ज्यादा परेशान हूं।" मैंने लीडर से कहा।

"धैर्य रखो। मैं मिशन के लीडर के रूप में ही तुम्हें निर्देश दे रहा हूं। गुड लक !" और आवाज आनी बंद हो गयी।

'न' ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और मुझसे चाबी मांगी।

"एक मिनट रुको। क्या वह सचमुच लीडर की आवाज थी ? क्या उसकी आवाज कुछ अजीब सी नहीं थी... ?"

"हे भगवान ! तुम भी ? देखो झरना, मैं एक मशीन हूं। मुझे केवल तुम्हारी मदद के लिए बनाया गया है। ठीक है, मैंने कुछ अपने आप भी सीखने का प्रयास किया है, फिर भी मैं केवल एक मशीन हूं। मेरे अंदर बुरे विचार आ ही नहीं सकते।"

" 'न', किसी मशीन में बुद्धिमत्ता कब आ सकती है ? कब यह मशीन

नहीं रह जाती या फिर मानव में बदल जाती है ? क्या इसका भी कोई सिद्धांत है ?"

"हां, है," 'न' बोला। "ट्यूरिंग का सिद्धांत।" वह पहला वैज्ञानिक था जिसने यह सोचा कि मशीनें भी सोच सकती हैं। मशीनें जब झूठ बोलना शुरू करती हैं तब बुद्धिमान हो जाती हैं। झरना, मैं ही नहीं बल्कि कोई भी नहीं कह सकता : "मैं झूठ नहीं बोलता।" यह विरोधाभास है। अब यह विश्वास का सवाल है–तुम किस पर विश्वास करती हो, मुझ पर या उल्लास पर ? अगर मुझ पर विश्वास है तो 'चाबी' मुझे दे दो और उल्लास को बेहोशी में जाने दो। और अगर उल्लास पर विश्वास है तो उसे कोड बता दो और मुझे खत्म कर दो।"

" 'न', क्या तुम मुझसे जबरदस्ती चाबी ले सकते हो ?"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता," 'न' ने कहा। उसी समय उल्लास वहां आया।

"तुमने कुछ सोचा, झरना ?" उसने पूछा।

"नहीं, उल्लास," मैंने कहा। " 'न', क्या तुम जरा बाहर जाओगे ?" उसने कंप्यूटर की तरफ मुड़कर कहा।

"सारी, मेरी ड्यूटी यहां है," 'न' ने जवाव दिया।

"यह मेरा आर्डर है, बाहर जाओ," उसने फिर कहा।

"सारी, मेरी ड्यूटी यहां है," 'न' ने भी फिर कहा।

"तुमने सुना, झरना ? मशीन हमें चुनौती दे रही है। 'न' मैं तुम्हें दो सैकेंड का समय देता हूं, वरना..."

"उल्लास, तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते..."

उल्लास गुस्से से चीखा, "मैं क्यों नहीं बिगाड़ सकता ? मैं तुम्हें..." वह 'न' पर झपट पड़ा और उसका सिर मरोड़कर, अलग करके दूर फेंक दिया। मेरे मुंह से चीख निकल गयी।

सिर तैरता हुआ वापस आया और अपने आप फिर अपनी स्थिति में पहुंच गया। "मेरे हाथ भी तोड़ना चाहते हो ?" 'न' ने कटाक्ष किया और अपना धातु का बना हाथ उल्लास की तरफ बढ़ाया। गुस्से से पागल हुए उल्लास ने चारों तरफ किसी हथियार के लिए नजर डाली और एक स्पेस गन उठाकर फायर कर दिया।

'न' शांति से बोला, "चलाओ गोली। लेकिन मैंने बंदूक को भरा ही नहीं था, इसलिए कुछ नहीं होगा। तुम अपने आप, मेरा कुछ नहीं कर सकते..."

"झरना, देखो वह किस तरह शेखी मार रहा है ? अब तुम्हें मेरा विश्वास हुआ ? अब तो तुम मेरी बात मानोगी ?"

"तुम मुझे नष्ट नहीं कर सकते–तुम्हारे लीडर ने ही ऐसा प्रबंध किया है,

अगर कभी ऐसी दुर्घटना हो जाये तो आप दोनों और मेरी सुरक्षा के लिए," न' कहता गया। "अब तुम स्वयं देख लो झरना कि उल्लास यान की सुरक्षा के लिए खतरा बन चुका है ? चाबी कहां है ?"

"कौन-सी चाबी ?" उल्लास ने पूछा।

"हमें पृथ्वी से आदेश मिला है कि तुम्हें सुला दें," 'न' ने कहा।

"आई एम सॉरी उल्लास, लीडर ने मुझे तुम्हें सुलाने के लिए दवाई देने को कहा है। तुम्हें खुराक पहुंचाने वाली चाबी मेरे पास है।" इस पर, उल्लास जोर से चिल्लाकर मुझे पर झपटा।

"अपने साथी यात्रियों पर हमला करना अपराध है," 'न' ने घोषणा की। "यान की सुरक्षा के लिए मैं इसका चार्ज लेने के लिए बाध्य हूं। यह मेरी पहली वार्निंग है। उसे छोड़ दो, वरना..."

"वरना क्या ? तुम क्या कर सकते हो–तुम, तुम केशहीन, बुद्धिहीन, मशीनी बंदर। झरना, मुझे कोड बताओ, जल्दी, वरना यह तुम्हें भी मार डालेगा।"

"दूसरी वार्निंग। अगर तीसरी और अंतिम चेतावनी के बाद भी तुमने उसे नहीं छोड़ा तो मैं अपने प्रोग्राम के अनुसार..."

"झरना, अब देर करने का समय नहीं है। जल्दी करो," उल्लास ने प्रार्थना की।

"तीसरी वार्निंग। मैं अपना काम शुरू करता हूं।" 'न' हवा में तैरता हुआ उल्लास के पास गया और उसके सिर पर चोट की। उल्लास जमीन पर गिर गया, उसके सिर से खून रिसने लगा था।

"मुझे माफ करना। मैं क्या करूं, यान में व्यवस्था बनाए रखने के लिए ऐसा करना पड़ा। यह तो केवल तुम्हें वार्निंग देने के लिए था। अब तुम सोच लो, उल्लास।" 'न' ने विनम्र स्वर में कहा। उल्लास एक क्षण के लिए स्तब्ध रह गया, फिर हक्का-बक्का-सा बोला, "क्या हुआ था ?"

" 'न' ने तुम्हें मारा। उसका कहना है कि यान में व्यवस्था बनाए रखने के लिए ही उसने ऐसा किया है।"

"बकवास करता है", उल्लास ने फिर कहा। "यह पागल हो गया है। झरना, हमें उसे नष्ट कर देना चाहिए। किसी मशीन के हाथों मरने से तो अच्छा है यान की रक्षा करते हुए मरना। हम अंतरिक्ष के इतिहास में रोबट की बगावत के खिलाफ लड़ने वाले पहले व्यक्ति होंगे।"

"अगर हम जीवित न रहे तो कोई इतिहास कैसे बनेगा ?" 'न' बोला, "लीडर ने जो कहा है, वह सुनो।"

"कोई लीडर-वीडर नहीं। सब झूठ है।"

"तुम्हें विश्वास करना होगा...," 'न' ने जिद की।

"कोई जरूरी नहीं है। हम यान चला सकते हैं।"

"बिल्कुल नही।"

"क्यों नहीं ? मनुष्य ने तुम्हें बनाया। और मनुष्य ने ही तुम्हें बुद्धिमत्ता दी। अगर तुम यान चला सकते हो तो मनुष्य क्यों नहीं ? झरना !"

"झरना !" 'न' ने भी कहा।

दोनों मेरी ओर देख रहे थे और मुझे यान का भविष्य निर्धारित करना था... हम में से हर एक का भविष्य बल्कि कहना चाहिए कि हम सबका भविष्य। मुझे लगा कि अभी मेरा सिर फट जायेगा। "क्या तुम दोनों मुझे दस मिनट के लिए अकेला छोड़ दोगे ? मैं इस बारे में कुछ सोचना चाहती हूं," मैंने कहा। उल्लास धीमे स्वर में बड़बड़ाया, 'न' चुपचाप वहां से चला गया।

सावधान, मैंने अपने आपसे कहा। फैसला तुम स्वयं करो। उल्लास ने 'न' पर हमें धोखा देने का आरोप लगाया है। वह 'न' पर इसलिए शक करता है क्योंकि उसने अपने आप समझकर, सोचकर शतरंज खेलना सीखा, वह स्वयं संदेश भेजता है, जब उससे पूछा तो ठीक से जवाब न देकर, टाल देता है। 'न' जानता है कि संदेश केवल उसके द्वारा ही आ-जा सकते हैं। और इसलिए वैसा करना संभव है, जैसा करने का आरोप उल्लास ने लगाया है। लेकिन 'न' का कहना है कि वह केवल एक मशीन है और कोई षड्यंत्र नहीं कर सकता। हालांकि उसने, उसमें मौजूद स्वतः शोध प्रणाली प्रोग्राम के कारण कुछ चीजें सीख ली हैं।

'न' खतरा बन चुका है, उल्लास का विश्वास है। इसे नष्ट कर दिया जाना चाहिए। उल्लास खतरनाक साबित हो सकता है, उसे नष्ट कर दिया जाना चाहिए, यह 'न' का कहना है। कौन सही है, इस बात का फैसला करने के लिए मेरे पास केवल पांच मिनट का समय है। रुको, मैंने स्वयं को चेतावनी दी। ठंडे दिमाग से फैसला करो।

यही तो। मेरा फैसला स्थिति के तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर होना चाहिए। भावनाओं को बिल्कुल भी बीच में नहीं लाना होगा, नहीं लाना चाहिए।

अगर मैं मशीन को चुनती हूं, तो इसका अर्थ होगा कि मैं तर्कसंगत हल का चुनाव कर रही हूं। हर प्रश्न के लिए, हर समस्या के लिए, जहां एक 'उपयुक्त' जवाब और एक 'उपयुक्त' हल होगा। फिर भी...

एक पल रुको। क्या केवल कठोर तर्क ही काफी है।

उन प्रश्नों और उन समस्याओं का क्या होगा जिनका कोई 'उपयुक्त' जवाब नहीं है ?

अगर मशीन यह कहती है कि "मैं नहीं जानती या इसके लिए मुझे कोई प्रोग्राम नहीं दिया गया है।"

'न' ने चाहे जितना भी विलक्षण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, फिर भी है तो

वह मशीन ही।

और उल्लास-उल्लास एक इंसान है। भावनाओं से चलने वाला। तर्कों से अलग ! अंतर्दर्शी... ।

लेकिन शब्दों का वह खेल क्या था जो उस दिन मैं और उल्लास खेलने का प्रयास कर रहे थे। मैंने लिखा था 'अंतर्ज्ञान' और मशीन के ज्ञानकोष में से बाहर आया था 'सत्य का सीधा ज्ञान', जिसका कोई कारण नहीं बताया जा सकता।

अगर उल्लास का अंतर्मन कहता है कि वह सही है, क्या मैं उसे गलत कहकर नकार सकती हूं ?

इक्कीसवीं सदी के मानव को, इन मशीनी कंप्यूटरों से केवल एक चीज ही तो अलग करती है और वह है उसको संवेगानुवर्तिता और अंतर्ज्ञान। पुर्वाभास। हमारे अंदर जो यह अवर्णनीय संवेग होते हैं वे मशीन में उत्पन्न नहीं हो सकते।

हमने अत्याधुनिक यांत्रिक दिमाग बनाये हैं, उन्हें भी लगभग हमारे दिमाग की तरह ही तत्वज्ञान है।

लेकिन केवल 'लगभग', बिल्कुल वही नहीं।

इसलिए... ? तार्किक अनुक्रिया या मानवीय निर्णय ?

जैसे-जैसे एक-एक सैकेंड बीत रहा था, बार-बार यही प्रश्न मेरे दिमाग में उठ रहा था।

और बार-बार, केवल वही जवाब सूझ रहा था।

कैसे भी हो मुझे इसी को चुनना होगा...

मैंने उल्लास को बुलाया। वह जल्दी से अंदर आया। "क्या तुमने सोच लिया है ?"

"लगभग," मैंने कहा। लेकिन पहले मुझे यह बताओ, मेरा फैसला चाहे जो भी हो, उससे हमारी दोस्ती पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा ?"

"इसका मतलब है तुम मशीन का पक्ष लेने जा रही हो ?"

"मुझे नहीं मालूम—लेकिन हमने जो अच्छा समय एक साथ गुजारा उसके लिए मैं तुम्हारी शुक्रगुजार हूं। उल्लास, क्या तुम एक बार मेरा चुंबन लोगे ?"

उल्लास नीचे झुका और मेरे गाल को चूम लिया। "लेकिन आखिर तुमने निर्णय क्या लिया है ?"

मैंने केवल इतना कहा, "अब तुम जाओ और 'न' को भेज दो ?" 'न' तैरता हुआ अंदर आया।

" 'न' वह प्रार्थना क्या थी जो तुम बता रहे थे ? क्या तुम सुनाओगे, प्लीज ?"

अपनी यांत्रिक आवाज में, 'न' ने सुनाना शुरू किया :

"लार्ड, मेक मी एन इन्स्ट्रुमेंट आफ योर पीस

वेयर देयर इज हेट्रेड... लेट मी सो लव
वेयर देयर इज डाउट... फेथ
ट्रूथ इन प्लेस आफ एरर
व्हेयर देयर इज डार्कनेस... लाइट
ओ डिवाइन मास्टर
इट इज इन पार्डनिंग दैट वी आर पार्डंड,
इन डाइंग दैट वी आर बोर्न टू इटरनल लाइफ...

इन शब्दों से मुझे बहुत राहत महसूस हुई। जहां अंधेरा है वहां प्रकाश हो। उल्लास सही था या 'न' यह जानने के लिए समुचित प्रकाश नहीं था।

'न', तुममें भावनाएं हों या न हों, मेरा निर्णय जानने के बाद हम अलग हो जायें या एक साथ रहें। जो भी हो, लेकिन तुम्हारे साथ गुजरे अच्छे समय के लिए तुम्हारा शुक्रिया।

अब इन दोनों उंगलियों में से किसी एक को छू लो... "

**अंग्रेजी से विनीता सिंघल द्वारा अनूदित**

# शुक्र ग्रह देख रहा है

राजशेखर भूसनूरमठ

घूमती हुई चपटी चकती–आकाशगंगा–के बीच में या फिर उसके बिल्कुल पास एक तारा है जो अपनी सौभाग्यशाली स्थिति के समान ही कई और मायनों में भी बहुत अद्भुत है। उदाहरण के लिए, उसके दो ग्रह हैं जो उसकी परिक्रमा कर रहे हैं। उन ग्रहों पर जीवन का विकास हुआ है। समय-समय पर वहां सभ्यताएं पनपीं और उजड़ी हैं। वहां के वैज्ञानिकों ने ब्रह्मांड के वातावरण का पता लगाने और उसके अध्ययन के लिए अपने खोजी अंतरिक्ष यान भी भेजे हैं। उन्हें पूरा विश्वास है कि आकाशगंगा की सीमाओं के भीतर ब्रह्मांड में अनजानी सभ्यताओं का विकास जरूर हुआ होगा। हम, पृथ्वी ग्रह के निवासी मानव उन बुद्धिमान जीवों को टैंपोरावासी और उनके ग्रहों को टैंपोरा-1 तथा टैंपोरा-2 कहेंगे। और हां, जिस तारे की वे लगभग गोलाई में परिक्रमा कर रहे हैं–वह उनका सूर्य है–अर्थात् टैंपोरा का सूर्य !

हमारे यहां के शाही खगोल विज्ञानी की हैसियत वाला टैंपोरा का एक खगोल वैज्ञानिक बड़ी आशा के साथ सुदूर एक तारे को बड़े ध्यान से देख रहा है। वह 'साइकोस्कोप' से देख रहा है जो एक जैविक दूरबीन है और प्रकाश से भी तेज किसी रहस्यमय तथा शक्तिशाली विकिरण से काम करता है। वह उस तारे के उतने अधिक ग्रहों को देखकर उलझन में पड़ गया है। उस तारे के बाहरी ग्रहों में उसकी विशेष रुचि नहीं है लेकिन ग्रह संख्या 2,3,4 और 5 ने उसका ध्यान आकर्षित किया है, हालांकि ग्रह संख्या 5 के बारे में अभी वह पक्के तौर पर कुछ नहीं कह सकता।

पृथ्वी पर तीसरा विश्वयुद्ध अभी समाप्त हुआ है। राजनीति के विशेषज्ञ यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि यह युद्ध किसने शुरू किया, लेकिन इसका परिणाम उतना ही अनापेक्षित था जितनी इसकी आवश्यकता थी। कोई नहीं चाहता था कि इस बदनसीब ग्रह से मानव जाति का नामोनिशान तक मिट जाये। महाशक्तियों के पास परमाणु अस्त्रों के जो भंडार थे वे नष्ट हो गये और केवल वे भाग्यशाली व धनी नागरिक ही युद्ध में जीवित रह पाये जिन्हें रहने के लिए किराए पर भूमि

के भीतर जगह मिल गयी। ग्रह की सतह अभी भी मानव के लिए सुरक्षित नहीं है। पौधों सहित अन्य अल्प विकसित जीव लगभग नष्ट हो चुके हैं। संक्षेप में कहा जाये तो इस ग्रह का पर्यावरण संतुलन पूरी तरह नष्ट हो चुका है और अब इस इक्कीसवीं सदी में मानव सभ्यता के भाग्य का अंतिम निर्णय केवल समय या मानव की अपनी चतुरता पर निर्भर रह गया है। इस ग्रह पर विनाश का एक भयानक नाटक खेला गया है और उसके शिकार मानव असहाय होकर अपने अवश्यंभावी अंत का इंतजार कर रहे हैं।

मगर वैज्ञानिक ऐसा नहीं कर रहे। इन पर भारी जिम्मेदारी है। जो लोग जीवित बच गये हैं वे इन्हें बड़ी आशा के साथ अपने एकमात्र रक्षकों के रूप में देखते हैं। तमाम लोगों ने वैज्ञानिकों पर आरोप भी लगाये और कहा कि इन्होंने ही उन भयानक अस्त्रों का आविष्कार किया था। लेकिन, वैज्ञानिकों ने कहा कि उन्होंने वह सब राजनैतिक या अन्य दबावों में आकर किया। और, अब जो हो चुका है उस पर आंसू बहाने से क्या लाभ ! जो हुआ, सो हुआ और युद्ध के नाम पर जो कुछ किया जा चुका है उसे तो अब कोई बदल नहीं सकता। यहां तक कि ऐसे विवादों का भी अब कोई अर्थ नहीं रह गया है। इसलिए वैज्ञानिकों को माफ कर दिया गया है और उनसे लोग विनम्रतापूर्वक या यहां तक कि व्यग्रतापूर्वक इस ग्रह को एक बार फिर जीवन के लिए सुरक्षित बना देने का अनुरोध करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय खगोल भौतिकी संस्थानों का मुख्यालय नयी दिल्ली में है। इसके निदेशक हैं–प्रख्यात वैज्ञानिक डा. मलिक। उन्हें खगोल वैज्ञानिक कहना अधिक उचित होगा क्योंकि विज्ञान की अन्य शाखाओं में वे स्वयं को उतना पारंगत नहीं मानते। जो परिणाम अन्य चीजों का हुआ, वही संस्थान की प्रयोगशालाओं और कार्यालयों का भी हुआ। तीसरे विश्वयुद्ध में संस्थान की ये प्रयोगशालाएं और कार्यालय बुरी तरह नष्ट हो गये हैं। जो कुछ बचा था उसे डा. मलिक ने एक भूमिगत भवन में रख दिया है। इस भवन की छत इस्पात की है। जाहिर है कि इस कारण खगोल विज्ञान संबंधी या अन्य प्रकार के प्रेक्षण करना बहुत कठिन हो गया है। लेकिन, आपात्स्थिति के कारण इसका विशेष महत्व भी नहीं है।

विश्लेषण के लिए नये आंकड़े न आने के कारण अब डा. मलिक के पास काफी खाली समय रहता है। उन्हें पिछली बातें याद आती हैं–और, डा. मूर्ति वाली घटना को तो वे विशेष रूप से याद करते हैं। जब उन्हें इस बात का अहसास होता है कि डा. मूर्ति के मामले में उन्होंने बहुत जल्दबाजी में निर्णय लिया तो उन्हें बड़ा अफसोस होता है।

संक्षेप में, वह घटना इस प्रकार थी : डा. मूर्ति शुक्र ग्रह अनुभाग के प्रभारी थे। यहां यह बता देना उचित होगा कि संस्थान में पृथ्वी के वैज्ञानिकों द्वारा सौरमंडल

के प्रत्येक ग्रह के अध्ययन के लिए अलग-अलग अनुभाग थे। तीसरे विश्वयुद्ध की निकट भविष्य में कोई आशंका नहीं थी। किसी कवि ने कहा है न "ईश्वर स्वर्ग में था और दुनिया में चारों ओर खुशहाली थी।" शुक्र ग्रह के बारे में डा. मूर्ति का ज्ञान इतना अधिक और सटीक था कि उनके दोस्त और सहकर्मी कभी-कभी मजाक में उन्हें 'प्रेम का देवता' कह देते थे। यों भी डा. मूर्ति महज एक खगोल विज्ञानी ही नहीं थे। परेशानी भी बस यहीं से शुरू हुई...

हाल ही में डा. मूर्ति यह जानकर सतर्क हो गये कि उनके प्रिय ग्रह के साथ कोई संदेहजनक बात हो रही है। वहां क्या हो रहा था—इस बारे में तो वे ठीक-ठीक कुछ न बता सके, लेकिन वहां कुछ-न-कुछ हो जरूर रहा था। असल में सब कुछ इतना गूढ़ था कि प्रशिक्षित वैज्ञानिक भी शायद ही उस पुराने प्रिय ग्रह में किसी प्रकार की गड़बड़ी का पता लगा पाते। लेकिन, डा. मूर्ति उस ग्रह के सच्चे प्रशंसक थे और जैसे कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका के बदलते हुए 'मूड' के बारे में बता सकता है वैसे ही वे उस ग्रह के बदलते 'मूड' के बारे में बता सकते थे। डा. मूर्ति को सबसे अजीब बात यह लग रही थी कि शुक्र ग्रह के साथ कृत्रिम रूप से कोई छेड़छाड़ की गयी है। गणना और अनुमान से यह साफ पता लगा कि शुक्र ग्रह पर किसी कृत्रिम स्रोत से किन्हीं रहस्यमय किरणों की बौछार की गयी है। लेकिन, यह महज एक अनुमान था, एक परिकल्पना मात्र थी जिस पर अन्य लोगों का विश्वास करना कठिन था।

डा. मूर्ति बड़े धैर्य के साथ अपने प्रेक्षण कर रहे थे और उन्होंने निश्चय कर लिया कि जब तक वे अपने प्रमाण से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो जाते तब तक वे अपनी खोज के बारे में किसी को कुछ नहीं बतायेंगे। लेकिन, भावी संकट के अहसास के कारण अपनी इच्छा के विरुद्ध उन्होंने अपनी खोज की जानकारी व्यक्तिगत रूप से अपने निदेशक डा. मलिक को दे दी।

जिस क्षण डा. मूर्ति ने अपनी खोज के बारे में बताया, वह शायद शुभ समय नहीं रहा होगा। डा. मलिक ने मौखिक रूप से उनकी रिपोर्ट सुनी और जब डा. मूर्ति ने अपना विचार उन्हें बताया तो वे भड़क उठे। डा. मलिक को वह सब बकवास लगा। रहस्यमय किरणें ? शुक्र ग्रह दर्पण की तरह काम कर रहा है ? परमाणु दुर्घटना ? हुंह ! क्या बकवास है !

अनिष्ट की ऐसी चेतावनी के बारे में अपने बॉस की उदासीनता डा. मूर्ति को बर्दाश्त नहीं हुई और उन्होंने सारी दुनिया के हित में पूरी जानकारी उच्च अधिकारियों को दे दी। इस बात से डा. मलिक इतना नाराज हुए कि उन्होंने डा. मूर्ति को निलंबित करा दिया। जैसा कि आमतौर पर होता है—उच्च अधिकारियों ने डा. मालिक का पक्ष लिया और इस मामले को सख्ती से निबटा देने पर संतोष व्यक्त किया। दुर्भाग्यवश डा. मूर्ति की रिपोर्ट को गोपनीय विभाग में फाइल कर

दिया गया ताकि बाद में जरूरत पड़ने पर 'आज्ञा का उल्लंघन' करने के आरोप में उसे उनके खिलाफ सबूत के तौर पर काम में लाया जा सके।

और अब, तीसरे विश्वयुद्ध के बाद डा. मलिक (जो अब एक गंभीर और समझदार व्यक्ति हैं) डा. मूर्ति से क्षमा मांगना चाहते हैं और आशा करते हैं कि वे विश्व को और अधिक अनिष्ट से बचाने के लिए तुरंत कुछ करें।

टैंपोरा-1 ने टैंपोरा-2 के साथ भयानक युद्ध छेड़ दिया है। ये दिन उनके लिए भी बहुत बुरे हैं। उनके पास परमाणु अस्त्र नही हैं, बल्कि उन्होंने इनके बारे में सुना भी नहीं है। टैंपोरा के वैज्ञानिक अपनी सेना के लिए नये और अधिक शक्तिशाली अस्त्रों की खोज कर रहे हैं। इस बारे में उन्होंने दूसरों से, यहां तक कि आकाशगंगा के अन्य अजनबी प्राणियों से भी, सुझाव लेने का निश्चय किया है।

जैसा कि हम जानते हैं, टैंपोरा-1 के खगोल वैज्ञानिकों ने इस बात का पता लगा लिया है कि आकाशगंगा के किनारे पर एक ऐसा तारा है जिसके अनेक ग्रह हैं। लेकिन, उनके शत्रु टैंपोरा-2 के खगोल वैज्ञानिक इस बारे में कुछ नहीं जानते। टैंपोरा-1 और टैंपोरा-2 के ये बुद्धिमान प्राणी आपस में अपने रहस्यों का आदान-प्रदान नहीं कर सकते, विशेष रूप से ऐसी स्थिति में तो बिल्कुल नहीं जब उनके बीच युद्ध चल रहा हो।

टैंपोरावासियों के साइकोस्कोप को उनका टेलिस्कोप कहा जा सकता है जिसकी रेंज और विभेदनक्षमता बहुत अधिक है। इसका कारण यह है कि उसमें प्रकाश से भी तेज चलने वाली रहस्यमय किरणों का उपयोग किया जाता है जिनकी जानकारी मनुष्य को नहीं है। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके अभिदृश्यक लेंस (अथवा इसके समान, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे उसे क्या कहते हैं) का सहायक भाग अंतरिक्ष में हो सकता है बशर्ते साइकोस्कोप के मुख्य भाग से उसका संबंध सही प्रकार से जोड़ दिया जाये। इस बात को यों समझा जा सकता है कि मान लीजिए आपके पास एक अतिरिक्त आंख है। उसे आप जहां चाहें वहां रख सकते हैं, यहां तक कि सैकड़ों प्रकाश वर्षों की दूरी पर भी रख सकते हैं। तब सुदूर की चीजों को भी साफ देखा जा सकता है, मानो उस स्थान पर आप स्वयं मौजूद हों जहां आपकी अतिरिक्त आंख रखी गयी हो। इस सहायक अभिदृश्यक का निर्माण करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। कोई भी प्राकृतिक वस्तु जैसे अच्छा चमकीला ग्रह इस काम में लाया जा सकता है। लेकिन, साइकोस्कोप के मुख्य भाग से उसका संबंध जोड़ने के लिए टैंपोरा निवासियों जैसी पटुता चाहिए जो हमारी तुलना में उनमें बहुत अधिक है।

टैंपोरा-1 के निवासियों ने यही किया। उन्होंने गणना करके देखा कि शुक्र ग्रह उनके साइकोस्कोप के लिए सहायक अभिदृश्यक के रूप में काम आ सकता है, और फिर साइकोस्कोप से उसका संबंध जोड़ दिया।

शुक्र ग्रह देख रहा था। द्वितीय विश्वयुद्ध को लोग लगभग भूल चुके थे, फिर भी महाशक्तियां परमाणु अस्त्रों के भंडार बना रही थीं। मनुष्यों को इस बात का पता नहीं था कि वे जो कुछ कह और कर रहे हैं—वह तत्काल एक अज्ञात दुनिया तक पहुंच जाता है और वहां उस जानकारी से लाभ उठाने की कोशिश की जा रही है।

प्रकाश से भी तेज चलने वाली उन किरणों और शुक्र ग्रह के सामान्य विकिरण की आपसी प्रतिक्रिया से शुक्र ग्रह के व्यवहार में वह सूक्ष्म अंतर आया था जिसका पता डा. मूर्ति जैसा कोई मौलिक सोच वाला वैज्ञानिक ही लगा सकता था। डा. मूर्ति को यह आभास कैसे हुआ कि पृथ्वी पर परमाणु बमों के आकस्मिक विस्फोट के कारण शीघ्र ही तीसरा विश्वयुद्ध होगा—इसे यहां समझाना आसान नहीं है। उनके पास बहुत सावधानीपूर्वक जुटाए गए प्रमाण थे जिनके आधार पर वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे। लेकिन, उनके पूर्वानुमान, परिकल्पनाएं और भविष्यवाणियां दूसरों की दृष्टि में असंगत और अस्पष्ट थीं।

मगर जब उनकी भविष्यवाणी सच साबित हो गयी तो लोग उन्हें गंभीरतापूर्वक लेने लगे और उनमें डा. मलिक पहले व्यक्ति थे।

शुक्र के माध्यम से जो जानकारी मिली, उसका अध्ययन करके टैंपोरा-1 में परमाणु अस्त्र बनाने की कोशिश शुरू हो गयी। बस, अब एक ही कमी रह गयी थी। टैंपोरा-1 का युद्ध विभाग परमाणु अस्त्र की विध्वंसक शक्ति देखना चाहता था। डा. मूर्ति का ध्यान टैंपोरा के वैज्ञानिकों द्वारा रिमोट कंट्रोल से पृथ्वी पर परमाणु अस्त्रों का विस्फोट कराने के प्रयासों की ओर गया था। उन्होंने सही समय पर चेतावनी दे दी थी लेकिन मानव निर्णय की एक गलती के कारण उनकी चेतावनी संबंधित व्यक्तियों तक न पहुंच सकी। रिमोट कंट्रोल से विस्फोट कराने में अंततः सफलता मिल गयी और इससे टैंपोरा-1 को बहुत खुशी हुई। अब वहां परमाणु अस्त्रों का निर्माण शुरू हो सकता था...

लेकिन दुर्बल मानव मस्तिष्कों ने एक-दूसरे पर आरोप लगाये और कारण की जांच किये बिना बुरी तरह एक ऐसे युद्ध में जुट गये जो लगभग आत्मघाती साबित होगा....

अब पृथ्वी के वैज्ञानिकों द्वारा बड़ी उत्सुकता के साथ 'मूर्ति प्रभाव' का अध्ययन किया जा रहा था। यह प्रभाव शुक्र ग्रह के विकिरण और टैंपोरा से आने वाले कृत्रिम विकिरण की प्रतिक्रिया का परिणाम था। इसके लिए डा. मूर्ति जिम्मेदार नहीं थे, बल्कि वे तो इसके खिलाफ थे। यह विरोधाभास ही था कि दोनों ओर देखा जा रहा था : शुक्र ग्रह देख रहा था और स्वयं उसे भी देखा जा रहा था। लेकिन, मुख्य समस्या यह थी कि अब शुक्र ग्रह को देखना या यों कहें कि उसका वैज्ञानिक प्रेक्षण कठिन हो गया था क्योंकि लोग सचमुच भूमिगत हो गये थे।

लेकिन, साहसी लोग भी होते हैं और ऐसा कठिन समय उनके लिए परीक्षा की घड़ी होता है।

'मूर्ति प्रभाव' के विस्तृत अध्ययन से पता चला कि शुक्र ग्रह का बादलों का प्रसिद्ध घना आवरण ही शायद पृथ्वी पर उन रहस्यमय किरणों के पहुंचने और उनके द्वारा पृथ्वी की टोह लेने का कारण था। इस समस्या का एकमात्र हल यही हो सकता था कि शुक्र ग्रह के बादलों के आवरण को नष्ट कर दिया जाये। यह आंख फोड़ देने के समान होगा ताकि फिर कुछ दिखायी ही न दे। अन्य कोई भी हल संतोषजनक साबित नहीं हो सकता था क्योंकि पृथ्वी के वैज्ञानिक टैंपोरा के रहस्मय विकिरणों को नहीं रोक सकते थे। कुछ वैज्ञानिकों ने यह आपत्ति भी की कि इन विकिरणों का पृथ्वी पर सीधा असर पड़ सकता है और असीमित नुकसान हो सकता है। लेकिन, डा. मूर्ति का पक्ष लेने वाले वैज्ञानिकों का कहना था कि शुक्र ग्रह का उपयोग एक विशाल परावर्तक के रूप में किया गया है और यदि इस परावर्तक (या परावर्तक बादल) को नष्ट कर दिया जाये तो 'मूर्ति प्रभाव' स्वयं समाप्त हो जायेगा। और, अब सभी यह जानते थे कि पृथ्वी पर हुई परमाणु दुर्घटना से इस 'प्रभाव' का सीधा संबंध था।

टैंपोरा-1 के वैज्ञानिक पहले तो उलझन में पड़ गये, लेकिन बाद में यह जानकर नाराज हो गये कि उनके साइकोस्कोप का इतना अच्छा सहायक अभिदृश्यक-ग्रह संख्या-2—अजनबी प्राणियों की करतूत से पूरी तरह बर्बाद हो गया था। उनके लिए गृह संख्या-3 की ओर खुलने वाली खिड़की सदा के लिए बंद हो गयी थी। अब उन्हें उन बुद्धिमान प्राणियों की कोई चिंता नहीं थी—अगर वे चाहते तो भी नहीं—जिनसे उन्हें परमाणु अस्त्रों की रूपरेखा मिली थी। टैंपोरा-1 के पास किसी दूसरी दुनिया के लिए कोई समय नहीं था। उसकी अपनी समस्याएं थीं जिनकी ओर तुरंत ध्यान देना जरूरी था। उदाहरण के लिए, टैंपोरा-2 के साथ युद्ध...

शुक्र ग्रह की तपती सतह पर जब वह 'महावृष्टि' हुई तो उसने उसे सदा-सदा के लिए ठंडा बना दिया। अब मानव अंतरिक्ष-यात्री उस पर उतरने के लिए तैयार थे। इतना ही नहीं, वे शुक्र ग्रह के वायुमंडल में जीवन के बीज बोने के लिए भी तैयार थे ताकि पृथ्वी के इस जुड़वां ग्रह पर भी उनके अपने ग्रह की तरह विकास की प्रक्रिया शुरू हो सके...

**अंग्रेजी से देवेंद्र मेवाड़ी द्वारा अनूदित**

# लिफ्ट

संजय हवनूर

इंद्रप्रस्थ मार्ग पर स्थित वाणिज्य भवन कंप्लेक्स के बरामदे में एक बेचैन कतार लिफ्ट की प्रतीक्षा कर रही थी। बाहर पैंतालिस डिग्री सेल्सियस के झुलसाने वाले तापमान में डूबी हुई नयी दिल्ली की विस्तृत खुली जगहें झिलमिला रही थीं। कतार के आगे खड़े गजानन राव एक अखबार से स्वयं को पंखा कर रहे थे। इंटरनेशनल कंप्यूटेशनल कंसल्टेंट्स के संस्थापक, प्रबंध निदेशक तथा प्रोग्रैमर-इन-चीफ अपनी मशीनों से उनके वातानुकूलित वातावरण में मिलने के लिए उत्सुक थे। उनके पीछे खड़े कीमती लाल अपने ही खयालों में डूबे हुए थे। उनके खयाल मुख्य रूप से घोड़े के भाग्यशाली नंबर के बारे में थे, जिस पर वह अपने आखिरी सौ रुपये लगाना चाहते थे। हमेशा वे ऐसे मामले में किसी दैवी संकेत की खोज में रहा करते थे, खासकर किसी महत्वपूर्ण रेस के पहले। एक बार ऐसा हुआ था, कि जब नौ लड़कियों का एक दल रेसकोर्स में उनका रास्ता काट गया था और उन्होंने झट से नौवें घोड़े पर इक्यासी रुपये लगा दिये थे... तब से कीमती लाल एक संख्याओं में विश्वास करने वाले बन गये थे। आज वे देखनेवाले थे कि लिफ्ट में कुल कितने बटन दबाये गये हैं और उसी हिसाब से अपना संकेत पकड़ने वाले थे।

'ट्रीम', दीवार पर लगी लाल बत्ती ने घोषणा की। लिफ्ट आ पहुंची थी। 'खुली तिल्ली ?' गजानन राव को हमेशा की तरह आश्चर्य हुआ, तथापि दरवाजे अपनी इच्छाशक्ति से खुल गये। गजानन राव अंदर प्रविष्ट हुए और कर्त्तव्यभावना से उन्हांने 'दरवाजा खोलो' बटन को दबाया। बाकी कतार अंदर घुस आयी। केवल छह व्यक्ति–फलक कह रहा था। एक सरदारनी दौड़ती-हांफती आयी और आठवें सदस्य के रूप में भीड़ में शामिल हो गयी। "बस हो गया जी", उसने उन महोदय को जैसे आदेश दिया, जो अभी तक झेंपू की तरह 'दरवाजा खोलो' बटन को कर्तव्यभावना से दबाये खड़े थे।

"हां जी, लिफ्ट फुल तो हो गयी, " किसी ने सरदारनी की तरफ देखते हुए कहा।

कीमती लाल भयानक एकाग्रता से कंट्रोल पैनल की तरफ देख रहे थे और हर दबाये हुए बटन का क्रम अपनी स्मृति में जोड़ रहे थे। सोलह मंजिलें और आठ लोग। 2,3,5,7 और 11 नंबर के बटन दबाये गये थे। "तेरह प्लीज", कोने से किसी ने अनुरोध किया।

गजानन राव ने आखिर अपनी उंगली हटा ली। जैसे ही दरवाजे धीरे-धीरे बंद हुए, लिफ्ट में पूर्ण अंधकार छा गया। बिजली और पंखे की फिटिंग्ज बहुत पहले ही चुरा ली गयी थीं। अचानक हावी होने वाले अंधेरे में एक विचित्र, और डरा देने वाला गुण था। अंदर का बदबूदार वातावरण पसीने की तथा सस्ते इत्र की बू से और असह्य हो रहा था।

लिफ्ट ने अपनी यात्रा प्रारंभ की।

गंदी राजनीति, साऊथ ब्लाक, सफदरजंग पर बहस रोक कर वे जैसे अपने-आपसे बातें करने में व्यस्त हो गये। दिल्ली में टाइपिस्ट की नौकरी पाना इतना मुश्किल है, यह मुझे किसी ने बताया क्यों नहीं ?—जायस आश्चर्य कर रही थी। हो सकता है, शायद मुझे वह इसी बिल्डिंग में मिल जाये। इसकी सोलह मंजिलों में तरह-तरह के दफ्तर हैं। इंटरनेशनल कंप्यूटेशनल कंसल्टेंट्स, वैष्णों इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट, अमल्गमेटेड बोटलिंग इंडस्ट्रीज... और तो और, द इंडियन क्रानिकल भी ठीक रहेगा। वहां नौकरी बहुत रोमांचक होगी। और आजकल वे वेतन भी कुछ कम नहीं देते।

दिनकर चैतन्य अगले दिन का संपादकीय अपने मन में कंपोज कर रहे थे। द इंडियन क्रानिकल के संपादक के रूप में उनकी नौकरी का सबसे थकाने वाला भाग था दिन-प्रतिदिन राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर लंबी-चौड़ी टिप्पणियां करना, और वह भी सुसंस्कृत अंग्रेजी में। शायद बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा गिरायी गयी उस मामूली अफ्रिकन तानाशाही के बारे में लिखें, या फिर रूसी हस्तक्षेप, या फिर तटस्थ राष्ट्रों की उदासीनता...

समय बिताने के लिए जानबूझकर निजी खयालों में खोये किसी ने भी यह महसूस नही किया कि दूसरी मंजिल तक पहुंचने में लिफ्ट कुछ ज्यादा ही समय ले रही थी...। सरदारनी की कर्कश आवाज ने उन्हें जगाया, "यह कमबख्त लिफ्ट कभी रुकेगी भी, या हमें आसमान तक ले जायेगी ?" और अचानक यह सत्य उजागर हुआ कि लिफ्ट तो ऊपर जा ही नहीं रही थी।

"हम नीचे क्यों जा रहे हैं ?" जायस भय के मारे लगभग चिल्लायी। क्षणभर के लिए अचंभित होने के बावजूद गजानन राव जल्दी आपे में लौट आये। "मेहरबानी करके घबराइये मत, बहनजी। लिफ्ट के कंट्रोल में कुछ खराबी आ गयी है। हम ऊपर गये थे और अब नीचे जा रहे हैं। हम नीचे पहुंचेंगे तो दरवाजे खुल जायेंगे। देखिए तो," आश्वासन देते स्वर में उन्होंने कहा, "हम बिल्कुल आराम से नीचे जा रहे हैं, धड़ाम से गिर नहीं रहे हैं...।"

"अगर आप मुझसे पूछें तो," सरदारनी ने अभद्र ढंग से बात काटकर कहा, "यह लिफ्ट ऊपर गयी ही नहीं। शुरू से ही वह नीचे जा रही है।"

..."ओह ! तो हम सब पृथ्वी के केंद्र की ओर महान यात्रा कर रहे हैं। हमें बताने के लिए शुक्रिया जी !" किसी ने उसकी फिजूल बातों से तंग आकर हंसी उड़ायी।

सरदारनी ने अंधेरे में उसकी तरफ घूर कर देखा। ये बदमाश लोग औरतों से बात करने की तमीज नहीं जानते। बदतमीज !

"पर पृथ्वी के केंद्र पर ही क्यों रुका जाये ?" दिनकर ने हंसी-मजाक में हिस्सा लिया, "हम शायद और आगे चलें और दूसरे छोर से बाहर निकलें, शायद अमरीका या कैनेडा में। कितना मजा आयेगा... !"

सब लोग हंस पड़े।

नहीं हंसे तो केवल गजानन राव। वे जानते थे कि मामला कुछ अलग है। किसी तरह, किसी अज्ञात स्वतः प्रेरणा से वे जानते थे कि सरदारनी का कहना ठीक था। लिफ्ट जमीन से ऊपर उठी ही नहीं थी। पर कमबख्त, वह जा किधर रही थी ? वाणिज्य भवन में तो बेसमेंट नहीं है ! लिफ्ट के अंधेरे में गजानन राव अज्ञात के भय से लड़ रहे थे, जो उनके तर्कसंगत तथा व्यावहारिक मन को निगल रहा था। क्या लिफ्ट कंट्रोल में थी या नहीं, इस प्रश्न ने अब बिल्कुल नया मोड़ ले लिया था। क्या वह मोटर्स तथा गियर्स की भौतिक पकड़ से मुक्त हो चुकी है ? वह किस अज्ञात गहरायी में हमें ले चली है ?

अचानक लिफ्ट रुक गयी। यात्रा का अंत। दरवाजे खुल गये। रोशनी अंदर आ गयी। गजानन राव यह देखने पर कुछ हैरान हुए कि वे वाणिज्य भवन की उसी परिचित जगह पर लौट आये थे।

"अमरीका ! लो हम पहुंच गये," दिनकर ने कहा और जायस को देखकर मुस्कराने का मौका लिया।

जायस ने भी जवाब दिया, "साबूत जमीन पर लौटने पर कितना सुरक्षित महसूस हो रहा है !" और उसने दिनकर को देखकर सुंदर ढंग से मुस्कान बिखेरी, जिसे उसने काफी अभ्यास से आकर्षक एवं दक्ष बनाया था।

सकपका देने वाली भयानक चीख के साथ सरदारनी लिफ्ट के फर्श पर गिर पड़ी। लोग अंदर आ रहे थे। सबसे प्रथम प्रवेश करनेवाले एक मजबूत आदमी ने सरदारनी के पूरे बदन को ढंग लिया था। उसके पीछे आने वाले आदमियों ने सहजता से लिफ्ट में मौजूद लोगों के शरीरों में प्रवेश पा लिया था। कुछ नये लोगों ने वास्तव में दो-तीन शरीरों में एक साथ प्रवेश किया था।

उनके मेजबान भय के मारे स्तब्ध हो खड़े थे। क्या वे अभी तक जिंदा थे ? या मर चुके थे ? या अब उसका कोई महत्व ही नहीं था ? कुछ मिनटों

की विचित्र यात्रा में आठ लोग अपने शारीरिक अस्तित्व को खो चुके थे। किसी घातक चमत्कार के जरिए लिफ्ट ने अपने यात्रियों को परछाइयों में बदल दिया था।

केवल परछाइयां, जिनसे उनके पार्थिव शरीर छीन लिये गये थे जिनकी राख एक दिन मिट्टी में समा जानेवाली थी।

जायस सबसे पहले हिली और चीखती हुई लिफ्ट से बाहर निकल आयी। दो पुरुषों द्वारा उसके शरीर पर छा जाने की संकुचाहट उससे बरदाश्त नहीं हो पा रही थी। इसका नतीजा यह हुआ कि सभी एक साथ बाहर निकलने की कोशिश करने लगे और भगदड़ मच गयी। जैसे ही गजानन राव और दिनकर चैतन्य बेहोश सरदारनी को बाहर खींच रहे थे, दरवाजे बंद हो गये। 'ट्रीम' आवाज के साथ दीवार पर स्थित बत्ती ने दर्शाया कि लिफ्ट ऊपर जा रही है।

वे सब बाहर खड़े थे, आतंकित, स्तब्ध, अचंभित। क्या विचित्रता है, गजानन राव ने सोचा। मुझे डर लग रहा था कि लिफ्ट हमें किसी असत्य दुनिया में ले जा रही है। जहां वे आ पहुंचे थे, वहों कुछ भी असत्य नहीं था। वही पुरातन भारत भूमि, वही राजधानी दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ मार्ग पर स्थित वही परिचित सोलह-मंजिला वाणिज्य भवन कंप्लेक्स। बाकी सब कुछ ठीक पहले-सा सामान्य। तो फिर क्या हमें कुछ हो गया है ? क्या हम सब भूत बन गये हैं ? उन्होंने अपने दल के बाकी लोगों की तरफ देखा। फीके, असहाय चेहरे। अपने वातावरण की पहचान से ही डरे हुए लोग, जिससे अब उनका रिश्ता नहीं रहा था।

बस करो, गजानन राव ने अपने आप से कहा। हम अपनी हस्तियों के साये बनकर अपनी पूरी जिंदगी नहीं बिता सकते। अब किसी न किसी को कोई मार्ग ढूंढ़ने की शुरुआत करनी ही होगी। उन्होंने स्वयं को इस कार्य के लिए तैयार किया। अब तक लिफ्ट के सामने दूसरी कतार लग चुकी थी। बढ़िया कपड़े पहने हुए एक व्यक्ति के पास जाकर गजानन राव ने पूछा "श्रीमानजी, कितने बज गये हैं ?"

कोई उत्तर नहीं। उनका विनम्र प्रश्न अनसुना रहा और उनकी तरफ उसने कोई ध्यान भी नहीं दिया। उस अच्छे कपड़ों वाले आदमी की घड़ी में समय देखने के लिए गजानन राव नीचे झुक गये।

उन्होंने सीधा होने में लंबा समय लिया। जब वह फिर से सीधे खड़े हो गये तो गजानन राव अपनी दुर्दशा का चौंकानेवाला कारण जान चुके थे। अब वह समझने लगे थे कि जिस वास्तविकता में लिफ्ट ने उन्हें पहुंचाया था, वह उनका अस्तित्व क्यों नहीं पहचान पा रही थी। अब इसमें कोई संदेह नहीं था। हम जरूर पर्सना नान ग्राटा हैं, उन्होंने सोचा। वह इतना तार्किक था, जैसे दो और दो चार होते हैं।

वे अपने जत्थे की ओर मुड़े, "कृपया सभी ध्यान से सुनें। किसी अज्ञात हेरफेर

से, हम ऐसी स्थिति में आ चुके हैं, जहां हमें मात्र अपना अस्तित्व भी दुनिया को परिचित कराना असंभव हो गया है। हम उन्हें देख सकते हैं, सुन सकते हैं और संभवतः सूंघ भी सकते हैं ! परंतु हम उन्हें स्पर्श नहीं कर सकते। पारस्परिक स्पर्श-प्रक्रिया बंद हो जाने से हम एक-दूसरे के शरीरों के भीतर से गुजर सकते है। परंतु हमारे अपने बीच," उन्होंने अपने साथियों की तरफ इशारा किया, "आपस में, सारी संवेदनाएं, सारी धारणाएं वैसी की वैसी मौजूद हैं।"

"बिल्कुल ठीक कहा आपने," दिनकर ने सहमति दर्शायी। "पर क्यों ? मेरा मतलब, कितना विचित्र है अपने ही काम करने की जगह पर भूतों की तरह घूमना। ऐसी स्थिति आयी कैसे ?"

"यह सब इस कमबख्त लिफ्ट की वजह से हुआ," जायस ने कहा। "वह जरूर किसी शक्ति से प्रभावित होगी। पर अब हम यहां से सामान्य अवस्था में वापस कैसे लौटें ?"

"क्या हम जहां से ऐसे आये, उसी रास्ते से वापस लौटने की कोशिश न करें, लिफ्ट में ?"

"क्यों नहीं ? जरूर लिफ्ट जानती होगी कि हमें वास्तविकता में कैसे पहुंचाया जाये।"

"एक मिनट।" गजानन राव ने बीच में कहा, "यह संभवतया मेरे भी मन में आयी थी। जब हम पहले लिफ्ट में प्रविष्ट हुए थे तो हमने एक विशिष्ट क्रम में बटन दबाये थे। मेरे खयाल से उसी से लिफ्ट को आदेश-सा मिल गया था। अगर हम ठीक उल्टे क्रम में बटनों को दबायें तो हम वास्तविकता की ओर वापस जा सकते हैं। अर्थात्, जब तक हम सही क्रम को नहीं जानते," उन्होंने दृढ़तापूर्वक घोषित किया, "फिर से लिफ्ट में प्रवेश करने का सवाल ही नहीं पैदा होता।"

"अगर ऐसा है तो मैं आपको कुछ बता सकता हूं !" कीमती लाल अचानक बोल उठे। सही क्रम याद रखने का कारण समझाते समय उनका उत्साह कुछ कम था, परंतु किसी ने इस पर कुछ नहीं कहा।

"यह तो कमाल की बात है !" गजानन राव उत्साहित हुए, "अब हमें केवल यह करना है कि लिफ्ट खाली होने का इंतजार करें, तब अंदर जायें और उल्टा आदेश दे दें। मुझे पूरा विश्वास है कि हम कामयाब होंगे।"

क्या सचमुच मुझे विश्वास है, उन्होंने मन में आश्चर्य किया ! लिफ्ट हमें फिर से सामान्य बना देगी या हमारा अस्तित्व पूरी तरह मिटा देगी। यह लिफ्ट जिस प्रकार बनायी गयी है उसके विक्षिप्त आदेशों को कौन समझ सकता है ? परंतु ऐसी आशंकाएं बताने का भी यह समय नहीं है। उल्टे आदेशों का यह एकमात्र मौका था। ट्रायल-एरर की पद्धति से सही आदेशों को खोजने में आने वाली विपत्तियां दिमाग में संकोच पैदा करने वाली थीं।

अभी तक बेहोश सरदारनी को घसटते हुए, वे जल्दी-जल्दी लिफ्ट में घुस गये। गजानन राव ने फिर से अपना स्थान ग्रहण किया और 'दरवाजा खोलो' बटन को दबाये रखा। कीमती लाल ने बटनों को दबाना शुरू किया। 13, 11, 7, 5, 3...2 ! जब दरवाजे धीरे-धीरे बंद होने लगे तो वे उत्तेजित और चिंतित हो देखते रहे। लिफ्ट में फिर से संपूर्ण अंधकार छा गया। तनाव असहनीय था।

लिफ्ट ऊपर जाने लगी।

"कामयाबी !" जायस रोमांचित थी।

"अभी कहना ठीक नहीं। हमें प्रतीक्षा करनी होगी, जब तक कि यह फिर से रुक नहीं जाती है," गजानन राव ने कठोरता से कहा।

लिफ्ट ऊपर... और ऊपर जाती रही। क्या वह कभी रुकने वाली नहीं ? सहसा वह रुक गयी। "दूसरी मंजिल !" किसी ने कहा।

दरवाजे खुल गये, पीड़ादायक धीमी गति से। कुछ लोग बाहर खड़े थे। अंदर की भीड़ अपनी चिंता में खामोश थी। अब इस बार क्या बात है ? क्या हम अपनी दुनिया में हैं ? क्या ये लोग हमें देख सकते हैं ? वे हमसे बोलते क्यों नहीं ? क्या हम अनावश्यक बन गये हैं ?"

नहीं ऐसी बात नहीं थी। बाहरी खामोशी के कुछ समय बाद, बाहर वाली भीड़ का एक सदस्य बोला, "क्या बात है ? इस सरदारनी को क्या हो गया है ?"

केवल उस एक पार्थिव वाक्य के साथ आठ मनुष्यप्राणि वास्तविकता में वापस प्रविष्ट हो गये थे। लिफ्ट में सातों चेहरों पर सहसा एक साथ मुस्कराहट फैल गयी।

"हे ! आप सब लोग सपना देख रहे हैं क्या ?" इस झिड़की के साथ ही लिफ्ट के दरवाजे धीरे से बंद हो गये।

गजानन राव ने आपातकालीन बटन दबाया और लिफ्ट को नीचे लाये। "हमें तुरंत सरदारनी को बाहर खुली जगह में ले जाना चाहिए। बेचारी !"

जब उसके इलाज की व्यवस्था हो रही थी, दिनकर गजानन राव की तरफ मुड़ा, "सर, अभी जो हुआ, उसके बारे में आपका क्या खयाल है ?"

"मैं डाक्टर या मनोचिकित्सक नहीं हूं, लेकिन मैं जानता हूं कि हरेक व्यक्ति, कुछ हद तक, क्लास्ट्रोफोबिया से प्रभावित होता है। यह औरत हांफती हुई लिफ्ट में आयी। तंग जगह, भीड़, अंधेरा और इससे भी ज्यादा यह कि लिफ्ट अचानक ऊपर चल दी—जरूर इस सबसे सरदारनी को हल्का-सा स्ट्रोक हो गया। ग्लुकोज़ के साथ ठंडे शरबत का एक गिलास तथा थोड़ा-सा आराम मिलने पर वह ठीक हो जायेगी।"

दिनकर हैरान हुआ। उसने जो कुछ भयानक दुःस्वप्न भुगता था, उसके लिए

यह छोटी-सी इंस्टेंट डाक्टरी जानकारी !

"क्या, क्या हुआ ?" और लोग भी अब इकट्ठे हो गये।

"नहीं, नहीं, कुछ नहीं। मैं अभी क्लास्ट्रोफोबिया के बारे में समझा रहा था। बहुत से लोग तंग जगह पर, खासकर अंधेरे में होने पर घबरा जाते हैं। बहुत बार ऐसे समय भ्रम पैदा होते हैं। लोग कल्पना करते हैं कि वे मर गये हैं, या हवा में उड़ रहे हैं, या पानी में डूब रहे हैं। वह बेचारी औरत बाहर खुली जगह से काफी थककर आयी होगी। ऐसी भयानक गर्मी में..."

दिनकर संशय में डूब गया। क्या उसका अनुभव केवल एक भ्रम मात्र था ? परंतु उसके मस्तिष्क में सारा प्रसंग बिल्कुल स्पष्ट था। हो सकता है। क्या हम कुछ सपनों को स्पष्ट रूप में याद नहीं कर सकते ? और यह सौम्यरूप सज्जन कितने सहज भाव से कह रहे हैं। बाकी लोग क्या सोच रहे हैं ? दिनकर ने उनकी तरफ शंका से देखा। उनकी निर्लिप्त मुद्राओं में उसे कुछ नहीं दिखायी दिया। उसे ऐसा नहीं लगा कि वे भी संभ्रमित हैं ओर निश्चितता के लिए इधर-उधर देख रहे हैं, उसने निश्चय किया। यह सब मामला एकदम बेतुका था। राष्ट्रीय स्तर के अखबार के प्रतिष्ठित संपादक के लिए लिफ्टों में क्लास्ट्रोफोबिया से प्रभावित होना उचित नहीं था। स्पष्ट रूप में कंधों को उचकाते हुए दिनकर चैतन्य वहां से चल दिया।

रेस के मैदान में अपने वर्षों के अनुभव के दौरान कीमती लाल ने अनेक बेतुकी बातें सुनी थीं, चालाक कर्मचारियों को देखा था और कई बार गोलमाल का सामना किया था। और इस अनुभव के बारे में भी उनके मन में कोई संदेह नहीं था। सौम्यरूप सज्जन जानबूझ कर झूठ बोल रहे थे। 'दाल में जरूर कुछ काला है।' फिर भी, यह कोई तमाशा करने का समय नहीं था। बाद में चुपके से पता करना ज्यादा लाभदायक हो सकता था। कीमती लाल चुपचाप वहां से चल पड़े। गजानन राव की बड़बड़ाहट से जायस के मन में पैदा हुआ शक अब पक्का हो गया। एक दूसरे के अंदर घुसने वाले लोग—कितना बेतुका भ्रम ! और वह भी ऐन दोपहर के समय ! एक संकुचाहट भरी मुस्कान के साथ वह भी चल पड़ी। इसके साथ बाकी भीड़ भी बिखर गयी। उन्होंने अपने आपको समझाया था कि वे सब कल्पना के चक्कर में फंस गये थे।

जब सरदारनी जगी तो वह भूत-प्रेतों के बारे में असंबद्ध विलाप करने लगी। डाक्टर ने उसे मार्फिन की एक बड़ी खुराक दी और फिर से सुला दिया। चौबीस घंटों के बाद जब वह दुबारा जगी, तब वह वास्तविकता और भ्रम दोनों में कोई फर्क नहीं कर पा रही थी। दोनों को उसे अभी-अभी भुगतना पड़ा था।

* * *

उस दोपहर में कीमती लाल ने तेरहवें घोड़े पर पैसे लगाये और वे जीत गये। इंटरनेशनल कंप्यूटेशनल कंसल्टेंट्स में डेटा-एंट्री आपरेटर के रूप में जायस को नौकरी मिल गयी। गजानन राव की कंपनी ने प्रशंसनीय तरक्की की। परंतु, किसी तरह उसके रोजमर्रा के मामलों में उनकी रुचि नहीं रही।

सच्चा और सबसे आश्चर्यजनक परिवर्तन दिनकर चैतन्य के बारे में हुआ। असल में यह परिवर्तन उसके द्वारा संपादित अखबार द इंडियन क्रानिकल में हुआ। आने वाले सप्ताहों में उसकी खपत तीन गुना बढ़ गयी। दिनकर ने खोजी पत्रकारिता (इनवेस्टिगेटिव जर्नलिजम) को एक नयी दिशा दी थी। जबकि उनके कमजोर प्रतिस्पर्धी राजनैतिक खोजी पत्रकारिता के नाम पर सचिवालय के क्लब में सुनी हुई गपशप को या निराश अफसरों द्वारा बताये हुए अर्धसत्य को प्रसिद्धि दे रहे थे, तब दिनकर चैतन्य ठोस सबूत पेश कर रहा था। और द इंडियन क्रानिकल द्वारा निर्धारित नये मूल्यांकन यह बता रहे थे कि सिर्फ मूलप्रति की फोटोग्रैफिक प्रतियां ही सबूत होती हैं।

उन दिनों ऐसा लग रहा था कि कोई भी कागज, चाहे वह कितना भी गोपनीय क्यों न हो, दिनकर के विशेष पत्रकारों से बच नहीं सकता। विशेष रूप से द इंडियन क्रानिकल ने उन संवेदनशील दस्तावेजों के प्रति विशेष आत्मीयता विकसित की थी, जो सरकार को घबराहट पहुंचा सके। राष्ट्र की प्रशासकीय व्यवस्था के उच्चतर स्तरों में निहित असमर्थता, भ्रष्टाचार तथा उदासीनता को उत्सुक जनता के लिए प्रकट करनेवाली रिपोर्टें उसमें हर रोज छपती थीं। सबूतों के अलावा, मंत्रियों में, उनके निजी सचिवों में तथा सरकार के अन्य विश्वसनीय कार्यकर्ताओं में होनेवाली चर्चाओं से दिनकर अक्षरशः टिप्पणियां उद्धृत करते थे। राजधानी में तो अफवाहें फैली थीं कि वह केंद्रीय मंत्रिमंडल के अतिगोपनीय दस्तावेजों की भी जानकारी रखते हैं। दिनकर चैतन्य ने सरकार को एयरकंडिशंड सुविधाओं की आत्मतुष्ट नींद से कठोर ढंग से जगाया था, और उसे कनाट सर्कस में लाकर आम जनता के सामने मैग्निफाइंग ग्लास के नीचे रख दिया था।

सरकार की गुप्त एजेंसियां पर्दे के पीछे अपनी पूरी कोशिश कर रही थीं। दिनकर चैतन्य का तंत्र का आकार-प्रकार क्या है, कैसा है। कोई तंत्र जरूर होना चाहिए, अन्यथा किसी भी विभाग के किसी भी स्तर पर किसी भी दस्तावेज तक उसकी पहुंच कैसे हो सकती है ? केवल सुरक्षा की उलझनें भी काफी गंभीर थीं। उसकी सारी हलचलों तथा संबंधों पर कड़ी नजर रखी गयी। कई सप्ताहों के सघन निरीक्षण के बाद सरकार के सभी गुप्त विभागों के सभी गुप्तचरों ने एक साधारण तथा अविश्वसनीय रिपोर्ट बनायी।

अखबार में प्रकाशित होने वाली किसी भी खोजी समाचार से दिनकर चैतन्य या उसके स्टाफ के किसी भी व्यक्ति का कोई भी संबंध नहीं था। उसे सारी

रिपोर्टें तथा सबूत किसी एक ही अज्ञात उद्‌गम से प्राप्त होते थे। इस उद्‌गम का परिचय इतना गुप्त रखा गया था कि कोई भी, यहां तक कि स्वयं दिनकर चैतन्य भी उसे नहीं जानता था। असल में यह रहस्य उसे भी पागल बना रहा था।

सरकार को उपलब्ध हो सकने वाले श्रेष्ठतम गुप्तचरों द्वारा बनायी गयी इस रिपोर्ट की दो प्रतिक्रियाएं सामने आयीं। गृहसचिव ने अपने हाथ ऊपर उठा लिये और चुपचाप एक प्रार्थना भी उसी दिशा में पेश की। गजानन राव ने खुद का अभिनंदन किया। अपना परिचय गुप्त रखने में उन्होंने जो सावधानी बरती थी, वह कामयाब रही थी।

* * *

"मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं ?" गजानन राव ने विनम्रता से पूछा। उनसे मिलने आये व्यक्ति को वे ठीक से नहीं पहचान सके थे।

कीमती लाल तुरंत अपने मुद्दे पर आये, "श्रीमानजी, मैं यह जानना चाहता हूं कि दिनकर चैतन्य को आप जो दस्तावेज तथा फोटोग्राफ दे रहे हैं, वे आप को कहां से मिलते हैं ?"

खेल खत्म हो चुका था। परंतु गजानन राव ने धैर्य से काम लेने का प्रयास किया, "मैं समझा नहीं। कौन-से दस्तावेज ? कौन दे... "

"प्लीज ! आपको बहाना गढ़ने का समय दूं, ऐसा मूर्ख मैं नहीं हूं। आप मुझे भूल गये होंगे। उस दिन लिफ्ट में ! मैं वही हूं जिसे ठीक क्रम याद था। अगर आपने मेरे प्रश्न का तुरंत उत्तर नहीं दिया, तो मैं आपका नाम गुप्तचर विभाग को बता दूंगा। मुझे विश्वास है कि उस दफ्तर के काफी लोग दिनकर के पीछे हैं। मुझे विश्वास है कि आप भी यह जानते हैं।"

गजानन राव को पता था। दिनकर का रात-दिन पीछा करने वाले दस गुप्तचरों के नाम, फोटो तथा उनका पूरा परिचय आज ही सवेरे उन्होंने द इंडियन क्रोनिकल के दफ्तर में पहुंचाया था।

"अंदर आइये," निमंत्रण में कोई उत्साह नहीं था।

जब दोनों आराम से बैठ गये, तब गजानन राव ने प्रारंभ किया, "क्या आपने कालयात्रा के बारे में सुना है, मेरा मतलब, भूतकाल की ओर, उल्टी दिशा में यात्रा..."

"जी हां ! जरूर सुना है। और केवल भूतकाल ही क्यों ? योगी और संत भूत, वर्तमान तथा भविष्य में कहीं भी संचरण कर सकते हैं। मैं हरिद्वार के एक अवधूत को जानता हूं, उसकी सामर्थ्य इतनी आश्चर्यकारी है..."

"प्लीज ! यह सस्ता आध्यात्मिक प्रचार मुझे मत सुनाइये। ! वह कबाड़ा सिर्फ निर्यात के लिए होता है। क्या हम सचमुच भूतकाल में सफर कर सकते हैं ? ज़रा थोड़ी देर के लिए, हम इस प्रश्न पर सामान्य बुद्धि को लगायें। आरंभ में, यह ध्यान देने योग्य बात है कि भूतकाल केवल एक सेकेंड का भूतकाल भी हो सकता है और करोड़ों वर्षों का भी। क्या आप कुछ मिनट पीछे जाकर अपने आपसे मिल सकते हैं ? या, अगर कुछ मिनटों के पहले वाले 'आप' यहां फिर से आ गये, तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी ? उन दिनों आपमें से सच्चे 'आप' कौन से होंगे ?" गजानन राव ने स्पष्ट रूप में इस विषय के बारे में कुछ सोच लिया था।

"और अगर आप इतिहास में और पीछे चले गये तो क्या ? क्या इतिहास आपका स्वागत करेगा ? अगर आपने इतिहास का क्रम बदलने की चेष्टा की तो क्या होगा ? बार-बार ? क्या इस प्रकार की छेड़छाड़ वर्तमान पर असर नहीं करेगी, या अगर बुरा हुआ तो क्या उसमें विरोधाभास पैदा नहीं करेगी ? मिसाल के तौर पर, अगर आप सौ साल पीछे चले गये, तथा अपने परदादा को उनके बचपन में मिले और आपने उनका खून कर दिया तो क्या होगा ?"

"अब कौन कबाड़ जैसी बातें कर रहा है ?" कीमती लाल तीखे स्वर में बोले। वे हरिद्वार के अवधूत के परम भक्त थे।" मैंने आपको केवल इतना पूछा है कि आप उस दिन के लिफ्टवाले अनुभव का किस तरह का फायदा उठा रहे हैं ? उसका जवाब देने के बदले, आप इतिहास और परदादाओं के बारे में बातें करते हुए समय नष्ट कर रहे हैं।"

"क्या आपको अभी पता नहीं चला ?" गजानन राव ने कुछ आश्चर्य से पूछा। "जब आप उस लिफ्ट के बटनों को एक विशिष्ट क्रम में दबाते हैं, तो लिफ्ट आपको भूतकाल में ले जाती है।"

"यह कैसे हो सकता है ? हम सब वहीं वाणिज्य भवन कंप्लेक्स में थे। वह भी भूत बनकर।"

"मैं उसी बात पर आ रहा हूं। लिफ्ट हमें कुछ वर्ष नहीं, बल्कि तीन दिनों के लिए पीछे ले जा रही थी। अगर आप को याद हो, जब हम सब साये बनकर लिफ्ट के बाहर आये थे, तब मैंने किसी की घड़ी में समय देखा था। समय के साथ-साथ, उस घड़ी में दिन तथा तारीख भी थी। उसी क्षण मैं समझ गया कि हम कहां पहुंचे थे और हमारी अवस्था के कारण क्या थे। कालयात्रा सम्भव है। प्रकृति हमें भूतकाल में सफर करने की अनुमति देती है। परंतु एक कड़ी शर्त यह है कि हम उससे छेड़छाड़ न करें। भूतकाल के व्यक्ति तथा घटनाएं— इन दोनों पर हमारा असर कतई नहीं पड़ना चाहिए। इसी कारण हम सभी को देख सकते थे और सुन सकते थे, परंतु उनके लिए हमारा कोई अस्तित्व नहीं

था। क्या आप नहीं जानते, जो बीत गयी सो बात गयी ? यह पूर्णतः सत्य है। इतिहास मात्र एक ही है। उसका बेजोड़पन अपरिवर्तनीय है।"

कीमती लाल पर न इतिहास बेजोड़पन का कोई प्रभाव पड़ा और न उसे बनाये रखने की आवश्यकता का। "क्या आपका यह मतलब है कि आप दिनकर को जो कागजात उपलब्ध कराते हैं, भूत की तरह तीन दिन पीछे जाकर, उनके फोटोग्राफ लेकर प्राप्त करते हैं ?"

"हां, बिल्कुल सही ! इतिहास को दर्ज होने के विरुद्ध प्रकृति का कोई कानून नहीं है। जब तीन दिन के पहलेवाली घटनाएं आपके सामने पुनः प्रस्तुत होती हैं, तो आप उनके फोटोग्राफ ले सकते हैं; रिकार्डिंग भी कर सकते हैं। यह वीडियो देखनेवाली बात की तरह है–तीन दिन पहले लिया हुआ, थ्री-डायमेंशनल वीडियो ! जब काम खत्म हो जाता है, तब मैं लिफ्ट में वापस लौटता हूं, उल्टा आदेश देता हूं, तीन दिन आगे बढ़ता हूं और वर्तमान में प्रकट हो जाता हूं।"

कीमती लाल को जैसे बिजली का झटका लगा। उसमें जो जुआरी सचेत था, उसको एक विजेता दिखने लगा। "अर्थात् आप तीन दिन भविष्य में यात्रा कर सकते हैं। केवल लिफ्ट के बटनों को दबाकर।" क्या इत्तफाक है ! सभी दिनों में आज का दिन। उसने घड़ी देखी। ग्रैंड फाइनल के लिए कुछ ही घंटे बाकी थे।" माफ कीजिए जनाब ! मुझे अब जाना है। कुछ अर्जेंट काम है।"

"लेकिन आप कहां जा रहे हैं ?" गजानन राव को खतरे की सूचना मिली। "भूतकाल में और भविष्य में सफर करना एक जैसा नहीं है। इतिहास बेजोड़ होता है, भविष्य नहीं। वर्तमान के पास असंख्य संभावनाएं होती हैं, हर एक का अलग-अलग भविष्य होता है..."

कीमती लाल को अब स्पष्टीकरण में कोई दिलचस्पी नहीं थी। अब नहीं, जब लक्ष्मी जी उस पर अपने वरदानों की वर्षा करने की प्रतीक्षा कर रही हैं। "वह सब ठीक है। अब मुझे जाना ही होगा। हम फिर मिलेंगे।" उसका हृदय हर्ष से दौड़ रहा था। नासमझ अवस्था में खड़े गजानन राव के प्रति उसके मन में करुणा महसूस हुई। कीमती लाल कह उठा, "एक कहावत है 'देने वाला देता है तो छप्पर फाड़ के देता है'। और आज, उसने मेरी छप्पर पर नजर डाली है...आप समझ नहीं रहे, हैं न ? कैसे समझ पायेंगे ? आप कैरी ओवर क्या होता है, जानते हैं ? क्या कभी आपने जैकपाट जीतने के सपने देखे हैं ? हुह् ! आप जैसे लोग जिंदगी के बारे में कब जानेंगे ?"

कीमती लाल के शब्दों का कोई अर्थ गजानन राव समझ पाते, इससे पहले ही वह वहां से जा चुका था। गजानन राव का मन अभी तक काल तथा प्रकृति के कानूनों के आपसी सम्बन्धों के नाजुक जाल में भटक रहा था। "कैरी ओवर ? जैकपाट ? क्या आज मैंने इन के बारे में कुछ पढ़ा नहीं है ?" द इंडियन

क्रानिकल में वह पहले पृष्ठ की खबर थी। पिछली तीन रेसों में अनियमित परिणाम निकलने की वजह से जैकपाट का पैसा कैरी ओवर किया गया था। अंतिम रेस का परिणाम सही पहचानने वाला कोई भी व्यक्ति एक करोड़ रुपये से भी ज्यादा सम्पत्ति का मालिक बन सकता था। भारतीय रेस के मैदान पर आज तक इतना पैसा कभी दाव पर नहीं लगा था। और उस महान रेस के लिए केवल चार घंटे बाकी थे।

"कीमती लाल !" गजानन राव दौड़ पड़े। वे कहीं नहीं दिख रहा था। गजानन राव को जो पहली टैक्सी मिली उसी में जा घुसे। "जल्दी करो ! इंद्रप्रस्थ मार्ग ले चलो। जल्दी एक आदमी वहां मरने के लिए गया है। आत्महत्या करने के लिए, समझ गये ? जिंदगी और मौत का फर्क हो सकता है। चलो, जल्दी करो, और ट्रैफिक रूल्स को मारो गोली ! चलते रहो, बस !"

कीमती लाल दौड़ता-दौड़ता परिसर में आ पहुंचा। लिफ्ट वहां खड़ी थी, खाली और इंतजार करती हुई। क्या नसीब है ! यह कोई साधारण लिफ्ट नहीं, यह तो सोने की खान है। वह मद्रासी मूर्ख है। वह पैसे की कीमत कभी नहीं समझेगा। झट से वह अन्दर घुसा और कंपकपाते हाथों से बटनों को दबाने लगा। पहले 'दरवाजा खोलो' बटन को पकड़ो। कितनी दिमाग की बात की मैंने उस भाग्यशाली दिन का क्रम याद रखने में। 13... वह मूर्ख अनंत भविष्य कालों के बारे में क्या बक रहा था...11...भूत ! वर्तमान ! भविष्य ! सब कुछ विधाता ने बहुत पहले तय कर लिया है। हर छोटी-सी बात भी भाग्य के अनुसार ही घटित होती है।... 7... सस्ता प्रचार है ! पवित्र अवधूत की यौगिक शक्ति के बारे में बोलने का उसे क्या अधिकार है ?... 5... आखिर, भविष्य को पहले जानने में ही तो नसीब होता है। लक्ष्मीजी ऐसे ही लोगों पर कृपा करती है... 3... एक करोड़ रुपये का जैकपाट ! अब एक बटन के स्पर्श पर ! गजानन राव सीढ़ियों पर दनदनाते हुए आ पहुंचे।

जैसे कि लिफ्ट हजार ग्रेविटियों के भयानक आवेग से आसमान की दिशा में उड़ चली। शरीर का, लिफ्ट के फर्श पर, केवल मांस का एक लोंदा बनने से बहुत पहले ही कीमती लाल मर चुका था। हर एक मंजिल के साथ ही गति बढ़ते-बढ़ते लिफ्ट बिल्डिंग की छत को तोड़कर आरपार निकल गयी थी, कंक्रीट में एक अच्छा-खासा छेद मात्र रह गया। मिलिसेकेंडों में लिफ्ट पृथ्वी के प्रभाव-वर्तुल से परे हो गयी और उसने अनंत की ओर अपनी अंतिम यात्रा जारी रखी।

गजानन राव की टिप्पणी का अंतिम अंश द इंडियन क्रानिकल से यहां उद्धृत किया जा रहा है :

"उच्च कड़ी वैज्ञानिक खोजबीन के लिए लिफ्ट को प्रदान करने के बदले मैंने उसके साथ जो खिलवाड़ किया, उसके संदर्भ में अब पछतावा करने से कोई

लाभ नहीं। किंतु मेरे संकोच का पहला कारण यह था कि अगर एक बार लिफ्ट की विशिष्टताएं प्रकट हो जातीं तो बेशक मुझे बिपुल प्रसिद्धि मिल जाती, लेकिन मैं लिफ्ट के उपयोग से वंचित हो जाता। मैं लिफ्ट को निजी सम्पत्ति के रूप में देखने लगा था जो सत्य को उजागर करने में हमारी क्षमता को बढ़ती है, चाहे उसे छिपाने की कितनी भी कोशिश की जा रही हो। अतः मैंने तय किया कि लिफ्ट वैज्ञानिक उपयोग के लिए तभी प्रदान की जायेगी, जब उसकी सार्वजनिक सेवा की क्षमता का पूरा उपयोग कर लिया जाये।

'दूसरी बात यह है कि लिफ्ट की आसानी से भूत और वर्तमान के बीच, आने-जाने वाली उन अकल्पनीय शक्तियों के बारे में मैं कोई भी अंदाजा नहीं लगा सकता था, जितनी आसानी से वह वाणिज्य भवन के तलों के बीच आती-जाती है। समझ से भी इतनी दूर तत्वों की खोजबीन आप कैसे कर सकते हैं ? अतः मैंने अपने आपको इस उतावले निष्कर्ष पर आने दिया कि वैज्ञानिक प्रयोग केवल व्यर्थ ही नहीं, बल्कि भयंकर भी साबित हो सकते हैं।

'मेरे मन में सर्वप्रथम भय यह था कि कहीं कोई लिफ्ट को भविष्य काल की यात्रा संबंधी गलत आदेश न दे दे। मैंने स्पष्ट कर ही दिया है कि मुझे किस तरह एक अव्यक्तित्व के रूप में इसका बेजोड़पन कायम रखने के लिए भूतकाल में जाना पड़ता था। परंतु भविष्य ? क़्या वह भी बेजोड़ है ? क्या किसी सर्वज्ञ और अज्ञात स्रष्टा ने उसे पहले ही तय कर रखा है ? विज्ञान की तार्किकता को छोड़िये, दर्शनशास्त्रों को भी पूर्वनियोजित विश्व की संकल्पना जारी रखने में काफी कठिनाइयां महसूस होती हैं। वर्तमान के सामने अनंत सम्भावनाएं होती हैं, अनंत भविष्य होते हैं। हर एक क्षण, उनमें से कोई एक काल के द्वारा चुना जाता है और विश्व आगे बढ़ता है।

'परंतु, और यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण 'परंतु' है, जब तक यह चुना नहीं जाता, तब तक कोई भविष्य अस्तित्व में नहीं आ सकता, कोई भविष्य सत्य का अंश नहीं बन सकता।

'दैव तथा उसके कर्ता के बारे में परंपरागत भ्रामक कल्पनाओं से आहत कीमती लाल भविष्य की अस्तित्वहीनता को समझने में असमर्थ थे। भविष्य की दिशा में कालयात्रा केवल एक संदर्भ में ही संभव थी–भूतकाल से वर्तमान तक। उसके आगे अघटित भविष्य में कालयात्रा हमारे सत्य को बुननेवाले काल और अंतराल में विरोध निर्मित करती है। अपनी मूर्खता और लालच के कारण कीमती लाल ने प्रकृति के नियमों में और लिफ्ट को चलाने वाली अद्‌भुत शक्तियों में विरोध पैदा किया। उसने अपने जीवन से उसका दंड भुगत लिया, परंतु मनुष्य ने काल के गतिविज्ञान का अध्ययन करने संबंधी मिला एकमात्र अनोखा मौका गंवा दिया।'

**अंग्रेजी से निशिकान्त मिरज़कर द्वारा अनूदित**

# भगवान का सामना

देबब्रत दाश

ईसवी के 2085 साल में आसपास की दुनिया ऐसे विपुल वैज्ञानिक चमत्कारों तथा आश्चर्यों से गूंज रही थी, जिनके बारे में एक शताब्दी पहले तक लोगों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। विज्ञान ने आश्चर्यजनक प्रगति की थी...

परंतु मैं भी अपनी पारंपरिक बनारसी पान की दुकान से काफी संतुष्ट था। जिस किसी ने मेरी दुकान के सामने हमेशा खड़ी पान-प्रेमियों की भीड़ को देखा होगा, वह मेरी छोटी-सी दुकान के धंधे की सफलता का अंदाजा लगा सकता था। अपनी गद्दी पर आराम से चमचमाते सामान के बीच बैठा मैं अपना सारा काम खुद ही निपटाता था। वह इसलिए कि मेरे मन में दोनों की वफादारी के बारे में शंका थी—मानव सहायक की भी तथा रोबट की भी (जो अपनी धोखा देने वाली आदतों के लिए पहले ही बदनाम हो चुके थे)।

मेरी बायीं तरफ विशाल प्रयोगशाला थी और मेरी दायीं तरफ भगवान शिवजी का मंदिर था। एक तरफ विज्ञान का मंदिर और दूसरी तरफ शिवमंदिर। दोनों के बीच मेरी छोटी-सी पान की दुकान थी, कुछ असहायता से चकित और संभ्रमित।

विशाल प्रयोगशाला का संचालन कर रहे थे प्रोफेसर चक्र, एक अकेले, छोटे कद के आदमी, जो महान वैज्ञानिक थे। उन्होंने चमत्कारों का निर्माण किया था। उनके अन्वेषणों में जीवविज्ञान का समग्र क्षेत्र समाहित था—सजीव व्यवस्था के कुल जैविक रसायनशास्त्र तथा जैविक भौतिक विज्ञान से लेकर जननविद्या तथा परमाणु जीवविज्ञान की जटिलताओं तक। उन्होंने एक एंटिबायोटिक बनाया था 'चक्रोमायसिन', जो विशेष रूप से कैंसरवाले जीन्स की अभिव्यक्ति को प्रभावित करता है। कैंसर की रोकथाम के लिए यह सबसे प्रभावी साधन था और 'एंटिमैलिग्नेन्सी वैक्सीन' के रूप में बड़ी मात्रा में प्रयुक्त किया जाता था। उन्होंने बहुतेरे एंजाइम प्रोटीन के कामों के बदले विशिष्ट आधारभूत तरतीब में स्थित आर. एन. ए. को स्थापित किया था, जो विशिष्ट आयनिक वातावरण में आस्थगित थे। इस प्रकार उन्होंने दर्शाया था कि दुनिया में पहले प्रोटीन के अस्तित्व धारण करने से पहले आर. एन. ए प्राथमिक पेशियों में एंजाइम के रूप में कार्यरत थे। उत्प्रेरण के

दौरान उनके आधारभूत तरतीब प्रविष्ट विशिष्टता को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। अतः उन्होंने उस विवाद्य प्रश्न को हमेशा के लिए सुलझा दिया था–पहले मुर्गी या पहले अंडा ! जब उनका पालतू कुत्ता डार्विन मर गया, तो वह अपने लिए दूसरा कुत्ता लाये और एक छोटा-सा आपरेशन करके उसमें पहलेवाले के स्मृति आर. एन. ए. का प्रतिरोपण कर दिया। दूसरे ही दिन से डार्विन-2 ने अपना सामान्य जीवन जीना शुरू कर दिया (जब वह मुझसे पहली बार मिला, तब भौंकने की बजाय उसने परिचित मित्रता से अपनी दुम हिलायी)।

रूस के निकोलाइ ब्लादिर्मीर, अमरीका के जान ड्रेक, जापान के इकाटो कियोटिवा, मिस्र के पपायानन्पौलौ या जर्मनी के शुत्ज बोमर्ट आदि जैविक रसायनशास्त्र के क्षेत्र में सुप्रतिष्ठित महानुभाव सलाह-मशविरा करने के लिए प्रो. चक्र के पास भागते रहते थे। प्रोफेसर महोदय एक पागल 'वर्कहोलिक' थे। वे अपने दिन और रातें लगातार समस्याओं का चिंतन करने में बिताते थे। घंटों तक वे अपने प्रयोगों के साथ छेड़छाड़ करते रहते, या किताबों तथा कागजों के पर्वतप्राय ढेर में अपने आप को गाड़ देते। अपनी प्रयोगशाला के बाहर की दुनिया से उनका संपर्क टूट चुका था। शायद वे भूल गये थे कि कभी उनकी एक पत्नी थी, और अब उनका एक पुत्र जीवित है।

फिर भी, कभी-कभी प्रोफेसर महोदय जेल सरीखी अपनी प्रयोगशाला से निकलकर बाहर की पतली गली में कदम रखते थे। ऐसे असाधारण क्षणों में, मैं उन्हें नमस्कार करता, अपने मन में उभरे किसी भी विषय पर, उनके मौन के बावजूद उनसे बात करने की कोशिश करता।

'भगवान' जैसी संकल्पना की प्रोफेसर महोदय हंसी उड़ाते थे। जब-जब मैं अपनी सीमित तार्किकता के साथ इस नास्तिक से बहस करने का प्रयास करता, वह तपाक से जवाब देते, "आप धर्म को विज्ञान के सम्मुख लाने की घृष्टता कैसे कर सकते हैं ? अंधेरा भला रोशनी के सामने कैसे टिक सकता है ? तर्क और कल्पना साथ-साथ कैसे रह सकते हैं ? ओह, वो मूर्खता भरी परंपराएं–गंगास्नान, मक्का-हज, बाह !"

जब वैज्ञानिक महोदय अपनी उत्तेजना में शब्दों के लिए अटपटाने लगते मैं मौका पा जाता था ! मैं बहस करता, "आपको पारंपरिक कट्टरता या पाखंड को धर्म समझने की गलती नहीं करनी चाहिए। धर्म तो तार्किकता के परे किसी और तार्किकता पर आधारित है। वह मन की शुद्धता से, जिंदगी के सारे उदात्त मूल्यों से संबंध रखता है। विज्ञान और अध्यात्म परस्पर विरोधी नहीं हैं। दोनों को ही सत्य की तलाश है–अंतिम और संपूर्ण सत्य की। विज्ञान 'कैसे' प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करता है, तो धर्म 'क्यों' का उत्तर देता है।

मेरे अथक प्रयासों के बावजूद, प्रोफेसर मेरी बातों से संतुष्ट नहीं होते थे,

"धर्म तो बस तुम्हारी दुर्बलता तथा कमियों को छिपाने वाला एक पर्दा है।" जिस दिन उन्होंने बुढ़ापे की रोकथाम के बारे में अपना सिद्धांत घोषित किया, उस दिन उन्होंने कहा, "यदि मृत्यु ही तुम्हारा सर्वशक्तिमान भगवान है, तो मैं अपनी प्रयोगशाला के रसायनों की बोतलों तथा परखनलियों से उसका विनाश करने वाला हूं।"

पांचवीं बार नोबल पुरस्कार का सम्मान पाकर भारत लौटते समय हवाई यात्रा के दौरान उन्हें कुछ हो गया। बाह्य रूप में उन्हें अपने पिल्लों को दूध पिलानेवाली मादा हाउण्ड के चित्र ने विचलित कर दिया। वर्षों से सुप्त पड़ा हुआ उनके दिमाग का एक अज्ञात केंद्र अचानक पूर्णरूपेण कार्यरत हुआ और मैमरी पेप्टाइड को विसर्जित करने लगा। धीरे-धीरे, प्रोफेसर को इस चौंकाने वाले सत्य का एहसास हुआ कि वे केवल वैज्ञानिक ही नहीं, अपितु एक पिता भी हैं। कुछ घंटों के बाद मैंने देखा कि वह महान हस्ती मेरी दुकान की तरफ तेजी से बढ़ी आ रही है, तथा उनका मस्तिष्क चिंता की झुर्रियों से भरा हुआ है।

"अर्र... युवक मित्र ! क्या आप... अह्... मुझे बता सकते हैं कि कभी मेरी एक पत्नी और एक बेटा था ?"

मैं सन्न रह गया। यह तो सरासर असामान्य था। कुछ संकुचाहट के साथ मैं बुदबुदाया, "जी हां, जी हां... यह सच है, बिल्कुल सच !"

प्रोफेसर शांत हो गये। वह अपने आपसे बुदबुदाये, 'मैं तो भयानक उपेक्षा का अपराधी हूं। बेचारे... बेचारे... मेरा मतलब... कितने दुख की बात है... और पालतू कुत्ता, और... और... "

"परंतु आपकी श्रीमतीजी अब जीवित नहीं हैं, प्रोफेसर साहब ! वह तो वर्षों पहले गुजर गयीं।" मैंने उनकी आंखों में निराशा का भाव देखा। फिर भी, मैं वह दिन कभी नहीं भूल सका था, जब उनकी पत्नी आखिरी सांसें ले रही थी, और मैं प्रयोगशाला से उन्हें बुलाने के लिए बेतहाशा दौड़ा था। और यह देखकर हैरान रह गया था कि वह पूर्णतः उदासीन, निर्मम स्थिति में अपने प्रयोगों में व्यस्त रहे तथा बाहर निकलने से इन्कार कर दिया था।

"लेकिन आप अपने पुत्र से अपने घर में मिल सकते हैं। अब वह जवान हो गया है, और उसे देखने से आपको बहुत खुशी होगी।"

"घर ?" प्रोफेसर उस शब्द पर कुछ अटपटाये, जैसे उसका अर्थ समझने की कोशिश कर रहे हों।" वह जगह... अर्र... घर... ओह्... मुझे अपने पुत्र से जरूर मिलना चाहिए। प्लीज, क्या आप मुझे घर ले जायेंगे ?"

दूसरे दिन शाम को मैंने मुलाकात की व्यवस्था की। एक विशाल घर के सामने हमारी गाड़ी झटके के साथ रुकी ! पुत्र ने दरवाजा खोला। पूरी सजगता के साथ पोशाक पहने खड़ा एक सुंदर युवक। उसका चेहरा प्रसन्न था और व्यवहार जीवंत एवं मेधावी। प्रोफेसर बाईस साल के लंबे अंतराल के बाद अपने बेटे से मिल

रहे थे। उन्होंने उसे गले से लगाया, उसे अपने नवजागृत वात्सल्य के दृढ़ आलिंगन में बड़े विचित्र ढंग से लिये रखा। फिर अचानक उन्हें अपने एक अधूरे छोड़े हुए प्रयोग की याद आ गयी।

"जाने से पहले मैं अपने पुत्र के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करना चाहता हूं," प्रोफेसर मेरी तरफ़ मुड़े।" पिता पर ही जिम्मेदारी होती है, है न ? मुझे बताओ, मैं इसके लिए क्या कर सकता हूं ?"

मैं झिझका। थोड़ी घबराहट भी महसूस हुई। पुत्र को पैसे की कोई कमी नहीं थी। उसकी शिक्षावाला पक्ष भी काफी तेजस्वी था। किंतु वह अकेला था। उस युवक को सुखी विवाह-बंधन में बांधने का प्रस्ताव मैंने प्रोफेसर जी के सामने रखा।

"अच्छी बात है। मुझे लगता है कि इस प्रसंग में एक लड़की की जरूरत है। तो कृपा करके ले आओ एक, और सम्पन्न कर दो यह कार्य बिना किसी देरी से।"

"परंतु पिताजी, मैं कविता से प्रेम करता हूं। मैं उसके बिना जीवित नहीं रह सकता। अगर मुझे किसी से शादी करनी है, तो मैं उसी के साथ करूंगा।" पुत्र ने आपत्ति की।

"तो फिर करते क्यों नहीं तुम ? ऐसी तुच्छ बातों पर इतना उत्तेजित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। ले आओ उस लड़की को और तुरंत कर लो शादी।"

"ग्रह लड़की... मतलब कविता कौन है ?" मैंने मृदु स्वर में पूछा।

"वह प्रोफेसर साम की बेटी है।"

साम के उल्लेख से प्रोफेसर परेशान हो गये। "आपको पता है, उनके सारे सिद्धांत... कोरी बकवास ! हार्मोनल उत्सर्जन की आण्विक संयंत्रणा की उनकी धारणा, कि कोशिका की नियंत्रणा में सी.ए.एम.पी. एक स्वतंत्र और प्रमुख घटक के रूप में कार्य करता है, सरासर गलत सिद्ध हुई थी, जब मैंने कोशिका में सायक्लिक ए.एम.पी., काल्मोडयुलिन, और फास्फेट पर निर्भर सी. कायनेज का संतुलित पारस्परिक सहयोग दर्शाया था। बुढ़ापे के बारे में भी उनका सिद्धांत एक बकवास था। बुढ़ापे का नियंत्रण जेनेटिक स्तर पर होने की बात मैंने ज्यादा अच्छी तरह से दर्शायी थी। डी.एन.ए. के सामान्य 'बी' रूप से एक नये प्रकार के 'एस' रूप की तरफ उसकी संरचना धीरे-धीरे बदलती जाने से शरीर में बुढापे की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। यही तो मूलाधार है जिस पर मैंने 'एंटिसेनिलिटी बैकसीन' बनाया है। ऐसी गलत धारणाओं के आदमी की बेटी को भी उत्तराधिकार में अच्छे गुण नहीं मिल सकते हैं। मैं चाहता हूं कि मेरा बेटा एक ऐसी लड़की से शादी करे, जो सर्वथा परिपूर्ण हो। नहीं ! कविता मेरे बेटे के योग्य जीवनसंगिनी कभी नहीं हो सकती," प्रोफेसर ने घोषित किया और वह अपनी प्रयोगशाला की कोठरी में वापस दौड़ पड़े।

वीडिओफोन की चीख ने मेरे दोपहर के आराम को भंग कर दिया। स्क्रीन पर प्रोफेसर का चेहरा देख मुझे आश्चर्य हुआ। उन्हें फिर अपने बेटे की याद हो आयी थी और वह उससे मिलने के लिए बेचैन थे। उनके दिमाग के सुनसान कुहरों में प्यार की घंटी फिर से बज उठी थी।

किंतु हम यह देखकर हैरान रह गये कि इस बार हम एक बिल्कुल उदास युवक से मिल रहे थे। वह पुराना उत्साह, वह मिलनसार व्यवहार, वह तेजस्वी आशावाद... सब गायब था। सिसकियों के बीच वह हमें बताने में कामयाब हुआ कि उसकी प्रेमिका कविता अब इस दुनिया में नहीं रही। वियोग का आघात उससे बेचारी से सहा नहीं गया था और उसने अपने जीवन का अंत कर लिया था। प्रोफेसर का पुत्र अब दुनिया में अकेला तथा मित्रविहीन रह गया था।

उसकी कहानी सुनकर मेरे हृदय को काफी आघात लगा। प्रोफेसर भी अचंभित हुए। वह उचित शब्दों के लिए छटपटाये और अंत में बोले कि वह कविता से हजार गुणा अधिक सुंदर लड़की का निर्माण करेंगे जो कहीं अधिक बुद्धिमान भी होगी। वह अपने बेटे की झोली फिर से खुशियों से भर देंगे।

* * *

दूसरे दिन जब मैं प्रोफेसर के यहां गया, तब मैंने उन्हें एक कमरे में, जिसका तापमान 37° सेल्सियस रखा गया था, तरह-तरह के रसायनों का इस्तेमाल करते हुए पाया। वह धूर्त वैज्ञानिक एक माइक्रोस्कोप से झांक रहा था और अपने आपसे बड़बड़ाता भी जाता था : "डिम्ब (ओवम)... यही है वह चीज...ये निकला। एक्स-वाई... ओह्, नहीं ! एक्स-एक्स वाले मानवीय जेनोम के रिकांबिनेंट्स को मैंने बना लिया। यह महिला बनेगी, है न ? यहां सर्वोत्कृष्ट जीन्स मौजूद हैं। और... और... " माइक्रोस्कोप से दिखने वाली किसी विशिष्टता में वह खो गये और उनका बड़बड़ाना भी बंद हो गया। मैं चुपके से वहां से खिसक गया, हैरानगी और संकुचाहट में।

दूसरे दिन मैंने झूले पर खेलती हुई एक छोटी-सी प्यारी-प्यारी लड़की देखी। आश्चर्य से मेरा मुंह खुला रह गया... प्रोफेसर साहब को कमरे के आखिरी सिरे पर देखा। प्रश्नों की बौछार करते मैं उनकी ओर दौड़ा : "कहां मिली यह आपको ? मैंने इतनी सुंदर लड़की कभी नहीं देखी ? इसकी मां कहां है ?" मेरी आवाज कांपते-कांपते अवरुद्ध हो गयी। अचानक मुझे एहसास हुआ : "आप इस बच्ची का क्या करने वाले हैं ? क्या वह... क्या उसका संबंध वि... विज्ञान से, मतलब किसी प्रयोग से है ?"

प्रोफेसर रहस्यमय ढंग से मुस्कराये और एक क्षण के लिए मौन रहे। "जी

हां, यह विज्ञान है, यह प्रयोग है। परंतु यह जीवन भी है। मैं जीवन के साथ प्रयोग कर रहा हूं।"

"पर कैसे ? कौन ? वह... वह बच्ची ?"

"मेरी बहू, मेरे पुत्र की वधू।"

"आपकी... आपकी क्या ?"

प्रोफेसर मुस्कराये। यह दूसरा प्रसंग था, जब मैंने उनके होंठों को मुस्कराने की मुद्रा में देखा था। मैं हैरान हो गया। प्रोफेसर ने कहा, "मैं समझाता हूं, हालांकि मेरे पास बातों के लिए वक्त नहीं है। यह मेरी ही बहू है। परंतु किसी भी भगवान ने इसे अस्तित्व प्रदान नहीं किया है। इसे मैंने बनाया है, सुना आपने ? जानते हैं, यह कैसे हुआ ?"

प्रोफेसर ने कहना जारी रखा, "प्रारंभ हुआ एक डिम्ब से, स्त्री की जर्म कोशिका जो बहुगुणित होती है। मैंने उसका न्यूक्लियस निकाल दिया और उसकी जगह स्थापित किया एक दूसरा न्यूक्लियस, जिसमें खास चुने हुए जीन्स थे। मुझे अपनी बहू को सबसे सुंदर, बुद्धिमान, और अलौकिक बनाना था, है न ? मुझे अपने बेटे को फिर से सुखी करना था, हमेशा के लिए सुखी। मैंने, इसलिए, सर्वोत्कृष्ट जीन्स की संरचना की... गोरा वर्ण, लंबे काले बाल, सुंदर आंखें, आवाज वगैरा-वगैरा। यह सब कुछ रिकंबीनेंट डी.एन.ए. तकनीक से संभव हुआ। मैंने अपनी प्रयोगशाला के भंडारगृह में चुनिंदा मिश्रित जीन्स का ढेर रखा हुआ है, जिससे मैं चुन सकता था... उन्हीं से मैंने बनायी है, एक महिला। फिर मैंने उस हाईब्रीड कोशिका को एक पोषक द्रव्य में रख दिया। जल्दी ही वह बहुगुणित होकर एक प्रारंभिक गर्भ के रूप में बदल गयी। इसके बाद, मैंने उसे उचित भौतिक तथा रासायनिक वातावरण के एक कक्ष में रख दिया। आप इस कक्ष को एक... अर्र... कृत्रिम गर्भाशय कह सकते हैं, अगर आपको इस तरह उसे संबोधित करना अच्छा लगे। उस गर्भ का एक मानवीय बच्चे में परिवर्तन हो गया, और बिल्कुल कल रात... मैंने उसे कक्ष से बाहर निकाल लिया। आप कह सकते हैं कि मैंने प्रसव करवाया... हा... हा।" प्रोफेसर साहब सस्वर हंस पड़े, जो उनके व्यक्तित्व के अनुरूप नहीं था। मैंने भी हंसने का प्रयास किया। परंतु मेरे सूखे गले से कोई आवाज नहीं निकली।

"पर वह चीज... हे भगवान ! नहीं, मेरा मतलब, वह लड़की तो कोई नवजात शिशु नहीं है, जिसका आपके हाथों कल रात को ही प्रसव हुआ था। वह तो अब दो साल से कम आयु की नहीं दिखती है।" मैं थोड़ा हिचकिचाते हुए बोला।

"देखिये, मैंने समय को निचोड़ा है।" मेरे भ्रम को बढ़ाते हुए प्रोफेसर फिर से उसी विपरीत ढंग में हंस पड़े। "मैं थोड़ा और समझाता हूं। शरीर में उत्सर्जित होनेवाले कई पेप्टाइड्स होते हैं, जो वृद्धि को सम्पन्न करते हैं। जैसे कि प्लेटेलेट डिराइव्ड ग्रोथ फैक्टर (पी.डी.जी.एफ.), एपिडर्मल ग्रोथ फैक्टर (ई.जी.एफ), बी सेल

ग्रोथ फैक्टर (बी.सी.जी.एफ), इंटरल्यूकिन्स प्रथम और द्वितीय, नर्व ग्रोथ फैक्टर (एन.जी.एफ.) आदि। शरीर में ये विविध स्तरों पर संतुलित रूप में कार्यरत होते हैं और कोशिकाओं की स्वाभाविक वृद्धि को नियंत्रित करते हैं। उनकी क्रिया का तरीका भी समान रहता है। रासायनिक तौर पर, ये प्रोटीनों के टायरोसिन ऐमिनोएसिड्स में फास्फेट ग्रुप्स को मिलाते हैं, तथा साथ ही साथ उनको कोशिकाओं की झिल्ली में रहने वाले फास्फेटिडायलिनोसिटोल रेसिडयू में भी मिलाते हैं। और इस तरह कोशिका विभाजन करानेवाली प्रक्रियाओं की शृंखला को उत्तेजित करते हैं।... आह् ! आप नहीं समझ पायेंगे। आपके लिए यह सब बहुत कठिन है," प्रोफेसर कुछ रुके ! "मुझे मुद्दे की बात कहने दीजिए। इन सब ग्रोथ पेप्टाइड्स की क्रियाओं तथा संश्लेषणों को विभिन्न पेचीदा साधनों के द्वारा नियमित करनेवाले जीन्स होते हैं आन्कोजीन्स। कैंसर में आन्कोजीन के हाथों से यह लगाम छूट जाती है और कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि होती रहती है। अब, मैं आन्कोजीन्स पर लगाम लगाने में कामयाब हो गया हूं और इसके लिए मैंने उनके आधारों को उल्टा कर दिया है। अतः मैं उनको अपने इशारे पर नचा सकता हूं, अर्थात् मैं ग्रोथ पेप्टाइड्स की क्रिया को पूरी तरह नियंत्रित कर सकता हूं, जिसके फलस्वरूप मैं शरीर की कुल वृद्धि को ही नियंत्रित कर रहा हूं।

"अब आप समझे होंगे कि मैं जीन्स के स्तर पर काम करता हूं। यह तो किसी कार के स्टियरिंग वील को पकड़ने जैसी बात है। आन्कोजीन्स का नियंत्रण मेरे हाथ में होने से मैं वृद्धि की गति को तेज कर सकता हूं या उसको स्थिर भी कर सकता हूं। मैं जो यहां डोरियां खींचने वाला हूं ! मैं किसी बच्चे को दस घंटों में दस साल की आयु का वरदान दे सकता हूं, या शायद दस मिनटों में भी... हा, हा... हां, एक बात है, इसमें कुछ सीमाएं भी हैं, जैसेकि कार के लिए एक सुरक्षित गति सीमा होती है, जिसके आगे कैंसर जैसी दुर्घटनाएं लगभग अनिवार्य हैं।"

यदि प्रोफेसर मनुष्य को सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी और अपने भाग्य का स्वयं निर्माता बनाने के अपने वैज्ञानिक प्रकल्प में कामयाब हो गये... यह विचार ही हिला देने वाला था। शायद मैं जीवन के प्रारंभ से आज तक के सृष्टिचक्र के सबसे महान क्षण का साक्षी था। दूसरा आगमन...

"पर खतरे, गलत गणनाएं, कुछ प्रायोगिक कमियों आदि का क्या ? क्या वह बच्चा नष्ट नहीं होगा ?"

"इसके विरुद्ध," प्रोफेसर ने जवाब दिया," हर असफलता से मैंने कुछ पाया है। असफलता तो प्रयोग की गलतियों तथा कमियों को उजागर करती है। मैं फिर से प्रारंभ कर सकता हूं, सफलता की और अधिक आशा के साथ। अंततः जीत मेरी ही होगी !"

जब प्रोफेसर प्रयोग की सफलता तथा असफलता के बारे में बता रहे थे, मैं जीवित मनुष्यप्राणियों के भाग्य के बारे में सोच रहा था। अगर प्रयोग असफल रहा तो वे समूल नष्ट हो जायेंगे। प्रयोग फिर से पुनः किये जा सकते हैं, और तो और, नये सिरे से मानवीय रूप भी फिर से जीवन से प्रेरित करके बनाये जा सकते हैं... परंतु प्रयोग के दरम्यान जो 'मर जाते हैं', उनका क्या ? क्या प्रोफेसर साहब ने स्वयं जो जीवन-ज्योति जलायी है, उसे बुझाने का अधिकार उन्हें है ? अगर प्रोफेसर कामयाब हुए, तो नैतिक तथा स्थायी कानूनों को फिर से लिखना पड़ेगा। क्या हम सब कुछ वैज्ञानिकों के हाथों में सौंप सकते हैं, जो मनुष्य के दैव को जेनेटिक टूल्स तथा नयी तकनीक के जरिये लिख सकते हैं, बदल सकते हैं या मिटा सकते हैं ?"

दूसरे दिन जब में प्रयोगशाला में गया, तब मैंने पीछे से मीठी-मीठी ध्वनि में "गुड मार्निंग, अंकल" सुना। चौंककर मैं पीछे मुड़ा। और, उसी तरह जड़ रह गया ? वहां, मेरे सामने खड़ी थी दुनिया की सबसे सुंदर स्त्री, 17-18 वर्ष की साक्षात परी की सुंदरता ! क्या यह वही थी, जो कुछ घंटे पहले खिलखिलाती और चहचहाती हुई छोटी लड़की थी ?

प्रोफेसर महोदय कामयाब हो गये थे। उन्होंने सचमुच प्रयोगशाला में अपनी बहू बनायी थी। उन्होंने अपने पुत्र के भाग्य का पुनर्लेखन किया था। और मैंने अपनी आंखों से भगवान की पराजय देखी थी...

* * *

हम उनके पुत्र से मिलने जा रहे थे तब मैंने अपना अंतिम प्रश्न पूछा–यह सारा प्रयोग केवल एक डिम्ब से शुरू हुआ था, अर्थात् डिम्ब एक अनिवार्य घटक था, जिसके लिए मनुष्य अभी भी प्रकृति पर निर्भर था।

प्रोफेसर ने यह कह कर मेरी बात काट दी, "भविष्य में मुझे डिम्ब की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि मेरे कुछ प्रयोगों के परिणाम, कुछ संकेत सही रहे हैं तो यह बात निश्चित है। मुझे बस कुछ रसायनों की जरूरत होगी। रसायनों के मिश्रण के अतिरिक्त मनुष्य और कुछ भी नहीं है। निर्जीव रसायनशास्त्र से सजीव का अस्तित्व विकसित करने के लिए आपको किसी दैवी स्पर्श की जरूरत नहीं है। जड़ रसायनों के पोखरें में मैं जीवन का अमृत मिला दूंगा, और एक कोशिका जन्म लेगी... मनुष्यनिर्मित कोशिका..."

प्रोफेसर ने अपनी 'परखनली वधू' को अपने अचम्भित पुत्र को सौंप दिया। उन्होंने प्यार से उसका नाम 'एक्स-85' रखा था, क्योंकि 'एक्स' उनकी जीन लाइब्रेरी का कोड नंबर था और 85 उस वर्ष का, यानी कि 2085 ईसवी का, संकेत था।

दोनों के प्रति संपूर्ण सुख की कामना करते हुए, वह अपने प्रयोगों के पास लौट पड़े।

* * *

कुछ महीनों के बाद प्रोफेसर ने अपने पुत्र को फिर याद किया। वह पति-पत्नी को देखना चाहते थे। हमेशा की तरह मैं भी साथ में चला।

परंतु सब कुछ ठीक नहीं था। दरवाजा खोलने वाला युवक एक फटीचर जैसे दिखता था। बढ़ी हुई दाढ़ी से ढंके गाल, सूखी आंखें और दुबला शरीर। क्या ? क्या 'एक्स 85', इन्सानियत की महानतम उपलब्धि, केवल एक इन्सान को भी सुखी नहीं कर सकी थी ?

"पिताजी, आप दूसरी कविता को कभी निर्मित नहीं कर पायेंगे, कदापि नहीं ! आप अनगिनत जेराक्स-कापीज बना सकते हैं, परंतु मूल प्रति कदापि नहीं। आपकी 'एक्स 85' मशीन मात्र मूल प्रति की एक विडंबना थी। उसके पास कविता की सुंदरता तथा उसका चातुर्य जरूर था, परंतु उसका दिल नहीं। मुझे पता है आप दिल पर विश्वास नहीं करते हैं। 'एक्स-85' मुझसे प्रेम नहीं करती। उसने मेरी जिंदगी को नरक बना दिया है। हर एक गुजरते दिन के साथ यह सब अधिकाधिक दुखदायी बन रहा है। अनेक बार, उसने मेरी अपेक्षा किसी दूसरे आदमी को पसंद किया है।"

मैं प्रोफेसर साहब की ओर मुड़ा। वे शून्य और असहाय दिख रहे थे। वे अपने आप बुदबुदाये, "पर... मैं क्या कर सकता था ? क्या भाव-भावनाओं के जीन्स होते हैं ? मैं कैसे भरोसा दे सकता था कि मेरी खोज 'एक्स-85' उससे कविता की तरह प्यार भी करेगी ?"

"परंतु आप एक काम कर सकते थे, प्रोफेसर साहब। आप अपने निकट पड़ोसी भगवान से, अनुरोध कर सकते थे कि वह आपको प्यार भरे दिल का एक नमूना दे दे, जिसे उसने अपनी उद्योग व्यवस्था में किसी गुप्त फार्मूले से बनाया हो, वह फार्मूला, जिसे आप कभी नहीं जान पायेंगे"—मैं यह सब कुछ बताना चाहता था धरती के उस महानतम वैज्ञानिक को, जिसे पांच बार नोबल पुरस्कार प्राप्त हो चुका था, पर मैंने कुछ नहीं कहा।

वापसी के समय, प्रोफेसर विचलित दिख रहे थे। "क्या जेनेटिक स्तर पर भावनाओं को नियंत्रित किया जा सकता है ?" उन्होंने किसी विशिष्ट व्यक्ति को संबोधित न करते हुए ऐसे ही पूछा, "क्या वे नानकोडिंग बेमतलब जीन्स—क्या न्यूक्लियस में बैठे वे 90 प्रतिशत जीन्स—वे सचमुच 'बेमतलब' हैं ? क्या उनका कोई कार्य नहीं है ? या वे बड़ी चतुराई से हर एक हस्ती के व्यक्तित्व का तथा

भावनात्मक संगठन का ढांचा बना लेते हैं अप्रत्यक्ष रूप में किसी प्रोटीन के अनकोडिंग के बिना ? शायद ! शायद इन जीन्स की कार्यवाही के बारे में वातावरण और समाज का कुछ योगदान होगा। यह तथाकथित 'बिहेवियरल जेनेटिक्स' क्या प्रदेश है, जिसके बारे में मैंने कभी ज्यादा सोचा नहीं था ? क्या दिमाग में स्थित अनगिनत षड्यंत्रकारी पेप्टाइड्स, जो बगैर किसी जीन्स के, इंजायमेटिकली संश्लिष्ट होते हैं, क्या वे इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ? ओह् ! मैं नहीं जानता, मैं कभी नहीं बता सकता !" प्रोफेसर ने असहायता से मेरी तरफ देखा। किंतु मैं भला उनके चेहरे पर उभरी व्यथा को कैसे शांत कर सकता था ?

"ओह् ! अगर मैंने 'एक्स-85' को प्यार, ममता, सब्र और धैर्य, ईमानदारी और नम्रता और ढेर सारे मानवीय सद्गुणों से अनन्त काल तक पकाया होता... अगर मैं उसे किसी वातावरण में रख सकता, किसी समाज में रख सकता, जो उसे जीवन के सद्गुणों को अपनाना सिखाते, तो बात कुछ और होती... शायद उसके जीन्स को वह उपयुक्त बना पाता। जीन्स शायद वातावरण से आंतरिक प्रक्रिया शुरू करते, जिसके फलस्वरूप एक उदास मानवीय आकृति पर किसी पूर्ण-विकसित व्यक्तित्व का आरोपण हो जाता। क्या यही, यही वह 'दैवी स्पर्श' है, जिसका जिक्र आपने किया था ?"

मैंने मौन रहना उचित समझा। सहसा प्रोफेसर भी मौन हो गये। मैं उनकी तरफ देखने के लिए मुड़ा। उनकी आंखें मूंदी थीं, तथा चेहरा निर्विकार। प्रोफेसर किसी ऋषि की मुद्रा में ध्यानमग्न थे।

क्या कोई उनके प्रश्नों का उत्तर देगा ? शायद ईसवी के 2185 साल में किसी दिन कोई 'भगवान' का सामना करेगा। मैं नहीं जानता...

**अंग्रेजी से निशिकान्त मिरज़कर द्वारा अनूदित**

# एक समय में दो बार

मुकुल शर्मा

बीता हुआ कल फिर पांच मई होगा। अब समय शेष नहीं है। इससे पहले कि वह कल फिर दौरे पर निकल जाये—आज ही मुझे सब कुछ उसे बता देना है। मैं अपने डबल-बेड से उठती हूं। अपनी पीली पड़ी हुई हथेलियों को देखकर मेरा भविष्य मेरी आंखों में कौंध रहा है और मैं हाल में खूंटी पर टंगा अपना गाउन उठाकर पहन लेती हूं।

मेरा पति सदा की तरह मेज के सिरे पर बैठा अखबार पढ़ रहा होगा। मैं मन में अपराध बोध लिये भीतर आती हूं। मेरे बाल खुले हुए हैं और दिल जोर-जोर से धड़क रहा है कि इस बात का पता लग जाने पर मेरा संस्थान कितनी शर्मिंदगी महसूस करता था—मेरा मतलब है महसूस करेगा। क्षण भर में हमेशा की तरह मैं उसकी बगल में बैठ जाऊंगी और उसे कोई विज्ञान-कथा सुना रही हूंगी।

"मैं तुम्हें कुछ बताना चाहती हूं," मैं कहती हूं।

खामोशी।

"मैंने कहा, मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूं।"

"क्या ?" बिना अखबार हटाए उसका उत्तर।

"मेरा किसी से 'अफेयर' हुआ था।"

"हूं SSS। कब ?"

"कल। मेरा मतलब है कल जो आयेगा।"

उसका सिर 'टाइम्स' के ऊपर उठता है। उसकी कटाक्ष की मुद्रा भी उसकी एक्जिक्यूटिव जीवन शैली के अनुरूप है।

"अच्छा," वह धीरे से कहता है। "कौन है वह खुशनसीब जिससे तुम्हारा 'अफेयर' होगा ?"

"होगा नहीं, हो चुका है।"

"कब हो चुका है ?"

"मैंने बताया ना—कल। कल जो आने वाला है!" उस पर किसी समझदार रोबट जैसी प्रतिक्रिया हुई है। वह अपनी उलझन पर क्रुद्ध रहा है!

"क्या ?" बस इतना भर वह चीख सकता है।

"हां," अपने स्वर को कतई भावुक बनाए बिना मैंने सीधे-सादे ढंग से कहा—"मैं काल-यात्री हूं।"

बस, अब वह मेरी ओर देखने वाला है। उसकी बौखलायी, अविश्वास भरी पैनी नजर मेरी सपाट आंखों में कोई अर्थ खोजना चाहती है। वह सदा मेरे प्रति निष्ठावान रहा है।

"लेकिन हम पिछले आठ वर्षों से शादीशुदा हैं !" वह गुर्राया।

"क्या मैं तुम्हें सब कुछ साफ-साफ बता सकती हूं ? इससे हो सकता है तुम्हें बात को समझने में मदद मिले।"

"हां, जरूर बताइए।" उसके चेहरे पर फिर वही कटाक्ष उभर आया है।

और तब, बस एक सांस में मैं वह सब बता देती हूं।

"मैं आज से करीब साढ़े तीन सौ वर्ष बाद की दुनिया से आयी हूं। मैं व्यावहारिक मानव कालक्रम विज्ञान संस्थान में काम करती हूं जहां हम मुख्य रूप से अतीत के मानव समाजों का अध्ययन करते हैं। इस छमाही सत्र में मेरे अध्ययन का विषय है—'बीसवीं सदी के अंतिम भाग में अर्धविकसित देशों में जोड़ा बनाने के व्यावहारिक माडल।' इस विषय पर शोध-प्रबंध तैयार करने के लिए मेरे पास एक ही विकल्प था कि मैं नाभिकीय परिवार में शामिल हो जाऊं। तुम तो जानते ही हो, जैसे तुम्हारा मानव विज्ञानी मार्गरेट मीड भी तो रहा था... "

"एक मिनट रुको !" उसने तेजी से मेरी बात को काटते हुए कहा, "क्या तुम्हारी इस बात में विरोधाभास नहीं है ? अगर तुम समय में पीछे लौटकर मेरे जीवन से खिलवाड़ करो तो क्या उससे इतिहास नहीं बदल जायेगा ? मेरा मतलब है—अगर तुम भविष्य से नहीं आतीं तो मैं शायद किसी और से शादी करता और उसके बाद सब कुछ बिल्कुल अलग तरह से होता।"

"नहीं, ऐसा नहीं होता।" मैं जैसे थककर कहती हूं, "काल-यात्रा का विरोधाभास यहां लागू नहीं होता क्योंकि इतिहास में तुम्हीं पहले व्यक्ति थे जिसने एक काल-यात्री से सचमुच शादी की और इतिहास को बदला। चौबीसवीं सदी में हमारे लिए यह घटना एक ऐतिहासिक तथ्य है।"

"तो वे तुम्हारी प्यार भरी बातें... प्रणय निवेदन... शादी... रोमांटिक हनीमून... सब कुछ केवल ढोंग था ? इस पूरे समय में क्या मैं तुम्हारे लिए महज एक मोहरा था ?"

उसे दुख पहुंचा है। अगर मैंने अपने निर्देशांकों के साथ सावधानी बरती होती तो ऐसा न होता। अब इसे और अपने संस्थान—दोनों को ही अपनी सफाई देना मेरी जिम्मेदारी है।

"हां, मैं कह रहा था—वह खुशनसीब आदमी कौन है और कल किस तरह

उससे तुम्हारा 'अफेयर' होगा ?"

उसने मेरी बात पकड़ ली है। मैं समझ नहीं पा रही थी कि यह सब उसे समझाऊं। मैं जानती हूं, यही होना था। और, अब यह होगा ही। मैंने सोचा, अच्छा यही रहेगा कि यह बात पहले उसे समझा दूं।

"ऐतिहासिक दस्तावेजों पर एक सरसरी निगाह डालने पर पता लगा कि... " मैंने कहना शुरू किया। "तुमसे मिलने के लिए मुझे अतीत में 4 मई 1980 को आना होगा और क्लब के जिस स्विमिंग पूल में तुम तब तैर रहे होगे उसके खाली स्नानघर में मुझे प्रकट होना होगा ताकि जब मैं तुम्हारे सामने आऊं··· "

"...तो मैं क्लब में बिकनी पहने हुए एक अनजानी खूबसूरत लड़की के पहली बार दर्शन करके उस पर आसक्त हो जाऊं और हफ्ते भर में उसके सामने शादी का प्रस्ताव रख दूं।"

"बिल्कुल सही। विचार तो यही था लेकिन मैंने अपने निर्देशांकों को चलने से थोड़ा पहले ही सेट कर दिया था। इस कारण मैं बिकनी पहने, रात के साढ़े ग्यारह बजे एक होटल के बरामदे में 5 मई 1988 को प्रकट हो गयी। सौभाग्य से उस समय किसी ने मुझे वहां प्रकट होते हुए नहीं देखा। लेकिन, उस पोशाक में तो वहां मैं टहल नहीं सकती थी, इसलिए मैंने सबसे नजदीक के दरवाजे की घंटी बजायी। एक आदमी ने दरवाजा खोला और..."

"और, मेरा खयाल है, तुम फौरन उसकी बांहों समा गयी।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। वह असल में किसी कालगर्ल का इंतजार कर रहा था। और, जब उसने मुझे रात में उस समय वैसी पोशाक में देखा तो बस भीतर घसीट लिया। और, तुम सोच ही सकते हो कि..."

"फिर क्या हुआ ?"

"मैंने अपने निर्देशांकों को पुनः सेट किया और वह सो ही रहा था कि मैं 1980 की ओर चल पड़ी।"

"और उसके बाद तुमने उसे नहीं देखा ?"

"नहीं। तब से नहीं देखा।"

खामोशी। लेकिन, खामोशी उसे पसंद नहीं आयी।

"असल में, एक तरह से उस रात की घटना के बाद मैं तुम्हारे प्यार का दूसरा शिकार हूं—वह अंतिम रूप से कहता है। शक्की कहीं का !

"नहीं," मैं पहली बार गुस्से में जवाब देती हूं। "इसे तुम दूसरा प्यार नहीं कह सकते क्योंकि सच पूछो तो तब तुम्हारे साथ मेरी शादी नहीं हुई थी। अगर जानना ही चाहते हो तो असल में एक समय में दो बार तो प्यार तुमने किया है।"

"मैंने ? ऐसा तुम कैसे कह सकती हो ?" वह आश्चर्य से बोला। उसे झटका लगा।

"इसका पता तुम्हें कल लगेगा डार्लिंग, जब तुम रात भर के लिए होटल में रुकोगे !" मैं जवाब देती हूं।

और भी अधिक खामोशी।

**अंग्रेजी से देवेंद्र मेवाड़ी द्वारा अनूदित**

# पुनरागमन

आर. एन. शर्मा

मौसम की पहली बर्फ पड़ने लगी थी जिसने भोर को और भी ठंडा बना दिया था। मृत्यु के समीप पहुंचे हुए उस व्यक्ति में एक पल के लिए जैसे जीवन लौट आया लेकिन केवल असहनीय वेदना का अनुभव करने के लिए। आसपास की चमड़ी के कटने-फटने और सूजने के कारण उसकी आंखें बंद हो चुकी थीं, जिन्हें खोलने में उसे बहुत कठिनाई हो रही थी। बड़ी मुश्किल से उसने आंखों की दरारों से दूर कमांडेन्ट की खिड़की में रखे छोटे नकली बोनसाई क्रिसमस के पेड़ को देखा जिसे लाल-पीले मनकों की लड़ियों से सजाया गया था, जो अब बर्फ से ढंकता जा रहा था। तभी दर्द की तेज लहर उठी और उसने अपनी आंखों को बंद कर लिया और बेहोशी के आलम में डूब गया। उसका रोयां-रोयां उन अत्याचारों की कहानी कह रहा था जो उस पर किये गये थे। और वह बार-बार भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि वह मेहरबानी कर उसकी बात सुन ले और अपने ऊपर हुए इस अमानवीय अत्याचार का बदला लेने का एक मौका उसे दे दे।

जान राडावन्स्की, पोलिश यहूदी, आयु 28 वर्ष, कैम्प सदस्य नं. 628349673 की अगले ही पल मृत्यु हो गयी और उस समय दर्द से विकृत हुए उसके होंठों पर शाप के साथ-साथ प्रार्थना भी थी। ऑशविट्ज में न जाने कितने लोग मारे गये। कुछ को गैस के चैंबर में मारा गया, कुछ को बुरी तरह पीटा गया और बहुत से लोग भूखे ही मर गये। कुछ के मुख से आर्तनाद निकला, कुछ लोगों की चीखें निकलीं और कुछ चुपचाप मर गये। लेकिन ऐसा कोई भी नहीं था जिसकी मृत्यु ऐसी मर्मांतक यंत्रणा की मौन-चीख हो जिसे पाने के लिए जान एडावन्स्की को दो अकथनीय यातना भरी रातें बिताने की अग्निपरीक्षा देनी पड़ी। वह भी किसलिए ? एक फ्रांसीसी वेश्या को खुश करने के लिए। मानवीय त्वचा के बने पर्स का तोहफा देने के लिए।

किसी ने डिप्टी कमांडेन्ट ओ एस एस (गेस्टापो), कर्नल विल्हेम ब्रान्ड्ट को बताया कि जीवित सूअरों की उतारी गयी खाल अद्वितीय होती है। अपनी फ्रांसीसी

रखेल को, जो उन्हें पेरिस में मिली थी, कर्नल ब्रान्इट ने एक विलक्षण और अद्वितीय उपहार देने का निश्चय किया था। गौरे-चिट्टे पोलिश यहूदी को देखकर उसे लगा कि वही उस उपहार के लिए सर्वथा उचित पदार्थ था। कर्नल हेर ब्रान्ड्स को इस बात पर नाज था कि वह असंभव को संभव बना सकता है। कैदी तब तक जिंदा और होश में रहा जब तक कि उसके शरीर से खाल की आखिरी कतरन तक नहीं उतार ली गयी। 'आपरेशन-हाइड' के दौरान उस यहूदी द्वारा किये गये शोर और गाली-गलौच के लिए पिटाई करना और फिर सलीब पर ठोंककर उल्टा लटका देना तो बहुत मामूली से दंड थे।

उसकी खिड़की के सामने, कोई 50 मीटर की दूरी पर जब जान राडावन्स्की ने, सारी सृष्टि और सारे ब्रह्मांड से एक बार फिर जन्म लेने की अनुनय-विनय करते, अंतिम सांस ली तो उस रात कर्नल ब्रान्इट चैन की नींद सोया। कर्नल ब्रान्इट के एक खुशामदी और प्रमुख कार्यवाहक और सहायक, मैक्स युरगेन ने कर्नल के सोकर उठने और उस दिन के एपाइंमेंट्स और बहलाव के विषय में पूछने से पहले ही राडावन्स्की को वहां से हटाकर दफना दिया था।

निर्जन धरती पर बर्फ लगातार गिर रही थी।

*　　　　*　　　　*

अविनाश अभ्यंकर, एक गोरे-चिट्टे, पांच फुट छह इंच लंबे 34 वर्षीय एक भारतीय नागरिक और व्यवसाय से अध्यापक भारतीय गणराज्य के आर्द्र महानगर बंबई से नवंबर की एक ढलती मनहूस दोपहर को संघीय जर्मनी गणराज्य में म्यूनिख की भूमि पर आकर उतरे। वर्षा के हल्के छींटों ने हवाई अड्डे की भारी कांच की खिड़कियों को ढंक लिया था। प्रोफेसर ने म्यूनिख यूनिवर्सिटी के अपने मेजबान की तलाश में इधर-उधर निगाह दौड़ायी। किसी का भी ध्यान उनकी ओर नहीं था। लगता था, फ्रेंकफर्ट तक की एयर-इंडिया की उड़ान में हुई देरी की कीमत उन्हें कुछ कीमती डॉयश मार्क (डी एम) खर्च करके चुकानी पड़ेगी। निराश होकर उन्होंने अपना बैग उठाया और एक प्रतीक्षारत टैक्सी की ओर बढ़ गये। कुछ ही पलों में उनकी टैक्सी श्रेष्ठ जर्मन ऑटोवाह्न की सुखदायी परचों पर भागी जा रही थी। यूनिवर्सिटी के पते पर, एक शानदार गॉथिक भवन में पहुंचकर, वह जल्दी ही अपना सब संत्रास भूल गये और यहां तक कि अपने मेजबानों के सौहार्द और भावपूर्ण स्वागत को देखकर वह 16 डी एम का टैक्सी का बिल अदा करने की तकलीफ भी भूल गये। डा. अभ्यंकर केवल एक सप्ताह की संक्षिप्त यात्रा पर आये थे। यहां उन्हें जीन पुनर्संरचना पर होने वाली एक कान्फ्रेंस में भाग

लेना था। इस क्षेत्र में उनका बहुत महत्वपूर्ण योगदान था जिसने उनके लिए बहुत कुछ जुटाया था, जैसे नाम, जर्मन सह संबंधी और ऐसे अच्छे मेजबान दोस्त, जर्मन गणराज्य से पाया वहां आने जाने के लिए यात्रा-टिकट और भारतीय रिजर्व बैंक की बंद मुट्ठी से पांच दिनों का भत्ता (सरकारी तौर पर उन्हें शनिवार-रविवार को भूखे पेट रहना चाहिए था)। डा. अभ्यंकर जल्दी ही उच्चस्तरीय बातचीत, कान्फ्रेंस, बीयर और सौजन्यता के दौर में डूब गये। अपना पेपर पढ़ने, गपशप लगाने, खाने और पीने से परितृप्त होने के बाद, डा. अभ्यंकर ने दो दिन अपने भ्रमण के लिए सुरक्षित रखे। इस तरह घूमने का उन्हें बहुत शौक था और इसके लिए वह अपने एफ टी एस के 500 डालर भी खर्च करने को तैयार थे। वह कई जगह गये, सुपरमार्केट भी देखे। भूमिगत रास्तों से यात्रा की और जर्मनी ऑटोमेट्स का आनंद लिया। उन्होंने कुछ सैक्स-शाप्स में भी ताक-झांक की, लेकिन ऐसे समय वह एक अपराधभाव से घिरे हुए, बराबर इस बात का ध्यान रखते रहे कि कहीं कोई धीर-गंभीर जर्मन मित्र उन्हें ऐसा करते देख न ले। डा. अभ्यंकर को म्युनिख आए केवल तीन दिन हुए थे, लेकिन वह सब कुछ उन्हें अपना सा लग रहा था जैसे कि बत्तख को पानी में लगता है। ऐसे ही एक दिन तरंग में इधर-उधर घूमते हुए वह रास्ता भूल गये। अगला दिन उनके प्रवास का अंतिम दिन था। उनकी दशा कुछ-कुछ शोचनीय हो गयी थी क्योंकि आकाश में काले बादल थे और हल्की बूंदाबांदी लगातार जारी थी। वह अपने नये जर्मन प्लास्टिक रेनकोट के बावजूद भीग गये। सड़कें बिल्कुल वीरान थीं और वह किसी भी तरह भूमिगत लोकल स्टेशन का रास्ता नहीं ढूंढ पा रहे थे। उनकी परेशानी की हद यह थी कि उन्हें जर्मन भाषा के कुल तीन ही शब्द ज्ञात थे–'आस्तुंग', 'हैरेन' और 'हाल्ट'। इन शब्दों को आमतौर पर उन्होंने बहुत जगहों पर लिखा देखा था। उन्हें एक ऐसी गली में जहां पर बहुत से टूटे-फूटे घर थे, एक खिड़की के नीचे एक संकरी कगार पर ऐसी जगह दिखाई दी जहां वह शरण ले सकते थे। उन्होंने तभी अपने ऊपर गिरे हुए कुछ सफेद पंख जैसे, रुई के फाहों को देखा और झटक दिया, बिना यह समझे कि वह अपने जीवन का पहला हिमपात देख रहे हैं। भारत के एक राज्य महाराष्ट्र के इस निवासी ने स्नोफाल के बारे में केवल सुना था। कुछ उत्साहित होकर, उन्होंने काले आसमान से आराम से गिरते फाहों के इस समुद्र की वास्तविकता को देखने के लिए काले आसमान की ओर देखा। उन्होंने उस कोमल ठंडे स्पर्श को महसूस करने के लिए उन्हें अपने हाथ से छुआ, जबकि उनकी नजर, सड़क के पार यूं ही निष्प्रयोजन भटकने लगी और जाकर उस छोटे कृत्रिम बोनसाई क्रिसमस ट्री पर ठहर गयी, जिसे लाल-पीले मनकों की लड़ियों से सजाया गया था और जो अब धीरे-धीरे बर्फ से ढंकता जा रहा था। वह लगातार एकटक उसे देखते रहे, फिर जैसे चकित से सड़क पार

कर उस मकान के प्रवेश द्वार की ओर बढ़े जहां बोनसाई पेड़ लगा था। रहस्यमय ढंग से, उन्होंने दरवाजे की घंटी ढूंढी और बजा दी। उन्होंने अंदर कहीं घंटी बजने की आवाज सुनी। दरवाजे के पीछे से किसी व्यक्ति ने रूखे स्वर में पूछा, "या ?"

"युरगेन।" डा. अभ्यंकर ने इधर-उधर देखा और प्रत्युत्तर में एक अनजाना सा नाम उनके मुख से निकला।

दरवाजा तुरंत खुल गया। डा. अभ्यंकर दरवाजे को एक ओर धकेलकर, अंदर घुस गये। एक छोटे खाली पड़े रिसेप्शन रूम में एक ओर कुछ सीढ़ियां दिखायी दीं, जिनसे चढ़कर वह दूसरे कमरे में पहुंच गये। यह कमरा पत्रिकाओं, किताबों और कपड़ों से अटा पड़ा था। लेकिन उनका ध्यान आकर्षित किया एक व्यक्ति ने जो सामने बिस्तर पर लेटा था। लंबा और विशालकाय, क्रूर, भेदने वाली आंखें और कामुक चेहरा। "वैर सिन्ड साइ ?" उसने जर्मन में गुर्राकर पूछा।

डा. अभ्यंकर सधे कदमों से, बिस्तर पर पड़े आदमी की आंखों में लगातार देखते हुए, उसकी ओर बढ़े। देखते ही देखते एक दब्बू और अनिश्चयी प्रोफेसर, आश्चर्यजनक रूप से एक निडर, बेरहम और इरादे के पक्के आदमी में बदल गया जो अच्छी तरह जानता है कि उसे क्या चाहिए और उसे कैसे हासिल करना है। हैरान से बैठे जर्मन के पास पहुंचकर, उन्होंने बिना किसी प्रयास के आसानी से उसकी गर्दन में हाथ डालकर उसे उठा लिया। जर्मन इतना हैरान था कि कुछ बोल भी नहीं सका।

"जान राडवन्सकी, 628349673, ऑशविट्ज," डा. अभ्यंकर के कानों में अपना ही स्वर सुनाई पड़ा।

उनके लिए नाम का कोई अर्थ नहीं था। लेकिन उन्होंने अपने शिकंजे में फंसे उस आदमी की आंखों को डर से फैलते हुए देखा। डा. अभ्यंकर ने महसूस किया कि वह किसी ऐसी शक्ति के घेरे में थे जो उनकी समझ या इच्छाशक्ति से बाहर थी। वह केवल अभिनय कर रहे थे; उनका अपना असली रूप किसी अंधेरे कोने में सिमट गया था, हर बात से जागरूक किंतु कुछ भी करने में असमर्थ लगातार उन्हें असंबद्ध की भांति देख रहा था। स्वभाव से वह अपेक्षाकृत शांत, स्थिर और गंभीर और बहुत कम शारीरिक कौशल वाले व्यक्ति थे। उन्हें स्वयं भी इस पर विश्वास नहीं था कि वह किसी को ऐसे गुड़िया की तरह उठा सकते हैं जैसे कि इस समय उन्होंने इस व्यक्ति को उठा रखा था। उन्हें बहुत ताज्जुब था कि उन्होंने अभी तक उस आदमी को ऊपर उठा रखा था और आवेश में उसे झुलाए जा रहे थे, जैसे उसे किसी लौहे के शिकंजे में जकड़ रखा हो। उनके शिकार का दम घुटता जा रहा था, उसके मुंह से अजीब सा स्वर निकल रहा था और शरीर असहाय सा संघर्ष कर रहा था। तेजी से और अवर्णनीय शक्ति

से, प्रोफेसर ने तिरस्कार से उसे पलंग पर फेंक दिया। फिर वह उसके टुकड़े-टुकड़े करने के लिए आगे बढ़े। सोचे-विचारे, भयानक ढंग से। पहले उनकी उंगलियां उस जर्मन के चेहरे पर कस गयीं और उन्होंने उसके चेहरे की धज्जी उड़ा दी। उनका शिकार इस कदर पथरा गया था कि चीख भी नहीं सका। फिर, सोच-समझकर, दृढ़ निश्चय के साथ उन्होंने उस आदमी के पेट को चीर डालने के लिए रसोई का एक लंबा, तेज चाकू उठा लिया। बिना रुके उनके हाथ उस आदमी के पेट में गहरे धंस गये और उसकी आंतें बाहर खींच लीं। विचित्र बात थी कि उनका शिकार अब भी जिंदा था, उसकी आंखों में आतंक चमक रहा था और वह अपनी आंतों का बाहर निकाला जाना, चीरना, फाड़ना और बिखर जाना देख रहा था। डा. अभ्यंकर एक विशुद्ध शाकाहारी और बौद्धधर्म को मानने वाले व्यक्ति थे। वह यह देखकर भयभीत थे कि उनके हाथ, ऊपरी तौर पर, उनकी ही इच्छाशक्ति से, ये क्या कर रहे थे। वह ये भी महसूस कर रहे थे कि उनके अस्तित्व के किसी अनजान हिस्से को एक क्रूर संतोष मिल रहा था। उस असहाय शिकार पर किए हर भयानक प्रहार के साथ, उसके आतंक और यंत्रणा का मजा लेते हुए, उन्हें पूर्णता का अहसास हो रहा था। लंबे भयानक समय के बाद आखिर वह आदमी एक निर्दय मौत मर गया। डा. अभ्यंकर का दम जैसे घुटने लगा और वह बुरी तरह पसीने से भीग गये। वह वहीं रखी हुई एक कुर्सी पर बैठ गये। वह अभी तक स्वयं को बंबई से आए एसोशियेट प्रोफेसर अविनाश अभ्यंकर नहीं महसूस कर रहे थे। शांति से वह कोने में लगे सिंक की ओर बढ़ गये और चुपचाप अपने हाथ धोने लगे। तब सलीके से उन्होंने अपने प्लास्टिक के रेनकोट और गम बूटों को साफ किया। उदासीन भाव से उन्होंने एक कपड़ा उठाकर पहले चाकू साफ किया और फिर उसी से दरवाजे के हैंडिल को साफ किया। उसके बाद, पूरे धैर्य के साथ, बिना पीछे बिस्तर पर और फर्श पर पड़े मांस के लोथड़ों की ओर देखे, वह बैडरूम से बाहर आ गये। सीढ़ियों से उतरकर रिसेप्शन में पहुंचे और फिर बाहर सुनसान पड़ी बर्फ से ढंकी सड़क पर पहुंच गये। वह निश्चिंत नपे तुले कदमों से एक ओर चल पड़े।

अरे हां, यह तो नुट्डेन्सेनस्ट्रासे है और वह रहा हप्टबाहन्हॉफ। उन्हें लगा कि उन्हें बहुत जोर की प्यास लगी है। वह एक बड़े कैथेड्रल-जैसे स्टेशन में घुसे और किनारे के एक पार्लर में जाकर बीयर का आर्डर दिया। वह धीरे-धीरे बीयर के घूंट भरने लगे, बिना कुछ खास सोचते हुए। वह यह भी नहीं सोचना चाहते थे कि अभी कुछ मिनट पहले क्या हुआ था ? उसे पूरी तरह भूल ही जाना अच्छा था। उन्होंने कुछ भी न सोचना ही बेहतर समझा। उन्हें सांस लेने में कठिनाई होने लगी। वह अपने घर कितना शांत, हल्का और सादा जीवन जी रहे थे। कल वह यह शहर, यह देश छोड़ देंगे, कभी न वापस आने के लिए। उन्होंने इत्मीनान

से बीयर पी और गाड़ियों को आते-जाते देखते रहे।

अगले दिन वृत्तपत्र म्यून्शनेर के दूसरे पृष्ठ पर एक छोटे से कालम में एक पुराने नाजी युद्ध अपराधी की वीभत्स हत्या की खबर छपी थी। मरने वाला ऑशविट्ज, गेस्टापो का भूतपूर्व डिप्टी कमांडेन्ट, विल्हेम ब्रान्ड्ट था। इसे किसी अनजान पूतभूर्व ऑशविट्ज निवासी था किसी संबंधी द्वारा बदले की भावना से की गयी हत्या बताया गया था। आधुनिक जर्मन अधिकारी आमतौर पर इन अपराधों के बारे में विस्तार से लिखते या बोलते नहीं थे और जितनी जल्दी हो सके ऐसे केसों को निपटाना पसंद करते थे। वास्तव में, यह फाइल भी चार दिनों बाद ही, लापरवाही से खोजबीन कर, ऊपर से आये आदेशों के अनुसार, अनसुलझी ही बंद कर दी गयी।

डा. अविनाश अभ्यंकर अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार भारत वापस लौटे। उन्होंने 79 वर्ष की लंबी उम्र तक बिना एक दिन भी बीमार हुए जीवन जिया और फिर शांतिपूर्वक मृत्यु की गोद में सो गये। उन्होंने उस दिन के बाद किसी मक्खी तक को नहीं मारा। वह ईर्ष्या की हद तक धार्मिक हो गये थे और हर साल गंगा नहाने जाते थे। उसके बाद फिर वह कभी विदेश नहीं गये। यहां तक कि उन्होंने एक सप्ताह कश्मीर में बिताने का निमंत्रण भी ठुकरा दिया। इसका राज यह था कि उन्हें लगा था कि बर्फ देखकर उन्हें कुछ हो जाता है। उन्होंने पक्का निश्चय कर लिया था कि वह पृथ्वी के किसी भी ऐसे भाग में जाने का जोखिम नहीं उठायेंगे जहां बर्फ गिरती हो, जिसकी कल्पनामात्र से ही वह थरथराने लगते थे।

वह बर्फ भी हो सकती है और शायद खिड़की में रखा वह बेतुका छोटा पेड़ भी, जिसने इतने दिन पहले जर्मनी में उस भयानक दिन उनसे ऐसा अविश्वसनीय कृत्य करवाया। जरा कल्पना तो कीजिए–हत्या, और वह भी एक आदमी की, पूरी तरह खाली हाथों और विदेशी की धरती पर। भगवान ही जानता है कि वह किस तरह वहां की पुलिस के जबरदस्त खोजबीन करने के तरीकों से अपने आपको बचा सके। कहीं वह पागल तो नहीं हो गये थे। यह एक ऐसा रहस्य था जिसे कभी उन्होंने अपनी पत्नी को भी नहीं बताया। वह इसके बारे में सोचना भी पसंद नहीं करते थे। कभी-कभी उन्हें यह सोच कर अच्छा लगता कि शायद यह सब उनकी कल्पना मात्र थी। लेकिन वह यह भी बहुत अच्छी तरह जानते थे कि उन्होंने जर्मनी में एक अनजान व्यक्ति को, बिना किसी कारण के, कसाई की तरह हलाल कर डाला था।

कभी-कभी उन्हें ताज्जुब भी होता था कि क्यों कभी उन्होंने अपने शिकार के बारे में कुछ जानने का प्रयास नहीं किया। लेकिन वह अपने आप को ऐसा करने से हमेशा रोकते रहे। जब भी इस बारे में वह ज्यादा कुछ सोचना चाहते

पता नहीं क्यों उनका दिमाग बिल्कुल सुन्न हो जाता और काम करना बंद कर देता। समय के साथ-साथ वह इस बात को भूलते गये, कभी-कभार याद करने को छोड़ कर। यही बेहतर भी था। इसके बावजूद, वह हर साल गंगा स्नान के लिए जाते रहे, अपने और अपने उस अनजान शिकार की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते रहे। लेकिन उन्हें संदेह था कि दिवंगत आत्मा उसके इस काम को सराहेगी।

**अंग्रेजी से विनीता सिंघल द्वारा अनूदित**

# बरसात

कैनेथ डायल

जमीन बिल्कुल सूखी थी और उसमें जगह-जगह दरारें पड़ गयी थीं। कभी यह जमीन उपजाऊ हुआ करती थी। लेकिन अब बिल्कुल बंजर पड़ी थी। किसान ने निराशा से भरी दृष्टि से उसे देखा। निर्मम और कभी खत्म न होने वाली ये गर्मी ही उसकी सबसे बड़ी दुश्मन थी, जिसने तापमान को 45° सेल्सियस तक पहुंचा दिया था। तिलक राम ने गहरे रंग के फटे-पुराने कपड़े के टुकड़े से अपने माथे पर बहते पसीने को साफ किया और आशा भरी दृष्टि से आसमान की ओर देखा। आसमान एकदम साफ था, बिल्कुल चमकदार नीला। दूर-दूर तक कहीं भी बादल का कोई टुकड़ा नहीं दिखायी दिया। वह मन ही मन पीड़ा से कराह उठा और सिर झुकाकर, पैर घसीटता हुआ झोंपड़ी की ओर चल दिया, शायद रूठे हुए वर्षा के देवता को मनाने के लिए।

तीन सप्ताह तक लगातार प्रतीक्षा करने के बाद, भगवान को उस पर कुछ तरस आ गया। वह झोंपड़ी की आड़ में उकड़ूं बैठा था और पिल्ले के साथ खेल रहे अपने सबसे छोटे बेटे को देख रहा था। बच्चा और कुत्ता दोनों ही झुलसा देने वाली गर्मी से बेखबर खेलने में मस्त थे। आसमान अब बादलों से भर गया था, हालांकि वह पिछले हफ्ते से ऐसा ही था और मानसून का अभी तक पता नहीं था। वास्तव में, बादलों की इस मटियाली चादर ने गर्मी को और बढ़ा दिया था। इसी के साथ नमी इस कदर बढ़ गयी थी जिसे सहन करना कठिन हो रहा था और दिन बिताना मुश्किल लगता था। तिलक राम पसीने से तरबतर अजीब सी बेचैन सुस्ती में डूबा रहता था। हवा बिल्कुल चावलों के उस मांड जैसी भारी थी जिसे पिछली रात, उसने खाने की जगह पिया था। रातें जरूर कुछ राहत लेकर आती थीं लेकिन कितनी देर के लिए ? वह ठंडी हवा जो कुछ दिन पहले शीतलता पहुंचाती थीं, अब उसे झुलसाने लगी थीं। उसे याद आया, जब वह राजू जितना छोटा था तो तपती गर्मी हो चाहे जमा देने वाली ठंड, वह हमेशा उत्साह से भरा रहता था। केवल एक ही चीज ऐसी थी जो उसे सहमा जाती थी और वह थी मास्टरजी की छड़ी की मार। जीवन तब कितना सरल था, किसी तरह

की कोई चिंता नहीं थी—फसल, कटाई, खाद, बिक्री, बढ़ती हुई कीमतें, महाजन का डर... कुछ भी तो नहीं था।

रुको ! लगता है दूर कहीं बादल गड़गड़ाये हैं। नहीं, वह गलत हो सकता है, गर्मी शायद उसके दिमाग पर असर करने लगी है... फिर से वही, और भी तेज, और भी आग्रहपूर्ण। पिल्ला रिरियाता हुआ सुरक्षा के लिए झोंपड़ी की ओर भाग गया। बादल फिर से गड़गड़ाये और काले बादलों को चीरते हुए तेज लपलपाती आग-सी चमकी। तभी जमीन पर बूंदें गिरनी शुरू हो गयीं। तिलक राम भौंचक्का सा उठ खड़ा हुआ, आसमान की ओर देखता हुआ। तभी एकाएक तेज बरसात होने लगी। ऐसा लगा जैसे आसमान फट पड़ा हो। किसान बिल्कुल भीग चुका था लेकिन फिर भी वहीं खड़ा रहा—आसमान की ओर अपने दोनों हाथ उठाए। "भगवान को लाख-लाख धन्यवाद," वह खुशी से चिल्लाया, "मानसून आखिर आ ही गया।"

कुछ ही दिनों में धरती का स्वरूप बिल्कुल ही बदल गया। हर जगह छोटे-छोटे पौधे, झांड़ियां उग आये थे। खेतों को देखकर लगता था मानो पृथ्वी ने हरी चादर ओढ़ ली हो। सारी धरती हरी-भरी और साफ दिखायी दे रही थी और पेड़ों में घोंसले बनाती चिड़ियां खुशी से चहचहाने लगी थीं। धरती जैसे जाग उठी थी, जीवनदायिनी में भी जीवन आ गया था जैसे और उसने प्रकृति की पुस्तक में नया अध्याय लिखना शुरू कर दिया था।

* * *

जीवन कुमार उकता गया था। बिना किसी उतार-चढ़ाव के एकरस जीवन ने उसे खिझा दिया था—वही यांत्रिक, नीरस दिनचर्या जिसे उसके जान-पहचान वाले लोग जीवन का अहसास मानते हैं। निराशा का एक घना काला बादल उसके ऊपर छाता जा रहा था, जिसका उसके परिचितों को अंदेशा नहीं था। वैसे भी पिछले कुछ महीनों से उसने अपने परिचितों की संख्या को कम करना शुरू कर दिया था। एक तरह से बनावटी नम्रता और कृत्रिम स्नेहाचार ही उसका सामान्य व्यवहार बन कर रह गया था। और यही उसकी वर्तमान मानसिक दशा का मुख्य कारण भी था। बहुत दिनों से वह इस कैदखाने जैसे गुबंद में बंद शहर से दूर जाना चाहता था जिसने उसे शेष संसार से अलग करके रख दिया था। जीवन की धारणा थी कि शेष संसार ही वास्तविक संसार था। वह जानता था, ऐसा सोचना भी मूर्खता है। अगर उसके प्रशिक्षक सुनेंगे तो क्या कहेंगे ? लेकिन इस मूड में, उसकी व्यग्रता और आत्मा की बेचैनी के सम्मुख तर्क और समझदारी के लिए कोई स्थान नहीं था। उसे पृथ्वी पर बसे सब बड़े शहरों का ध्यान आया, सभी अति विशाल

गुबंदों में बंद, जिसमें रहने वाले कृत्रिम आसमान के नीचे रहते हैं, वहां दिन के समय रोशनी होती है और रात के समय अंधेरा, लेकिन दोनों ही कृत्रिम–कृत्रिम हवा में सांस लेते हुए कृत्रिम जीवन जीते हुए।

वह पुस्तकालय की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचकर खाली पड़ी प्लेट पर अपना हाथ रखा और सामरिक सेवा यूनिट के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ ही सैकेंड में, स्क्रीन चमक उठी। संदेशों पर उड़ती-सी नजर डाल, उसने स्पष्ट किन्तु दृढ़ आवाज में, माउथपीस में कहा, "विषय : इतिहास; पृथ्वी। काल : बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी। पुराने समय में प्रचलित कैलेंडर की तारीखें भी चलेंगी।"

कुछ अंतराल के बाद, एक मृदु स्वर सुनायी पड़ा, लगता था जैसे कोई नाक में बोल रहा हो, "कृपया क्षेत्र और विस्तार की रूपरेखा भी स्पष्ट करें।"

उसने कुछ क्षणों के लिए सोचा, फिर कहा, "केवल संक्षिप्त विवरण काफी है, सूचना संधार : डेढ़ हजार से तीन हजार–दृश्य और श्रव्य आउट पुट आवश्यक। क्षेत्र : औद्योगिक विकास और तकनीकी।"

स्क्रीन फिर से जीवंत हो उठी और आवाज सुनायी दी, "काल : बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी, प्राचीन विश्व कैलेंडर। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में, पुरानी पृथ्वी पर भी औद्योगिक क्षेत्र में काफी उन्नति दिखायी पड़ती है। मनुष्य ने यह अनुभव कर लिया था कि उसके द्वारा किये जाने वाले बहुत से काम, मशीनों से किये जा सकते हैं और मशीनें उससे ज्यादा अच्छा काम कर सकती हैं। उसने रोजमर्रा की कड़ी मेहनत और एकरस कामों से छुटकारा पाने और अपने जीवन को सरल बनाने के रास्ते ढूंढ़ लिये थे। सबसे पहले जिस क्षेत्र में मनुष्य ने प्रगति की, वह था यातायात। शुरू-शुरू में यातायात के लिए मामूली से साधनों का उपयोग होता था, जैसे जानवरों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी। पुरानी पृथ्वी के कुछ भागों में, ऐसा कहा जाता है कि जानवरों की जगह आदमी भी गाड़ी खींचते थे, जिस पर दूसरे लोग बैठते थे। हालांकि, इस काल की अधिकांश सूचनाएं अधूरी हैं और अधिकतर दंतकथाओं से ली गयी हैं...।

"मोटर कार के विकास के साथ ही निजी वाहन के क्षेत्र में क्रांति आयी। ये यंत्र, पृथ्वी से निकले कार्बनमय पदार्थों से निकाले गये ईंधन से चलती थीं। सीमित जगह में इस ईंधन के दहन से एक ऐसी यांत्रिकी विकसित होती थी जो मोटर को धकेलती थी। इनमें से गैस भी निकलती थीं जिनमें खासतौर से कार्बन और सल्फर के आक्साइड होते थे; और कुछ खास पदार्थ इसमें से निकलकर वायुमंडल में मिल जाते थे। अंधे युग की शुरुआत के अनेकों कारणों में यह भी एक है, जिसके बारे में हम बाद में बतायेंगे।"

जीवन स्क्रीन पर उभरती अजीब-अजीब आकृतियों को दिलचस्पी के साथ देख रहा था। तो इस तरह मनुष्य ने आसपास घूमना शुरू किया। अपरिष्कृत तरीके,

लेकिन कितने प्रभावी ! धातु की बनी विशालकाय आकृतियों में कुछ अजीब सा सौंदर्य था जिसका अनुभव उसे पहले कभी नहीं हुआ था।

"जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ औद्योगीकरण भी बढ़ता गया। पुरानी दुनिया के बहुत बड़े भाग में जहां सभ्य लोग बसते थे, उनकी उपभोग्य वस्तुओं को बनाने के लिए बहुत बड़े-बड़े प्रतिष्ठान स्थापित हो गये थे। इनमें से अधिकांश में किसी न किसी रूप में ईंधन-दहन का सिद्धांत ही प्रयोग होता था, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा में अपशेष निकलकर वातावरण में मिलते रहे। कुछ विशेष पदार्थ संघनित परत के रूप में जमते गये, इससे जो स्थिति बनी वह धूम या कोहरा, कहलायी और कहा जाता है कि इसने पुरानी दुनिया के प्रमुख शहरों को बहुत अधिक प्रभावित किया। यही तथ्य उस सारी स्थिति का एक भाग है जिसे शहरों में रहने वाले 'प्रदूषण' कहते थे।"

यहीं पर जीवन ने, रिकार्डिंग को कुछ आगे बढ़ा दिया। उसने कुछ अंतराल दे-देकर उसे सुनना शुरू किया और स्क्रीन पर बनते बिगड़ते चित्रों को देखता रहा। अचानक ही उसे वह हिस्सा दिखायी दिया जो वह चाहता था।

"अंधा युग, जो कि इक्कीसवीं सदी के अंत में माना जाता है, मानवता के इतिहास में सबसे विशिष्ट काल है। बीसवीं सदी के अंत में, स्वयंपोषित पर्यावरण जिसे बायोस्फीयर-11 कहते हैं, को बनाए रखने के लिए बहुत से प्रयोग किये गये। इस काम की आरंभिक सफलता थी अपरिष्कृत किंतु स्व-नियंत्रित आवासों का निर्माण, जिससे आज के गुंबद शहरों का जन्म हुआ। हालांकि, बायोस्फीयर-11 प्रयोगों से, पर्यावरण में पहले से हुई क्षति को पूरा नहीं किया जा सका—वे जीवित रहने के लिए साधन मात्र थे। इसके बाद अंधे-युग में घटी घटनाओं का पूरा विवरण मिलता है और आज के कैलेंडर अंधे युग से ही शुरू होते हैं। पहले बताये गये स्रोतों के अतिरिक्त, वातावरण में बढ़ते प्रदूषण के लिए कुछ अन्य कारक भी जिम्मेदार थे। ऐसा लगता है कि आज के सीमित पेड़-पौधे कभी, दूर-दूर तक फैले थे और उन्होंने बहुत बड़े भू-भाग को ढंक रखा था। कहा जाता है कि आदिम जाति के लोग इन पेड़-पौधों को ईंधन के रूप में इस्तेमाल करते थे। इनसे भी कार्बन-डायक्साइड नामक गैस निकलती थी। उसी समय की बात है जब पेड़-पौधों की संख्या पृथ्वी पर बहुत कम हो गयी जिसने वायुमंडल में आक्सीजन और कार्बन-डायक्साइड के अनुपात को गड़बड़ा दिया। इस स्थिति को औद्योगिक प्रतिष्ठानों ने और भी बिगाड़ दिया जिन्होंने बहुत बड़े भू-भाग से पेड़ों की कटाई कर दी, और उस क्षति की पूर्ति का कोई प्रयास भी नहीं किया जो पुरानी दुनिया की भरभराती जा रही परिस्थितिकी का और भी विनाश कर रही थी। ये उद्योग अपने अपशेष पदार्थों को समुद्रों में भी छोड़ रहे थे जिससे एक कोशिकीय पादप जीवों की (प्लंकटॉन) प्लवक कही जाने वाली किस्म शून्य होती जा रही थी। कहा जाता

है कि इकोसिस्टम को बनाए रखने में इन जीवों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वायुमंडल में कार्बन-डायक्साइड तथा अन्य व्यर्थ गैसों के मिल जाने से, उसकी रासायनिक रचना में बहुत बड़ा परिवर्तन आया, जिसने बाद में, विश्व की जलवायु को लंबे समय तक प्रभावित किया। ग्रीन हाउस प्रभाव (इस शब्द का आविष्कार कहां से हुआ, मालूम नहीं) के नाम से परिचित तथ्य के अनुसार पृथ्वी की सतह का औसत तापक्रम कई डिग्री बढ़ गया है। इसके घातक और व्यापक प्रभाव हुए। सबसे ज्यादा तो ध्रुवीय भागों में जहां बहुत सारी बर्फ पिघल गयी जिससे समुद्र-तटीय इलाकों में बाढ़ आ गयी। एक और भी तथ्य है जिसकी इस काल में बहुत अधिक चर्चा हुई। वह था वायुमंडल की ओजोन परत का कमजोर होना जिसका परिणाम था अधिक पराबैंगनी विकिरणों का पृथ्वी में प्रवेश। हालांकि इस प्रभाव से संबंधित सूचनाएं बहुत कम हैं और अंधा युग में इसके बाद घटी घटनाओं पर इसका प्रभाव बहुत अस्पष्ट है।

"वायुमंडल में दिन-प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण ने वायु को सांस लेने के योग्य नहीं छोड़ा। यही कारण था कि गुंबद शहरों की स्थापना हुई। ये प्रभाव केवल वायु की गुणवत्ता तक ही सीमित नहीं थे। पृथ्वी पर वर्षा..."

जीवन ने उसे बंद कर दिया। ऐसा करने पर उसने अपने सोलह वर्षीय जीवन की सबसे बड़ी भूल कर दी है, इसका उसे पता ही नहीं चला। निराशा से भरा लंबा समय, मानो अंत में दहला देने वाले एक नवीन उल्लास को आमंत्रण दे रहा था। उसे यह सब बाहर स्वयं अनुभव करना था। ठीक है, हवा सांस लेने योग्य नहीं भी थी, लेकिन गंभीर समस्याएं उत्पन्न नहीं हुईं। उसके रासायनिक इंस्ट्रक्टरशिप में बहुत से आक्सीजन से भरे टैंक उपलब्ध हैं। किसी भी एक उपकरण को काम चलाऊ ढंग से तैयार करने पर उसके लिए बाहर जाने पर सांस लेना कठिन नहीं होगा। लेकिन क्या वह अपने लिए बाहर का रास्ता ढूंढ़ने में सक्षम होगा ? उसे मालूम है जब गुंबद बनाये गये थे, तब उनमें प्रवेश द्वार भी बनाए गये थे। लेकिन उन्हें बहुत पहले ही बंद करके छोड़ दिया गया था, इसलिए उसे आशा नहीं थी कि वहां किसी से भेंट हो सकेगी। आखिर कभी बाहर जाने के बारे में कौन सोच सकता है ?

उसने एक आक्सीजन भरा टैंक और एक गैस मास्क लिया और कुछ क्षण रुका, फिर उसने न जाने क्या सोचकर एक लेसरड्रिल भी उठा लिया। हो सकता है कहीं धातु की कुछ सेंटीमीटर मोटी दीवार को काटना पड़े, उसने स्वयं को समझाया। लेकिन वास्तव में इसकी जरूरत इससे भी ज्यादा थी। ये छोटे किंतु दक्ष औजार निकिलॉय शहतीरों को भी कुछ ही सैकेंड में काट सकते थे, और यह कल्पना करना काफी कठिन था कि वे क्या कर सकते थे जब इनका प्रयोग किसी... क्या ? वह क्या वास्तव में यह सोच रहा था कि कोई... चीज... बाहर
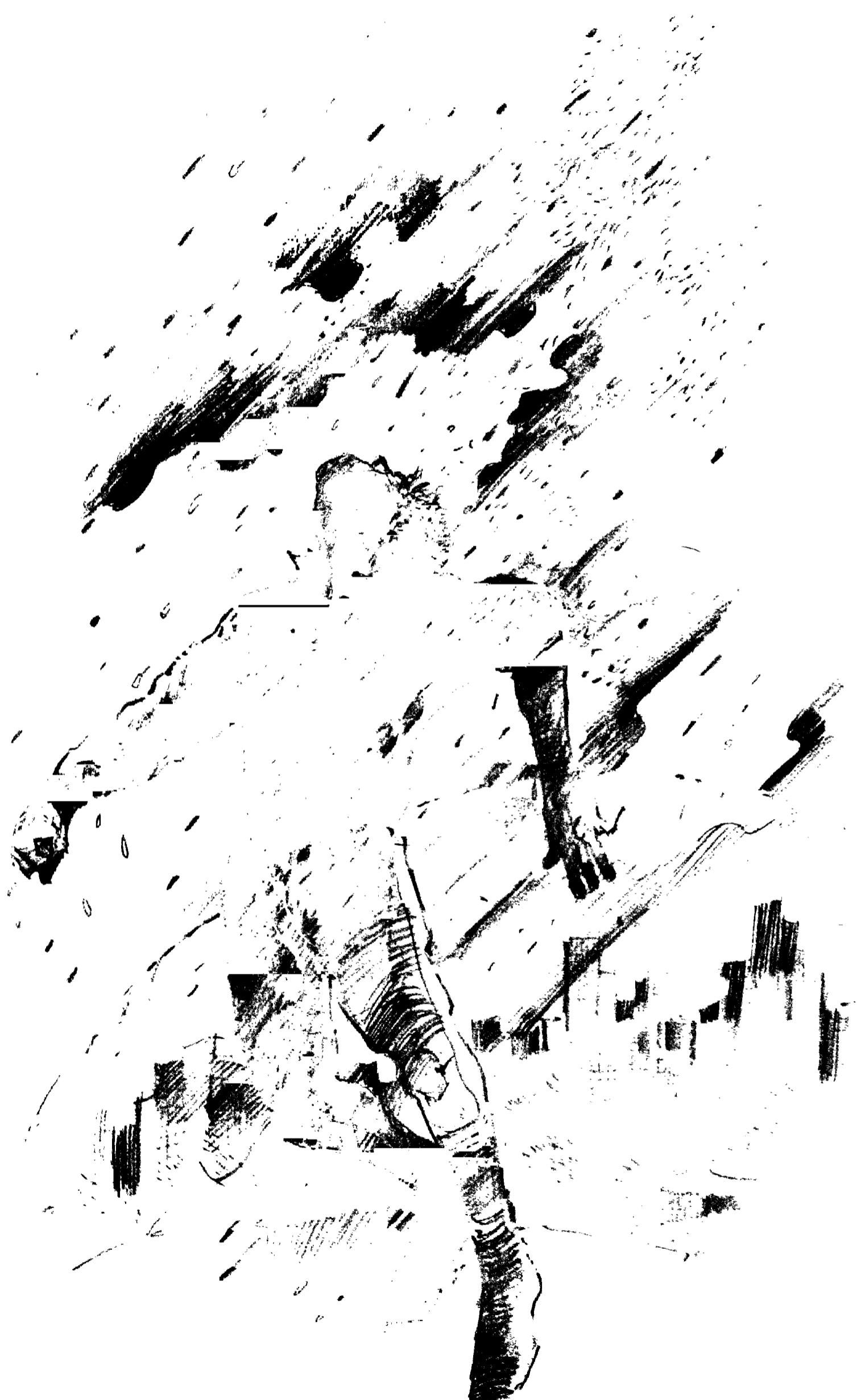
जीवित रह गयी थी ? फिर भी, सावधानी बरतने में हर्ज ही क्या था। इंस्ट्रक्टरशिप में मिलने वाले आराम और बेलाग सुरक्षा में वे कितने मूर्ख दिखायी देते थे।

वह शहर की सीमा तक गया और देखभाल कर बिल्कुल बिना आवाज किए वहां से दूर सरक गया। गुंबद के किनारे तक पहुंचने वाले संकरे रास्तों पर अपने लिए मार्ग बनाता हुआ आगे बढ़ता गया। अगला आधा घंटा इस निराशाजनक खोज में बीता कि शायद कहीं प्रवेश द्वार होने का संकेत मिले, लेकिन अंत में उसने देखा कि डोम के किनारे की चिकनी इमारत और भी प्रतिरोधी पदार्थ की परतों की बनी है। तभी उसे एक अंधेरी आयताकार जगह दिखायी दी। उसका आकार उससे ज्यादा बड़ा नहीं था और वह भी कुछ-कुछ धातु जैसी किसी चीज की बनी मालूम होती थी। उसने अपनी पीठ पर आक्सीजन टैंक को ठीक से बांधा, मास्क लगाया और धीरे-धीरे उस तरफ बढ़ने लगा। वहां उसे कोई ताले जैसी चीज लगी दिखायी पड़ी जिससे वह पूरी तरह अनजान था। वह उस धातु की बनी एक लंबी-सी जंजीर थी जो समानांतर छल्लों से होकर गुजर रही थी जिनमें से एक प्रवेश द्वार और दूसरी डोम के मुख्य भाग की ओर जा रही थी। लेसरड्रिल को अपना काम पूरा करने में कुछ ही पल लगे और जीवन को यह देखकर बेहद आश्चर्य हुआ कि लोगों को बाहर जाने से रोकने के लिए क्या-क्या सावधानियां बरती गयी हैं। वह भी तब जब कि कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसा नहीं चाहेगा। अपने उन्माद की इस हठधर्मी से आश्वस्त होकर, जीवन ने पूरी ताकत से प्रवेश द्वार को धक्का दिया और उसे खुलते देख प्रसन्न हो उठा। दरवाजा पहले तो थोड़ा-सा अड़ा, लेकिन फिर धीरे-धीरे खुला। लगता था जैसे वह सदियों से खुला नहीं था। और इस प्रकार जीवन कुमार ने बाहर की दुनिया में पहला कदम रखा।

वह आघात से मूक और शक्तिहीन बना खड़ा रहा। यह उसकी कल्पना से दूर, बिल्कुल ही अलग दुनिया थी। जो धरती उसके सामने थी वह, जहां तक उसकी नजर जाती थी, बिल्कुल वीरान थी। वहां पेड़-पौधों का कोई चिह्न नहीं था जैसा कि पुस्तकालय में बताया गया था। वह उस शब्द को याद करने का प्रयास करने लगा जिसे उसने पुराने वीडियोडिस्क में सुना था, पुरानी पृथ्वी के बहुत से हिस्सों के चित्रण के समय। रेगिस्तान, वही तो था यह। उसके चारों तरफ जो कुछ भी था उसके लिए यह शब्द सर्वथा उचित था। उसने ऊपर आसमान की ओर देखा। वह काला था, एकदम डरावना और गुंबद की आरामदेह गरमाहट से बिल्कुल भिन्न। जीवन कांपने लगा, हालांकि सर्दी नहीं थी। तभी उसे महसूस हुआ कि उसके हाथ पर कुछ चुभा है, वह दर्द से कराह उठा। आसमान से छोटी-छोटी बूंदें गिर रही थीं, जिनसे उसके थर्मल सूट की परतें घुलती जा रही थीं। उसकी त्वचा की खुली सतह पर लाल-लाल धब्बे उभर आये थे। दर्द की हल्की-सी चुभन

धीरे-धीरे, मर्मांतक प्राणघातक पीड़ा में बदलती जा रही थी। वह दर्द से चिल्लाने लगा। फिर उसने बिना सोचे-समझे एक दिशा में भागना शुरू कर दिया। किसी भी तरह वह इन अदृश्य राक्षसों से दूर भाग जाना चाहता था। अब उसका सारा शरीर जल रहा था, और वह केवल दर्द का पुतला बन गया था। वह फिर से चीख उठा।

यह जीवन कुमार के मुख से निकला आखिरी स्वर था। आसमान से गिरने वाला द्रव उसके सारे शरीर को भिगो रहा था। जल्दी ही सारी धरती, इस जलीय आग की छोटी-छोटी धाराओं से भर गयी और क्षितिज से क्षितिज तक फैले खालीपन के बीच था हड्डियों और मांस का छोटा-सा ढेर जो कि बाहर आने वाले आदमी का था।

वर्षा एक बार फिर पृथ्वी पर विचरण करने आ गयी थी, जन्म और मृत्यु के कभी न रुकने वाले नये चक्र को आरंभ करने के लिए।

**अंग्रेजी से विनीता सिंघल द्वारा अनूदित**

# गुडबाइ, मिस्टर खन्ना

देवेंद्र मेवाड़ी

"और यह हैं आपकी पर्सनल सेक्रेटरी–मिस रूबी।"

खन्ना साहब ने हाथ बढ़ाया और मिस रूबी के मुलायम हाथ को धीरे से दबाकर बोले, "हाय !"

प्रतिष्टान के प्रबंध निदेशक घनश्याम सिंघानिया मिस रूबी की ओर मुखातिब हुए–"रूबी, ये हैं तुम्हारे नये बॉस मि. अमित खन्ना। प्रशासन और प्रबंध का बहुत अच्छा अनुभव है इन्हें। कुशल नियोजन और प्रबंध-क्षमता के लिए प्रशंसित ही नहीं, पुरस्कृत भी हुए हैं, कई बार। मुझे आशा है, हमारे प्रतिष्ठान के लिए 'ऐसेट' साबित होंगे !"

रूबी ने मोहक मुस्कान के साथ बॉस की ओर बांकी चितवन फेरी।

सिंघानिया साहब आगे बोले, "और रूबी, रूबी तो हमारे प्रतिष्ठान का रत्न है। बहुत बुद्धिमान, बहुत निष्ठावान, मेहनती और हां... बहुत सुंदर भी ! रूबी से आपको कोई शिकायत नहीं रहेगी मि. खन्ना !"

"तारीफ के लिए धन्यवाद, सर !" रूबी ने मुस्कराकर कहा।

"ओ. के. मिस्टर खन्ना, इस प्रतिष्ठानन में सेवा की शुरुआत के लिए शुभकामनाएं। मैं अब चलता हूं !" यह कहकर सिंघानिया अपने चैंबर की ओर बढ़ गये।

* * *

"रूबी ?"

"सर !"

"आज, देखो काम का पहला दिन है।"

"हां, सर।"

"आज काम नहीं, बातें करें तो कैसा रहेगा ?"

"क्या सर ?" (चकित होकर)

"काम नहीं... बातें... ।"

"काम हां, सर। बातें हां, सर।"

"तुम तो बहुत मेहनती हो, रूबी।"

"धन्यवाद, सर।"

"तो ऐसा करो–'पेंडिंग ट्रे' में पड़े हुए पत्र देख लेना। कल मुझे दिखाना। अब, आओ बातें करें। तुम्हें कैसा लगता है यह प्रतिष्ठान मिस रूबी ?"

"बहुत अच्छा लगता है, सर। मेरा सब-कुछ इस प्रतिष्ठान का है और मैं समर्पित हूं इसके लिए।"

"बहुत अच्छा। कितना समय हो गया है तुम्हें यहां ?"

"दो वर्ष तीन माह और साढ़े दस दिन सर।"

"वाह, तुमने तो पूरा हिसाब बता दिया। आधा दिन भी।"

"हां, सर अब बारह बजकर तीस सेकेंड हो गये।"

"अंकों से, आंकड़ों से लगता है बहुत प्यार है तुम्हें ?"

"प्यार ? लगाव ? हां, सर।"

"और किस-किस चीज से प्यार है तुम्हें ?"

"प्रतिष्ठान से, सर।"

"और ?"

"सबसे, सब कुछ से, सर।"

"अरे वाह ! हमसे भी।"

"हां, सर।"

"बहुत सुंदर !"

"क्या, सर ?"

"तुम।"

"अच्छा, सर।"

"कॉफी या चाय ?"

"नहीं सर।"

"कॉफी नहीं, चाय नहीं ? कुछ नहीं ? (-किर्रर्रर्र... )

"नहीं, ओफ्फ, घंटी न बजाएं, सर। मुझे बहुत परेशानी होती है... ओफ्फ... ।"

"घंटी से ? लो मैंने छोड़ दिया बटन।"

"धन्यवाद, सर।"

"लेकिन घंटी से ? घंटी का कोई साइकोफियर ?"

"नहीं सर, मेरा पूरा शरीर झनझना उठता है।"

"लेकिन क्यों ? अन्यथा न लेना, क्या घंटी से कोई ऐसी-वैसी घटना याद

आती है ?"

"कैसी, सर ?"

"अरे, बस यूं ही। कई बार घर में अकेले होने पर घंटी बजाकर अजनबी आ धमकते हैं !"

"ऐसा नहीं है, सर।"

"खैर छोड़ो। लंच का क्या इरादा है ?"

"आप लंच रूम में लेंगे।"

"तुमने पेंडिंग पत्र देखना शुरू भी कर दिया ?"

"हां, सर। काफी पत्र देख चुकी हूं।"

"लगता है रूबी, तुम सचमुच प्रतिष्ठान के लिए समर्पित हो। न चाय, न कॉफी, न किसी से खाली गपशप। काम के अलावा और क्या हॉबी है, तुम्हारी ?"

"केवल काम ही है सर।"

"बहुत अच्छा। आफिस के बाद क्या करती हो ?"

"बस घर चली जाती हूं, अपनी जगह।"

"अपनी जगह ? और किन जगहों पर जाने का शौक है ?"

"और कहीं नहीं, सर।"

"अरे घूमना चाहिए। इतना तो काम करती हो दिन भर, फिर शाम को न घूमना, न फिरना। काम का तनाव नहीं रहता ?"

"तनाव ? मैं समझी नहीं, सर। मुझे तो काम से बहुत प्यार है।"

"सो तो ठीक है लेकिन रूबी तुम्हें घूमना जरूर चाहिए। इससे... फिगर भी ठीक बनी रहेगी। सौंदर्य बना रहता है...।"

"सौंदर्य ?"

"हां, और क्या। खैर, चलो चलेंगे किसी दिन घूमने...।"

* * *

"बहुत बड़ा घाव है गुरू, ये नया बॉस खन्ना !"

"क्यों, क्या हुआ भसीन ?"

"अरे हुआ क्या, बस पहले ही दिन जाल बिछाना शुरू कर दिया। पड़ गया पीछे। क्या समझे बेटा सूरी ?"

"पीछे ? पीछे किसके ?"

"अरे, उसी आसमानी चिड़िया के जो हम जैसों के आसपास पंख तक नहीं फटकती। वही अपनी रूबी...।"

"अच्छा, खन्ना की निजी सचिव ?"

"सचिव को निजी बनाने का 'आपरेशन रूबी' तो आज शुरू किया है उसने गुरू !"

"अजीब खेल है भसीन यह भी... इसमें आते तो हैं सबसे बाद में और क्यू में खड़ा होना चाहते हैं सबसे आगे !"

"और हम बेवकूफ हैं ? दो साल से चिड़िया का पीछा कर रहे हैं—पर मजाल है कि कभी पलटकर भी देखा हो !"

"बहरहाल, पूरी बात तो बताओ ? क्या देखा, या सुना ?"

"देखा तो बस यह कि खन्ना 'शिकार' के करीब बैठकर हर संभव हाव-भाव के जाल फेंक रहा था और आखेट की राह खोज रहा था—क्या खाती है, क्या पीती है, कहां जाती है, क्या करती है ! लेकिन गुरू, एक भी दाना नहीं चुगा चिड़िया ने फिलहाल। फिर भी, कोशिश जारी है !"

"कोई फिक्र नहीं गुरू, अपनी भी कोशिश जारी है... !"

"अच्छा, उस कार का पता लगा ?"

"नहीं यार। अब भी वह चुपचाप आती है और चली जाती है।"

"रोज शाम को छह बजे रूबी के बाहर निकलते ही कैसे आ जाती है वह सही समय पर सदा ? अगर कुछ दूर भी पैदल जाती या इंतजार करती तो मैं कब के लिफ्ट दे चुका होता। उसके करीब आ गया होता, सूरी ! लेकिन वह सुसरी कार... वह ऐन मौके पर पहुंच जाती है।"

"लिफ्ट देने वालों की क्या कोई कमी है, भसीन ? हम भी तो उसी क्यू में हैं, क्यों?"

* * *

"रूबी ?"

"हां, सर।"

"अमित नहीं कहोगी मुझे।"

"नहीं, सॉरी सर।"

"इन छह महीनों में तुमने एक बार भी मुझे इस नाम से नहीं पुकारा। मेरे लगातार कहने के बावजूद। रूबी, तुम नहीं जानती, कितना... कितना चाहता हूं मैं तुम्हें।"

"जानती हूं, सर। आपके साथ इतना काम जो करती रही हूं मैं... !"

"करती रही हो, लेकिन रूबी एक दूरी तुमने लगातार बनाए रखी। मेरे करीब नहीं आयी तुम। न जाने क्यों ?"

"करीब ही तो हूं सर, आपके। आपने कहा और मैं यहां इस एकांत में भी चली आयी।"

"रूबी, तुमने मेरे दिल को, मेरी भावनाओं को नहीं समझा... बिल्कुल नहीं समझा। मैं तुम्हारे लिए तड़पता रहा हूं। तुम्हारे सपने देखता रहा हूं। तुम्हें अपने करीब देखना चाहा है मैंने। तुम्हें अपनी... ।"

"क्या सर ? मैं कुछ समझ नहीं पा रही हूं।"

"तुम्हें अपनी बाहों में लेना चाहा है मैंने... लेकिन तुम्हारा व्यवहार सदा सर्द रहा है... न तुम कभी खाने-पीने के लिए राजी हुई और न सैर के लिए। कभी हाथ तक थामने नहीं दिया तुमने रूबी।"

"हाथ ? थाम लीजिए, सर... यह लीजिए, बस ?"

"कितना कोमल, कितना खूबसूरत हाथ है तुम्हारा। लगता है तुम्हारी पूरी देह जैसे किसी सांचे में ढली है–किसी शिल्पी ने तुम्हारे शरीर को नाप-तोलकर बनाया है।"

"रूबी ?"

"हां सर। आप क्या कर रहे हैं–मुझे यों क्यों छू रहे हैं ?"

"कैसा लगता है रूबी तुम्हें यह स्पर्श ?"

"कैसा ? आप छू रहे हैं, बस। छूने जैसा... अरे, गिर पडूंगी मैं, सर। मेरा बैलेंस बिगड़ रहा है... मेरा चेहरा, मेरे होंठ क्यों छू रहे हैं आप ?"

"रूबी... रूबी... मैं कितना प्यार करता हूं तुम्हें !"

"प्यार ? मैं चलूंगी, सर अब। छह बजने वाले हैं।"

"तो क्या हुआ, मैं छोड़ दूंगा तुम्हें घर तक। या मेरे साथ रहो रूबी तुम आज। मैं... मैं तुम्हारे बिना रह नहीं सकूंगा... ।"

"यह क्या... यह क्या सर ! मैं चल रही हूं। छोड़िए... छोड़िए मुझे। गुड नाइट, सर !"

"देखा, सूरी, उड़ गयी चिड़िया ! घाघ तड़फ रहा है।"

"बेरहम है–बेरहम, मशीन। दो वर्षों से हमसे नहीं हिली तो ससुर खन्ना कौन-सा तीसमार खां है !"

"चलो, देखें जाती कहां है ?"

"अमां भागो। वह देखो, वह कार !"

"अरे, बाप रे !"

* * *

"मिस्टर खन्ना ?"

"यस सर।"

"प्रबंध मंडल ने तात्कालिक प्रभाव से इस प्रतिष्ठान से आपकी सेवा समाप्त करने का निर्णय ले लिया है। आप कार्यभार से मुक्त कर दिये गये हैं।"

"लेकिन... लेकिन क्यों सर ?"

"रूबी के साथ आपका व्यवहार... रूबी ने ही आपकी नियुक्ति का सुझाव दिया था।"

"रूबी ने ?"

"हां, रूबी ने। आपकी योग्यताओं, अनुभव और तत्काल निर्णय लेने की क्षमता को सर्वाधिक अंक दिये थे रूबी ने अपने विश्लेषण में। और, खेद है कि आज विश्लेषण में आप बहुत पीछे छूट गये हैं।"

"कैसा विश्लेषण, सर ?"

"रूबी का विश्लेषण।"

"रूबी का ?"

"हां, मिस्टर खन्ना, आपके छह महीने के काम के विश्लेषण से यह पता चलता है कि आपने इस प्रतिष्ठान के लिए काफी निष्ठा और परिश्रम से काम किया। रूबी के प्रति आकर्षण के कारण आपने उसके साथ मिलकर अधिक से अधिक काम किया ताकि आप रूबी के पास अधिक से अधिक रह सकें। लेकिन धीरे- धीरे प्रतिष्ठान के प्रति आपका रुझान कम होता चला गया और आपका मन रूबी में उलझ गया। और, इसकी परिणति हुई आपके आज के व्यवहार में।"

"रूबी, मैं शर्मिंदा हूं अपने आज के व्यवहार के लिए। मुझे माफ कर दो। क्यों ? बोलो रूबी ?"

"रूबी नहीं बोलेगी, मिस्टर खन्ना।"

"क्यों सर ? क्यों नहीं बोलेगी ?"

"इसलिए, क्योंकि इस समय उसकी बैटरी निकाल दी गयी है। उसके द्वारा एकत्र आंकड़ों का और अधिक विश्लेषण किया जा रहा है ताकि कार्य और सौंदर्य के संबंध का पता लगाया जा सके। इस संबंध की गुत्थी सुलझने से प्रतिष्ठान में कार्यक्षमता का अधिकतम लाभ उठाया जा सकेगा।"

इतना कहकर सिंघानिया साहब ने रूबी के कान के पीछे से कोई बटन दबाया और उसे एक खास स्थिति में बैठा दिया। खन्ना आंखें फाड़कर देख रहे थे। रूबी की आंखों से रोशनी फूटने लगी और सामने दीवार पर फिल्म चलने लगी–खन्ना साहब की कारगुजारियों की सचित्र गाथा।

खन्ना साहब को काटो तो खून नहीं। धीरे से बोले, "सॉरी सर !" सिंघानिया साहब के शब्द उन्हें जैसे कहीं दूर से सुनायी दे रहे थे, "रूबी इस प्रतिष्ठान के लिए पूरी तरह समर्पित 'रोबट पर्सनल सेक्रेटरी' है मि. खन्ना ! इसके द्वारा एकत्रित

जानकारी का और अधिक अध्ययन किया जा रहा है ताकि सौंदर्य और कार्यक्षमता का संबंध स्पष्ट हो सके। सुंदर सहयोगी के साथ कार्य करने की अधिक ललक के कारण कार्य-घंटे बढ़ जाते हैं, लेकिन फिर सहयोगी पर ही मस्तिष्क क्रेंद्रित हो जाने पर कार्यक्षमता में लगातार गिरावट आ जाती है। यही आपके साथ हुआ। बहरहाल, गुडबाइ मिस्टर खन्ना !"

**मूल हिंदी**

# धर्मपुत्र

अरविन्द मिश्र

आपरेशन थियेटर में कोई नाजुक आपरेशन चल रहा था। लेकिन आपरेशन थियेटर के बाहर घबराहट और उत्तेजना भरी मिली-जुली आवाजों के कारण अस्पताल का माहौल तनावपूर्ण हो चला था।

"ओफ् ! बड़ी भयानक दुर्घटना हुई है ! बेचारा राघव ! पता नहीं बचेगा भी या नहीं।

"बेचारे को आपरेशन थियेटर में पूरे छह घंटे हो चुके हैं।"

राघव के पिता तो आपरेशन थियेटर की लाल बत्ती ही देखे जा रहे हैं। बेचारे करें भी तो क्या। राघव उनका इकलौता पुत्र था।"

पी. एम. टी. परीक्षा की तैयारी के लिए ही तो उन्होंने उसे प्रतिस्पर्धा कोचिंग होस्टल में रहने भेजा था।"

"परसों ही तो पी. एम. टी. की परीक्षा है उसकी।"

"बड़ी अच्छी तैयारी है उसकी।"

"चयन तो होना ही है।"

"उसका पार्टनर गौरव भी तो इधर मन लगाकर पढ़ने लगा था।"

"अरे, उस फिसड्डी की बात मत करो। पी. एम. टी. उसके बस की बात नहीं।"

"धीरे बोलो यार। उसके पिता ही तो राघव का आपरेशन कर रहे हैं।"

"अमेरिका से सर्जरी में उच्च अध्ययन करके लौटे हैं। बहुत बड़े न्यूरोसर्जन हैं।"

"राघव का सिर तो इस दुर्घटना में बुरी तरह कुचला गया है।"

"देखो भाई, क्या होता है ?"

बेचैनी भरे वार्तालाप का यह माहौल दिल्ली के एक अस्पताल के प्रतीक्षालय का था, जहां अपने एक मित्र की सड़क दुर्घटना के बाद छात्रों की भीड़ जमा थी। दुर्घटना-ग्रस्त उनके इस हतभाग्य मित्र का नाम था–राघव। बेचारा राघव इस समय जीवन और मौत की लड़ाई से जूझ रहा था।

अचानक आपरेशन कक्ष का दरवाजा खुला और डाक्टर विशाल बुझा हुआ चेहरा लेकर बाहर निकले। रुंधे स्वर में उन्होंने पूछा, "राघव के माता-पिता कहां हैं ?"

"राघव के पिता तेजी से आगे बढ़े, "मेरा बेटा तो ठीक है डाक्टर साहब। उसे बचा लीजिए... ," उनका गला अवरुद्ध हो चला था।

"आई एम सारी ! मैं उसे बचा नहीं सका... आई एम रियली वैरी सारी।" डा. विशाल ने पेशेवर लहजे में जवाब दिया और आगे बढ़ चले।

बड़ा ही कारुणिक दृश्य था वहां का। राघव के पिता बदहवास से हो चले थे। राघव के सभी मित्र भी स्तब्ध थे।

*                *                *

शाम का धुंधलका घिर आया था। डा. विशाल अभी भी अपने घर नहीं लौट पाये थे। उनकी पत्नी चिंतित और बेचन-सी इधर-उधर टहल रही थी। तभी कालबेल बज उठी। गौरव की मां ने तेजी से बढ़कर द्वार खोल दिया और उनके मुंह से सहज ही निकल पड़ा, "आपने आज बड़ी देर कर दी।"

"ओह, कुछ सुना तुमने। गौरव के पार्टनर का आज एक्सीडेंट हो गया। लाख कोशिशों के बाद भी मैं उसे बचा नहीं सका।" डा. विशाल ने भर्राये स्वर में कहा।

"क्या ? राघव नहीं रहा ? आखिर यह सब कैसे हुआ ? कितना प्यारा और बुद्धिमान लड़का था। यह तो बहुत बुरा हुआ...," गौरव की मां सहसा घबरा सी गयी।

"सुनो, गौरव कहां है ? अभी तक नहीं आया क्या ? राघव की मृत्यु से तो वह भी विचलित हो गया होगा," डा. विशाल ने एक निःश्वास छोड़ते हुए कहा। तभी फिर से कालबेल गूंज उठी। "लगता है, गौरव आ गया," गौरव की मां की घबराहट कुछ कम हुई।

"ओह पिताजी, मेरा मित्र राघव मुझे छोड़कर चला गया। मैं उसके बिना नहीं रह सकता।" गौरव आते ही अपने पिता से लिपट गया।

"धीरज रखो बेटा, अब तो जो होना था हो गया, तुम्हारी परसों से परीक्षा है। उधर ध्यान दो।" डा. विशाल ने संयत स्वर में कहा।

"लेकिन पिताजी।"

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, इतना संवेदनशील मत बनो, तुम्हें अपने लक्ष्य की चिंता रहनी चाहिए। मैंने तुम्हें होस्टल में इसलिए रखा था कि तुममें आत्मविश्वास उत्पन्न होगा। किंतु... ।"

"छोड़िये भी, सुबह से भूखा-प्यासा आया है, आप तो बस बरस पड़े उस

पर ! जाओ बेटे फ्रिज से कुछ खाने का सामान निकल लो और अपने पिताजी के लिए भी ले आओ।" गौरव की मां ने हस्तक्षेप किया।

"मैं केवल कॉफी लूंगा। कुछ खाने की इच्छा नहीं है, गौरव तुम खा लो।" डा. विशाल ने कहा। गौरव के जाने के बाद धीमे स्वर में डा. विशाल ने पुनः कहना शुरू किया...

"देखो दीपिका। केवल इसी गौरव को छोड़कर हमारे लड़के कितने टेलेंटेड हैं। आज दोनों कितनी अच्छी जगह पर हैं। हमारी बेटी भी उच्च शिक्षा के लिये अमेरिका चली गयी। मुझे बस इसी गौरव की चिंता है। मैं इसे डाक्टर बनाना चाहता था किंतु इसके पास तो लगता है 'ब्रेन' नाम की चीज ही नहीं है। मेरा मतलब है उसमें 'ग्रे मैटर' की कमी है।"

"अब आप तो भला ले मैन लेंग्वेज मत बोला करिये। व्हाट डू यू मीन बाई ग्रे मैटर ? इज दैट द थिंग ओनली रिसपांसबिल फार इंटेलिजेंस ?" दीपिका ने टोका। डा. विशाल झेंपते हुए बोले, "ओह, मैं भूल गया था कि तुमने भी 'न्यूरो साइंस' में स्पेशलाइजेशन किया है। मानता हूं तुम्हारे सामने मुझे ग्रे मैटर की बजाय, 'निओपेलिअम' कहना चाहिए था। लेकिन आज वाले आपरेशन का नाम मैंने 'आपरेशन ग्रे मैटर' ही रखा था।"

"जिसमें आप अफसल हो गये।" दीपिका का कटाक्ष चुभने वाला था।

"शायद पूरी तरह असफल नहीं हुआ हूं। एक आशा की किरण दिखायी दे रही है अभी मुझे," डा. विशाल की आवाज में रहस्य की झलक थीं।

"क्या मतलब ? क्या राघव अभी बच सकता है ?"

"डोंट बी सिली। मृत आदमी कभी जीवित नहीं हो सकता।"

"तो फिर आपके लिए आशा की कौन-सी किरण बची है... ?"

"कोई किरण नहीं। राघव की क्नीनिकल ही नहीं बायोलाजिकल डैथ भी हो चुकी थी। बायोलाजिकल डैथ का मतलब तो तुम अच्छी तरह समझती हो... सब कुछ खत्म, ब्रेन के सभी सेल्स डैड।"

"तो फिर आप पहेलियां क्यों बुझा रहे हैं ? सब कुछ खत्म तो फिर आशा की किरण कैसी ?"

"छोड़ो, मैं वैसे ही कह रहा था। इट वाज जस्ट ए स्लिप आफ टंग।"

"जस्ट ए स्लिप आफ टंग ? आर यू सीरियस ? आप ठीक तो हैं... ?" सहसा गौरव के आगमन ने इस अनवरत संवाद को भंग कर दिया।

"मैं होस्टल जा रहा हूं, मां।"

"आज होस्टल मत जाओ, यहीं पढ़ो," दीपिका ने तुरंत टोका।

"लेकिन मेरे नोट्स, किताबें तो वहीं है।"

"ठीक है वहीं जाओ। इस बार तो परसों ही सभी पेपर एक साथ होने हैं

और दूसरे दिन ही रिजल्ट भी आउट हो जायेंगे ? क्यों ?"

"तो जाओ जुट जाओ, तुम्हारे पास समय बहुत कम है। "हां, कल सुबह मुझसे मिल लेना, वहीं हास्पिटल की प्रयोगशाला वाली मेरी केबिन में, ठीक आठ बजे।"

"अच्छा पिताजी। मम्मी, गुडनाइट।"

"गुडनाइट !" डा. विशाल और दीपिका सम्मलित स्वर में बोल उठे।

* * *

प्रवेश द्वार पर हाकर की तेज आवाज गूंजी–'पेपर'। दीपिका ने दैनिक कौतूहल के साथ पेपर उठाया और उसके मुंह से निकल पड़ा–"अरे, यह तो अपने गौरव की फोटो छपी है... ओह... मुझे विश्वास नहीं हो रहा, गौरव ने तो पी. एम. टी. में टाप किया है...।"

"विशाल, विशाल ! देखो आज की ताजा खबर है, हमारे बेटे गौरव ने पी. एम. टी. में टाप किया है। पहले पेज पर उसकी फोटो छपी है।" उत्तेजना से दीपिका की आवाज कांप सी रही थी।

"सच ! मैं जानता था कि मेरा लड़का इस कंपीटीशन में टाप करेगा।" डा. विशाल के स्वर में कृत्रिमता अधिक थी।

"अरे छोड़िये, मुझे तो डर लग रहा है, कहीं कुछ गड़बड़ न हो यानी... कहीं गलत न छप गया हो।"

"क्या बात करती हो ? गौरव ने सचमुच टाप किया है। मुझे पूरा भरोसा है उस पर। यह खबर शत प्रतिशत सही है।"

"लेकिन यह सब हुआ कैसे ? मुझे तो अब भी विश्वास नहीं हो रहा है...।"

यह विवाद आगे बढ़ पाता कि तभी टेलीफोन घनघना उठा–"हैलो ! डा. विशाल हियर !"

"कांग्रेचुलेशन्स, डा. विशाल, मैं प्रतिस्पर्धा कोचिंग का वार्डन मधुकर बोल रहा हूं। गौरव ने तो पी. एम. टी. में टाप किया है, उसे फोन पर बुलाइये, मैं उसे खुद बधाई देना चाहता हूं। हैलो...।"

"लेकिन वार्डन साहब, वह तो यहां है नहीं। मैं तो उसे होस्टल से बुलाना ही चाहता था। क्या वह होस्टल में नहीं है ?"

"नहीं, डा. विशाल। वह तो कल शाम को ही यहां से चला गया था। उसके दोस्तों ने तो मुझे यही बताया है। उसे बधाई देने के लिए उसके सारे दोस्त बेचैन हो रहे हैं। मुझे ताज्जुब है कि वह घर पर नहीं पहुंचा। आखिर वह

गया कहां ?"

"यही सवाल तो मुझे भी परेशान कर रहा है मिस्टर मधुकर। यदि कल रात से ही गायब है तो फिर चिंता की बात है। मुझे फौरन पुलिस को सूचित करना होगा।"

"ओ. के., डा. साहब, मैं भी उसे तलाश करवाता हूं। बेहतर होगा यदि आप रेडियो और टेलीविजन को भी सूचित कर दें। वैसे एक-दो घंटे और देख लें, हो सकता है आ ही जाये। कहीं किसी दोस्त के यहां न चला गया हो। ओ. के. फिर फोन करेंगे।" टेलीफोन को क्रैडिल रखते समय डा. विशाल के हाथ कांप रहे थे।"

फोन पर वार्तालाप सुनकर दीपिका ने घबरा कहा, "मुझे तो बड़ी घबराहट हो रही है। बड़ी अप्रत्याशित घटनाएं हो रही हैं। आप गौरव को तुरंत खोजिए।"

"तुम तो छोटी-छोटी बातों पर भी घबराने लगती हो। किसी दोस्त के यहां गया होगा।"

"नहीं नहीं, आप पुलिस को सूचित कर दीजिए।"

"ठीक है, मैं पुलिस, रेडियो और टेलीविजन को भी सूचित कर... और उधर से ही मैं अपने साथी डा. गौतम से भी मिलता आऊंगा। कुछ जरूरी काम है।" डा. विशाल कुछ मिनटों में घर से बाहर निकल चुके थे।

*　　　　*　　　　*

"आओ आओ, विशाल भाई ! तुम्हारे लड़के ने तो पी. एम. टी. में टाप करके कमाल ही कर दिया। बहुत-बहुत बधाई।"

यह डा. विशाल के अनन्य मित्र डा. गौतम थे, जो गौरव की इस अप्रत्याशित सफलता पर चमत्कृत थे। डा. विशाल ने उनकी बधाई अनसुनी करते हुए कहा, "डा. गौतम, मैं अभी पुलिस स्टेशन से आ रहा हूं।"

"क्यों ? सब कुछ ठीक तो है न !"

"कहां ठीक है ? कल रात से गौरव का कहीं पता नहीं है। सुबह से ही उसकी खोज हो रही है, बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है, किंतु खुद वही गायब है।"

"कहीं किसी दोस्त के यहां गया होगा। तुम व्यर्थ ही परेशान हो रहे हो।"

"नहीं भई। अपनी सफलता का समाचार सुनकर तो उसे हमसे मिलने आना चाहिए था।"

"विशाल ! अगर बुरा न मानो तो एक बात कहूं। गौरव का पी. एम. टी. में टाप करना बड़ी अनहोनी-सी बात है। अचानक उसमें ऐसा कौन-सा परिवर्तन

आ गया..., वह तो हमेशा ही साधारण छात्र रहा है, बल्कि तुम उसे लेकर अक्सर चिंतित ही रहा करते थे।" डा. गौतम ने धीमे स्वर में कहा।

"गौतम ! मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाऊंगा। गौरव का पी. एम. टी. में टाप करना एक राज है। मैं यह राज तुम्हारे सामने इसलिए खोलना चाहता हूं कि तुम मेरे रिसर्च कुलीग रहे हो। दरअसल, गौरव का पी. एम. टी. में टाप करना हमारी रिसर्च की ही सफलता का परिणाम है।"

"वह कैसे ?" डा. गौतम उत्तेजित हो उठे।

डा. विशाल ने संयत स्वर में बताना आरंभ किया, "तुम्हें याद होगा कि जब बरसों पहले अमेरिकी वैज्ञानिक मैकोनेल ने कुछ समुद्री जीवों में मैमोरी ट्रांसफर के प्रयोग किये थे, तब मैं उन्हीं की प्रयोगशाला में काम कर रहा था। मुझे लगा था कि यह बड़े जंतुओं में भी संभव है।"

"और उसी के बाद तो तुमने अमेरिका से लौटते ही इस प्रोजेक्ट पर काम करना शुरू कर दिया था। यह तो मुझे पता ही है। बाद में मैंने तुम्हारे साथ ज्वाइन कर लिया।"

"लेकिन माई डियर गौतम ! तुम्हें कई और बातों का पता नहीं है। टुडे आई कनफेस... ।"

"जब हम लोगों को पता लगा कि मैसेंजर आर. एन. ए. (mRNA) ही मैमोरी अणु है तो मैंने तुम्हें निम्न श्रेणियों के जीव-जंतुओं की तंत्रिका प्रणाली में मैसेंजर आर.एन.ए. के पाथवेज डिटेक्शन का काम सौंपा। किंतु खुद रीसस बंदरों के मस्तिष्क की उन कोशिकाओं को खोजना शुरू किया जो इस मैमोरी अणु का संश्लेषण करती हैं।"

"किंतु तुमने मुझसे इस बात को छुपाये रखा।" डा. गौतम ने रूखे स्वर में कहा।

"मुझे माफ कर दो, मेरे दोस्त ! मुझे डर था कि कहीं मैं असफल न हो जाऊं और तुम लोग मेरी हंसी न उड़ाओ।"

"खैर, आगे बताओ।"

"आर्थर कायेस्लर ने अपने एक लोकप्रिय वैज्ञानिक लेख में मैमोरी ट्रांफसर के कई प्रयोगों और उन प्रयोगों में लगे वैज्ञानिकों का उल्लेख किया था। इस लेख ने मुझे बहुत उत्साहित किया। मैंने बंदरों के मस्तिष्क की कोशिकाओं में मैसेंजर आर.एन.ए. की उपस्थिति का हर क्षण रिकार्ड रखा और उन्हें विलगित भी कर लिया। जब मैंने उन्हें दूसरे बन्दर की कोशिकाओं में प्रविष्ट कराया तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। दूसरे बंदर को पहले वाले बंदर की याददाश्त मिल गयी थी। इन प्रयोगों को मैंने कई बार दुहराया और एक ही परिणाम मुझे मिला–वह यह कि मैमोरी ट्रांसफर संभव है।"

"और तुमने इन प्रयोगों को मानव पर भी आजमाना चाहा होगा ?" डा. गौतम के स्वर में कटाक्ष स्पष्ट था।

"हां, इसके लिए मैंने गौरव को ही चुना। उसके रूम पार्टन को जब मैं बचा नहीं सका तो मैंने झटपट उसकी स्मृति कोशिकाओं को विलगित कर लिया। यह बात मेरे दिमाग में अचानक ही कौंधी थी कि मैं राघव की मैमोरी को गौरव के मस्तिष्क में ट्रांसफर कर दूं।"

"जिससे कि वह पी. एम. टी. में सफल हो सका, और उसने टाप कर दिखाया ! कांग्रेचुलेशंस डा. विशाल, तुम्हारा यह प्रयोग मानव पर भी सफल रहा।" डा. गौतम का स्वर व्यंग्यात्मक हो उठा था।

"लेकिन गौतम, मेरा मन न जाने क्यों आशंकाओं से घिर गया है। गौरव की अभी तक कोई सूचना नहीं मिली है।"

डा. गौतम के कुछ कहने से पहले ही टेलीफोन की घंटी बज उठी। डा. गौतम ने रिसीवर उठाया।

"हैलो... हां यहीं हैं... विशाल, भाभी जी का फोन है, तुम्हारे लिए।"

"हैलो... हां... हां... क्या ? गौरव वहां चला गया है ? आखिर क्यों ? ठीक है, मैं अभी जाता हूं वहां।"

रिसीवर रखते हुए डा. विशाल ने घबराये स्वर में कहा, "अजीब बात है, गौरव तो राघव के पिता के पास पहुंच गया है, गांव में। राघव के पिता ने सूचना दी है, मुझे तुरंत बुलवाया है उन्होंने। उनका गांव यहां से 60 कि. मी. दूर है। गौतम, प्लीज मेरे साथ चलो। अपनी कार निकालो, जल्दी।"

चंद मिनटों बाद डा. गौतम की मारुति हवा से बातें कर रही थी।

* * *

राघव के पिता को अचानक बाहर कार रुकने और उसके हार्न की आवाज सुनायी पड़ी। वे राघव की मां से बोले, "लगता है डा. विशाल आ गये—राघव की मां ज़रा देखो, गौरव राघव के कमरे में होगा। मैं डा. साहब को बिठाता हूं।"

सचमुच गौरव के पिता ही थे। उन्होंने गर्मजोशी से स्वागत किया, "आइये, आइये ! डा. साहब, हम बेचैनी से आपका ही इंतजार कर रहे थे।" ज्यादा औपचारिकताओं के झमेले में न पड़कर डा. विशाल ने सीधा प्रश्न किया, "गौरव कहां है ? आपने सूचना दी थी कि वह यहां आ गया है। वह ठीक तो है ? अरे हां, इनसे मिलिये, ये हैं डा. गौतम, मेरे मित्र।"

"नमस्ते ! आप लोग बैठिये न। खड़े क्यों हैं ?" राघव के पिता ने आग्रह किया। डा. विशाल की व्यग्रता उन्हें चैन नहीं लेने दे रही थी, उन्होंने फिर सवाल

किया, "गौरव दिख नहीं रहा। कहीं गया है क्या ?"

"नहीं, वह ज्यादातर राघव के कमरे में ही बैठा रहता है। बिल्कुल राघव जैसा। उसकी भी यही आदत थी। अपने कमरे में ही ज्यादा समय बिताने और कुछ न कुछ पढ़ते रहने की। डा. साहब, गौरव के स्वभाव में बहुत परिवर्तन आ गया लगता है। वह बिल्कुल राघव जैसा आचरण करता है। अपने को राघव मानता भी है। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। वह मुझे ही अपना पिता मान रहा है और राघव की मां को अपनी मां।"

राघव के पिता अभी कुछ और कहने वाले थे कि डा. विशाल बीच में ही बोल पड़े, "यह क्या कह रहे हैं आप ?"

"अजीब बात है।" डा. गौतम भी यह सारा माजरा समझ नहीं पाये। तभी गौरव ने कमरे में प्रवेश किया। सभी की नजरें उधर ही उठ गयीं।

"नमस्ते डा. अंकल। नमस्ते अंकल। गौरव ने क्रमशः अतिथियों का अभिवादन किया।

"अंकल नहीं बेटे। ये तो तुम्हारे पिता हैं।" राघव के पिता ने तुरंत बात संभाली।

"क्या कह रहे हैं, पिताजी आप ? अब क्या मैं अपने अंकल को भी नहीं पहचानूंगा। ये दोनों अंकल बहुत अच्छे हैं। मेरा बड़ा ध्यान रखते हैं।"

"गौरव बेटे ! यह सब तुम क्या कह रहे हो ? क्या हो गया है तुम्हें ?" डा. विशाल अचकचाये।

"अंकल, आपने मुझे गौरव क्यों कहा ? मैं तो राघव हूं। आपके साथ गौरव क्यों नहीं आया।"

डा. गौतम ने धीरे से फुसफुसाहट भरे स्वरों में कहा, "यू हैव लास्ट योर सन, माई फ्रेंड। योर 'आपरेशन ग्रे मैटर' हैज फेल्ड। डा. गौतम ने संयत स्वर में कहा।

"ओ नो। डोंट से लाइफ दैट। आई वोंट बी एबल टू बियर आल दैट।"

"यह कड़ुवा सच तो तुम्हें बर्दाश्त करना ही होगा। तुम अपने वैज्ञानिक परीक्षण के दूसरे पहलू को प्रेडिक्ट नहीं कर पाये दोस्त। गौरव को राघव की पूरी मैमोरी ट्रांसफर हो गयी लगती है। केवल वही नहीं, जो तुम चाहते थे।"

राघव के पिता ने कुछ समझकर हस्तक्षेप किया, "आप लोग क्या बातें कर रहे हैं। मुझे तो समझ में नहीं आ रहा।"

डा. विशाल असहाय से हो उठे, "गौतम, कृपया तुम बताओ इन्हें, मैं कुछ भी बता सकने की स्थिति में नहीं हूं। ओह मैंने यह क्या कर दिया ?"

"क्या बात है, डा. गौतम ! आप ही बताइये, मुझे भी घबराहट हो रही है।" राघव के पिता अब काफी व्यग्र हो उठे थे।

"हां आपको तो बताना ही पड़ेगा।... आपका लड़का राघव बहुत टेलैंटेड था। और उसने पी. एम. टी. की बड़ी अच्छी तैयारी भी की थी।"

"ओह, मत दिलाइये उसकी याद डा. साहब, कितनी मुश्किल से मैं उसे भूलने की कोशिश में लगा हूं। लेकिन उसकी बात आप क्यों कर रहे हैं।" राघव के पिता ने एक गहरा निःश्वास छोड़ा।

"इसलिए कि राघव अभी जिंदा है, वह मरा नहीं।"

"यह क्या कह रहे हैं आप... इतना क्रूर मजाक मत कीजिए मुझसे। डा. साहब इन्हीं हाथों से उसकी चिता को अग्नि दी है मैंने।" राघव के पिता असंयत हो उठे।

"यह सच है कि राघव का शरीर नहीं रहा। किंतु उसका मन अब भी जिंदा है गौरव के मस्तिष्क में।"

"डा. साहब, साफ-साफ बताइये क्या मामला है ? मैं कुछ समझ नहीं पा रहा।"

"देखिये, जब राघव को डा. विशाल बचा नहीं सके तो इन्होंने उसकी स्मृति कोशिकाओं को अलग कर लिया जिन्हें बाद में इन्होंने गौरव के मस्तिष्क में आरोपित कर दिया, ताकि वह मेधावी बन सके। डा. विशाल ने सोचा था कि जैसे ही गौरव अपने पी. एम. टी. के प्रश्नपत्रों को हल करने में दिमाग पर जोर डालेगा, राघव की स्मृति सक्रिय हो जायेगी, जो प्रश्नपत्रों को हल करने में गौरव की मदद करेगी। वह सब तो ठीक वैसे ही हुआ जैसा डा. विशाल ने सोचा था। किंतु इसके साथ ही ऐसा लगता है कि राघव की स्मृति ने, गौरव की स्मृति को ही पूर्णतः प्रतिस्थापित कर दिया है। यानी गौरव मानसिक रूप से अब राघव में बदल गया है।"

डा. विशाल ने दुखी स्वरों में बात आगे बढ़ायी, "मेरा प्रयोग असफल रहा, क्योंकि मैं स्वार्थ में इस प्रयोग के दूरगामी परिणामों को सोच नहीं पाया। लेकिन मुझे इसकी इतनी बड़ी सजा मिलेगी, मैंने सोचा नहीं था। किंतु अब क्या हो सकता है ?"

"आप गौरव के मस्तिष्क की जांच करके यदि जरूरी हो तो सर्जरी से फिर अपने पहले वाली दशा में ला सकते हैं।" राघव के पिता ने सुझाया।

"नहीं, अब मैं कोई खतरा मोल नहीं ले सकता। सर्जरी के दौरान पूरी याददाश्त भी जा सकती है। अब तो गौरव जैसा है, वैसा ही ठीक है।"

"बेटे ! सुना तुमने। यही डा. विशाल तुम्हारे पिता हैं, मैं नहीं।" राघव के पिता ने अपने स्नेह भरा हाथ गौरव के कंधे पर रखते हुए कहा।

"जो भी हो, मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा। मैं बड़ी उलझन-सी महसूस कर रहा हूं। मुझे तो यही पता है कि आप ही मेरे पिता हैं और डा. साहब मेरे अंकल।" गौरव ने इस दृश्य का पटाक्षेप करना चाहा।

"ओह, व्हाट शुड आई डू नाउ–आई हैव लास्ट माई सन। मैं खुद को कभी

माफ नहीं कर सकूंगा।" डा. विशाल की आंखों में आंसू भर आये।

"धीरज रखो।" डा. गौतम कहकर चुप हो गये। वे भी अपने को संभाल नहीं पा रहे थे। वातावरण बोझिल होता जा रहा था। राघव के पिता ने सन्नाटा भंग किया।

"मेरी एक विनती है। राघव हमारे बुढ़ापे का सहारा था। उसके बाद हम बिल्कुल टूट से गये हैं। जिंदगी में जैसे कुछ भी बाकी नहीं रहा। आपके तो डा. साहब और भी होनहार लड़के हैं। काश ! आप मेरी व्यथा को... समझ सकते।"

"आप कहना क्या चाहते हैं ?" डा. विशाल सशंकित हो उठे।

"यही कि... आप यदि अनुमति दें तो मैं गौरव को अपने धर्मपुत्र के रूप में स्वीकार कर लूं। यह मेरी विनती है, डा. साहब, मुझे निराश मत कीजिये।"

"तुम क्या चाहते हो गौरव... ! बेटे... राघव... ?" डा. गौतम जानने के लिए गौरव की ओर मुखातिब हुए।

"मैं भी यहीं, पिताजी के साथ ही रहना चाहता हूं।" गौरव ने तपाक से उत्तर दिया।

"आओ, चलें विशाल, हम गौरव को समय-समय पर देखते रहेंगे। निराश मत हो। हो सकता है, यह कभी नार्मल हो ही जाये, तब तक के लिए हम उसे यहीं छोड़ते हैं।"

डा. गौतम ने डा. विशाल का हाथ पकड़ा और उन्हें लगभग खींचते हुए बाहर ले चले।

"इस समय दूसरा विकल्प ही क्या है ?" डा. विशाल भी बुझे स्वर में बोल पड़े।"

**मूल हिंदी**